7. यूरोप का विकास

आज संसार भर में यूरोप के देश कारखानों व उनमें बनी चीज़ों के लिए जाने जाते हैं। वहां बनी मोटर गाड़ियां, जहाज़, मशीनें, बिजली के सामान, कपड़े, आदि दुनिया भर में बिकते हैं। उद्योगों के विकास के कारण ही यूरोप के देश आज दुनिया में शक्तिशाली व संपन्न देशों में गिने जाते हैं। लेकिन आज से 250 साल पहले तक यूरोप में उद्योगों का इस तरह विकास नहीं हुआ था।

सन् 1700 के बाद से यूरोप में कई ऐसे बदलाव आये जिनके कारण वहां उद्योगों का विकास तेज़ी से होने लगा। ये बदलाव शुरू में इंगलैंड में आए और बाद में यूरोप के दूसरे देशों में भी फैले। ये क्या बदलाव थे, इस पाठ में पढ़ेंगे।

गांवों में बदलाव : किसानों की ज़मीन छिनी

सन् 1500 से पहले यूरोप के अधिकांश लोग गांवों में रहते थे और खेती से गुज़ारा करते थे। खेतों के मालिक तो बड़े-बड़े ज़मींदार थे। किसान उनके खेतों में अनाज उगाकर, फसल का एक हिस्सा ज़मींदार को देते थे और बाकी से अपना घर चलाते थे।

सन् 1500 के बाद एक ऐसा समय आया जब व्यापार बहुत बढ़ने लगा। तब इंगलैंड के ज़मींदारों को लगा कि वे अपनी ज़मीन पर मुनाफे के लिए अनाज आदि पैदा करेंगे। ऐसा सोच कर उन्होंने कई किसानों को ज़मीन से बेदखल कर दिया। ये किसान ग़रीबी और लाचारी की हालत में दर-दर भटकने को मजबूर हुए थे। इस तरह बड़े-बड़े फार्म बने जिनमें मशीनों का उपयोग करके नए तरीकों से खेती होने लगी। इस प्रकार खेतों में उत्पादन तो खूब बढ़ा पर हज़ारों किसान अपनी जीविका के साधन खो बैठे।

ऐसे किसान गुज़ारे के लिए क्या कर सकते थे? चर्चा करो। ज़मींदार कम लोगों से काम कैसे चला सकते थे?

खेती में होने वाले बदलावों के साथ-साथ उद्योगों में भी बदलाव आ रहे थे—देखें ये क्या थे।

उद्योगों में बदलाव : व्यापार और कारीगर
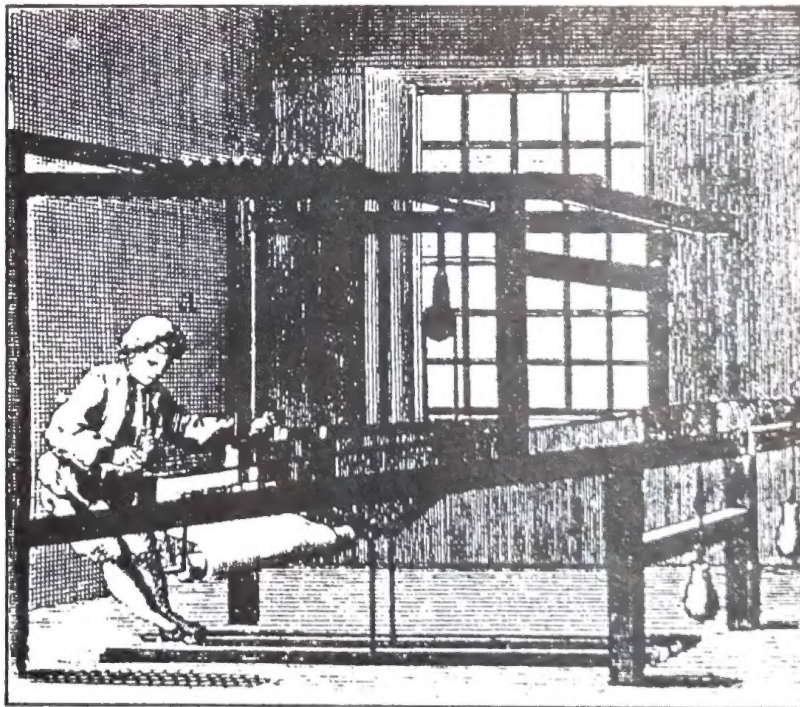
यह एक बुनकर का चित्र है। वह अपने घर पर लगे एक करघे पर कपड़ा बुन रहा है। करघा पांव से चलाया जाता है

सन् 1600 से पहले: उन्हीं दिनों गांवों व शहरों में कारीगर भी थे जो अपने-अपने घरों में हाथ से चलने वाले औज़ारों से सामान बनाते थे। घर के सारे लोग किसी न किसी तरह कपड़ा बनाने के काम में लगे होते थे—महिलाएं सूत कातती थीं तो कोई रंगने का काम करता था। फिर बुनकर कपड़ों को बाज़ार में बेचकर

अपना गुज़ारा करते थे। पर व्यापार ने जब ज़ोर पकड़ा तो इन कारीगरों पर भी असर हुआ।

सन् 1600 के बाद कुछ ऐसी हालत बन रही थी -

कारीगर : आजकल हमारे कपड़ों की मांग बहुत बढ़ गयी है। लेकिन हम पर्याप्त कपड़ा नहीं बुन पा रहे हैं। हमारे हथकरघे व चरखे से बने कपड़े महंगे भी होते हैं। हमें ऐसी मशीन बनानी होगी जिससे काम जल्दी और कम खर्चे में हो।

व्यापार और काम का दबाव ऐसा था कि कई लोगों का दिमाग बेहतर औज़ारों व मशीनों की खोज में लग गया। वाह यह रहा वह आविष्कार! इससे तो चरखे की तुलना में कई गुना सूत एक साथ काता जा सकता है।
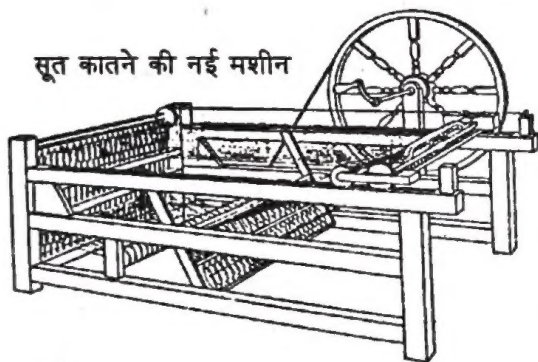
सूत कातने की नई मशीन

"मगर ऐसी भारी मशीनों को हाथ या पांव से चलाना थका देने वाला काम है। काश कोई ऐसी चीज़ बने जिससे ये मशीन अपने आप चले।"

वो दिन भी आया जब 'अपने आप' चलने वाली मशीनें बनीं। यह था जेम्स वाट का विश्व प्रसिद्ध आविष्कार - भाप का इंजिन।

<u>जेम्स वाट का आविष्कार</u> : जेम्स वाट एक मशीन बनाने वाला कारीगर था जो इंगलैंड में रहता था। उसने देखा कि पानी की भाप में इतनी शक्ति है कि वह भारी-भारी चीज़ों को हिला सकती है। उसने इसी बात को ध्यान में रखकर एक मशीन बनायी जो भाप की शक्ति से चले – जिसे आदमी या जानवरों की ताकत से चलाना न पड़े।
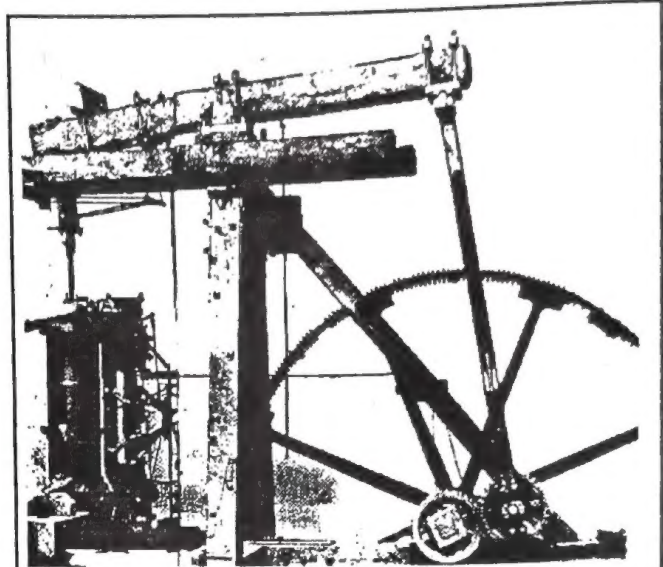
यह जेम्स वॉट का बनाया हुआ एक भाप मशीन का चित्र है। भाप के दबाव से लंबा डंडा ऊपर-नीचे होता रहता है और इससे चका भी घूमता है।

जेम्स ने अपना आविष्कार बोल्टन नाम के एक उद्योगपति को दिखाया। दोनों ने एक साझीदारी धंधा शुरू किया – बोल्टन भाप इंजिन बनाने के लिए ज़रूरी पैसे और जेम्स को मासिक वेतन देगा। जेम्स इंजिन बनाएगा। इंजिन के बेचने से जो मुनाफा होगा उसका दो तिहाई बोल्टन को और एक तिहाई जेम्स को मिलेगा। इस शर्त पर दोनों ने खूब सारे इंजिन बनाकर बेचे और मालामाल हो गए।

जब लोगों को पता चला कि मशीनों को चलाने के लिए भाप के इंजिन का उपयोग हो सकता है, तो हर तरह के काम के लिए ऐसी मशीनें बनती गयीं। सूत कातने, कपड़ा बुनने, लोहे की चीज़ें बनाने, गाड़ियां चलाने, जहाज़ चलाने आदि के लिए भाप के इंजिन का इस्तेमाल होने लगा।

अपने आप चलने वाली मशीनों की ज़रूरत क्यों पड़ी?

लोहे और कोयले की ज़रूरत

मशीनों से काम होना आम बात होने लगी थी। लेकिन मशीन बनाने के लिए अच्छे लोहे व इस्पात की ज़रूरत

थी। उन दिनों खनिज लोहे को गलाकर लोहा या इस्पात बनाना बहुत महंगा पड़ता था और फिर भी यह लोहा मज़बूत नहीं होता था। इसलिए इंगलैंड के वैज्ञानिक, कारीगर व उद्योगपति बेहतर व सस्ता लोहा बनाने में लगे। लोहा बनाने के तरीकों में कई नई खोजें हुयीं। सबसे महत्वपूर्ण खोजें थीं–

1. लोहा गलाने की भट्टी में जलाने के लिए लकड़ी या काठ कोयले की जगह पत्थर के कोयले का उपयोग होना। (पत्थर कोयला सस्ता था और उससे भट्टी के लिए अधिक गर्मी भी मिलती थी)

2. भाप इंज़िन की मदद से भट्टी में हवा देना ताकि अच्छे किस्म का इस्पात बने।

पत्थर के कोयले की मदद से अच्छा लोहा बनाना कुछ आसान हुआ। भाप के इंजिनों के लिए पानी गर्म करने के लिए भी यही कोयला काम में लिया जाने लगा।

इस तरह उन दिनों जो भी उद्योग लग रहे थे सब में बहुत मात्रा में कोयले का उपयोग होने लगा। इसके क्या-क्या कारण रहे होंगे, ऊपर के अंश को पढ़कर बताओ।

कोयले की खदान में बच्चे

कोयला खदानें

कोयले की मांग इतनी बढ़ी कि यूरोप में जगह-जगह कोयले की खोज की गई। वहां कोयले के बड़े-बड़े भण्डार मिले। जगह-जगह खदानें बनाई जाने लगीं। खदानों के मालिक मज़दूर तो लगाते ही थे पर उनके बच्चों से भी आधी मज़दूरी पर खदानों में काम करवाते थे। ऐसे निकले कोयले को सस्ते दामों में बेचकर खूब मुनाफा कमाते थे।

"इन खदानों में हम चार साल की उमर से काम कर रहे हैं। खदान में जहां कोयला कटता है वहां मज़दूर उसे बड़े-बड़े डिब्बों में भर देते हैं। हमारा क़ाम है, डिब्बों को ढकेलकर ऐसी जगह तक ले जाना जहां से घोड़े इन्हें खींचकर ले जा सकें। यह काम बहुत कठिन है– खदान के अन्दर पानी के बीच से, दलदल से और तेज़ ढलान पर से भारी डिब्बे खींचने में भयंकर थकान होती है। हमें दिन में 12 घंटे से ज़्यादा काम करना पड़ता है। जब घर लौटते हैं तो मारे थकान के तुरन्त सो जाते हैं– खाना भी नहीं खा पाते हैं। कल तो मैं रास्ते में ही गिरकर सो गया था– मेरी मां मुझे ढूंढकर घर उठाकर लाई।"

मानचित्र में यूरोप के छः देशों को पहचानो जहां कोयले के भण्डार हैं।

ऐसी कई जगहों की तो दुनिया ही बदलने लगी थी। जहां पहले खेत, गांव या जंगल थे वहां कोयला पाए जाने के बाद बड़ी-बड़ी खदानें, सैकड़ों मज़दूरों की बस्तियां और छोटे बड़े कारखाने पनपने लगे। सबसे पहले लोहा इस्पात बनाने के उद्योग कोयला खदानों के पास लगने लगे। उनको देखकर मशीनें, कपड़े आदि के उद्योग भी कोयला खदानों के इलाकों में लगने लगे। कोयला खदानों के आसपास तेजी से बड़े-बड़े औद्योगिक शहर बसते गए।

कारखाने

मशीनों के बनने के साथ उद्योगों में बहुत बदलाव आया। मशीनों से यह फायदा है कि इन पर कोई भी काम कर सकता है। बच्चे व औरतें भी इनको चला सकती हैं। अच्छे हुनर वाले कारीगरों की तो ज़रूरत ही नहीं रही। बच्चों व औरतों को कम वेतन देकर काम कराया जा सकता है।

मशीनें लगाने के लिए बहुत पैसों की ज़रूरत थी। ऐसी मशीनें साधारण कारीगर कहां लगा सकते थे? मशीनें तो बड़े धनी व्यापारी ही लगा सकते थे।

"हम रोज़ सुबह छः बजे काम पर आ जाते हैं और रात को साढ़े आठ बजे तक काम करते रहते हैं। बीच में सिर्फ एक घंटे के लिए खाने की छुट्टी मिलती है। हम इतना थक जाते हैं कि हमसे काम नहीं हो पाता। तब मालिक चाबुक मार-मारके हमसे काम कराता है।"

"आजकल रोज़ नई-नई मशीनें बनती हैं। नई मशीनें पुरानी मशीनों से ज़्यादा काम करती हैं और उनको चलाने के लिए कम लोग लगते हैं। हर नई मशीन लगने से हममें से कई लोगों की मज़दूरी छिन जाती है।"

इन मज़दूरों के पास कोई दूसरा रास्ता भी नहीं था। इनमें से बहुत से लोग तो ज़मीनों से बेदखल किए हुए किसान थे। कई ग़रीब कारीगर थे जिनका धंधा चौपट हो चुका था। धीरे-धीरे मज़दूरों ने खदानों व कारखानों के हालातों के खिलाफ लड़ने के लिए अपने संगठन बनाए। अधिक मज़दूरी, 14 घंटों की जगह 8 या 10 घंटे काम का समय, 14 साल से कम बच्चों को काम पर लगाने की मनाही– इन सब बातों के लिए वे लड़े और धीरे-धीरे सफल भी हुए।

मशीनों पर काम करने के लिए किन लोगों को लगाया गया?
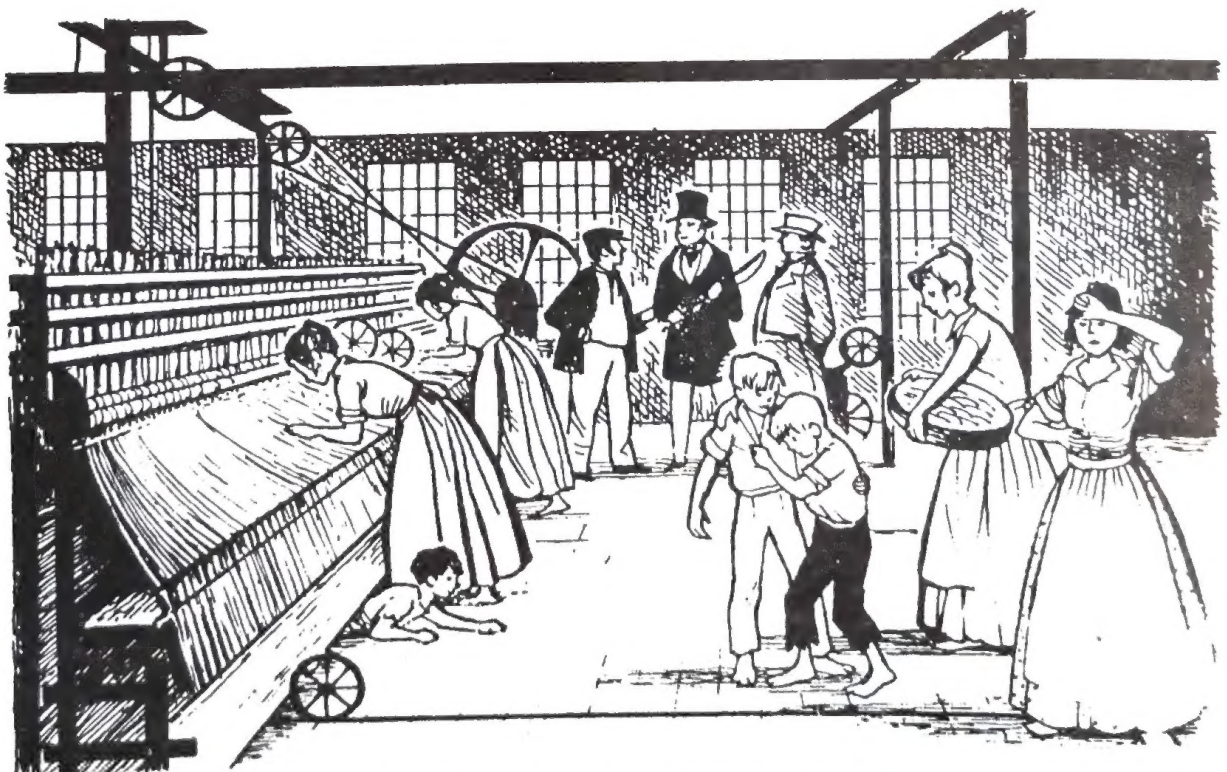
यह एक सूत कातने के कारखाने का चित्र है। क्या तुम इस चित्र में मालिक व मज़दूरों को अलग-अलग पहचान पा रहे हो? मालिक के हाथ में तुम्हें क्या दिख रहा है? वह उसका उपयोग क्यों करता होगा? मज़दूरों की हालत कैसी लग रही है?

मानचित्र 1 यूरोप के औद्योगिक प्रदेश
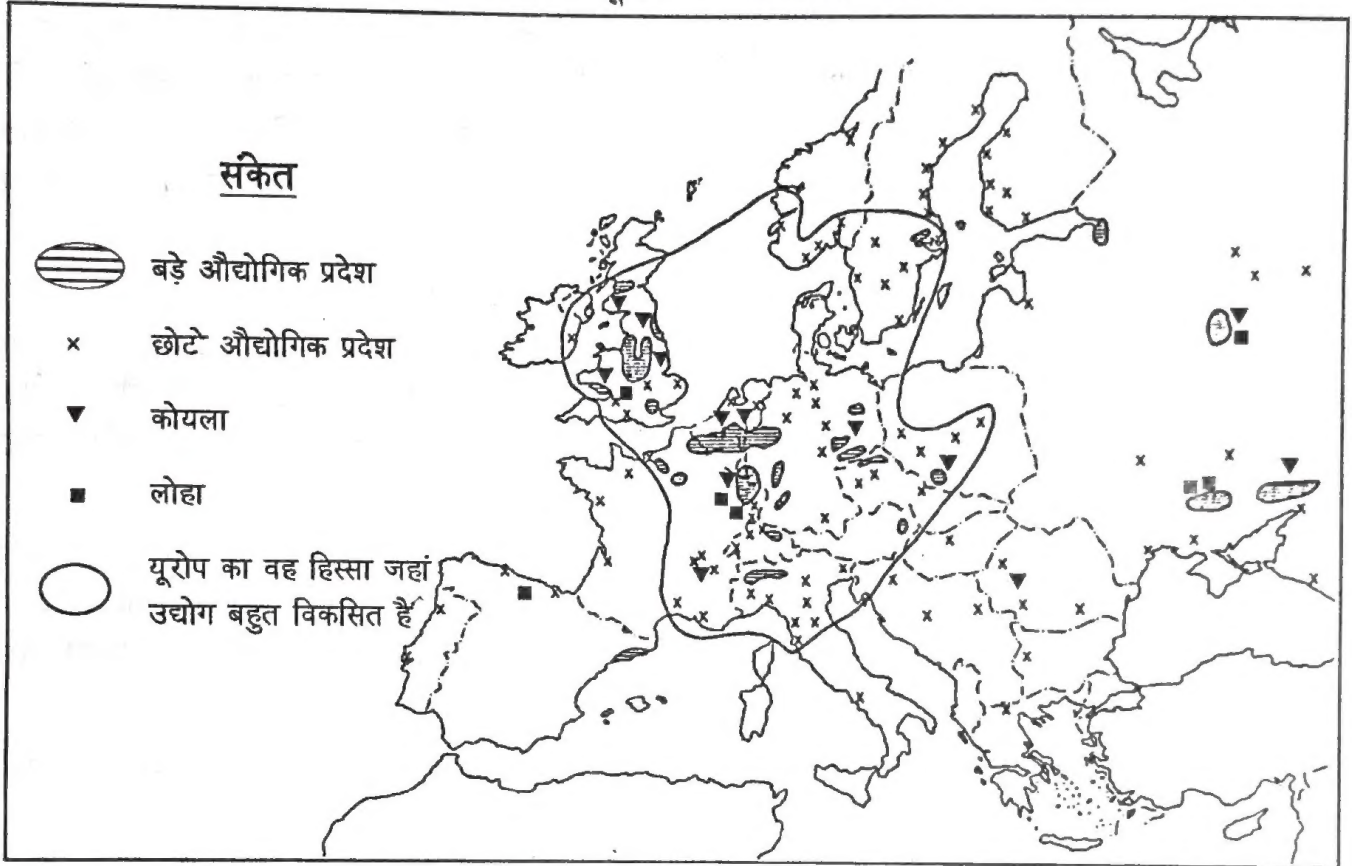
कारखाने कौन लोग लगा पाए?

क्या तुम आसपास के किसी कारखाने के बारे में जानते हो? अगर हां तो वहां के मज़दूरों के हालात और इंगलैंड के शुरू के कारखानों के मज़दूरों के हालातों की तुलना करो।

तुमने चमड़ा कमाने के कारखानों के बारे में भी पढ़ा होगा। उन मजदूरों के हालात पुराने समय के इंगलैंड के मज़दूरों से कैसे फर्क या समान हैं - चर्चा करो।

औद्योगिक माल का व्यापार

कारखानों में इतनी ज़्यादा मात्रा में सामान बनता था कि उसे इंगलैंड में ही बेच पाना संभव नहीं था। तो कारखानों के मालिक अपने माल को देश-विदेश में बेचने लगे। कारखानों में बना सामान सस्ता होता और साथ में टिकाऊ भी। इसलिए सब दूर ऐसे माल की मांग बढ़ी। इससे इंगलैंड के उद्योगों को और बढ़ावा मिला। लेकिन इसमें एक मज़ेदार बात भी है। यह सब सामान बनाने के लिए कच्चा माल इंगलैंड में नहीं होता था। जैसे कपड़ों के लिए कपास भारत और अमेरिका में होता था। इंगलैंड के व्यापारी भारत और अमेरिका से कपास खरीदकर इंगलैंड के कारखानों के मालिकों को बेचने लगे, फिर कारखानों में बने कपड़ों को वे भारत, अमेरिका और अन्य देशों में बेचने लगे।

अपने व्यापार और उद्योगों की ज़रूरत के लिए यूरोपियनों ने दूसरे देशों में अपने राज्य बनाने की कोशिशें कीं। इंगलैंड ही नहीं, फ्रांस, हॉलैंड, बेल्जियम, पुर्तगाल, जर्मनी व स्पेन देशों ने अमेरिका, अफ्रीका, एशिया और आस्ट्रेलिया महाद्वीपों में अपने-अपने राज्य बनाए। इसकी कहानी तुम आगे पढ़ोगे। दूसरे महाद्वीपों पर बने अपने

राज्यों से यूरोपीय देशों ने अपने उद्योग व व्यापार के लिए बहुत फायदे लूटे। इससे धीरे-धीरे यूरोप के देश धनवान होते गए। तो यह है इतिहास यूरोप के उद्योग धंधों में आगे बढ़ जाने का।

इंगलैंड के उद्योगपति दूसरे देशों से ———— अपने यहां मंगवाते और उन देशों में ———— बेचते थे।

इंगलैंड के सूती कारखानों के लिए कपास ——— और ———— से आता था।

आज यूरोप के अधिकांश लोग उद्योगों में काम करते हैं और शहरों में रहते हैं। जबकि अपने देश में ऐसा नहीं है। यूरोप की खेती भी ज़्यादातर मशीनों की सहायता से ही होती है और उसमें ज़्यादा लोग नहीं लगते।

एक बात खास ध्यान देने की है। यूरोप के उद्योग अब सिर्फ कोयला खदानों के पास नहीं बने हैं। समय के साथ-साथ मशीनें चलाने के लिए दूसरे साधनों की खोज होती गई—जैसे, पेट्रोल, डीज़ल और बिजली। धीरे-धीरे इन साधनों से कारखाने चलने लगे। इस वजह से पिछले 30-40 सालों में कोयले की मांग गिरने लगी है।

कई नए कारखाने बन्दरगाहों के पास लगाए गए हैं क्योंकि यहां से देश-विदेश से व्यापार करना आसान है। इस तरह नए औद्योगिक क्षेत्र भी बने हैं। मज़दूरों के काम के हालातों में भी पहले के दिनों से काफी अन्तर आया है।

आज यूरोप की खदानों या कारखानों में बच्चों से काम नहीं करवाया जाता है। मज़दूरों के काम का समय भी काफी कम हुआ है, वे हफ्ते में कुल पांच दिन और प्रतिदिन 6 से 8 घंटे ही काम करते हैं। उन्हें वेतन भी इतना मिलता है कि सुविधा से जी सकें।

लेकिन आज भी यूरोप में बेरोजगारी की समस्या मौजूद है। इंगलैंड में 100 में से 10 लोगों के पास रोजगार नहीं है। सरकार की तरफ से बेरोजगारी भत्ता लोगों को दिया जा रहा है।

आओ अगले पाठ में यूरोप के एक महत्वपूर्ण देश फ्रांस को विस्तार से जानें।

अभ्यास के प्रश्न

1. इंगलैंड में नई-नई मशीनों की खोज क्यों की गई?
2. उद्योगों की शुरुआत में पत्थर के कोयले और लोहे का बहुत महत्व था। ऐसा क्यों - समझाओ।
3. कारखाने लगाने के लिए यूरोप के व्यापारियों को धन कैसे मिला था?
4. क) कारखानों के लगने से पुराने कारीगरों पर क्या असर पड़ा? ख) नई मशीनें लगने से कारखानों के मज़दूरों पर क्या असर पड़ा?
5. दूसरे देश के लोग इंगलैंड के कारखानों में बना माल क्यों खरीदने लगे?
6. यूरोप के लाग दूसरे देशों पर राज्य क्यों बनाने लगे?
7. शुरू में यूरोप में कारखाने किस तरह के इलाकों में लगे? आजकल कारखाने दूसरे इलाकों में भी लगने के क्या कारण तुम सोच सकते हो?

8. फ्रांस

यूरोप का एक देश है फ्रांस। इसकी राजधानी पेरिस, संसार में अपनी खूबसूरती के लिए प्रसिद्ध है। चौड़ी सड़कें, किनारे फूलों की क्यारियां व पेड़ों की कतारें, बीच-बीच में फव्वारे, रंग-बिरंगी बिजलियां, चौराहों के बीच खूबसूरत मूर्तियां, देखते ही बनती हैं। पेरिस सीन नदी के दोनों किनारों पर बसा है। इस पर आने जाने के लिए कई पुल बने हैं। यहां लोहे की एक विशाल मीनार है, इस पर चढ़ो तो चारों ओर पेरिस बसा हुआ दिखता है।
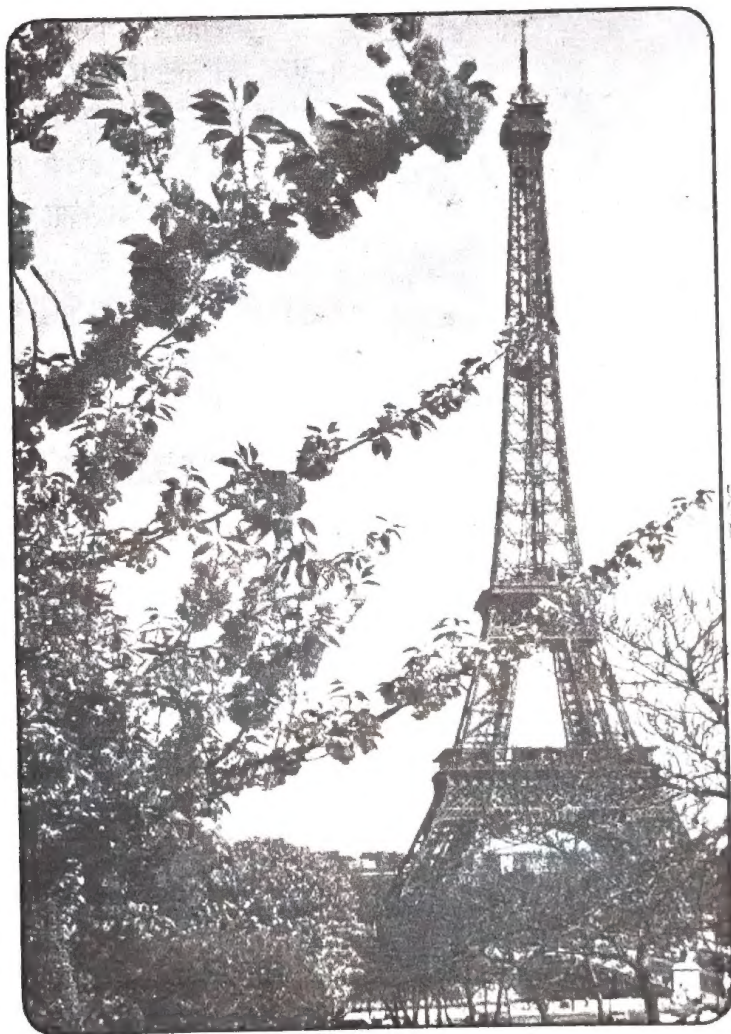
मानचित्र में देखो और बताओ यूरोप में फ्रांस कहां पर है? वह किन सागरों से घिरा है?

सागरों से घिरे होने से फ्रांस को क्या लाभ है? यूरोप के अध्याय की याद करो और बताओ।

फ्रांस की सीमा कई देशों से जुड़ी है। यूरोप का मानचित्र देखकर उन देशों के नाम बताओ।

चित्र-2 फ्रांस के एक बंदरगाह का दृश्य। ऐसे छोटे-बड़े अनेक बन्दरगाह फ्रांस के तट पर हैं। ये जहाज़ सागर से मछली पकड़ने के काम आते हैं। वैसे तो फ्रांस के जहाज़ चारों ओर के समुद्रों में मछलियां पकड़ने जाते हैं, लेकिन उत्तरी सागर में बहुतायत से मछलियां मिलती हैं

फ्रांस की बनावट तथा नदियां

तुमने यूरोप के पहाड़, पठार, मैदान तथा नदियों के बारे में पढ़ा था। उनमें से कौन से फ्रांस में हैं? मानचित्र 1 देखो।

पहाड़

मैदान

पठार

नदियां

फ्रांस के प्रमुख कृषि प्रदेश मानचित्र 1 में दिखाए किन हिस्सों में होंगे?

फ्रांस में पशुपालन नक्शे में दिखाए किन हिस्सों में होता होगा? ऐसे हिस्सों में खेती क्यों नहीं हो सकती?

जलवायु

हल्का जाड़ा और सालभर वर्षा

तुम जानते हो कि यूरोप में अपने देश के समान गर्मी नहीं पड़ती। जाड़े का मौसम लम्बा और कठिन होता है। लेकिन फ्रांस में पूर्वी देशों, जैसे पोलेण्ड और रूस के समान कठिन जाड़ा नहीं होता।

यूरोप के बारे में पढ़ी बातों को याद करके तुम सोच सकते हो कि ऐसा क्यों है? तुम यह भी जानते हो कि यहां साल भर पछुआ हवाएं चलती हैं। ये भाप भरी होती हैं। इनसे साल भर पानी बरसता रहता है। थोड़े समय धूप निकलती है, फिर बादल घिर जाते हैं, रिमझिम पानी बरसता है, फिर आकाश खुल जाता है। लेकिन साल भर एक बराबर वर्षा नहीं होती है। जाड़े के महीनों में वर्षा कुछ अधिक होती है। जाड़े में बादल भी बराबर रहते हैं। बीच-बीच में बर्फ गिरती है। ठंड के कारण वर्षा का पानी जल्दी सूखता नहीं है और हवा में नमी बनी रहती है।

साल भर वर्षा उन जगहों पर भी होती है जो भूमध्य रेखा के पास हैं। जैसे इंडोनेशिया और अफ्रीका के बीच के हिस्से। पर फ्रांस में इंडोनेशिया जैसी वर्षा नहीं होती। इंडोनेशिया में रोज़ बहुत बादल घिर जाते हैं और रोज़ घनघोर वर्षा करते हैं जबकि फ्रांस में साल भर रिमझिम हल्की वर्षा होती रहती है।

फ्रांस की ऐसी दो बातें बताओ जो अपने प्रदेश (मध्य प्रदेश) के मौसम से फर्क हैं?

फ्रांस के चार मौसम और खेती-बाड़ी

अपने देश में तो तीन मौसम होते हैं। लेकिन यूरोप के सभी देशों के समान फ्रांस के चार मौसम होते हैं। जाड़ा, बसंत, गर्मी और पतझड़। मौसम के अनुसार यहां चारों ओर का दृश्य बदलता रहता है और खेती के कामकाज भी बदलते जाते हैं। चित्रों में इन मौसम के दृश्य देखो।

जाड़ा: नवंबर आते-आते यहां जाड़ा बढ़ने लगता है।

मानचित्र 1 फ्रांस की प्राकृतिक बनावट
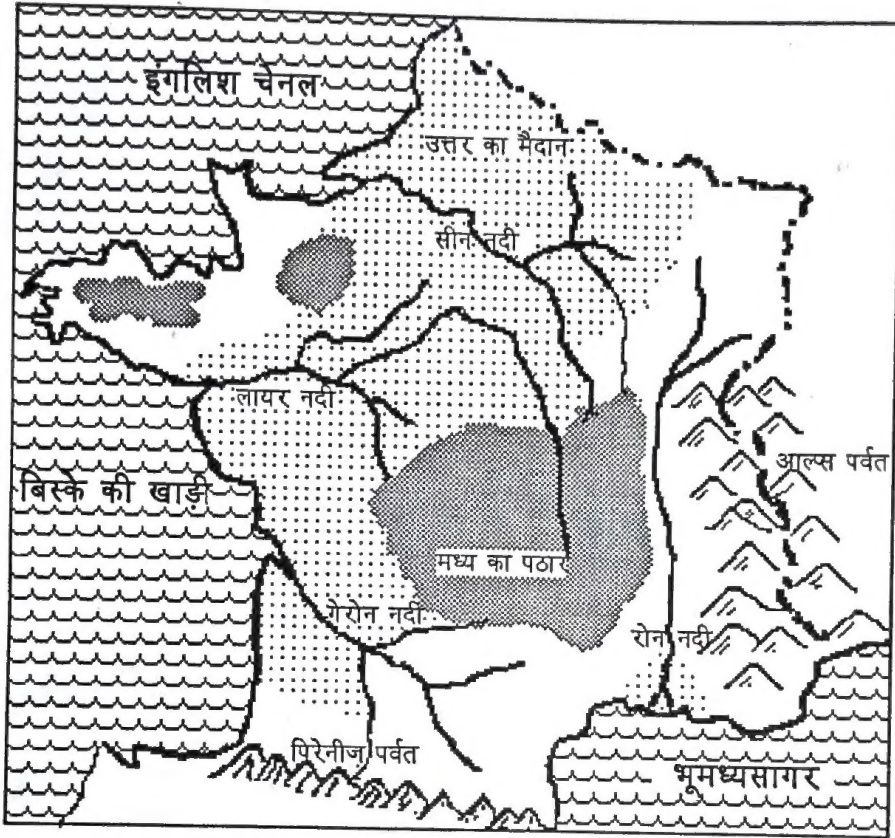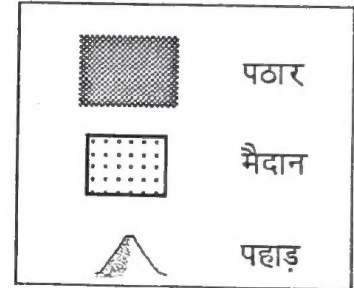
दिसंबर से तो कड़ा जाड़ा होता है। बीच-बीच में बर्फ गिरती है। मैदानों की तुलना में पहाड़ों पर अधिक बर्फ गिरती है। रिमझिम पानी बरसता रहता है। बादल घिरे रहते हैं। धूप तो कभी-कभी निकलती है। सूरज 8-9 बजे निकलता है और पांच बजे के लगभग डूब जाता है। बादलों के कारण और भी अंधेरा रहता है।

फ्रांस में चौड़ी पत्ती के वे पेड़ होते हैं जो ठंडे प्रदेशों में उगते हैं। ये चौड़ी पत्ती के पेड़ जाड़े भर ठूंठ जैसे खड़े रहते हैं-सिर्फ तने और डालियां, एक भी पत्ती नहीं।

तुमने इन पेड़ों के बारे में किस देश में पढ़ा था?

जाड़े में जानवरों को बाड़ों में रखना पड़ता है, वे ठंड के कारण खुले में नहीं रह सकते। वहीं उन्हें चारा देना होता है। इसीलिए यहां के किसानों को जाड़े के लिए चारा इकट्ठा करके रखना होता है। जाड़े में बर्फ पड़ने के कारण भी जानवरों को बाहर की खुली हवा नहीं मिल पाती।

ऐसे जाड़े में कोई फसल नहीं हो सकती है और यहां जाड़े भर अधिकतर खेत खाली पड़े रहते हैं।

अपने देश में किस मौसम के लिए चारा इकट्ठा करके रखना होता है?

क्या अपने देश में भी जाड़े में खेती का काम नहीं होता?

तुम्हारे आसपास जाड़े में कौन सी फसलें होती हैं? वे फसलें फ्रांस में जाड़े के मौसम में क्यों नहीं हो सकतीं?

बसंत ऋतु: मार्च आने पर फ्रांस में दृश्य बदलने लगता है। दिन लम्बा और जाड़ा कम होने लगता है। बादल भी कम होने लगते हैं और धूप अधिक देर रहती है। पेड़ों में पत्तियां फिर फूटती हैं, नये लाल-लाल पत्ते फिर निकलते हैं, तरह-तरह के रंग-बिरंगे फूल खिलते हैं, नई घास निकलती है।

चित्र-3 जाड़े में नदी

चित्र-4 बसंत में फूलों की बहार

चित्र-5 जाड़े में बर्फ और पेड़

बसंत ऋतु में खेत जोते जाते हैं, किसान खेतों में खाद देते हैं और बोवाई की जाती है। यहां की मुख्य फसलें गेहूं, ओट्स, राई नामक अनाज, जौ, मक्का, तथा चुकन्दर हैं।

बताओ इनमें से कौन सी फसलें अपने प्रदेश में होती हैं?

गेहूं यहां का मुख्य अनाज है। फ्रांस के उन हिस्सों में जहां बहुत बर्फ नहीं गिरती, जाड़ा आने के पहले गेहूं बो दिया जाता है। इसके छोटे पौधे भी निकल आते हैं। जाड़े भर उसकी बढ़वार अधिक नहीं होती उन पर हल्की बर्फ गिरती रहती है, पिघलती रहती है। लेकिन पौधों की जड़ें मज़बूत हो जाती हैं। बसंत ऋतु में गेहूं के पौधे तेज़ी से बढ़ते हैं। जाड़े के इस गेहूं से पैदावार अधिक होती है।

गेहूं के अलावा फ्रांस में उगनेवाले राय अनाज की डबल रोटी बनती है। राई का दाना लंबा होता है। ओट्स दलिये की तरह खाया जाता है और जानवरों को भी दिया जाता है। जौ की शराब बनाई जाती है। यहां गन्ना होता नहीं है लेकिन चुकन्दर होती है। चुकन्दर से यहां शक्कर बनाते हैं और बचे हुए गूदे को जानवरों को खिलाते हैं।

फ्रांस की एक महत्वपूर्ण फसल है अंगूर। अंगूर की बेलें खेतों में लगाई जाती हैं। इनमें गर्मी में पत्ते निकलते हैं, फूल आते हैं। फिर गर्मी भर अंगूर के गुच्छे लटकते दिखते हैं। यहां अंगूर की कई किस्में होती हैं, कुछ खाने के लिए और अन्य शराब बनाने के लिए।

गर्मी की ऋतुः जून, जुलाई, अगस्त यहां गर्मी का मौसम होता है। तब वर्षा कुछ कम होती है, धूप अधिक निकलती है। दिन भी लम्बा होता है। सूरज पांच बजे निकल आता है फिर शाम आठ बजे तक डूबता है। फिर भी गर्मी का मौसम यहां इतना ठंडा होता है कि जैसा अपना जाड़े का मौसम होता है।

इस तरह का गर्मी का मौसम खेती का मौसम होता है। फसलें इस समय बढ़तीं और पकतीं हैं। यहां फसलों को सींचना नहीं पड़ता, बीच-बीच में होने वाली वर्षा से उन्हें पानी मिलता रहता है। किसान अपनी घरेलू ज़रूरतों के लिए अवश्य नलकूप लगाते हैं। गर्मी खत्म होते-होते फसलें काट ली जाती हैं और अंगूर तोड़ा जाता है।

अपने देश में रबी और खरीफ की दो फसलें होती हैं। फ्रांस तथा यूरोप के अन्य देशों में खेती की एक ही फसल होती है। अपने देश में 9-10 महीने खेती का काम चलता रहता है जबकि यूरोप के देशों में 6-7 महीने ही खेतों में काम हो पाता है।

पतझड़ का मौसमः सितम्बर-अक्टूबर में यहां फिर मौसम बदलने लगता है, पेड़ों के पत्ते पीले पड़कर झड़ने लगते हैं। (चित्र 5) खेतों का काम निपटाया जाता है। कई बार खेतों में इतना काम होता है कि उसे निपटाने शहरों से विद्यार्थी भी जाते हैं।

इस समय अंगूर की फसल पक कर आती है। इन अंगूरों का पहले रस निकाला जाता है। फिर इसकी शराब बनाई जाती है। फ्रांसीसी शराब दुनिया भर में प्रसिद्ध है। फलों के अचार व मुरब्बे बनाए जाते हैं।

फ्रांस की कुछ अन्य फसलें

अंगूर के अलावा फ्रांस में कई फल जैसे स्ट्रॉबेरी, चेरी, खूबानी, आलू बुखारा, आडू, सेब भी खूब होते हैं। (चित्र-9) यहां इन फलों के पेड़ों के बाग लगाए जाते हैं। इन पेड़ों में बसंत ऋतु में जब सफेद, गुलाबी फूल लगते हैं तब बड़ा सुन्दर दृश्य होता है। (चित्र 4)

अपने यहां मार्च-अप्रैल में शिमला या नैनीताल (हिमालय के नगरों) में इन फलों के बगीचों को फूलते देख सकते हैं। मई-जून में ये फल खाने को मिलते हैं। दरअसल ये फल ठंडी जलवायु में ही होते हैं - गर्म देशों में नहीं होते हैं। भारत जैसे गर्म देशों में आम, अमरूद और केला जैसे फल होते हैं। लेकिन ये फल फ्रांस जैसे ठंडे देशों में नहीं होते।

हिमालय के ऊंचे भागों में यूरोप जैसे फल क्यों होते हैं?

फ्रांस के दक्षिणी हिस्से, उत्तरी फ्रांस की तुलना में ज़्यादा गर्म रहते हैं। इसलिए यहां कुछ फसलें ऐसी होती हैं जो उत्तर में नहीं होतीं।
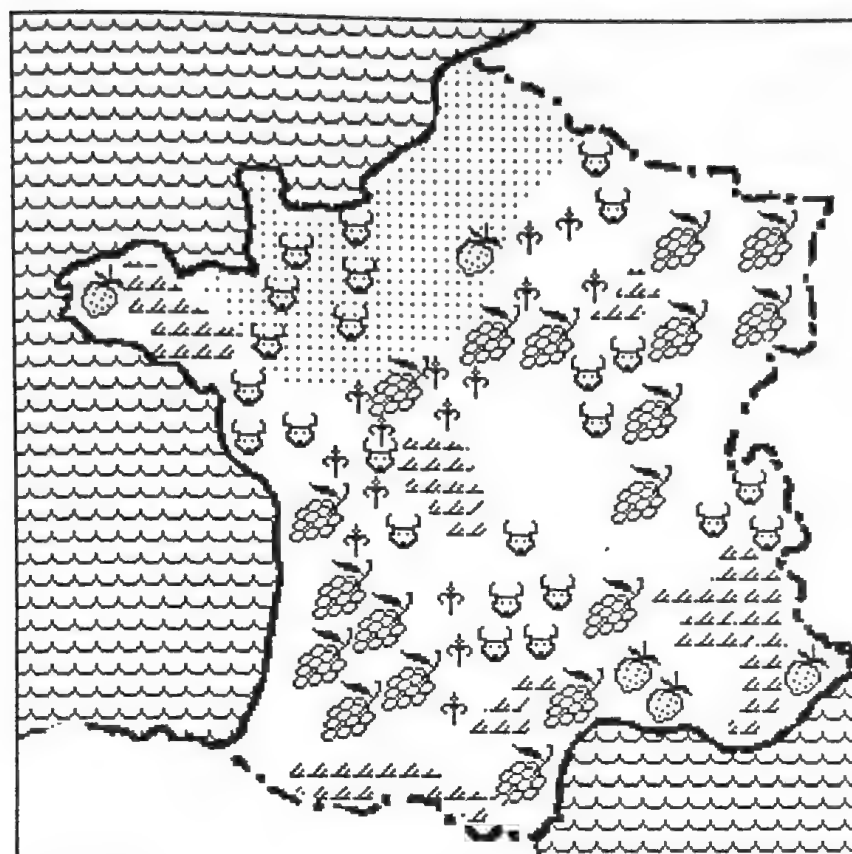
मानचित्र 2 फ्रांस की फसलें

जैतून (ऑलिव): फ्रांस के दक्षिणी हिस्से, विशेषकर सागर के निकट, जैतून खूब लगाए जाते हैं। ये पेड़ अधिकतर पथरीले ढलवे हिस्सों पर लगाए जाते हैं। ऐसी भूमि पर और कोई फसल तो हो भी नहीं पाती। जैतून का तेल निकाला जाता है जो खाने के काम आता है।

दक्षिणी फ्रांस में नीबू, नारंगी, संतरा आदि फल भी बहुत होते हैं। खाने के अलावा इनका मुरब्बा और अचार भी बनता है।

पशुपालन और चारे की फसलें

फ्रांस में पशुपालन खेती का महत्वपूर्ण अंग है। लेकिन अपने देश की तरह खेतों का काम करने, फसल को लादकर घर और बाज़ार ले जाने के लिए यहां पशुओं की अब आवश्यकता नहीं है। पहले ज़रूर यहां हल खींचने का काम घोड़े करते थे लेकिन अब यह सब काम मशीनों और ट्रैक्टरों से होता है।

गायें यहां दूध, मक्खन, पनीर आदि के लिए पाली जाती हैं। दूध को फाड़ कर खमीर उठाकर, पनीर बनाई जाती है जो गुड़ की तरह चक्कों में जमाई जाती है। पनीर फ्रांस में भोजन का आवश्यक हिस्सा है। दूध और मक्खन की भी यहां बहुत खपत है। यहां अधिक दूध देनेवाली अच्छी नस्ल की गाएं पाली जाती हैं। सुअर और बैल-गाय यहां मांस के लिए भी पाले जाते हैं। मांस के लिए पाली जाने वाली गायों की नस्लें अलग होती हैं। यहां के लोग मांस खूब खाते हैं, इसलिए मांस का भी बड़ा बाज़ार है। पठारी व पहाड़ी हिस्सों में भेड़ और बकरी यहां भी पाली जाती हैं। भेड़ से ऊन भी मिलता है। और इन जानवरों का मांस भी यहां के भोजन का अंग है।

चित्र-6 मुलायम घास चरते भेड़

चित्र-7 गोदाम में पनीर

जब यहां पशुओं से मिलने वाले भोजन की इतनी मांग है तो पशुओं के पालने के लिए सुविधा क्या है? तुमने अभी पढ़ा कि यहां थोड़े-थोड़े दिन बाद वर्षा होती रहती है। ठंडा मौसम होता है। तो यहां घास बराबर उगती रहती है। घास हरी, मुलायम और रसीली होती है।

तुम जानते हो कि जानवर सिर्फ घास खाकर नहीं रहते। फ्रांस में उनके चारे के लिए भी कई फसलें बोई जाती हैं। जैसे अपने यहां बरसीम घास लगाई जाती है। फ्रांस में बंद गोभी, ओट्स, टर्निप, मक्का, जौ आदि भी जानवरों को खिलाया जाता है। शक्कर निकालने के बाद चुकन्दर का गूदा भी खिलाया जाता है।

फ्रांस के फार्म

फ्रांस के अधिकतर खेतिहर प्रदेशों में किसान बड़े गांवों में नहीं रहते। अधिकतर जोत 50-100 एकड़ या उससे बड़े होते हैं। यूरोप के अन्य देशों में भी इन बड़ी जोतों को फार्म कहते हैं। अपनी जोत पर ही किसान घर बनाकर रहते हैं। इससे उन्हें खेती का काम करने में सुविधा होती है। अधिकतर मकान जिन्हें फार्म हाउज़ कहते हैं कई कमरे के काफी बड़े घर होते हैं। पास ही फार्म में काम करने वाले नौकरों के घर होते हैं। जानवरों को रखने के शेड, चारा जमा करने के बड़े गोदाम, कृषि मशीनें रखने के शेड, मुर्गी आदि के बाड़े भी फार्म में ही होते हैं।

ये बड़े किसान अपने खेतों में मज़दूरों से काम करवाते हैं। खेतों का काम ट्रैक्टर तथा हारवेस्टर जैसी मशीनों से होता है। अधिकतर उपज मंडी में बेच दी जाती है। बड़ी मशीनें किसान आसपास की सहकारी समितियों से भी ले लेते हैं।

पता करो क्या तुम्हारे गांव में लोग ट्रेक्टर, दावन मशीन एक दूसरे से लेते हैं?

क्या तुम्हारे गांव के जानवरों का दूध पास के शहर में बिकने जाता है? या कोई सहकारी समिति खरीदती है?

फ्रांस में बड़ी जोत और मशीनें होने के कारण अधिकतर किसानों की आय अच्छी होती है। इनके घरों में सुख-सुविधा के सभी प्रबंध होते हैं। ये किसान अच्छा खाते और पहनते हैं। अधिकतर बिजली व गैस के चूल्हे जलाते हैं। पहले तो सभी किसानों के घरों में तंदूर में डबलरोटी पकती थी। लेकिन अब आसपास के छोटे नगरों से डबलरोटी जैसी तरह-तरह की रोटियां बनकर आती हैं। किसान गेहूं तो सब बेच देते हैं- खाने के लिए डबलरोटी दुकान से रोज़ खरीदते हैं।

मांस, जो फ्रांस के लोगों का प्रमुख भोजन है, फार्म की मुर्गी, सुअर या गाय-बैल को मारकर मिल जाता है। फिर मांस को धुंआ देकर या सुखा कर खाल आदि में बांध कर खाने के लिए रख लेते हैं।

चित्र-8 फ्रांस का एक परंपरागत घर

पहले सभी घरों में एक तल-घर होता था जिसमें किसान अपने उपयोग की शराब, मांस, पनीर आदि भंडार करते थे। अब बहुत से फार्म घरों में रेफ्रीजिरेटर आ गये हैं जो बिजली से चलते हैं और ठंड के कारण उनमें रखी चीज़ें खराब नहीं होतीं।

फ्रांस के किसानों को औज़ार और मशीनों के पुर्ज़े आदि निकट के शहर से लाने होते हैं। फार्मों के पास के छोटे-बड़े नगरों में ज़रूरत की सभी चीज़ें मिल जाती हैं। इन फार्मों के बच्चे आसपास के नगरों में पढ़ने चले जाते हैं। फ्रांस में बिना पढ़े-लिखे लोग बहुत कम हैं।

आधुनिक खेती

यूरोप के देशों में जैसे उद्योग, परिवहन आदि विकसित हैं वैसे ही कृषि का भी खूब विकास हुआ है। अब आधुनिक ढंग से खेती होती है। उन्नत बीज, रासायनिक खाद, कीटाणुनाशक दवाएं आदि का उपयोग यहां बहुत पहले से होता रहा है। हम लोग आधुनिक खेती को "हरित क्रांति" कहते हैं। यह हरित क्रांति फ्रांस में लगभग 100 साल पहले आ गई थी। वहां श्वेत क्रांति भी हुई। जानवरों की नस्लों का सुधार किया गया है,उनको अच्छी खुराक दी जाती है। इसलिए आजकल वहां गाएं अपने देश की गायों से कई गुना अधिक दूध देती हैं।

खनिज और उद्योग

मानचित्र 3 में देखो फ्रांस में कौन से खनिज निकाले जाते हैं?

जर्मनी या ग्रेट ब्रिटेन के समान यहां तरह-तरह के खनिजों के भंडार तो नहीं हैं। फिर भी यहां कोयला और लोहे का अयस्क या कच्चा लोहा तो मिलता है। तुमने यूरोप के बारे में पढ़ा था कि जहां कोयला और लोहा पास पास मिला वहां लोगों ने लोहा व इस्पात उद्योग स्थापित किया था। इस इस्पात से कई और मशीनें और सामान बनाने लगे। फ्रांस में क्या-क्या चीज़ें बनती हैं, मानचित्र 3 में देखो।

क्या यह सब उद्योग पूरे देश में फैले हैं या कुछ विशेष हिस्सों में ही लगे हैं?
ध्यान से देखो तो पाओगे कि उत्तरी तथा उत्तरी-पूर्वी फ्रांस में बहुत से उद्योग हैं। यहां कौन से खनिजों के क्षेत्र हैं?

उत्तरी-पूर्वी फ्रांस

यहां कपड़ा बनाने की बहुत पुरानी परम्परा है। जब ऊनी व सूती कपड़ा बनाने की मशीनें बनी थीं तब फ्रांस में भी कपड़ा मशीनों से बनने लगा और कई कारखाने लग गए। आज भी यह प्रदेश कपड़ा उद्योग के लिए जाना जाता है।

मानचित्र 3 फ्रांस के उद्योग
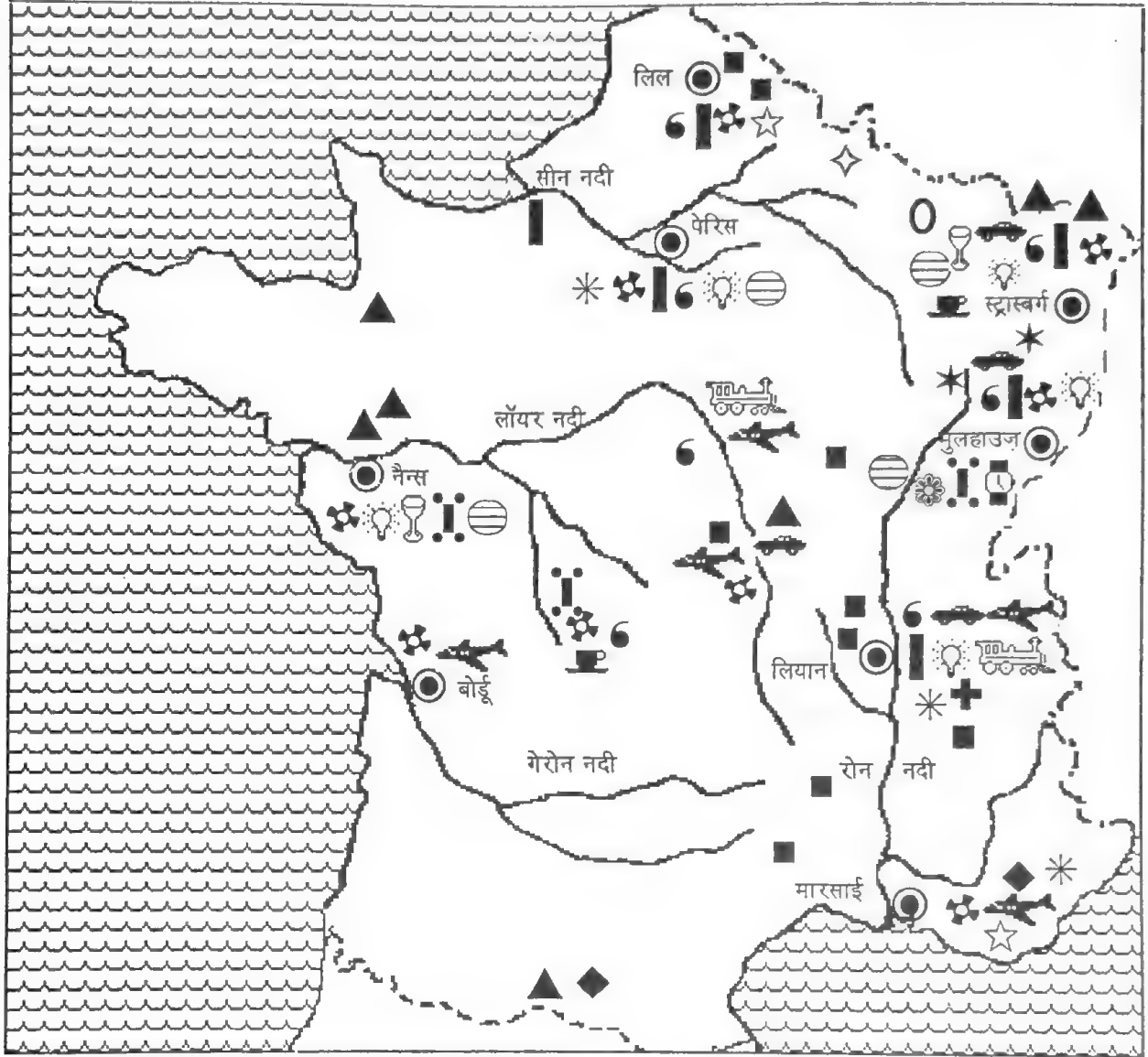
◉	शहर		मोटर गाड़ी		बिजली का सामान
■	कोयला	✳	इत्र		काँच का सामान
▲	लोहा	O	रबर का सामान		चीनी मिट्टी का सामान
◆	अल्यूमीनियम खनिज		वायुयान		रेलवे का सामान
	इंजीनियरिंग	☆	प्लास्टिक		ऊनी कपड़ा
	इस्पात		लोहे का सामान	✶	सूती कपड़ा
	रसायन		घड़ी	✚	रेशमी कपड़ा
	चमड़ा				पोशाक

ऊनी कपड़ा फ्रांस बनाता है यह तो ठीक है- फ्रांस में भेड़ें पाली जाती हैं जिनसे मिली ऊन से उत्तरी-पूर्वी फ्रांस में ऊनी कपड़ा बनता है। लेकिन सूती कपड़ा कैसे? फ्रांस की खेती के बारे में तुमने पढ़ा। क्या उसमें तुमने कपास की खेती की बात पढ़ी थी? नहीं न? तो फ्रांस कपास विदेशों से मंगाकर सूती कपड़ा बनाता है। तुम पूछोगे वह क्यों? वो लोग सूती कपड़ा पहनते हैं, पर्दे और चादरें भी इस्तेमाल करते हैं तो कपड़ा मंगाने के बजाय फ्रांस कपास मंगाकर सूती कपड़ा बनाता है। कुछ कपड़ा विदेशों के बाज़ार में भी जाता है। समुद्र के निकट होने के कारण कपास मंगाने में सरलता भी होती है।

पेरिस

फ्रांस में कुछ केन्द्र ऐसे भी हैं जहां खनिज तो नहीं हैं फिर भी उद्योग लगे हैं, उनमें से प्रमुख है वहां की राजधानी पेरिस और उसके पास का प्रदेश।

मानचित्र 3 देखकर बताओ यहां कौन से उद्योग लगे हैं?

यहां खनिज तो कोई नहीं है, कोयला भी नहीं मिलता फिर उद्योग कैसे लगे हैं? पेरिस बहुत बड़ा शहर है, बड़ा व्यापारिक केन्द्र है, चारों ओर सड़कें, रेलमार्ग, बन्दरगाह और सामान को भेजने की भी सुविधा है। पेरिस शहर एक बन्दरगाह भी है। तो यहां की बनी मशीनें, बिजली का सामान, कारें, वैज्ञानिक यंत्र, देश में तथा देश के बाहर बेचने में बहुत आसानी है। इसीलिए यहां इतने सारे उद्योग लगे हैं। पेरिस में विदेश के भी बहुत लोग आते हैं। यहां सिले हुए कपड़े खरीदते हैं। पेरिस इत्र तथा सौंदर्य प्रसाधन और चमड़े का सामान बनाने का भी पुराना केन्द्र है। यहां की बनी ये सब चीज़ें संसार भर में प्रसिद्ध हैं।

मध्य फ्रांस

ये तो हुए फ्रांस के दो बड़े औद्योगिक क्षेत्र। मानचित्र को देखो, फ्रांस के और भागों में भी उद्योग लगे हैं। मध्य फ्रांस में जहां कोयला भी मिलता है, कई उद्योग लगे हैं। मध्य फ्रांस में कोयले के मिलने के कारण ईंधन की सुविधा तो है ही, देश के मध्य में स्थित होने के कारण बने हुए माल को बाज़ारों को भेजना भी आसान है।

भूमध्यसागरी तटीय प्रदेश

मार्साई नगर देखो, किस समुद्र के किनारे है?

यह फ्रांस का बड़ा बन्दरगाह तो है ही, खास बात यह है कि भूमध्यसागर पर होने के कारण सामान को लाने ले जाने की बड़ी सुविधा है।

भूमध्यसागर के तट पर उद्योगों को लगाना भी आसान है। कुछ उद्योग तो यहां के कृषि उत्पादन पर आधारित हैं जैसे जैतून का तेल निकालना, रेशम का कपड़ा बनाना, शक्कर बनाना। फिर कुछ उद्योग धातुओं पर आधारित हैं जैसे जहाज़, मशीनें, यंत्र, इंजन आदि बनाना।

उद्योग उन जगहों पर लगाए जाते हैं जहां उनको लगाने की सुविधाएं मिलती हैं। फिर चारों ओर उद्योगों में काम करने वाले लोग बस जाते हैं। यही कारण है कि औद्योगिक प्रदेशों में घनी आबादी मिलती है। फ्रांस में भी जहां उद्योग लगे हैं, वहां घनी आबादी है। ऐसे प्रदेशों में बहुत से नगर भी हैं जहां इन उद्योगों में काम करने वाले लोग रहते हैं।

फ्रांस के औद्योगिक क्षेत्र का नक्शा देखकर बताओ कि वहां कौन से महत्वपूर्ण नगर बसे हैं?

•••••••••••••••

अभ्यास के प्रश्न

1. फ्रांस को तीनों ओर के सागर से क्या लाभ है?
2. फ्रांस के किस हिस्से में विस्तृत मैदान है? उसमें कौन सी नदी बहती है?
3. फ्रांस की मुख्य फसलें बताओ। यहां जाड़े में अधिकतर भाग में खेती क्यों नहीं होती ?
4. चुकन्दर, जैतून, अंगूर की फसलों से फ्रांस में क्या-क्या बनाया जाता है?
5. फ्रांस में पशुपालन के लिए प्रकृति से क्या सुविधा मिली है? घास के अलावा पशुओं को क्या चारा दिया जाता है?
6. हरित क्रांति व श्वेत क्रांति किसे कहते हैं? चार-पांच वाक्यों में लिखो।
7. पेरिस क्षेत्र में कौन से मुख्य उद्योग हैं? वहां विदेशी यात्रियों के आने से उद्योगों को क्या लाभ है?
8. उत्तरी-पूर्वी प्रदेश में कौन से खनिज मिलते हैं? वहां पर लगे मुख्य उद्योगों के नाम बताओ।
9. भूमध्य सागर के तट पर फ्रांस का कौन-सा औद्योगिक व व्यापारिक नगर है? वहां के उद्योगों के लिए कौन-कौन सी कृषि उपज मिलती है?

चित्र-9 ठंडे प्रदेश के फल

9. अफ्रीका

भारत के पश्चिम में एक विशाल महाद्वीप है। इस महाद्वीप में हज़ारों मील लम्बे-चौड़े रेगिस्तान हैं, घने जंगल हैं, नदियां बहती हैं, बड़ी-बड़ी झीलें हैं, सैकड़ों मील तक घास ही घास के प्रदेश हैं। ऐसे-ऐसे जंगली जानवर हैं जिन्हें हम अपने देश में देख नहीं पाते। यहां संसार की सोने और हीरे की सबसे बड़ी खदानें हैं। तांबा, हीरा, सोना और न जाने कितनी अन्य धातुएं अफ्रीका की खदानों से निकाली जाती हैं। तुम्हें शायद जानकर आश्चर्य होगा कि अफ्रीका ही मानव का जन्म स्थान है। अफ्रीका में ही सबसे पहले मानव का विकास हुआ। यहीं से मानव जाकर दूसरे महाद्वीपों में बसा।

संसार के मानचित्र में अफ्रीका महाद्वीप को देखो। वह किन सागरों से घिरा है? इसके नज़दीक में और कौन से महाद्वीप हैं?

चित्र - 2
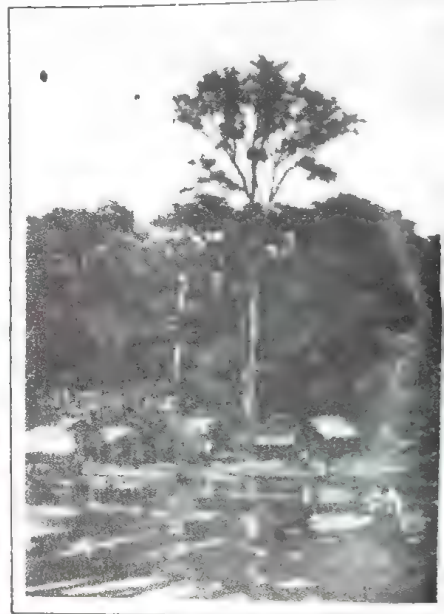
चित्र -1

चित्र - 3

अफ्रीका - एक विशाल पठार

अफ्रीका की बनावट तथा ऊंचाई के मानचित्र को देखो। क्या तुम्हें कोई विशाल मैदान दिख रहा है? केवल समुद्र के किनारे पर संकरा मैदान है। बाकी पूरा महाद्वीप एक विशाल पठार ही है। मानचित्र को ध्यान से देखो तो पाओगे कि एक पठार होते हुए भी सब जगह समान ऊंचाई नहीं है।

किनारे के संकरे मैदान कितनी ऊंचाई के हैं?
पठार का अधिकतर हिस्सा कितनी ऊंचाई का है?
पठार पर चाड झील और कांगो तथा नील नदियों के निचले हिस्से यानी बेसिन हैं- इन्हें नकशे में पहचानो।
अफ्रीका के दक्षिण और पूर्व में ऊंचे पठार हैं। उनकी ऊंचाई .... है।
उत्तर में एक पर्वत है। उसका नाम ..... है।

ऊंचे पठार के बीच फैली लम्बी संकरी घाटियां हैं जिनमें कई बड़ी-बड़ी झीलें भी हैं।

इस घाटी की तीन झीलों को पहचानकर उनके नाम लिखो-
1.   2.   3.

मानचित्र 1.

अफ्रीका की प्राकृतिक बनावट

(ऊंचाई, नदियां और झीलें)
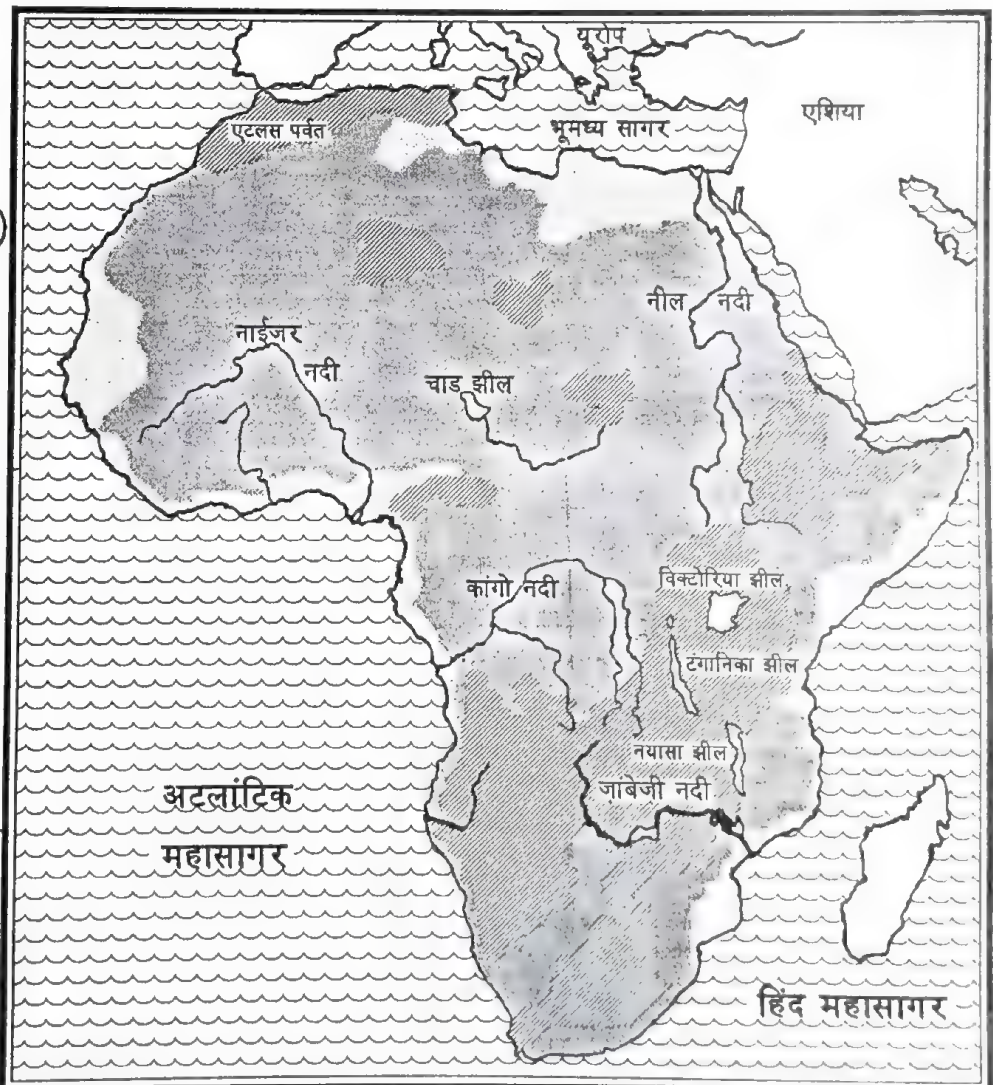
'अफ्रीका राजनैतिक' मानचित्र में अफ्रीका की इन बड़ी नदियों को देखो और बताओ वे किन देशों से होकर बहती हैं और किन समुद्रों में गिरती हैं–

नदी	देश	समुद्र
1. नील नदी		
2. नाइजर नदी		
3. कांगो नदी		
4. ज़ेम्बज़ी नदी		

इनके अलावा क्या और कोई नदी इस महाद्वीप में है?

उत्तर का एक बहुत बड़ा हिस्सा ऐसा है जहां कोई नदी नहीं दिखती। यह सहारा रेगिस्तान का इलाका है जहां बहुत कम वर्षा होती है। सहारा के इस रेगिस्तान को पार करके बहने वाली केवल एक नदी है।

मानचित्र देखकर बताओ ऊपर की नदियों में से यह कौन सी है?

जहां से यह नदी निकलती है वहां इतना पानी बरसता है कि रेगिस्तान में भी वह बहती हुई भूमध्य सागर में गिरती है। मिस्र देश का अधिकतर भाग रेगिस्तानी है। यहां इसी नदी के किनारे लोग हज़ारों सालों से बसे हैं। इसी नदी से सिंचाई करके खेती करते हैं। (चित्र 3)

अफ्रीका की जलवायु

अफ्रीका को ग्लोब में देखने पर तुम पाओगे कि अफ्रीका के बीच से भूमध्य रेखा जाती है। इस तरह अफ्रीका उत्तरी तथा दक्षिणी दो हिस्सों में बंट जाता है।

दीवार पर टंगे अफ्रीका के मानचित्र में कर्क रेखा को पहचानकर मानचित्र 2 में उसका नाम लिखो। भूमध्य रेखा के दक्षिण में ऐसी ही मकर रेखा बनाई जाती है। मानचित्र में इसे पहचानकर सही जगह पर लिखो।

पृष्ठ 43 पर दिए मानचित्र को देखकर बताओ क्या कोई और महाद्वीप ऐसा है जिसके बीच से भूमध्य रेखा जाती है?

पृथ्वी पर कर्क रेखा से लेकर मकर रेखा तक का प्रदेश गर्म जलवायु का प्रदेश है। यानी कर्क रेखा से मकर रेखा तक के प्रदेश औसतन पृथ्वी के सबसे गर्म प्रदेश हैं। यहां सर्दी न के बराबर होती है।

चित्र 4. रेगिस्तान में बहती नील नदी का एक दृश्य। नदी के किनारे पर ही हरियाली है - आसपास रेत का फैलाव है

मानचित्र 2
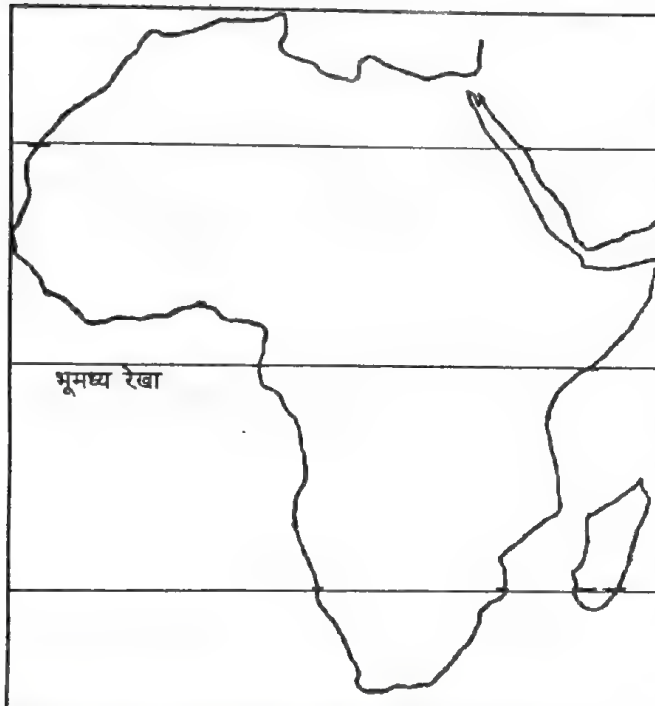
मानचित्र 2 में अफ्रीका में इस पेटी को पहचान कर रंग भरो और उसका नाम लिखो- 'गर्म जलवायु का प्रदेश'।

कर्क रेखा के उत्तर में पड़ने वाले इलाके को और मकर रेखा के दक्षिण में पड़ने वाले इलाके को अलग रंग से रंगो।

इन हिस्सों में सालभर में सर्दी और गर्मी के मौसम दोनों होते हैं। ऐसे प्रदेशों को शीतोष्ण प्रदेश (शीत + उष्ण) कहते हैं।

यह तो हुई गर्मी-सर्दी की बात, लेकिन तुम जानते हो कि गर्मी के साथ जहां खूब वर्षा होती है वहां अलग तरह की जलवायु होती है, और जहां गर्मी तो होती है लेकिन वर्षा कम होती है वहां जलवायु बदल जाती है।

अधिक वर्षा के प्रदेश

अफ्रीका में एक बहुत बड़े इलाके में बहुत अधिक वर्षा होती है। यह इलाका भूमध्य रेखा के दोनों तरफ पड़ता है। मानचित्र 3 में तुम अधिक वर्षा के प्रदेशों को देखो।

अफ्रीका के अन्य भागों में कैसी वर्षा होती है ?

मध्यम और कम वर्षा के प्रदेश

अफ्रीका में जिस इलाके में वर्षा मध्यम होती है उसे वर्षा के मानचित्र 3 में देखो।

मध्यम वर्षा का यह इलाका अधिक वर्षा वाले क्षेत्र के चारों तरफ है। मध्यम वर्षा के इलाके में गर्मी के मौसम में ही वर्षा होती है। जबकि भूमध्य रेखीय अधिक वर्षा वाले इलाके में साल भर वर्षा होती है।

अफ्रीका के मध्यम वर्षा वाले इलाके में अपने देश की तरह वर्षा का मौसम और सूखा मौसम अलग-अलग होता है।

मध्यम वर्षा के कारण यहां मुख्यतः घास होती है, कहीं तो इतनी ऊंची कि हाथी भी छिप जाए। बीच-बीच में पेड़ उगते हैं। इनको सवाना प्रदेश कहते हैं। इनको मानचित्र-4 में देखो। यहां वन्य जानवर भी खूब होते हैं। इनके बारे में तुम आगे पढ़ोगे।

अफ्रीका का एक बहुत बड़ा भाग बहुत सूखा है, यहां वर्षा बहुत कम या कई वर्षों तक नहीं होती।

अफ्रीका के इन कम वर्षा वाले सूखे हिस्सों को नक्शे में देखो।

अफ्रीका का लगभग आधा उत्तरी भाग ऐसा ही सूखा प्रदेश है जिसे सहारा का रेगिस्तान कहते हैं। यहां बीच-बीच में कंटीली झाड़ियां और छोटी घास उगती है। अन्य भागों में दूर-दूर तक बालू है, नंगी पहाड़ियां तथा चट्टानें हैं और कंकड़, पत्थर बिछे हैं। दक्षिण में ऐसा ही एक और सूखा प्रदेश है जिसे कालाहारी का रेगिस्तान कहते हैं।

मानचित्र 2 और 3 की तुलना करो और बताओ-

अधिक वर्षा के प्रदेश में ———— वनस्पति होती है।

मध्यम वर्षा के प्रदेश में ———— वनस्पति होती है।

कम वर्षा के प्रदेश में ———— वनस्पति होती है।

मानचित्र 3. अफ्रीका में वर्षा का वितरण
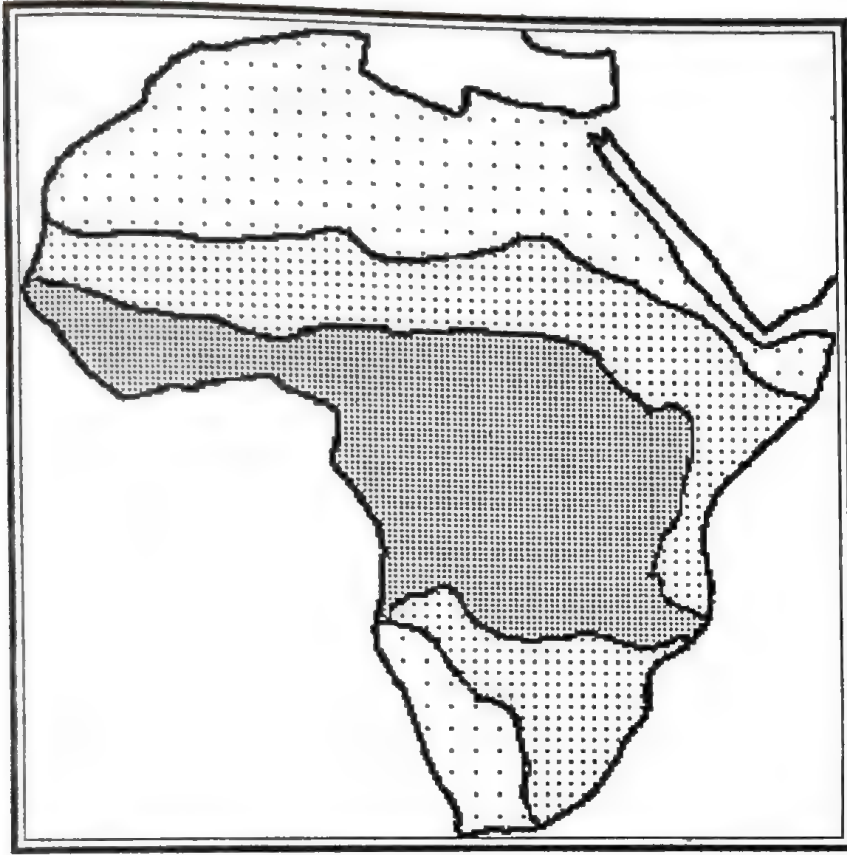
संकेत

- अधिक वर्षा
- मध्यम वर्षा
- कम वर्षा

मानचित्र 4. अफ्रीका की प्राकृतिक वनस्पति

संकेत
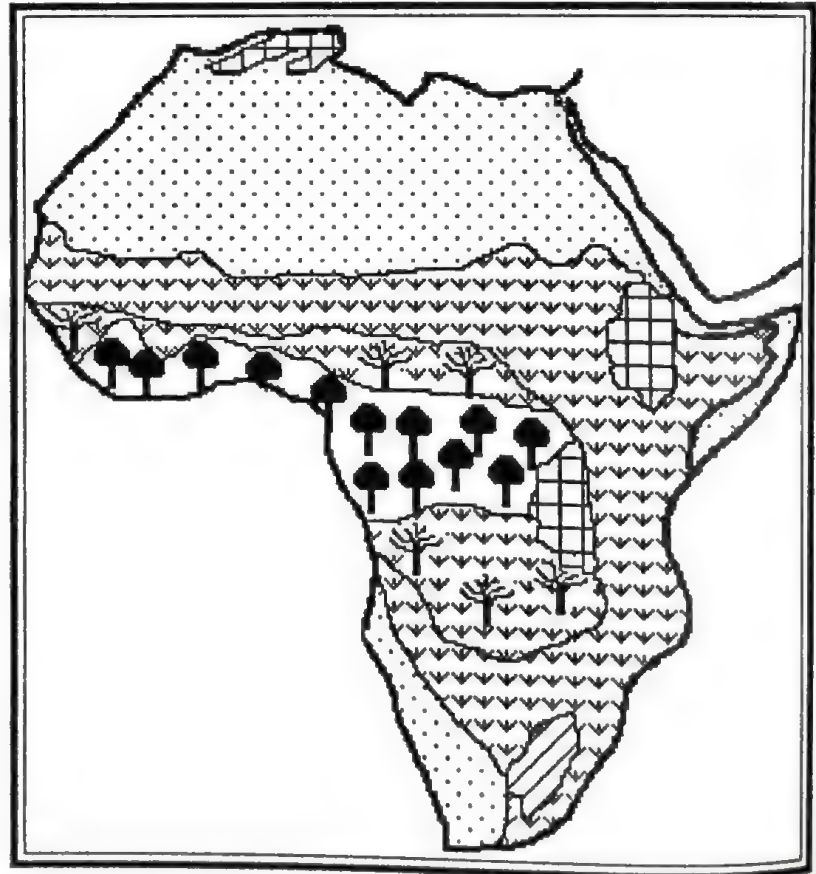
अफ्रीका के अलग-अलग इलाकों के चित्र शुरू में दिये गए हैं। कैसा अलग-अलग नज़ारा है! कहीं घने जंगल हैं, कहीं पेड़ और घास मिले-जुले हैं, कहीं छोटी घास और झाड़ियां और कहीं कोई वनस्पति नहीं है।

तुम इन चित्रों को देखकर क्या बता सकते हो कि कहां कैसी बारिश होती होगी? चित्रों के नीचे लिखो- अधिक, मध्यम और कम वर्षा के प्रदेश। हर चित्र का वर्णन करके बताओ कि वहां के लोगों का जीवन कैसा होगा?

अफ्रीका के लोग

तुमने अफ्रीका के अलग अलग प्रदेशों के बारे में पढ़ा। इन प्रदेशों में कई तरह के लोग रहते हैं, जिनकी भाषाएं अलग-अलग हैं और जिनकी जीवन शैली भी अलग-अलग है। पुराने समय से लोग छोटे-छोटे कबीलों में रहकर शिकार, खेती या पशुपालन करते आए हैं। शिकार करने वाले भूमध्य-रेखीय वनों में या रेगिस्तानों में रहते आए हैं। पशुपालक लोग ऊंचे पठार के सवाना प्रदेशों में अपने पशुओं को चराते रहे हैं। खेती नदियों के किनारे या जंगलों के किनारे होती थी।
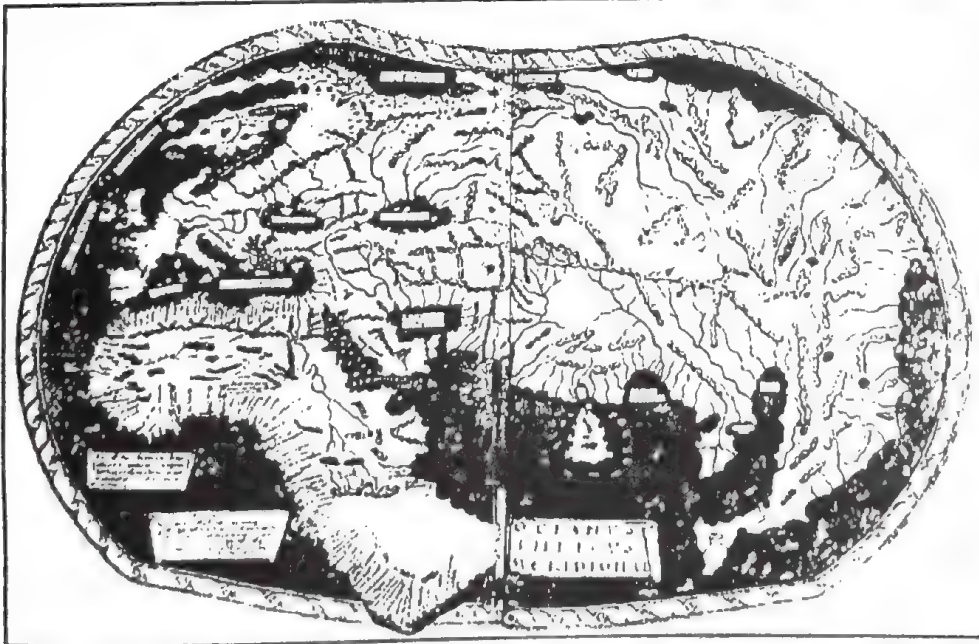
अफ्रीका यूरोप तथा एशिया

बहुत समय तक अफ्रीका के बारे में दूसरे महाद्वीपों के लोगों को अधिक जानकारी नहीं थी। अफ्रीका के उत्तर में जो समुद्र है उसके किनारे की जगहों के बारे में ही यूरोप के लोग कुछ जानते थे।

वहां वे कैसे पहुंचते होंगे नक्शा देखकर बताओ।

यूरोप से अफ्रीका पहुंचने के लिए किस दिशा में जाना होगा और कौन सा सागर पार करना होगा?

भूमध्य सागर में बहुत पुराने समय से व्यापारियों का आना-जाना लगा रहता था। वे यूरोप तथा एशिया से आते-जाते थे। उन्होंने आसपास के देशों का मानचित्र बनाया। नीचे उसमें से एक मानचित्र दिया गया है जो पन्द्रहवीं शताब्दी यानी आज से साढ़े पांच सौ साल पहले का है।

इस पुराने मानचित्र में यूरोप क्या वैसा ही बना है जैसा तुम्हारे नक्शे में बना है?

अफ्रीका का आकार तो देखो। अफ्रीका का कौन सा हिस्सा कुछ ठीक दिखता है? अफ्रीका के कौन से हिस्से पुराने नक्शे में बने ही नहीं हैं?

चित्र-4 एक पुराना मानचित्र

इस पुराने नक्शे को देखकर पता चलता है कि अफ्रीका के उत्तर के वे हिस्से जिनकी जानकारी यूरोपियन लोगों को थी, ठीक से बनाए गए हैं। जैसे अफ्रीका के उत्तरी भागों की जानकारी यूरोप के लोगों को थी। उसी तरह अफ्रीका के पूर्वी किनारे की जानकारी भारत और अरब के व्यापारियों को थी। वे लोग अफ्रीका के

पूर्वी किनारे के बन्दरगाहों, जैसे मोम्बासा, दार-ए-सलाम तथा ज़ंज़ीबार तक आते थे और सोना, हाथी दांत आदि ले जाते थे।

लेकिन इन तटीय प्रदेशों के अलावा अफ्रीका के भीतरी भाग कैसे हैं इनका ज्ञान न यूरोपियन व्यापारियों को था और न अरब या भारतीय व्यापारियों को।

लगभग पांच सौ साल पहले यूरोप के लोग अफ्रीका चक्कर लगाकर समुद्री मार्ग से भारत पहुंचने का प्रयत्न करने लगे। वे अटलांटिक महासागर से होते हुए सेंट मडियरा तथा एज़ोरस नाम के द्वीपों पर पहुंच कर लंगर डाल देते थे। इन द्वीपों के और दक्षिण में जाने से वे डरते थे क्योंकि वे मानते थे कि दक्षिण में बहुत गर्मी है और उबलता हुआ समुद्र है। फिर सन् 1498 में वास्कोडिगामा नामक एक नाविक कई बन्दरगाहों पर रुकता-रुकाता अफ्रीका का चक्कर लगा कर भारत पहुंच ही गया।

पृष्ठ 43 पर दिए गए मानचित्र को देखकर बताओ-
अफ्रीका से भारत पहुंचने के लिए किस दिशा में जाना होगा?
कौन सा सागर पार करना होगा?
क्या अफ्रीका महाद्वीप एशिया से जुड़ा है?

अफ्रीका का किनारा

यूरोप के बारे में पढ़ते समय तुमने वहां का कटा-फटा किनारा देखा था। वहां के अनेक छोटे-बड़े सागर व खाड़ियों के बारे में पढ़ा था। इनसे यूरोप के लोगों को समुद्री यात्रा करने में क्या मदद मिली, ज़रा याद करो।

अब अफ्रीका के तट को देखो-
क्या यहां भी तुम्हें कटा-फटा किनारा दिखता है या सीधा किनारा दिखता है?
अफ्रीका की कम से कम दो खाड़ियों के नाम मानचित्र 6 में देखकर बताओ।
क्या यहां भी तुम्हें यूरोप की तरह अनेक छोटी बड़ी खाड़ियां दिखती हैं?

अफ्रीका के किनारे पर चार बन्दरगाहों के नाम बताओ जो नदियों के मुहाने या खाड़ी में हैं जहां जहाज़ रुक सकते हैं, भोजन पानी ले सकते हैं?

अफ्रीका के भीतर पहुंचने की रुकावट

तुमने पाया होगा कि यूरोप की तरह अफ्रीका का तट कटा-फटा नहीं है। इसलिये अफ्रीका के तट पर बहुत कम खाड़ियां और बन्दरगाह हैं। यही कारण है कि समुद्री मार्ग से अफ्रीका आने वालों के लिये तट पर रुकने की कठिनाई थी। लेकिन एक बार किनारे उतरने पर भीतर जाना भी आसान नहीं था। अफ्रीका के प्राकृतिक मानचित्र में तुम देख सकते हो कि यह महाद्वीप एक विशाल पठार है। तुम जानते हो कि पठार पर पहुंचने के लिए ऊंचे कगार पर चढ़ना होता है। समुद्री मार्ग से आने वालों के लिए यह एक गंभीर बाधा थी। उस पुराने ज़माने में भीतर जाने के लिए न सड़कें थीं और न रेल मार्ग।

समुद्र के रास्ते आने वाले लोग नदियों से भी भीतर पहुंच सकते थे। लेकिन बड़ी नदियां कगार से उतरते समय झरने बनाती हुई गिरती हैं या संकरी पथरीली घाटी से उतरती हैं। ऐसे प्रपातों या नदियों की पथरीली घाटियों के कारण नावों से भीतरी भागों तक पहुंचना कठिन है।

शुरू में जब यूरोपियन लोग समुद्री तट से कुछ भीतर जाते थे तो वहां के अनेक कबीले बाहरी लोगों को आसानी से अन्दर बढ़ने नहीं देते थे। दरअसल यूरोपियन लोग अफ्रीका में अपना राज्य स्थापित करना चाहते थे और वहां की संपदाओं और दौलत का फायदा उठाना चाहते थे। वे अफ्रीका के लोगों को दास बनाकर अमेरिका में बेचना चाहते थे। इसलिए अफ्रीका के लोग यूरोपियोन लोगों को आगे बढ़ने से रोकते थे।

दास व्यापार

15 वीं शताब्दी में यूरोप के लोग जा-जाकर अमरीका में बसने लगे थे। वहां उन्होंने खेती फैलाई। अमरीका में ज़मीन बहुत थी, पर खेतों में काम करने वाले कम थे। तब अफ्रीका से दासों का व्यापार शुरू हुआ।

अफ्रीका की गिनी तट के प्रदेशों और पूर्वी किनारे के प्रदेशों से बड़ी संख्या में अफ्रीका के लोगों को बंदी बनाया जाता। उन्हें तटों तक लाकर यूरोपियन व्यापारियों के हाथ बेच दिया जाता। इसके बदले अफ्रीकी कबीलों के सरदार बंदूकें, तांबा, लोहे का सामान, शराब और कपड़ा ले लेते।

दासों के साथ बहुत अत्याचार किया जाता। अनेक लोग तो तटीय बन्दरगाहों तक आते-आते मर जाते। इनको ले जाने वाले जहाज़ भी दासों से बुरी तरह भर दिये जाते। न रहने-खाने की सुविधा, न दवा का प्रबंध। उस समय पाल के जहाज़ चलते थे जिनसे अमेरिका पहुंचने में भी बहुत समय लगता था। यात्रा के दौरान भी बहुत से लोग बीमार होकर या कुपोषण से मरते थे।

अमेरिका में भी इनसे अमानवीय व्यवहार किया जाता। कड़ी मेहनत के बाद भी दासों के रहने खाने का ठीक प्रबंध नहीं होता। इस तरह लाखों अफ्रीकी लोग दास बनाकर दक्षिणी तथा उत्तरी अमेरिका और पास के द्वीपों तक लाए गए और लाखों लोग दास बनने के बाद मर गए। 16 वीं तथा 17वीं शताब्दी में अनेक कंपनियां इस तरह दास व्यापार करती रहीं। 19वीं शताब्दी में दास व्यापार बंद हुआ तथा 1860 में अमेरिका में लाए दास भी वहां के स्वतंत्र नागरिक हो गए।

यूरोपियन लोगों ने राज्य बनाए

तुमने पिछले पृष्ठों में पढ़ा कि यूरोपियन लोगों ने अफ्रीका का चक्कर लगाकर भारत जाने का मार्ग खोज लिया था। फिर उसी मार्ग पर पड़ने वाले अफ्रीकी बन्दरगाहों पर भी उतरने लगे थे। धीरे-धीरे स्पेन, पुर्तगाल, डच, अंग्रेज़, फ्रेंच और जर्मन लोगों ने अफ्रीका के भीतरी भागों में अपने पैर जमाए और वहां अपने राज्य बना लिये। पिछली शताब्दी के अंत का अफ्रीका का राजनैतिक मानचित्र दिया गया है। इसमें यूरोपियन देशों के राज्य दिखाए गए हैं।

क्या तुम उन देशों को यूरोप में ढूंढ सकते हो जिन्होंने अफ्रीका में अपने राज्य बनाए?

बताओ अफ्रीका के सूडान और ज़ैरे देशों में कौन से यूरोपियन लोगों का राज्य था?

अफ्रीका के ऐसे कुछ क्षेत्रों पर उंगली फेर कर बताओ जिनमें यूरोपियन देशों के राज्य नहीं थे। वे आज कौन से देश हैं?

मानचित्र 5 अफ्रीका में यूरोपियन देशों के राज्य -1900
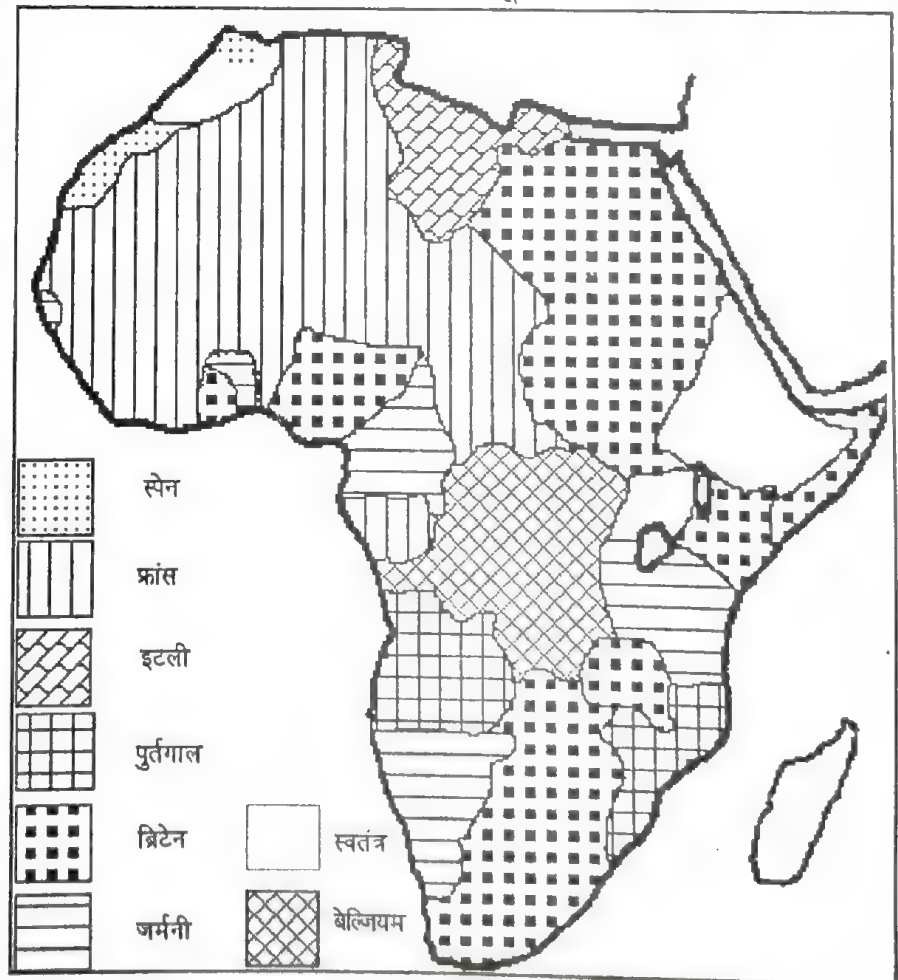
उंगली फेर कर बताओ किन यूरोपियन देशों के राज्य अफ्रीका में कहां पर है?

अपने राज्य बनाने के साथ-साथ यूरोपीय लोग अफ्रीका के भीतरी भागों की खोजबीन करते रहे। वे उत्तर में नील नदी के उद्गम तक पहुंचे। पश्चिम में नाईजर नदी के सहारे उसकी घाटी का पता किया और दक्षिण में केपटाउन से उत्तर की ओर बढ़े। वहां ज़ेम्बज़ी नदी और उसके चारों ओर के प्रदेश का भी ज्ञान प्राप्त किया।

यूरोपीय लोग अफ्रीका में अपने राज्य बनाकर वहां की लकड़ी, खनिज आदि का बड़े पैमाने पर यूरोप को निर्यात करने लगे। दक्षिणी अफ्रीका की सोने और हीरे की खानें तो अभी भी यूरोपीय कम्पनियों के हाथ में हैं। ज़ाम्बिया और ज़िम्बाबवे में तांबे की बहुमूल्य खदाने हैं। यहां का तांबा तथा अन्य खनिज भी बाहर भेजे जाते रहे।

यूरोपियनों ने सिर्फ अफ्रीका से चीज़ें बाहर नहीं भेजीं। उन्होंने अफ्रीका में खेतिहर प्रदेश विकसित करके चाय, काफी, कोको, रबर, तम्बाकू आदि भी पैदा करनी शुरू की। पैदा करने के बाद इन चीज़ों को भी यूरोप भेजा जाता रहा।

स्वतंत्र अफ्रीका

वर्तमान शताब्दी में धीरे-धीरे यूरोपियन लोगों से अफ्रीकी देश स्वतंत्र हुये। अफ्रीका में नये-नये देश बने जहां उसी प्रदेश के लोगों ने अपनी सरकार बनाई। अफ्रीकी देशों में अब भी बहुत से यूरोपियन लोग बसे हैं लेकिन उन देशों की संपत्ति, जैसे खनिज, वन उपज, खेती की उपज का लाभ अब धीरे-धीरे अफ्रीका के लोगों को मिलने लगा है।

अफ्रीका के मानचित्र 7 में विभिन्न देशों को अलग-अलग रंगों से रंग कर उनके नाम लिखो तो तुम स्वतंत्र अफ्रीका के देशों से परिचित हो जाओगे।

अभ्यास के प्रश्न

1. यूरोप से उत्तरी अफ्रीका आने के लिए कौन-सा सागर पार करना होता है?
2. पुराने समय में अफ्रीका के भीतर जाने में मिलने वाली तीन रुकावटों को बताओ।
3. अफ्रीका में दो बड़े रेगिस्तान हैं उनके नाम बताओ।
4. अ-कर्क और मकर रेखा के बीच का प्रदेश .... जलवायु का प्रदेश है।
   ब- सवाना प्रदेश की मुख्य वनस्पति .... है।
   स- अफ्रीका में अटलांटिक महासागर में गिरने वाली दो मुख्य नदियां .... हैं।
   द- कर्क रेखा के उत्तर तथा मकर रेखा के दक्षिण में अफ्रीका के .... जलवायु के प्रदेश हैं।
5. पाठ में दो राजनैतिक मानचित्र दिए गए हैं। दोनों की तुलना करके बताओ वर्तमान नाइजीरिया तथा ज़िम्बाबवे किस यूरोपियन राज्य के हिस्से थे?
6. अफ्रीका के उन दो देशों के नाम बताओ जहां भूमध्य रेखीय वन पाए जाते हैं?
7. यूरोप के लोग अफ्रीका की किन चीज़ों का व्यापार करते थे? यूरोपियन लोगों ने अफ्रीका में कौन सी फसलें व्यापार के लिये पैदा करनी शुरू कीं?
8. दास व्यापार में किसको लाभ होता था? अमेरिका में दासों की आवश्यकता क्यों थी?

मानचित्र 6 अफ्रीका के देश
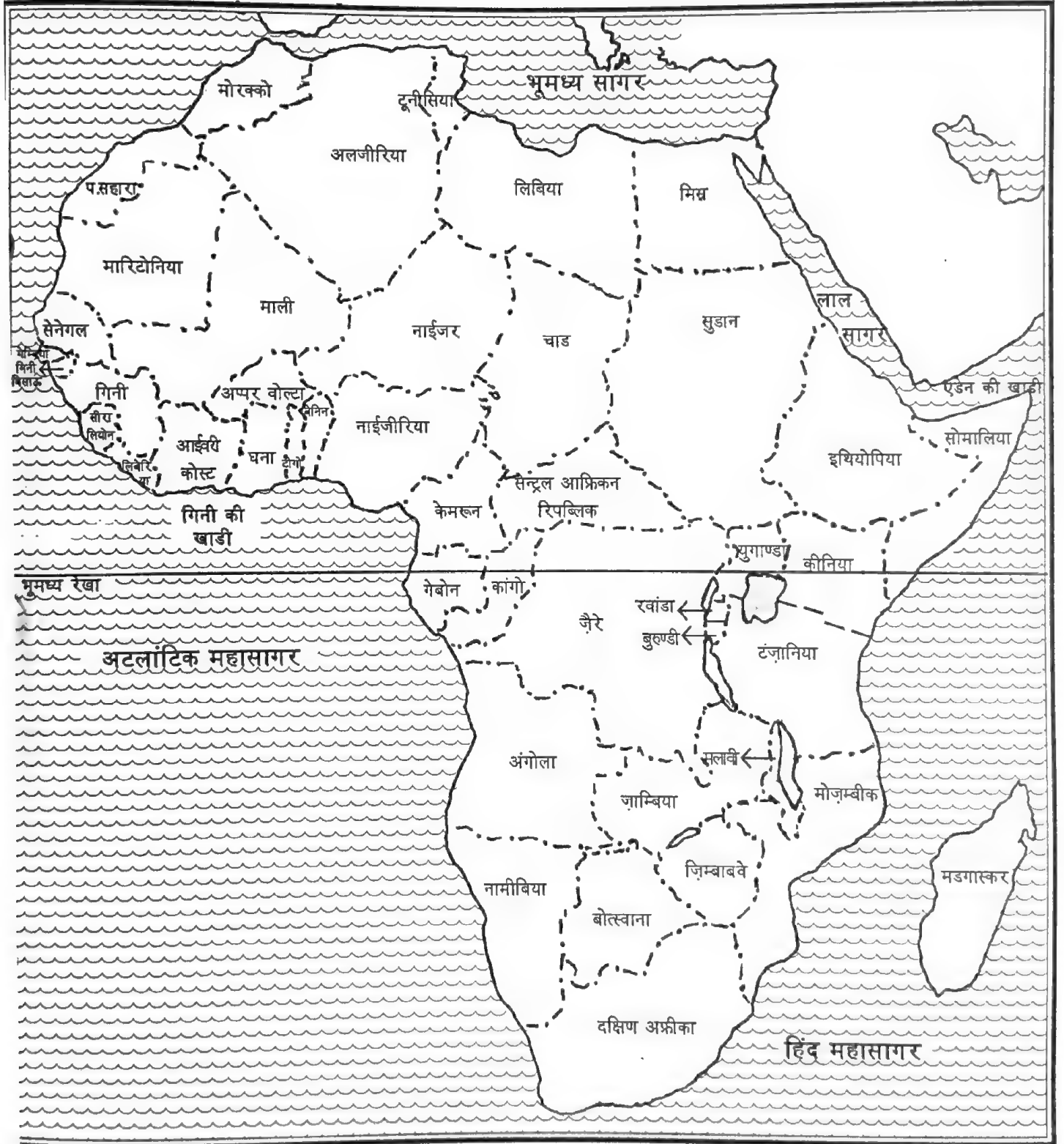
मानचित्र 7 अफ्रीका के देश

10. माइकेल के पूर्वज नाइजीरिया से अमेरिका आए थे

माइकेल अमेरिका के एक नगर हूस्टन में रहता है। वहीं माइकेल का स्कूल है। उसके माता-पिता शहर में नौकरी करते हैं। फसल कटने के समय वे पास के खेतों में काम करने भी जाते हैं। एक दिन माइकेल की मां बोली, "माइकेल! उठो-उठो! देखो मैंने कहा था कि पड़ोस में नाइजीरिया से एक परिवार आने वाला है, वे लोग आ गए हैं। उनका एक बच्चा तुम्हारे बराबर है, जाओ उससे मिलो।" माइकेल को भी कई दिनों से प्रतीक्षा थी इन लोगों के आने की। मां ने यह भी बताया कि यह अफ्रीकी परिवार नाइजीरिया देश से आने वाला है। माईकेल जानता था कि बहुत सालों पहले उसके दादा परदादा नाइजीरिया से दास बनाकर अमेरिका लाए गए थे। तुमने पढ़ा है कि उस समय नाइजीरिया और निकट के प्रदेशों के हज़ारों लोग अमेरिका लाए गए थे। दास प्रथा तो अमेरिका में अब नहीं है लेकिन माइकेल का परिवार फिर नाइजीरिया नहीं लौटा, अमेरिका में ही बस गया। वे अब अमेरिका के हूस्टन शहर में रहते हैं।

मानचित्र में देखो नाइजीरिया से अमेरिका कितनी दूर है।

माइकेल जल्दी से तैयार हुआ और नए दोस्त से मिलने चला। वह घर के बाहर का फाटक खोल कर घुसा ही था

कि बाहर घास पर उसी की उम्र का एक लड़का खेल रहा था। माइकेल ने कहा, "मेरा नाम माइकेल है। मैं तुम्हारे पड़ोस में रहता हूं। क्या तुम अभी नाइजीरिया से आए हो?" लड़का माइकेल को देखकर बहुत खुश हुआ। इस नए देश में उसका कोई मित्र नहीं था। उसने कहा, "मेरा नाम नबी है। मैं नाइजीरिया के लेगोस नगर से कुछ महीनों के लिए अपने चाचा के पास अमेरिका आया हूं।" माईकेल ने उसे बताया कि उसके परदादा भी कभी नाइजीरिया से अमेरिका लाए गए थे। फिर तो माइकेल और नबी दोस्त बन गए। नबी उसे अपने देश की तरह-तरह की बातें बताता और माइकेल हाथ पर सिर रखकर सोचता, क्या कभी मैं भी नाइजीरिया देख पाऊंगा?

सर्दी, गर्मी और बरसात

एक दिन जब पानी बरसने लगा, नबी ने कहा, "यहां अमेरिका में तो सर्दी पड़ रही है और पानी भी कभी-कभी ही बरसता है। पर हमारे लेगोस में तो कभी सर्दी ही नहीं पड़ती। हमेशा गर्मी रहती है, और साल भर पानी भी खूब बरसता है।

चित्र–2 कानो शहर : यहां के घरों की छतें सपाट क्यों हैं?

माइकेल सोचने लगा कि ऐसा क्यों है? तब नबी अपनी किताबों में से एटलस निकाल लाया और अमेरिका का मानचित्र दिखा कर बोला, "अमेरिका के टेक्सास राज्य का यह नगर ह्रूस्टन जहां हम लोग अभी हैं, यह तो भूमध्य रेखा से काफी उत्तर में है। (उत्तरी अमेरिका का मानचित्र निकालकर तुम भी टेक्सास राज्य में ह्रूस्टन नगर को देखो) लेकिन लेगोस भूमध्य रेखा के बिल्कुल निकट है। वहां सूर्य साल भर सिर पर ही चमकता रहता है इसीलिए वहां गर्मी भी खूब पड़ती है और वर्षा भी साल भर होती रहती है।" माइकेल बोला, "तब तो तुम्हारा देश नाइजीरिया भूमध्य रेखीय जलवायु का है।" नबी हंसने लगा और बोला, "मैं भी ऐसा सोचता था, लेकिन जब मैं उत्तरी नाइजीरिया के नगर कानो गया तब मेरी समझ में आया कि भूमध्य रेखीय जलवायु केवल दक्षिणी नाइजीरिया में है। उत्तरी भाग में हल्की सर्दी का मौसम भी होता है। और मई से अक्टूबर तक ही कुछ वर्षा होती है। वहां लेगोस की तरह साल भर वर्षा नहीं होती।" फिर वह एक किताब निकाल लाया और उसने नाइजीरिया की वर्षा का मानचित्र दिखाया। वैसा ही एक मानचित्र हमने दिया है।

देखो, लेगोस और कानो कहां पर हैं?
कौन नगर भूमध्य रेखा के निकट है, कौन सा दूर?
यह भी देखकर बताओ कि नाइजीरिया में किस हिस्से में वर्षा सबसे अधिक होती है? किस दिशा में वर्षा कम होती जाती है?
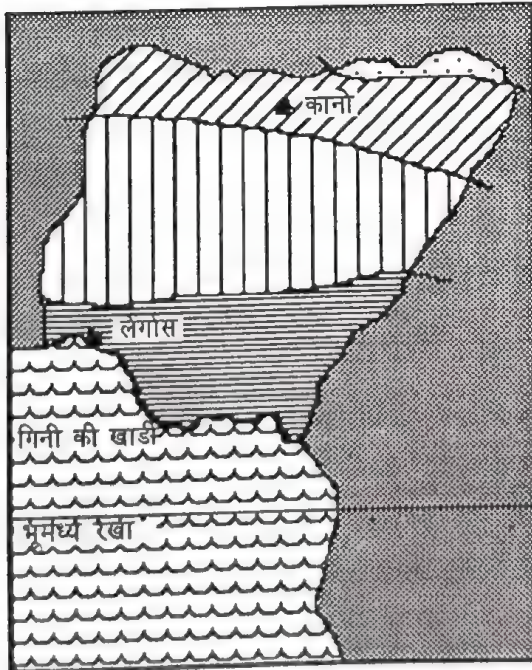
प्राकृतिक वनस्पति

नबी ने यह भी बताया कि नाइजीरिया के दक्षिण में जैसे पेड़ होते हैं वैसे उत्तरी नाइजीरिया में नहीं पाए जाते।

मानचित्र 2 नाइजीरिया की प्राकृतिक वनस्पति

संकेत

- मैंग्रोव
- भूमध्य रेखीय वन
- सवाना घास तथा पेड़
- सवाना घास
- कंटीली झाड़ियां

नाइजीरिया की प्राकृतिक वनस्पति का मानचित्र 2 दिया गया है। इसकी तुलना वर्षा के मानचित्र से करो और बताओ:

1. अधिक वर्षा की वनस्पति ....

2. मध्यम वर्षा की वनस्पति ....

3. कम वर्षा की वनस्पति ....

4. सूखे प्रदेश की वनस्पति
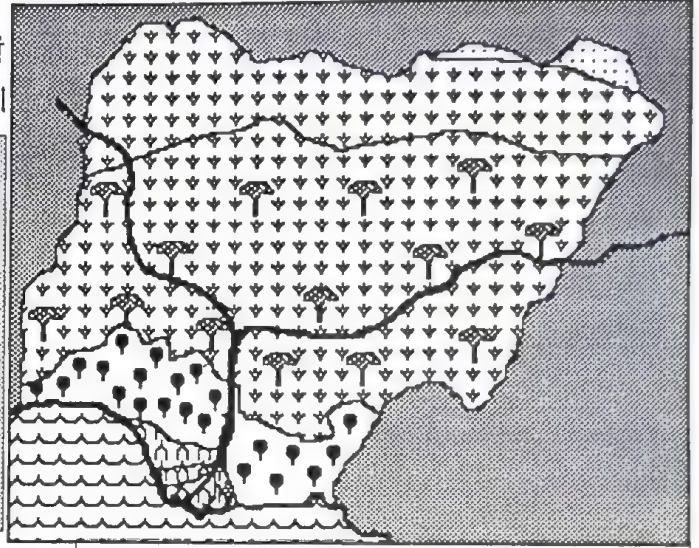
नबी ने कहा, "नाइजीरिया का उत्तरी भाग तो लगभग रेगिस्तानी है। यह सहारा रेगिस्तान का ही हिस्सा है।" माइकेल ने नबी से वह किताब पढ़ने के लिए ले ली। उसमें नाइजीरिया के कुछ चित्र भी दिए थे। अब तो तुम्हें भी उत्सुकता होगी कि नाइजीरिया के बारे में कुछ और जानें।

समुद्र के दलदली किनारे और मैदानी वन

नाइजीरिया का समुद्री किनारा समुद्र से अधिक ऊंचा नहीं है। ज्वार आने पर समुद्र का नमकीन पानी इन तटीय भागों, छोटी-छोटी खाड़ियों, और नदियों के मुहानों में भर जाता है। भाटा आने पर पानी फिर उतर जाता है।

चित्र - 3 मैंग्रोव पेड़ की जड़ें

ऐसे तटीय भागों में नमकीन पानी से बने दलदल के कारण मैंग्रोव नामक वृक्ष बहुतायत से होते हैं। नाइजीरिया में ऐसे वनों की पट्टी 16-96 कि.मी. तक चौड़ी है। चित्र 4 को देखो, मैंग्रोव वन की कितनी सारी जड़ें दलदल के ऊपर निकली हैं। इनसे पेड़ों की जड़ों को हवा मिलती रहती है। ये वे जड़ें हैं जो ज्वार आने पर पानी में डूब जाती हैं। ऐसे वन अपने देश में गंगा नदी के मुहाने पर भी पाए जाते हैं। अपने यहां सुंदरी नामक पेड़ ऐसे ही पेड़ हैं। मैंग्रोव पेड़ की लकड़ी भारी और मज़बूत होती है। इसका फल भी मीठा होता है।
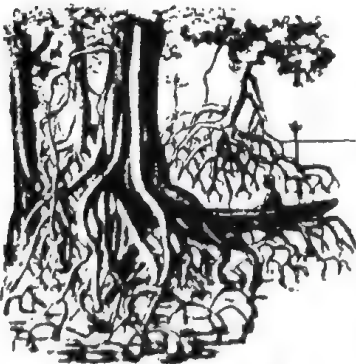
नाइजीरिया में समुद्र के किनारों पर रफ़िया पाम के वृक्ष भी खूब होते हैं। नारियल के वृक्ष भी पूरी पट्टी में मिलते हैं। ऐसे वन मैंग्रोव जंगलों से भीतर की ओर लगभग 80 से 160 कि.मी. की पट्टी में मिलते हैं। यहां नमकीन पानी तो नहीं पहुंचता लेकिन अधिक वर्षा के कारण भूमि दलदली होती है। इन वनों में खूब मोटे और ऊंचे पेड़ होते हैं।

चित्र - 4 भूमध्य रेखीय वन में महोगनी पेड़ की कटाई

इस तरह के भूमध्य रेखीय वनों के बारे में तुमने ..... देश में भी पढ़ा था।

चित्र 4 में देखो। क्या इतना बड़ा पेड़ तुमने आस-पास के जंगलों में देखा है? कई पेड़ तो 60 मीटर ऊंचे तक होते हैं। इनमें महोगनी, आबनूस, अफ्रीकी अखरोट, ओबचे आदि पेड़ों के मिले-जुले जंगल हैं। एबोनी की लकड़ी काली, रेडवुड की लाल और साइकामोर पेड़ की लकड़ी सफेद होती है। अपने देश में तो अधिकतर भूरे रंग की लकड़ी होती है।

क्या इन रंगों की लकड़ी अपने आस-पास के पेड़ों में देखी है?

इस लकड़ी की मांग विदेशों में, विशेषकर यूरोप में, बहुत है क्योंकि यह बहुत भारी और मज़बूत होती है। पहले तो इससे जहाज़ और नावें बनाई जाती थीं। रेल की पटरियों के नीचे इसकी लकड़ी के लट्ठे बिछाए जाते हैं।

चित्र–5 नाइजीरिया का एक प्लाईवुड कारखाना

लकड़ी नाइजीरिया देश का मूल्यवान धन है। इसे विदेशों में बेचकर वे धन कमाते हैं। लेकिन वनों की कटाई से कई समस्याएं भी हो रही हैं।

उत्तरी नाइजीरिया के सवाना तथा सूखे प्रदेश

यह तो हुई समुद्र तट के वनों की बात। लेकिन तुम जानते हो कि नाइजीरिया में भीतर की ओर वर्षा कम होती जाती है। इसलिए यहां दूर-दूर पर पेड़ उगते हैं,बीच में घास उग आती है। यही सवाना प्रदेश है। यहां के पेड़ बहुत ऊंचे भी नहीं होते।

नदियों के पास जहां पानी अधिक मिलता है पेड़ अधिक संख्या में और नज़दीक-नज़दीक उग आते हैं। तुमने सोचा कि सवाना प्रदेश मे पेड़ों के बजाय घास अधिक क्यों होती है? पेड़ों को जो ज़्यादा पानी चाहिए। कम वर्षा में घास ज़्यादा उग पाती है। लेकिन घास तो तुमने देखा होगा कि बरसात होने पर तेज़ी से उगती है और सूखा मौसम आने पर सूख कर खत्म हो जाती है। फिर अगले साल नई घास उगती है। यही सवाना प्रदेश में भी होता है।

सवाना के गर्म प्रदेश की घास कड़ी और सूखी सी होती है। ठंडे प्रदेशों जैसे ईरान, पोलैंड, फ्रांस की तरह मुलायम और रसीली नहीं। इसलिए बड़े पैमाने पर सवाना प्रदेशों में पशुपालन नहीं होता था। फिर भी कुछ कबीलों का धंधा पशुपालन है। ये लोग गाय पालते हैं। यहां पशुपालन अब विकसित किया जा रहा है। अच्छी नस्ल के दुधारू जानवरों को पालने का इंतज़ाम किया जा रहा है।

उत्तर में ज्यों-ज्यों वर्षा और कम होती जाती है वनस्पति भी बदलती जाती है। छोटी घास और छोटे पेड़ दिखने लगते हैं। पेड़ भी छाते की तरह फैले हुए हैं। (चित्र-6)

तुम यदि ग्वालियर या राजस्थान गए हो तो देखा होगा कि वहां भी छोटे कांटों वाले पेड़ और कांटों वाली झाड़ियां और बीच-बीच में घास होती है, क्योंकि वहां भी वर्षा कम होती है।

चित्र–6 सवाना प्रदेश, यहां छाते की तरह फैले वृक्ष देखो

नाइजीरिया के प्राकृतिक हिस्से

नाइजर का डेल्टा: माइकेल ने नाइजीरिया के वनों और सवाना प्रदेशों की बात तो पढ़ ली लेकिन वह सोचने लगा कि यूरोप के लोग इन जंगलों में कैसे घुस कर लोगों को बटोर कर दास बना लाते थे? नबी ने बताया कि गिनी की खाड़ी के तट पर तो दलदल, घने वनों, घनघोर वर्षा और ज्वार-भाटा के कारण भीतर घुसना बड़ा कठिन है। मुहाने के पास रेत के अनेक छोटे-छोटे द्वीप हैं। किनारे का मैदान भी ऊंचा-नीचा है।

यूरोप के लोग जब नाइजीरिया के तट पर समुद्री मार्ग से आए तो इन्हीं बाधाओं के कारण भीतर तक नहीं आ पाते थे। फिर कुछ बंदरगाह बने, जहां जहाज़ रुकने लगे और छोटे जहाज़ नाइजर नदी से भीतर तक जाने लगे। यहीं पर दास इकट्ठा किए जाते और अमेरिका भेजे जाते थे। बाद में इन्हीं बंदरगाहों से लकड़ी तथा और सामान बाहर भेजा जाने लगा। माइकेल ने मानचित्र निकालकर नाइजर नदी को देखा। नाइजर नदी तो किनारे पर कई शाखाओं में बंट कर गिरती है। नदी के ऐसे मुहाने को डेल्टा कहते हैं।

कक्षा की दीवार पर अफ्रीका का मानचित्र टांग कर देखो कि यह नदी कहां किस देश से निकलती है और नाइजीरिया से होती हुई किस सागर में गिरती है।

भारत की कौन सी नदी का बहुत बड़ा डेल्टा है?

डेल्टाओं में खेती करने में क्या दिक्कतें हो सकती हैं?

चित्र–7 नाइजर डेल्टा की एक बस्ती
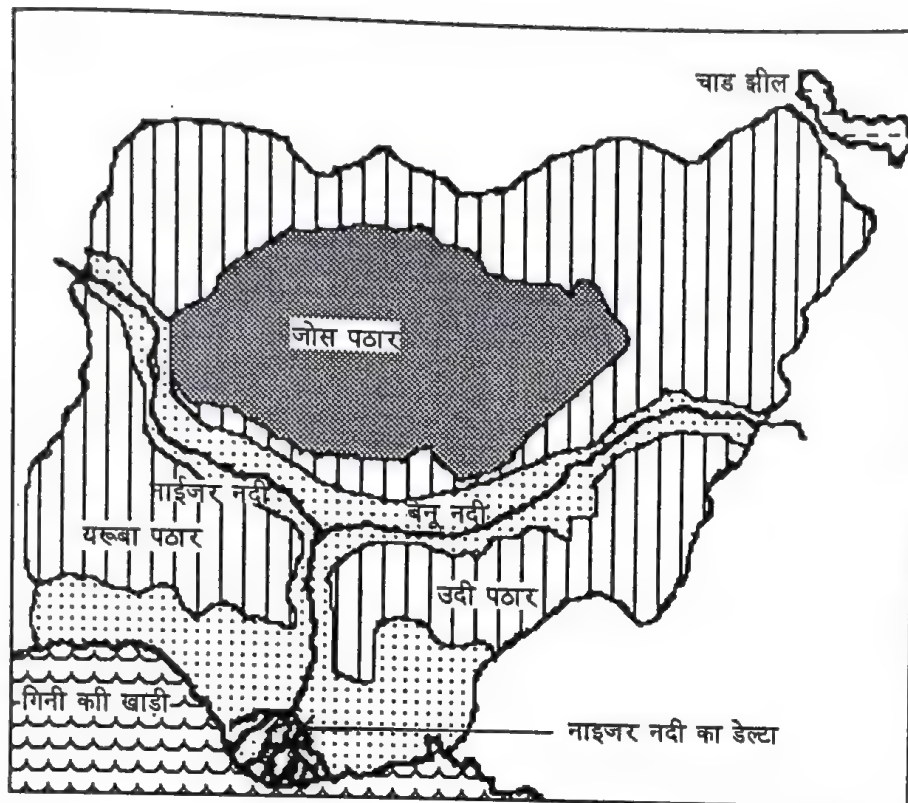
मानचित्र 3 नाइजीरिया की प्राकृतिक बनावट

संकेत

600 से 1200 मीटर

300 से 600 मीटर

300 मीटर से कम
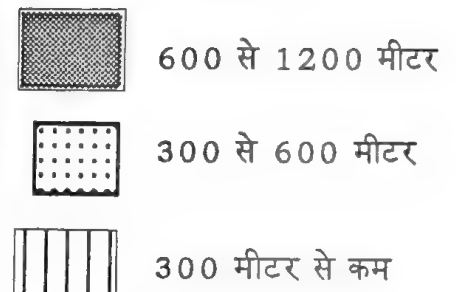
नदियों की घाटियां तथा पठार

नाइजीरिया के समुद्र तट के भागों में लगभग 120 मीटर ऊंचाई है।

बताओ यह ऊंचाई किस सतह से नापी गई?

इस मैदान से धीरे-धीरे ऊंचाई बढ़ती है। कुछ उत्तर में जाने पर यरूबा तथा उदी पठार आते हैं जिनकी ऊंचाई लगभग 300 मीटर है। इन्हें मानचित्र - 3 में देखो।

देखो इनमें कौन सी नदियों की घाटियां हैं -

1. 2.

इन घाटियों के उत्तर की ओर जोस पठार है। यह लगभग 1200 मीटर ऊंचा है। पठार पर पहुंचने के लिए कगार पर चढ़ना होता है। उत्तर-पूर्व में फिर छोटे-छोटे कगारों से उतरना होता है। यहां चाड झील है। मानचित्र में इस झील को देखो।

इस तरह नाइजीरिया के 4 हिस्से हुए। उनके नाम लिखो:

1. 2. 3. 4.

नाइजीरिया की खेती

नबी से मिलने माइकेल कई दिन नहीं आया तो नबी उसके घर गया। माइकेल ने बताया कि उसके माता-पिता कपास के खेतों में काम करने गए हैं इसलिए उसे घर पर रहना होता है। नबी ने आश्चर्य से पूछा, "तो क्या यहां अमेरिका में भी कपास होती है?" माइकेल ने पूछा, "क्या नाइजीरिया में भी कपास होती है, जो तुम इतने आश्चर्य से पूछ रहे हो?" नबी ने कहा, "हां! लेकिन तुम तो अब जान गए हो कि हमारे देश में दक्षिण और उत्तर की जलवायु में अन्तर है, इसीलिए सब जगह एक ही फसल नहीं होती, अलग-अलग होती हैं।"

दक्षिण नाइजीरिया की फसलें तथा बगान: माइकेल ने चाकलेट निकालकर नबी को खिलाई। नबी ने पूछा, "तुम्हें पता है यह चाकलेट मिठाई कोको से बनती है?" माइकेल बोला, "यह तो मुझे मालूम है लेकिन मैंने इसका फल कभी नहीं देखा।" नबी ने खोज कर एक किताब में कोको का फल दिखाया और कहा, "नाइजीरिया में तो कोको पैदा करने के लिए बगान लगाए गए हैं।" नबी ने बताया कि
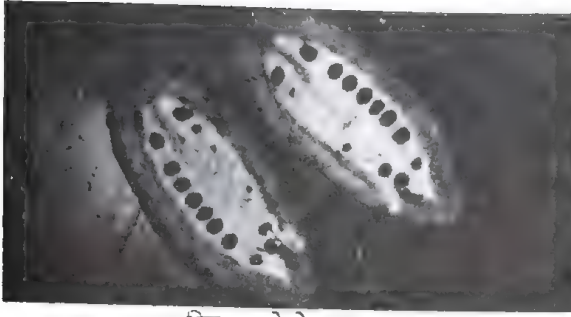
चित्र-8 कोको का फल

नाइजीरिया के दक्षिणी हिस्से के वनों की पेटी में कोको के अलावा रबर के भी बगान हैं। तेल वाले ताड़ (पाम) भी खूब होते हैं। इनके फल से तेल निकाला जाता है। नाइजर नदी की धाराओं पर नावों से पाम का फल इकट्ठा किया जाता है। तेल वाले ताड़ के वृक्ष तो देखो।

पहले तो ये सब पेड़ जंगल में उगते थे। लेकिन जब इन चीज़ों की मांग बढ़ी तो जंगलों के बीच जगह साफ

चित्र-9 काको पेड़

करके बगान लगाए गए और बड़े पैमाने पर इनका उत्पादन होने लगा। कोको, रबर, पाम तथा उसका तेल संसार के बहुत देशों को जाने लगा। इससे नाइजीरिया को धन मिलने लगा।

चित्र-10 महिलाएं कोको बाज़ार ले जा रही हैं - सड़क के किनारे पाम तेल के ताड़ दिख रहे हैं

मानचित्र 4 में देखो यह फसलें नाइजीरिया के किस हिस्से में होती हैं?

माइकेल ने पूछा, "जब ये पेड़ जंगल में उगते थे तो बगान क्यों लगाए गए? किसने लगाए ये बगान?" नदी ने बताया, "यहां बगानी खेती अंग्रेज़ों के आने के बाद शुरू हुई।"

बगान लगाने में कई सुविधाएं हुईं। एक तो इन पेड़ों की खोज में जंगल में घूमना नहीं पड़ता। एक जगह पेड़ लगाने से उनकी देखरेख भी आसान हो गई। उत्पादन को पेड़ों से इकट्ठा करना भी आसान हो गया। फिर उत्पादन भी बड़ी मात्रा में मिलने लगा। व्यापार के लिए यह भी ज़रूरी था।

यही नहीं कोको के बीज निकालने, सुखाने, पाम से तेल निकालने, रबर के दूध से रबर बनाने के कारखाने भी बगानों में लगा लिए गए। इन बगानों में नाइजीरिया के निवासी काम करते थे। अंग्रेज़ तो केवल प्रबंध के लिए
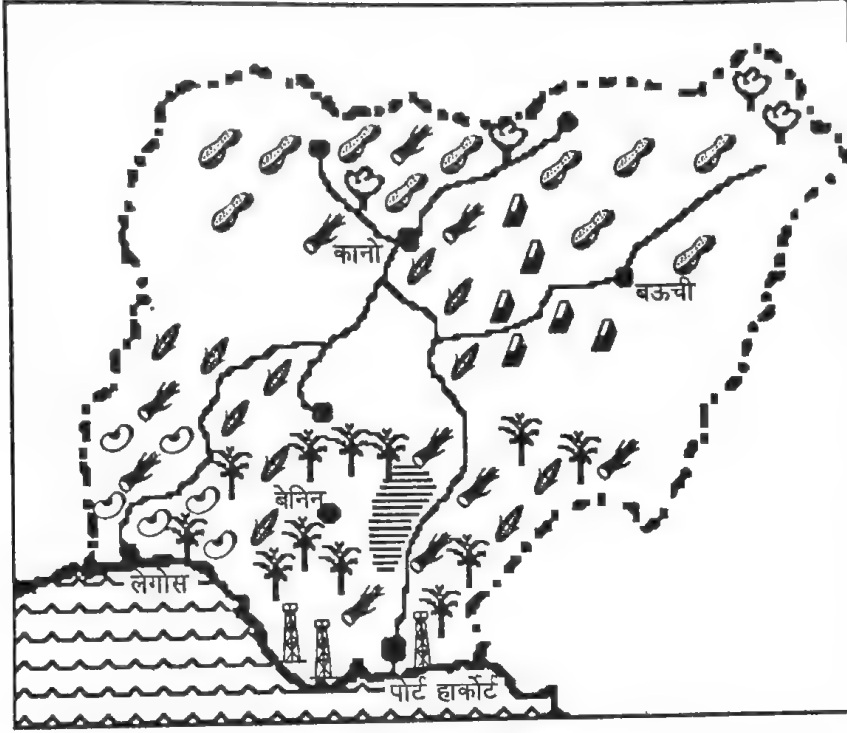
मानचित्र 4 नाइजीरिया की फसलें और खनिज संपदा

संकेत

	पाम तेल		कपास
	मक्का		टीन
	कसावा		खनिज-तेल
	कोको		कोयला
	मूंगफली		रेल लाईन

रहते थे। इस तरह नाइजीरिया में तेल वाले पाम या ताड़, कोको और रबर की व्यापारिक कृषि होने लगी।

पाम तेल, कोको और रबर के व्यापार का लाभ भी अंग्रेज़ लेते थे। नाइजीरिया के लोग तो कृषि मज़दूरों की तरह काम करते थे। अंग्रेज़ों के समय में अपने देश में भी चाय, कॉफी के बगान लगाए गए और व्यापार के लिए ये चीज़ें पैदा की जाने लगी थीं। 1960 तक नाइजीरिया अंग्रेज़ों के अधीन रहा। लेकिन 1960 में जब नाइजीरिया स्वतंत्र हुआ तब बगान और बगान की उपज का व्यापार धीरे-धीरे नाइजीरिया के लोगों के हाथ में आया।

माइकेल नबी से बोला, "अच्छा, ये तो विदेशों में बिकने वाली चीज़ें हुईं। तुम्हारे यहां किसान अपने खाने के लिए क्या पैदा करते हैं?" नबी ने बताया कि लोगों को भोजन याम, कसावा, गिनी कार्न, मक्का, चावल तथा फलियों की खेती से मिलता है। कसावा शकरकंद जैसे कंद हैं। यह यहां के लोगों का महत्वपूर्ण भोजन है। (चित्र -11)

जंगल के बीच कबीले भूमि साफ करते हैं, और कटे पेड़ों को जला देते हैं। फिर सभी परिवारों को थोड़ी-थोड़ी भूमि बांट दी जाती है। माइकेल बोला, "थोड़ी ज़मीन क्यों? अमेरिका में तो कई सौ एकड़ तक के जोत होते हैं।" नबी बोला, "अमेरिका में भूमि मशीनों, जैसे ट्रैक्टर, से जोती जाती है, और उत्पादन व्यापार के लिए होता है। नाइजीरिया में किसान सिर्फ परिवार की ज़रूरत के लिए अनाज उगाते हैं। वे अधिकतर कुदाल से भूमि तैयार करते हैं। वहां अभी भी बैल या घोड़े से खींचने वाले हल का इस्तेमाल बहुत कम है। इसलिए उपज भी कम होती है।"
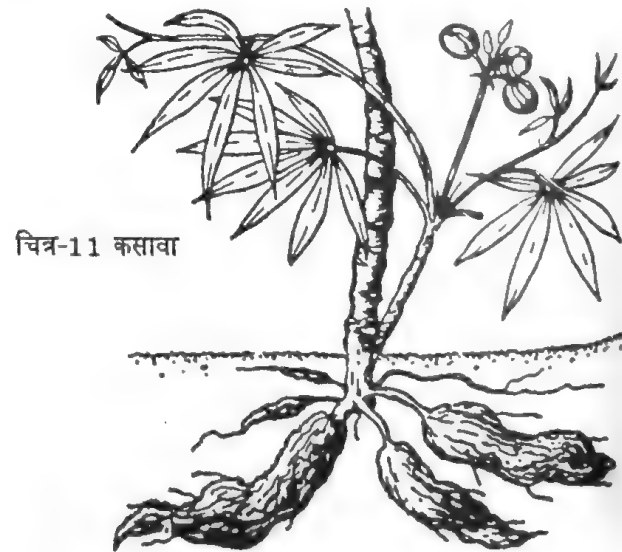
चित्र-11 कसावा

उत्तरी नाइजीरिया के सवाना प्रदेश में खेती तथा पशु पालन

तुम जान चुके हो सवाना मुख्यतः घास का प्रदेश है। याद करके बताओ, यहां दक्षिणी नाइजीरिया के समान वन क्यों नहीं उगते हैं? और यह भी बताओ कि उत्तर की ओर घास, छोटी और कंटीली झाड़ियां क्यों उगने लगती हैं?

चित्र-12 बाज़ार में कसावा बिक रहा है

उत्तरी नाइजीरिया के इस कम वर्षा के प्रदेश में तुम जानते हो कि रबर, कोको आदि की फसलें नहीं हो सकतीं। यहां ऐसी फसलें होती हैं जो हल्की वर्षा में भी हो सकें। भोज्य फसलों में प्रमुख हैं- ज्वार-बाजरा जैसे मोटे अनाज, गिनी कार्न और कसावा। कुछ प्रदेशों में गेहूं भी होता है। यहां खेतों के बीच में पेड़ लगे दिखते हैं, उन्हें काटते नहीं हैं।

उत्तरी नाइजीरिया के कम वर्षा के प्रदेश और दक्षिणी नाइजीरिया के अधिक वर्षा वाले प्रदेशों की फसलों की सूची बनाओ।

यहां कुछ व्यापारिक फसलें भी किसान उगाते हैं जैसे कोलानट, मूंगफली, तंबाकू तथा कपास। कोका कोला, थम्सअप नामक ठंडे पेय के नाम तुमने सुने होंगे। कोका कोला में कोला नट डलता है। इसीलिए कोलानट की मांग कई देशों में है।

उत्तरी नाइजीरिया में कपास बहुत पुराने समय से उगाई जाती है। कपास से यहां के लोग हाथ करघा से कपड़ा बनाते हैं और व्यापार के लिए भी कपास उगाते हैं। इसीलिए कपास उगाने का क्षेत्र रेल मार्गों के निकट है जिसे भेजने में आसानी होती है। अब तो नाइजीरिया में कपड़ा बनाने के कारखाने भी लगाए जा रहे हैं।

मानचित्र में कपास और मूंगफली उगाने के क्षेत्रों को देखो।

नाइजीरिया में मूंगफली भी खूब होती है। मूंगफली यहां अंग्रेज़ों के साथ आई। मूंगफली के लिये यहां की मिट्टी और जलवायु ठीक थी तो इसकी खेती एक बड़े प्रदेश में होने लगी। कानो और कडूना में मूंगफली से तेल निकालने के कारखाने भी लग गए हैं।

खनिज तेल

एक दिन माइकेल खूब खुश था, उसने नबी को बताया, "हम लोग स्कूल से खनिज तेल के क्षेत्र देखने गए थे। मोटर गाड़ी में तो रोज पेट्रोल डालते हैं लेकिन मैंने आज खनिज तेल का नलकूप देखा है। मैंने सुना है कि नाइजीरिया में भी तो अब तेल निकाला जाता है।"

मानचित्र में नाइजीरिया के खनिज तेल के क्षेत्रों को देखो। बताओ तेल किन बंदरगाहों से विदेश जाता होगा?

1958 से नाइजीरिया खनिज तेल बाहर भी भेजता है। अब तो तेल साफ करने के कारखाने भी पोर्ट हार्कोट तथा वारी बंदरगाहों पर लगाए गए हैं। ऐसा एक कारखाना नाइजीरिया के मध्य में स्थित नगर कडूना में लगाया जा रहा है।

माइकेल बोला, "तब तो इस तेल के निर्यात से नाइजीरिया को विदेशों से खूब धन मिलता होगा।" नबी

कुछ उदास हो गया। वह बोला, "अभी तो यह उद्योग अधिकतर विदेशी कंपनियों के हाथ में है। नाइजीरिया की सरकार का उसमें कुछ हिस्सा है। फिर भी बहुत लोगों को इससे अब रोज़गार मिलने लगा है।"

माइकेल नाइजीरिया के खनिजों का मानचित्र देखने लगा और बोला, "तुम्हारे देश में तो अब बहुत से खनिज निकाले जाते हैं।" नबी ने बताया कि अंग्रेज़ों ने तो खनिजों की बहुत खोज नहीं की थी लेकिन अब कई खनिज खोजे गए हैं और निकाले जाते हैं।

तुम भी मानचित्र देखकर बताओ नाइजीरिया में कौन से खनिज निकाले जाते हैं।

नबी ने बताया कि अब तो और धातुएं जैसे जस्ता, सीसा, लोहा आदि भी निकाली जाने लगी हैं। माइकेल को उत्सुकता हुई कि नाइजीरिया प्राकृतिक संपदा और खेती की उपज में काफी धनी है तो वहां के लोग भी धनी होंगे। नबी ने बताया, "यह सब हमारे यहां है। फिर भी अब तक उनका पूरा उपयोग नहीं हो पाया है। हमारे कई प्रमुख संसाधन विदेशी व्यापारियों के हाथ में रहे हैं। अब धीरे-धीरे हमारे देशवासी अपना उद्योग लगा रहे हैं। कई छोटे-बड़े कारखाने लगाए जा रहे हैं। अपनी संपदाओं का लाभ खुद उठाने का प्रयास कर रहे हैं। हमें पूरी आशा है कि हम इस कोशिश में सफल होंगे चाहे हमें इसके लिए जितना लड़ना पड़े, मेहनत करना पड़े।"

चित्र-13 उत्तरी नाइजीरिया का एक गांव। इस गांव में रहने वाले लोग क्या काम करते होंगे? इस गांव में और तुम्हारे आसपास के गांवों में क्या अंतर व समानता तुम देख सकते हो?

अभ्यास के प्रश्न

1. नाइजीरिया के दक्षिणी हिस्से में पाए जाने वाले वनों की लकड़ी किन कामों में आती है ?
2. नाइजीरिया के दक्षिणी हिस्से की तीन फसलों के नाम बताओ जिनका व्यापार होता है।
3. नाइजीरिया के किसान भोजन के लिए जो फसलें उगाते हैं उनमें से कम से कम चार का नाम बताओ।
4. उत्तरी नाइजीरिया के कुछ कबीले पशुपालन क्यों करते हैं? वहां पशुपालन में क्या कठिनाई है?
5. नाइजीरिया के दक्षिण से जब तुम उत्तर में जाओगे तो तुम्हें किन-किन बातों में फर्क नज़र आएगा? चार पांच वाक्यों में लिखो- क) धरातल ख) वर्षा ग) वनस्पति
6. उत्तरी नाइजीरिया तथा दक्षिणी नाइजीरिया के काम धंधों को नीचे की सूची में से चुनो–

कामों की सूची	उत्तरी नाइजीरिया	दक्षिणी नाइजीरिया
1. कोयला निकालना		
2. टीन निकालना		
3. खनिज तेल निकालना		
4. पशुपालन		
5. रबर के बगान लगाना		
6. पाम के पेड़ लगाना तथा फल चुनना		
7. मूंगफली उगाना		
8. कपास पैदा करना		
9. जहाज़ों से सामान उतारना-चढ़ाना		
10. मूंगफली का तेल निकालना		
11. पाम तेल निकालना		
12. कोको उगाना		
13. याम, कसावा पैदा करना		
14. कोलानट उगाना		
15. लकड़ी काटना, बेचना		

7. चित्र 2 और चित्र 7 के बीच तुम्हें क्या क्या फर्क दिख रहे हैं? क्या तुम इस फर्क का कारण समझा सकते हो?
8. यरूबा पठार और जोस पठार की ऊंचाई कितनी है?

11. इयन और मेरी विक्टोरिया प्रपात देखने गए

जून का महीना आया, इयन और मेरी दौड़ते हुये घर पहुंचे, कूदते, हंसते, खिलखिलाते। वे दोनों हाथ ऊपर उठा कर मां को बता रहे थे कि वे परीक्षा में पास हो गये हैं। मां ने वायदा किया था कि यदि इयन और मेरी परीक्षा में पास हो गये तो उन्हें विक्टोरिया प्रपात और उसके पास का अभयारण्य दिखाने छुट्टी में ले जाएंगी। इयन और मेरी इंगलैंड के एक स्कूल में पढ़ते हैं। उन्हें बहुत उत्सुकता थी यह जानने की कि विक्टोरिया प्रपात कहां है? वहां कैसे पहुंचेंगे? वहां मौसम कैसा होगा?

विक्टोरिया प्रपात अफ्रीका के ज़िम्बाबवे देश में स्थित एक बहुत प्रसिद्ध जल प्रपात है। यहां ज़ेम्बज़ी नाम की नदी लगभग 360 फुट ऊंचाई से नीचे बहुत गहरी घाटी में गिरती है। घाटी में गिरते हुये ज़ेम्बज़ी नदी प्रपात या झरना बनाती है। इसी को विक्टोरिया प्रपात कहते हैं। अभयारण्य उन जंगलों को कहते हैं जहां जंगली जानवरों को कोई मार नहीं सकता है।

वे इंगलैंड से चलकर पहले दक्षिण अफ्रीका के केप ऑफ गुड होप पर उतरेंगे। केप ऑफ गुड होप पर केप टाउन नाम का शहर बसा है। वहां से वे ट्रेन से विक्टोरिया प्रपात तक जायेंगे जो ज़िम्बाबवे देश में है। इयन और मेरी ने अपनी कॉपी में केप ऑफ गुड होप से विक्टोरिया प्रपात तक का मार्ग भी खींच लिया।

इयन और मेरी इंगलैंड से अफ्रीका जहाज़ से जाने वाले हैं, बताओ वे किस महासागर से जायेंगे।

मानचित्र - 1 में क्या तुम यह मार्ग उंगली फेरकर बता सकते हो?

इयन तथा मेरी ज़िम्बाबवे के बारे में पढ़ने लगे। उसमें से कुछ जानकारी तुम्हें भी दी गई है। शायद तुममें से कोई इयन और मेरी की तरह ज़िम्बाबवे जाए।

अफ्रीका का दक्षिणी भाग

मेरी ग्लोब ले आई और दक्षिण अफ्रीका और ज़िम्बाबवे देशों को खोजने लगी। तुम भी अपनी कक्षा में ग्लोब लाकर देखो, ये देश कहां पर हैं। वह कहने लगी, "इयन यह देखो, यह देश तो भूमध्य रेखा के दक्षिण में है!" इयन बोला, "तो क्या हुआ?" मेरी बोली, "अरे तुम्हें पता नहीं, जब भूमध्य रेखा के उत्तर में गर्मी का मौसम

मानचित्र 1 इंगलैंड से ज़िम्बाबवे

होता है तो उसके दक्षिण मे ठंड का मौसम होता है! यानी 'अब जून के महीने में ज़िम्बाबवे में ठंड का मौसम होगा।"

अफ्रीका का दक्षिणी भाग भूमध्य रेखा के दक्षिण में है यानी वह दक्षिणी गोलार्द्ध में है। भारत, इंगलैंड जैसे देश भूमध्य रेखा के उत्तर में हैं इसलिए ये उत्तरी गोलार्द्ध के देश हुए। तुम तो जानते हो कि भूमध्य रेखा के उत्तर या दक्षिण की तरफ जाने पर ठंड बढ़ती जाएगी। अब तुम एक और मज़ेदार बात जानो। दोनों गोलार्द्धो में विपरीत ऋतुएं होती हैं। यानी, जब उत्तरी गोलार्द्ध (जैसे, भारत) में गर्मी का मौसम होता है तो दक्षिणी गोलार्द्ध के देशों में ठंड का मौसम होता है।

यहां अफ्रीका के तीन देशों के नाम दिए गए हैं। तुम उनको पृष्ठ 71 पर दिए गए मानचित्र में देखो और इस तालिका को भरो।

देश	किस गोलार्द्ध में है	जून मे वहां क्या मौसम होगा
अलजीरिया		
नामीबिया		
बोत्स्वाना		

ज़िम्बाबवे देश

अफ्रीका के दक्षिणी भाग में एक छोटा सा देश है ज़िम्बाबवे। पुराने मानचित्रों में यह देश दक्षिणी रोडेशिया के नाम से मिलेगा। इसी के उत्तर में ज़ाम्बिया देश है जो पहले उत्तरी रोडेशिया नाम से जाना जाता था। रोडेशिया तो अंग्रेज़ी नाम है, तो अफ्रीका में यह नाम कैसे? आओ इसके बारे में पता करें।

सेसिल रोड्स

लगभग सौ साल पहले यहां ज़ुलू कबीले का राज्य था। सन् 1889 में सेसिल रोड्स नाम के अंग्रेज़ ने ज़िम्बाबवे में खनिज निकालने और वहां अंग्रेज़ों को बसाने के लिए एक कंपनी बनाई। रोड्स ने लगभग 200 अंग्रेज़ों को यहां ख़निजों की खोज में भेजा, जो यहां बस गए। फिर 1895 तक आते-आते इन विदेशियों ने यहां ब्रिटेन का राज्य बना लिया और इस पूरे इलाके को रोड्स के नाम पर रोडेशिया नाम दिया। यहां हज़ारों अंग्रेज़ और अन्य यूरोपियन देश के लोग ज़ुलू लोगों को खदेड़कर बस गए।

यहां के निवासियों के साथ अंग्रेज़ों की कई लड़ाईयां हुईं। बहुत लोग मारे गए। लेकिन अंत में अंग्रेज़ राज्य करने लगे। यहां के लोग स्वतंत्रता के लिये बराबर लड़ते रहे और अन्त में 1980 में रोडेशिया को स्वतंत्रता मिली तब उसका नाम ज़िम्बाबवे रखा गया।

इयन और मेरी ज़िम्बाबवे पहुंचे

केप टाउन से ट्रेन से सफर करके इयन और मेरी दक्षिणी अफ्रीका और बोत्स्वाना देश होते हुए ज़िम्बाबवे के नगर बुलावेयो पहुंच गए। उन्होंने एटलस निकाला। ज़िम्बाबवे का मानचित्र देखकर वे यह जानना चाहते थे कि वे कहां पर हैं। तुम भी मानचित्र 2 देखो और बुलावेयो नगर ढूंढो।

"अरे! यह क्या, यहां तो सर्दी है", इयन बोला। मेरी बोली, "ब्रिटेन में तो गर्मी का मौसम है, यहां सर्दी का मौसम कैसे?" तब उन्हें याद आया कि वे तो भूमध्य रेखा पार करके पृथ्वी के दक्षिणी गोलार्द्ध में आ गए। वे लोग हंसने लगे कि देखो, हमें इतनी बात याद नहीं रही कि पृथ्वी के उत्तरी गोलार्द्ध में जब गर्मी का मौसम होता है तब भूमध्य रेखा के दक्षिण की पूरी दुनिया में जाड़े का मौसम होता है। वे लोग जुलाई में ज़िम्बाबवे पहुंचे थे। वहां मई से अगस्त तक जाड़े का मौसम होता है। मेरी बोली, "तब तो यहां गर्मी का मौसम नवंबर से मार्च तक होता होगा जब हमारे यहां जाड़ा होता है।"

ऊंचा और नीचा पठार

ट्रेन अब बुलावेयो से चलकर विक्टोरिया प्रपात की ओर बढ़ चली। इयन तथा मेरी ने अपनी किताब निकाल

ज़िम्बाबवे की बनावट का चित्र

विक्टोरिया प्रपात

लो वेल्ड

हाई वेल्ड

मोज़ंबीक देश

हिंद महासागर

हरारे
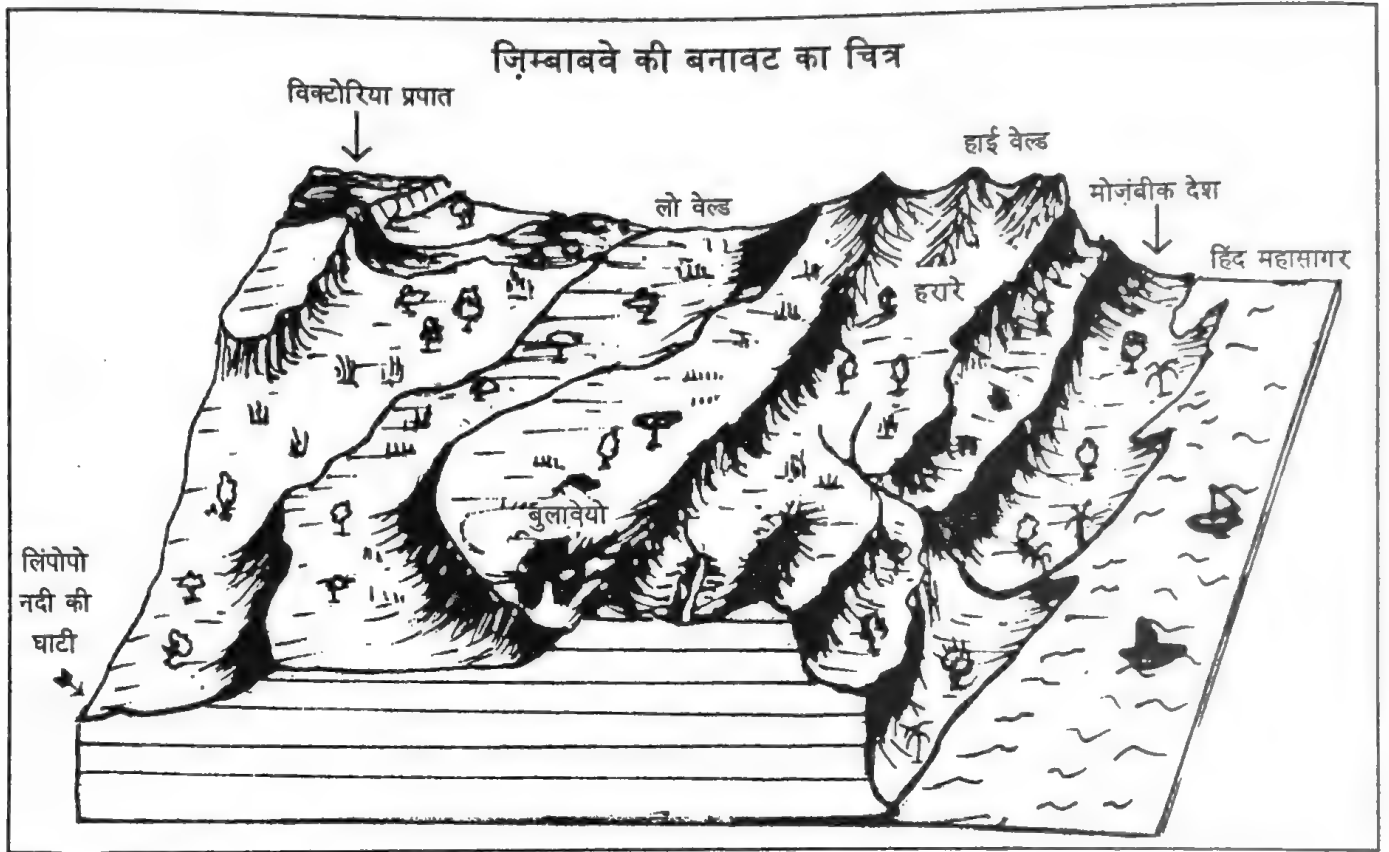
बुलावेयो

लिंपोपो नदी की घाटी

कर ज़िम्बाबवे के बारे में कुछ और पढ़ा। ऊपर के चित्र को ध्यान से देखो। पूरा ज़िम्बाबवे एक पठार पर है। कुछ हिस्सा ऊंचा पठार है और कुछ हिस्सा निचला। ज़िम्बाबवे में ऊंचे भाग को हाई वेल्ड कहा जाता है। इसी भाग में बुलावेयो तथा हरारे शहर बसे हैं। उत्तर में ज़ेम्बज़ी नदी की घाटी है और दक्षिण में लिम्पोपो नदी की घाटी है। नदियों की घाटियों और चारों ओर का भाग नीचा पठार या लो वेल्ड कहलाता है।

ज़िम्बाबवे का सवाना प्रदेश

इयन और मेरी ने देखा कि ज़िम्बाबवे में घास के लम्बे चौड़े प्रदेश हैं। बुलावेयो के आसपास घास हरी और मुलायम है। ट्रेन से पालतू जानवर जैसे गाय-भेड़ आदि चरते दिखाई दे रहे थे। बीच-बीच में खेतिहर प्रदेश हैं। उन्होंने देखा कि घास के बीच-बीच में कुछ बड़े मोटे तने के पेड़ हैं। उन्हें याद आया कि अफ्रीका के सवाना प्रदेश में बाओबाब नामक पेड़ होता है जिसके तने का घेरा 30 फीट तक देखा गया है। इसको खोखला करके लोग घर भी बना लेते हैं। तुम भी इसका चित्र देखो। इसे अपने यहां विदेशी या खुरासानी इमली कहते हैं।

चित्र-1 बाओबाब पेड़

चित्र-2 विक्टोरिया प्रपात

फिर उनकी ट्रेन उत्तर पश्चिम में विक्टोरिया प्रपात की ओर बढ़ने लगी, उस दिशा में उतार था। वहां ज़ेम्बज़ी नदी के निकट जंगल बढ़ने लगे। हरियाली भी अधिक हो गई। घास ऊंची तो थी लेकिन कड़ी सी। मेरी बोली, "अच्छा, तो अब हम लोग लो वेल्ड में उतर आए। हमने पढ़ा था कि यहां ऐसी ही कड़ी घास के प्रदेश हैं। लेकिन यहां पालतू जानवर क्यों नहीं दिख रहे हैं?"

इयन और मेरी के पिता ने बताया कि यहां लो वेल्ड में सेट्सी नामक ज़हरीले कीटाणुओं वाली एक मक्खी होती है, जिसके काटने से आदमी क्या जानवर तक मर जाते हैं। इसलिए पालतू जानवर अब हाई वेल्ड पर ही पाले जाते हैं। वहां इस मक्खी का प्रकोप कम होता है।

विक्टोरिया प्रपात

अंत में वह दिन आ ही गया जब इयन और मेरी ने विक्टोरिया प्रपात देखा। ज़ेम्बज़ी नदी शोर मचाती, उछलती-कूदती और ज़ोर से बहुत ऊंचे कगार से बहुत नीचे गिर रही है, तेज़ फुहार उठ रही है। नदी बहुत चौड़ी है, और गिरती भी ऊंचाई से है। तुम भी विक्टोरिया प्रपात का चित्र देखो। फुहारें तो इतनी उठती हैं कि चारों ओर का प्रदेश भीग जाता है। उस पर जब सूरज की किरणें पड़ती हैं तो इन्द्रधनुष बन जाते हैं। तुमने आकाश में इन्द्रधनुष देखा होगा। पर शायद नदी की फुहार पर नहीं। इयन और मेरी का मन होता वहीं बैठे देखते रहें लेकिन तब तक उन्हें वन्य पशुओं को दिखाने के लिए जीप आगई।

कुछ दूर चलने पर उन्हें एक बड़ा जलाशय दिखा। यहां ज़ेम्बज़ी नदी पर बांध बना कर इसे रोका गया है। इसे करीबा बांध कहते हैं। इस बांध से पानी जब ज़ोर से गिरता है तो नीचे बिजली घर में बिजली बनती है। यह बिजली ज़िम्बाबवे तथा ज़ाम्बिया दोनों के काम में आती है।

अभयारण्य में वन्य पशु

कुछ दूर चले ही थे कि मेरी चिल्लाई, "देखो, ऊंची गर्दन वाला जिराफ, पूरा झुण्ड-का-झुण्ड पेड़ों की ऊपरी
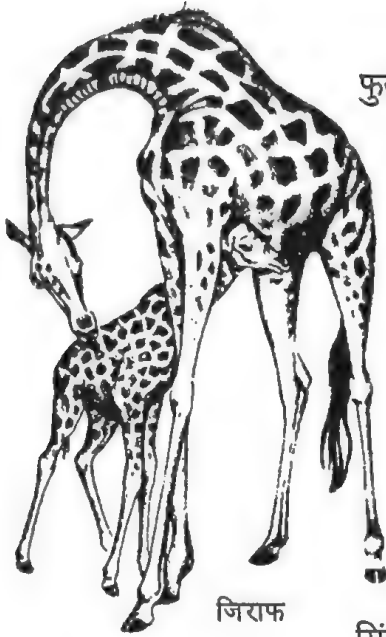
जिराफ

फुनगी तक पत्ते खा रहा है। क्या लम्बी गर्दन है, खुद भी तो 14-18 फीट ऊंचा होता है। इनके बच्चों को तो देखो, अपनी मां के पैरों के बीच खड़े हो जाते हैं।" तब तक उनकी जीप एक खुले स्थान पर पहुंच गई। वहां एक पेड़ के नीचे सिंह, सिंहनी और उनके बच्चे एक हिरन को मारकर खा रहे थे। वे लोग एकदम सहम गए और ड्राइवर ने भी जल्दी से जीप आगे बढ़ाई। तब तक उन्हें एक छोटे तालाब के पास कुछ दिखा। "अरे यह काली-सफेद धारीदार घोड़े जैसा कौन जानवर है?" इयन बोला, "तुम भूल गई? यह ज़ीब्रा है। देखो! पेड़ के बीच और कई ज़ीब्रा चर रहे हैं।"

चित्र-4 इंपाला हिरण

इतने में हिरनों का एक झुण्ड जीप के सामने से दौड़ता हुआ निकल गया। ड्राइवर बोला, "लगता है पास में कहीं सिंह आराम कर रहे हैं तभी ये हिरन भागे।" मेरी बोली, "देखो, इनके सींग कैसे ऐंठे हुए हैं।" उनके पिता ने बताया कि यहां कई किस्म के हिरन पाए जाते हैं। सिंह हिरनों का पीछा करके पकड़ लेता है, फिर खाता है, यही इसका भोजन है। मेरी बोली, "तो फिर हिरन क्या खाता है ?" उनके पिता ने बताया कि सवाना प्रदेश के हिरन, ज़ीब्रा, जिराफ जैसे बहुत से जानवर यहां की घास, पत्ती आदि पर जीवित रहते हैं और सिंह, चीते, तेंदुए, सियार, लोमड़ी आदि इन पशुओं को अपना आहार बनाते हैं।

पास ही एक पहाड़ी पर जीप पहुंच गई। नीचे दूर तक घास का प्रदेश दिख रहा था। बीच में जानवरों की पूरी बारात दिख रही थी। जीप के ड्राइवर ने बताया, "ये जंगली भैंसे पास के किसी अन्य प्रदेश को जा रहे हैं।" और तब तक ऊंची घास में से हाथी का झुण्ड निकल आया। अरे, इतने सारे हाथी! वे सब तालाब में जाकर पानी पीते, सूंड से फुहार छोड़ते और अपने शरीर पर पानी डालते, व आवाज़ करते।

हमारे देश के हाथी और वहां के हाथी के बीच क्या कुछ फर्क दिखता है?

"शाम होने को आई, अब यहां रहना सुरक्षित नहीं है।" यह कह कर मेरी के पिता ने जीप वापिस करवा ली। अभयारण्य देखने के बाद वे लोग लौटने लगे। अब उन्हें ज़िम्बाबवे की राजधानी, हरारे जाना था। वे लो-वेल्ड छोड़कर हाई वेल्ड (ऊंचे पठार) पर चढ़ने लगे।
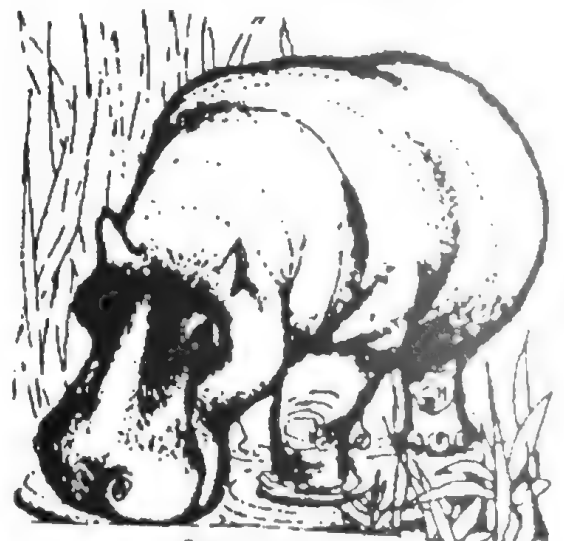
चित्र-5 हिप्पोपोटमस

चित्र-6 अफ्रीकी सवाना प्रदेश का हाथी

चित्र-7 गेंडा

चित्र-8 शेर का परिवार

चित्र-9 एक जै़ब्रा अपने नवजात बच्चे के साथ

चित्र-10 मक्के के खेत में काम करतीं बंटू महिलाएं

हाई वेल्ड पर पशुपालन

ज़िम्बाबवे के हाई वेल्ड या घास के ऊंचे पठार पर मक्खी का प्रकोप नहीं है और ठंडी जलवायु के कारण घास भी मुलायम और रसीली होती है, तो यहां अब पशुपालन विकसित हो गया है। यहां की बहुत सी भूमि चारागाह की तरह उपयोग में आती है।

अंग्रेज़ों के आने से पहले ज़िम्बाबवे के निवासी कुछ पालतू जानवर रखते थे, जैसे बकरी और भेड़। पर तब पशुपालन एक बड़ा धंधा नहीं था, जैसा अंग्रेज़ों ने ज़िम्बाबवे में बसने के बाद पशुपालने का धंधा विकसित किया। अब अधिकतर पशु मांस के लिए पाले जाते हैं: गाय, बैल, सुअर आदि। मांस को सुरक्षित रखने के लिए नगरों में शीत गृह (ठंडे कमरे) बनाए गए हैं। गाय यहां दूध के लिए भी पाली जाती है। दूध से मक्खन और पनीर बनाने के कारखाने भी स्थापित किए गए हैं।

अपने यहां के पशुपालन और ज़िम्बाबवे के पशुपालन में तुम्हें क्या अंतर दिखे?

चित्र 11 को ध्यान से देखकर उसका वर्णन करो।

खेती और मुख्य फसलें

ज़िम्बाबवे के लोगों का मुख्य धंधा खेती है। यहां के निवासी बंटू कबीले के हैं। वे हल, बैल से खेती नहीं करते थे। वे हंसिये से वनस्पति काट कर एक जगह इकट्ठा कर जला देते, फिर कुदाल से गड्ढे करके बीज बो देते। इस तरह बहुत भूमि में खेती तो नहीं हो सकती। एक परिवार कुछ एकड़ भूमि में अनाज पैदा कर लेता है। वे मुख्यतः मक्का, बाजरा, मूंगफली, सोयाबीन और कंद उगाते हैं।

चित्र-11 एक अंग्रेज़ का फार्म

जब हाई वेल्ड में अंग्रेज़ बसने लगे तो उन्होंने भूमि खरीदी और ट्रैक्टर आदि की सहायता से कृषि भूमि का विस्तार किया। नई भूमि जोत कर उसे कृषि योग्य बनाया। रसायनिक खाद और अच्छे बीज भी लाए। अंग्रेज़ों की जोत भी बड़ी-बड़ी थीं। इस तरह मक्का और गेहूं अधिक मात्रा में होने लगा। सोयाबीन और सूरजमुखी बोया जाने लगा। सब्जियां और फल, विशेषकर संतरा, नीबू आदि भी होने लगे। फिर पश्चिम के कम वर्षा वाले प्रदेशों में कपास भी उगाई जाने लगी।

धीरे-धीरे किसानों ने पाया कि ज़िम्बाबवे की जलवायु तम्बाकू की खेती के लिए उपयुक्त है। फिर तो तम्बाकू की खूब खेती होने लगी। ज़िम्बाबवे से बाहर भेजी जाने वाली चीज़ों में तम्बाकू बहुत महत्वपूर्ण है। ज़िम्बाबवे के स्वतंत्र होने के बाद भी यह मुख्यतः ब्रिटेन को भेजी जाती है।

यहां बसे अंग्रेज़ों के फार्मों में खेतिहर मज़दूर स्थानीय बंटू लोग हैं, जो जीविका के लिए अपनी खेतिहर भूमि छोड़ कर इन फार्मों में काम करने आ जाते हैं। बंटू लोगों की स्त्रियों को घर के कामकाज के अलावा अपने छोटे-छोटे खेतों को भी देखना पड़ता है। कम समय दे पाने के कारण उनके खेतों में अधिक उत्पादन नहीं हो पाता था।

1980 में स्वतंत्र होने के बाद सरकार ने छोटे किसानों को तकनीकी सहायता, उर्वरक, ऋण आदि दिया जिससे इन किसानों का उत्पादन बढ़ा है। अब वहां की सरकार स्त्रियों को भी खेती की तकनीकी शिक्षा, ऋण आदि की सुविधा दे रही है। आजकल दुनिया के बाज़ार में ज़िम्बाबवे के खेती के उत्पादनों की मांग कम हो रही है। इसलिए कई अंग्रेज़ अपने फार्म बेचकर दूसरे काम करने लगे हैं।

चित्र-10 को ध्यान से देखकर बताओ इन खेतों में काम कर रही महिलाओं को किन समस्याओं का सामना करना पड़ता होगा।

बंटू पुरुष अंग्रेज़ों के खेतों में क्यों काम करने जाते होंगे?

खनिज उत्खनन उद्योग

परिवहन मार्ग

इयन और मेरी घूमघाम कर हरारे पहुंचे। हरारे के आसपास के कुछ प्रदेश भी वे देखना चाहते थे। तभी शाम को उनके एक दूर के रिश्तेदार टामस मिलने आए। वे बहुत साल पहले ब्रिटेन से ज़िम्बाबवे में आकर बस गए थे। उन्होंने बताया कि वे एक उत्खनन कंपनी में काम करते हैं जो हरारे से कुछ दूर रेल मार्ग पर है। टामस ने बताया कि जब यहां रेल लाईन बिछी तभी यहां खनिज उत्खनन उद्योग विकसित हो सका।

मेरी बोली, "ऐसा क्यों?" टामस बोले, "खनिज बहुत ही भारी होते हैं। अक्सर उनका उपयोग खदान से काफी दूर पर किया जाता है। उन्हें एक जगह से दूसरी जगह लाने ले जाने के लिए रेल मार्ग ज़रूरी है। ज़िम्बाबवे में इसीलिए अधिकतर खदानें रेलमार्ग और सड़कों के निकट हैं।"

उत्खनन उद्योग कहां लगता है?

उत्खनन उद्योग लगाने के लिए पहले खोजकर पता करते हैं कि भारी मात्रा में कहां खनिज हैं। कोई कंपनी सरकार से खनिज वाली भूमि का पट्टा ले लेती है, फिर मशीनें लाती है, मज़दूरों को इकट्ठा करती है और उत्खनन उद्योग शुरू होता है। वहां से फिर रेलमार्ग द्वारा किसी उपयुक्त स्थान पर खनिज ले जाकर साफ किया जाता है। वहां फिर उसकी तरह-तरह की चीज़ें बनती हैं। ज़िम्बाबवे में ब्रिटेन, संयुक्त राज्य अमेरिका और दक्षिण अफ्रीका की कंपनियों ने खनिज वाली भूमि लेकर उत्खनन उद्योग लगाए।

इन खदानों में अधिकतर स्थानीय लोग मज़दूरों की तरह काम करते हैं। ये मज़दूर खदानों के चारों ओर बस जाते हैं। वहां बस्तियां बस जाती हैं। लेकिन यदि वहां खनिज खत्म हो जाये या घाटा होने पर खदान बंद कर दी जाये तो लोग फिर दूसरी जगह काम करने चले जायेंगे।

एक जगह निकाला गया खनिज वहीं तो उपयोग में नहीं आता, दूर-दूर तक भेजा जाता है। ज़िम्बाबवे के अधिकतर खनिज विदेशों को ही भेजे जाते हैं। खनिज समुद्री बंदरगाहों तक रेल से पहुंचता है।

रेल लाइनें किन बंदरगाहों तक जाती हैं?

ज़िम्बाबवे के खनिज

मानचित्र 2 में देखो ज़िम्बाबवे में कहां पर कौन से खनिज निकाले जाते हैं।

दक्षिणी अफ्रीका के समान ज़िम्बाबवे में हीरा और बहुत अधिक सोना तो नहीं मिलता लेकिन सोने की कुछ खदानें अवश्य हैं। सोना तो यहां बहुत पुराने समय से निकाला जाता है लेकिन कोयला, तांबा, निकल, लोहा, क्रोम तथा एस्बेस्टस आदि खनिजों की खोज अंग्रेज़ों ने यहां बसने के बाद की और उत्खनन शुरू किया।

ज़िम्बाबवे के नगर

अंग्रेज़ों के आने के बाद यहां धीरे-धीरे कई नगर बस गए, जिनमें हरारे (पुराना नाम सेलिस्बरी), उम्ताली तथा बुलावेयो प्रमुख हैं।

मानचित्र में इन नगरों की स्थिति देखो। क्या ये नगर रेलमार्ग से जुड़े हैं?

तुमने कभी सोचा बड़े नगर क्यों बस जाते हैं? सभी लोग गांवों में क्यों नहीं रहते?

कभी किसी नगर को घूम कर देखो तो तुम वहां के कार्यों को समझ सकोगे। कॉलेज, अस्पताल, सरकारी ऑफिस आदि का तो यह केंद्र होता ही है। चारों ओर के प्रदेश का कृषि उत्पादन भी नगरों की मंडियों में आता है और जहां भी इन चीज़ों का बाज़ार हो, देश या विदेश में, भेजा जाता है। हरारे नगर इसी प्रकार का प्रादेशिक

मानचित्र 2 ज़िम्बाबवे में खनिज तथा रेल मार्ग
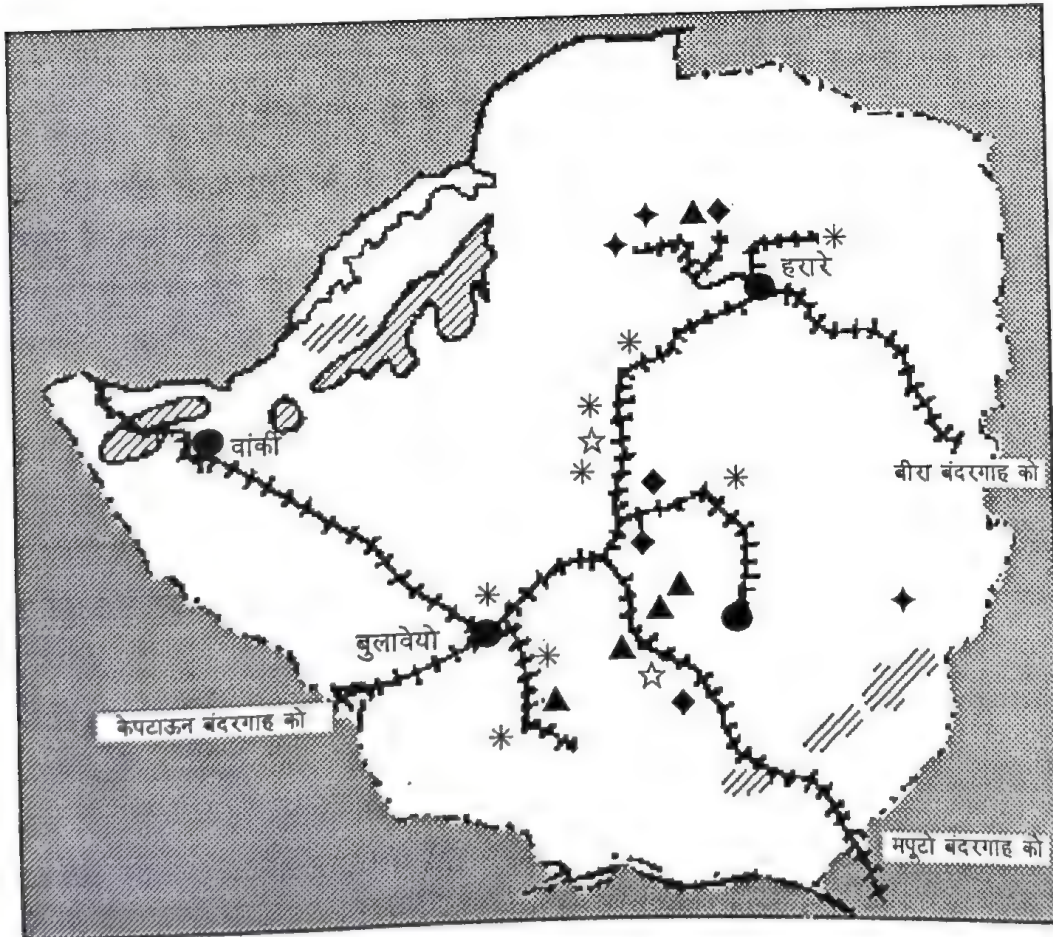
केंद्र है। यहां तम्बाकू, मक्का, मूंगफली तथा कपास बिकने के लिए आती है।

खेती और पशुपालन से मिली बहुत सी चीज़ें जैसे मांस, फल जल्दी खराब भी हो जाती हैं। तो नगरों में उनको डिब्बों में बंद करके सुरक्षित किया जाता है। कृषि उत्पादन से जुड़े कुछ उद्योग भी नगरों में होते हैं, जैसे आटा पीसना, बिस्कुट बनाना, तेल निकालना, तम्बाकू की पत्ती से खाने की तम्बाकू बनाना, सिगरेट बनाना। हरारे में ये सब उद्योग लग गए हैं।

बताओ हरारे में निम्नलिखित उद्योगों के लिए चारों ओर के कृषि प्रदेश से क्या कच्चा माल मिलता है?

उद्योग	*कच्चा माल*
मांस डिब्बों में बंद करना	
आटा पीसना	
बिस्कुट बनाना	
तेल निकालना	
तम्बाकू, सिगरेट बनाना	
चमड़े का सामान बनाना	

हरारे में एक दिन इयन और मेरी घूम रहे थे तो उन्होंने देखा कि एक जगह तम्बाकू की पत्ती के बोरे रखे हैं और उसे बेचने के लिए बोली लगाई जा रही है। पास खड़े एक व्यक्ति से उन्होंने पूछा कि क्या इतनी तम्बाकू ज़िम्बाबवे में ही इस्तेमाल होती है? उसने कहा, "नहीं। अधिकतर तो विदेश भेज दी जाती है। उसने फिर शान से कहा, "अब तो हमारा देश अफ्रीकी, यूरोपियन और अमरीकी देशों को बहुत सी चीज़ें भेजता है। और अपनी ज़रूरत की चीज़ें मंगाता है।"

नीचे दी गई तालिका को भरो और बताओ कि आयात में कृषि से मिली चीज़ें अधिक हैं, कि खदान से निकाली चीज़ें, कि कारखानों में बनी चीज़ें?
और फिर निर्यात में ....

ज़िम्बाबवे में धीरे-धीरे कारखाने लग रहे हैं और ज़रूरत की चीजें बनना शुरू हो गई हैं जैसे लोहा, इस्पात, कपड़ा आदि। तब यह देश दूसरे देशों के कारखानों पर निर्भर नहीं रहेगा।

इयन और मेरी की छुट्टियां खत्म हो रही थीं, उनके पिता को अपने काम पर पहुंचना था। उन्होंने हवाई जहाज़ पकड़ा और अपने देश ब्रिटेन उड़ चले।

निर्यात की जाने वाली चीज़ें	कहां से मिली			आयात की जाने वाली चीज़ें	कहां से मिली		
	कृषि	खदान	कारखाना		कृषि	खदान	कारखाना
तम्बाकू	✓			मशीन			✓
कपास				रेल के डिब्बे			
मक्का				ट्रक, मोटर			
शक्कर				खनिज तेल			
मांस				कपड़ा			
तांबा				रसायन			
सोना				इस्पात			
क्रोम				कीटनाशक दवाएं			
सिले हुए कपड़े				दवाएं			
निकल							
बिजली का सामान							

खनिजों का उपयोग

1. तांबा- तांबे से न केवल बर्तन बनते हैं बल्कि बिजली के तार में भी इसका उपयोग होता है। तांबे में टिन या रांगा मिलाकर कांसा बनाया जाता है। पीतल के बर्तन तो तुमने घरों में देखे होंगे। कभी सोचा कि पीतल कैसे बनता है? तांबे में टिन, क्रोम, जस्ता आदि मिलाकर पीतल बनाया जाता है।

2. क्रोम- स्टील के रंग की सफेद सी धातु होती है। तुमने घरों में स्टील के बर्तन देखे होंगे, जिनमें ज़ंग नहीं लगता, धब्बे भी नहीं पड़ते। यह स्टील क्रोम और लोहे को मिलाकर बनाते हैं। साइकिल के चमकते हुए हैन्डिल इसी धातु की पॉलिश से बनते हैं। ज़िम्बाबवे क्रोम धातु का महत्वपूर्ण उत्पादक देश है।

3. एस्बेस्टस राख के रंग का रेशेदार खनिज होता है। एस्बेस्टस मिला कर जो सीमेंट बनता है, उससे चादरें और पाईप बनाए जाते हैं। तुमने सफेद सी चादरों से छत बनाते हुए देखा होगा।

अभ्यास के प्रश्न

1. पृष्ठ 71 का मानचित्र देखकर बताओ ज़िम्बाबवे के चारों ओर कौन से देश हैं?
2. अंग्रेज़ लोगों ने ज़िम्बाबवे का क्या नाम रखा था? उसे अपने राज्य में क्यों मिलाया?
3. लो वेल्ड में पशुपालन में क्या कठिनाई है? वहां कैसे जानवर अधिक हैं?
4. हाई वेल्ड में पशुपालन की क्या सुविधाएं हैं?
5. अब वन्य पशुओं को अभयारण्य में क्यों रखा गया है?
6. अंग्रेज़ों ने ज़िम्बाबवे में खेती किन विधियों की सहायता से फैलाई ?
7. ज़िम्बाबवे में कौन सी मुख्य फसलें होती हैं, निम्नलिखित में से चुनो:
   चावल, सोयाबीन, गेहूं, मक्का, पटसन, मूंगफली, तम्बाकू, कपास।
8. ज़िम्बाबवे में बसे बंटू लोगों और अंग्रेज़ों की खेती में क्या अंतर है, चार वाक्यों में बताओ।
9. खनिजों को निकालने का उद्योग लगाने के लिए परिवहन मार्गों की आवश्यकता क्यों होती है?
10. उत्खनन उद्योग के क्षेत्र में लोग क्यों बस जाते हैं? क्या वे हमेशा वहीं रहते हैं?
11. तांबा और क्रोम धातुएं किन कामों में आती हैं? ज़िम्बाबवे इन्हें बाहर क्यों भेजता है?
12. ज़िम्बाबवे कृषि और उत्खनन से प्राप्त खनिज विदेशों को अधिक भेजता है और कारखाने से बनी चीज़ें मंगाता है, ऐसा क्यों है?

इतिहास

कक्षा-6 में तुमने जाना था ....
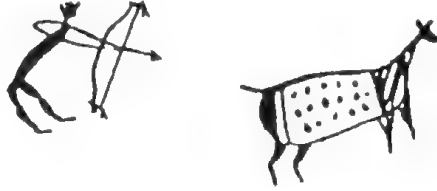
चित्र देखकर खाली स्थान भरो-

शुरू-शुरू में .... होते थे।

फिर कई जगहों पर उन्होंने .... शुरू की
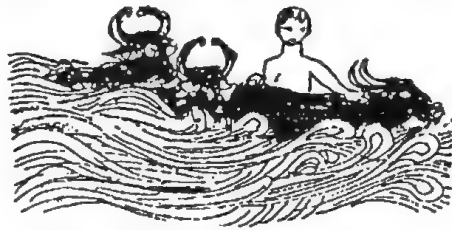
और कुछ जगहों पर .... ।

पिर कहीं-कहीं .... बसे।

सिन्धु नदी के मैदान में .... ।
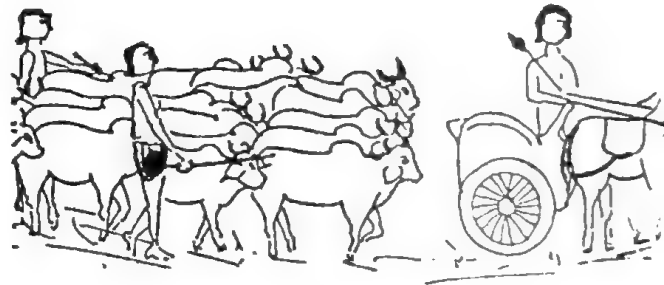
फिर पशुपालक .... आए।
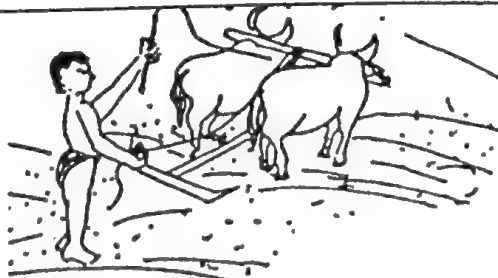
उन्होंने धीरे-धीरे ....

वे.............. करते थे।
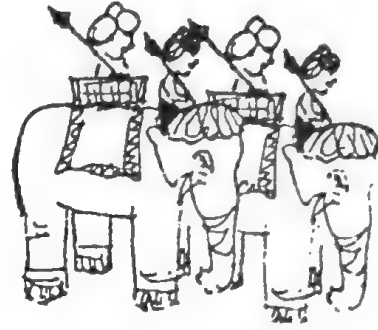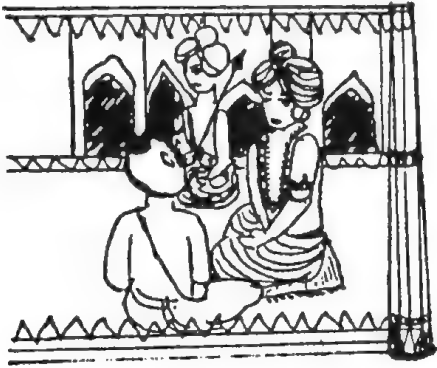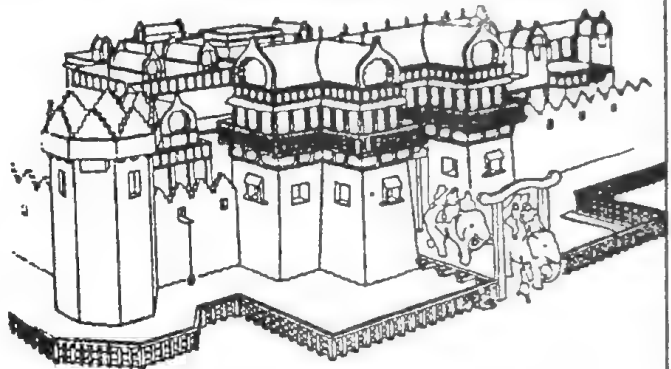
आज से 2500 साल पहले जनपद या राज्य गंगा यमुना नदियों के मैदान में व उसके आसपास बने थे। मानचित्र 1 में जनपदों का इलाका देखो। भारत में बाकी जगहों पर राजा नहीं थे। उन इलाकों में ज़्यादातर जंगल थे। कहीं-कहीं शिकारी लोग और कहीं-कहीं किसानों की छोटी-छोटी बस्तियां थीं।

मगध जनपद में अजातशत्रु और महापद्मनन्द जैसे राजा हुए। उन्होंने दूसरे जनपदों को हरा कर मगध का राज्य बहुत बड़ा बनाया। फिर मगध राज्य में मौर्य वंश के राजा हुए जैसे चन्द्रगुप्त, बिन्दुसार और अशोक। उन्होंने मगध के राज्य को बहुत दूर-दूर तक फैलाया। मानचित्र 1 में अशोक के समय में मगध राज्य की सीमा देखो। जनपदों के अलावा और कौन से इलाके मगध राज्य में आ गए थे?
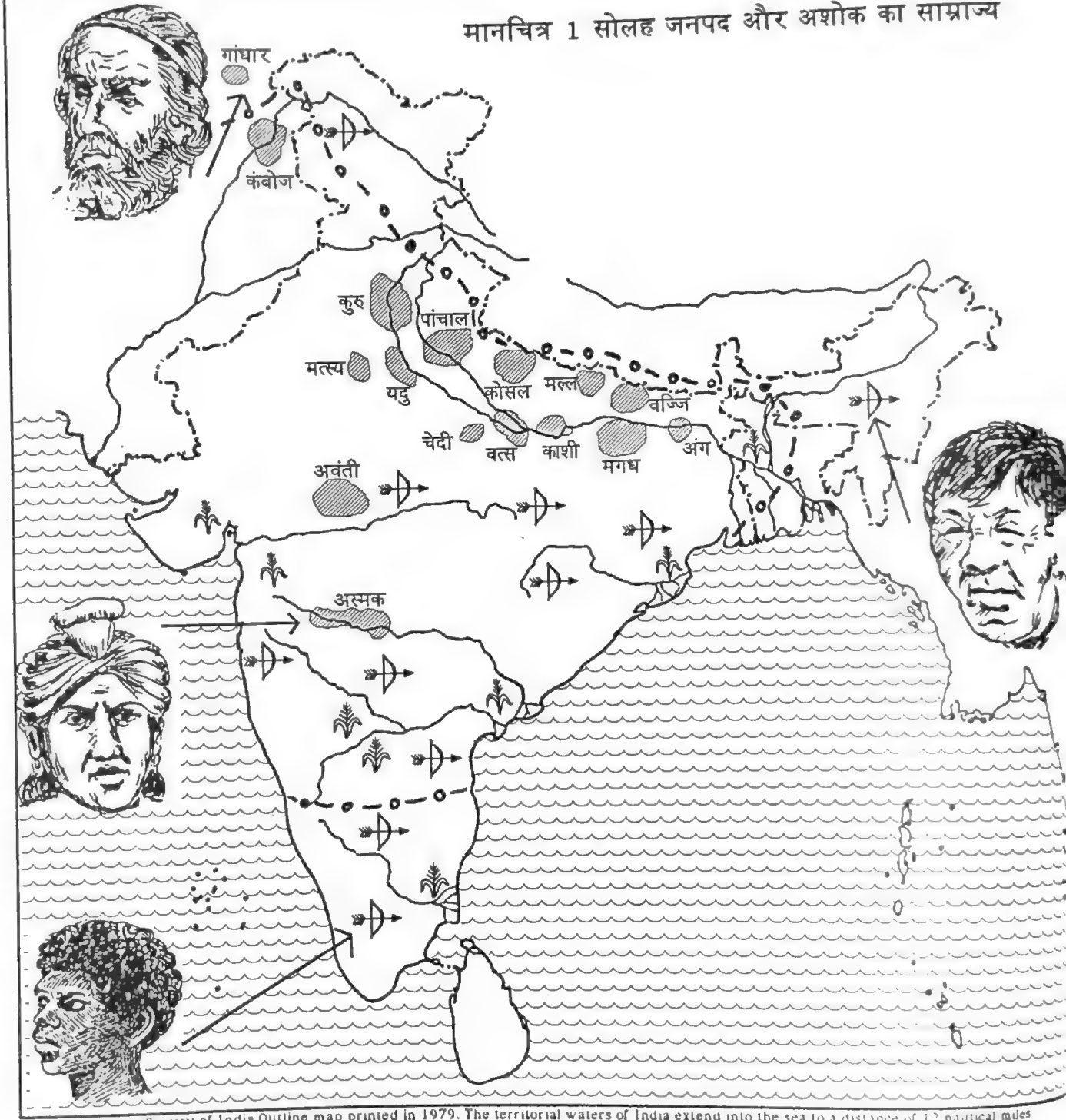
Based upon Survey of India Outline map printed in 1979. The territorial waters of India extend into the sea to a distance of 12 nautical miles measured from the appropriate baseline. c. Govt of India copyright.

संकेत

	जनपद		अशोक के साम्राज्य की सीमा
	खेती करने वालों का इलाका		शिकारियों का इलाका
	भारत की वर्तमान बाह्य सीमा		

1. महाराजाधिराज समुद्रगुप्त

(सन् 335 से सन् 375 तक शासन)

समुद्रगुप्त

राजा अशोक के लगभग 500 वर्षों बाद मगध में एक और बड़ा राजा हुआ। उसका नाम था समुद्रगुप्त। अशोक की तरह समुद्रगुप्त की राजधानी भी पाटलिपुत्र ही थी। मानचित्र - 2 में पाटलिपुत्र नगर पहचानो।

समुद्रगुप्त का सिक्का

समुद्रगुप्त द्वारा जारी किए गए सिक्कों में एक सिक्के का चित्र यहां देखो। इस सिक्के में राजा समुद्रगुप्त को वीणा बजाते दिखाया है। समुद्रगुप्त को संगीत में रुचि थी। उसके दरबार में अच्छे से अच्छे कवि और कलाकार हुआ करते थे। समुद्रगुप्त के बारे में जितनी ये बातें प्रसिद्ध हैं उतनी ही प्रसिद्ध हैं उसकी युद्ध विजय की बातें।

कवि हरिषेण

महाराजा समुद्रगुप्त ने किन राजाओं को युद्ध में हराया और उन राजाओं के साथ कैसा व्यवहार किया, यह पूरा वर्णन हमें हरिषेण देता है। हरिषेण समुद्रगुप्त के दरबार का एक अधिकारी और कवि था। उसने समुद्रगुप्त की प्रशंसा में एक लम्बी प्रशस्ति संस्कृत भाषा में लिखी।

इलाहाबाद का खम्भा

हरिषेण की लिखी गई प्रशस्ति एक लम्बे पत्थर के खम्भे पर खुदवाई गई। यह वह खम्भा था जिसके ऊपर राजा अशोक का संदेश भी खुदा हुआ था। यह खम्भा आजकल इलाहाबाद के किले में रखा हुआ है। इस तरह, इलाहाबाद के इस खम्भे से हमें दो बड़े राजाओं का परिचय मिलता है।

ऊपर दिए अंशों के 8 महत्वपूर्ण शब्दों को रेखांकित करो।

सन् 335 में समुद्रगुप्त राजा बना था। तब उसका राज्य बहुत छोटा था। आसपास बहुत सारे अन्य छोटे बड़े राज्य थे। इतने सारे राजाओं के बीच समुद्रगुप्त अपने मगध राज्य को मज़बूत बनाना चाहता था और अपना यश बढ़ाना चाहता था। इसके लिए उसने क्या प्रयत्न किया यह इलाहाबाद के खम्भे पर खुदा है।

आर्यावर्त के राज्य

प्रशस्ति में लिखा है-

"समुद्रगुप्त ने अपने अपार बाहुबल से आर्यावर्त के अनेक राजाओं को खत्म करके उनके राज्य को अपने राज्य में मिला लिया। ऐसे राजा थे - रुद्रदेव, मटिल, नागदत्त, चन्द्रवर्मन, गणपतिनाग, नागसेन, अच्युतनन्दिन और बलवर्म"

इन विजयों के कारण समुद्रगुप्त का राज्य आर्यावर्त में फैल गया। उन दिनों गंगा-यमुना नदियों के मैदान को आर्यावर्त कहा करते थे क्योंकि उस क्षेत्र में आर्य कबीले आकर बसे थे।

समुद्रगुप्त ने आर्यावर्त के कितने राजाओं को हराया?

उन्हें हराकर क्या किया?

आर्यावर्त का क्षेत्र मानचित्र-2 में पहचानो।

इलाहाबाद के खंभे पर हरिषेण की लिखी प्रशस्ति

खम्भे की लिखाई पर ध्यान दो। क्या कोई अक्षर तुम्हारी पहचान का है?

इसमें संस्कृत भाषा में बातें लिखी हैं।

क्या आज भी संस्कृत इस लिखावट (लिपि) में लिखी जाती है?
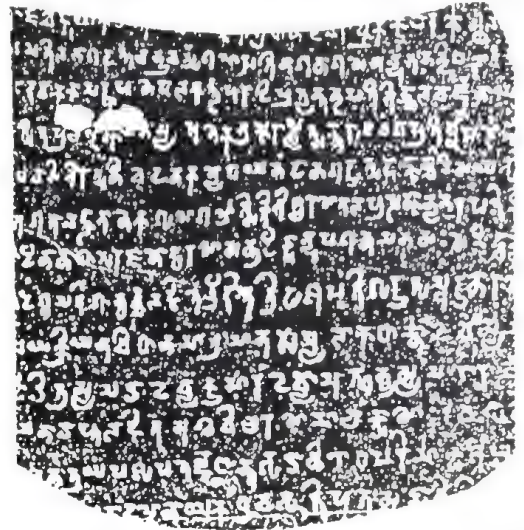
दक्षिणापथ के राज्य

आर्यावर्त में सफल होने के बाद समुद्रगुप्त दक्षिण दिशा की ओर मुड़ा। नर्मदा नदी के दक्षिण में पड़ने वाला क्षेत्र उन दिनों दक्षिणापथ कहलाता था। तब क्या हुआ यह हरिषेण की लिखी प्रशस्ति के एक अंश मे पढ़ो। (गुरुजी यह अंश पढ़ कर सुनाएंगे। तुम मानचित्र-2 में उन जगहों को ढूंढते जाओ जिनका नाम इस अंश में आएगा)

"समुद्रगुप्त पराक्रमी होने के साथ-साथ उदार भी है। इस कारण उसने सारे दक्षिणापथ के राजाओं को युद्ध में हराकर उनके राज्य उन्हें लौटा दिए। ये दक्षिणापथ के राजा हैं - कोसल के राजा महेन्द्र, महाकान्तार के राजा व्याघराज, कुराल के राजा मण्टराज, पिष्टपुर के राजा महेन्द्रगिरि, कोट्टूर के राजा स्वामिदत्त, एरण्डपल्ल के राजा दमन, कांचीपुरम के राजा विष्णुगोप, अवमुक्त के राजा नीलराज, वेंगी के राजा हस्तिवर्मन, पालक के राजा उग्रसेन, देवराष्ट्र के राजा कुबेर और कुस्थलपुर के राजा धनंजय।"

इन विजयों के बाद दक्षिणापथ में भी समुद्रगुप्त से टक्कर लेने वाला कोई न बचा। समुद्रगुप्त सब राजाओं का राजा हो गया।

समुद्रगुप्त ने दक्षिणापथ के कितने राजाओं को हराया? गिनकर बताओ।

मौर्य राजाओं के समय में दक्षिणापथ

समुद्रगुप्त से 500 साल पहले मौर्य वंश के राजा भी इतनी दूर दक्षिण में राज्य बनाने आए थे (चन्द्रगुप्त, बिन्दुसार व अशोक), पर मौर्य वंश के राजाओं ने दक्षिणापथ क्षेत्र में इतने सारे राजाओं से लड़ाई नहीं की थी। उन दिनों, दक्षिणापथ में इतने सारे राजा थे ही नहीं। मौर्य वंश के राजा जब दक्षिणापथ आए तब वहां जो गांव और बस्तियां थीं उन पर वे अपने सैनिक और अधिकारी तैनात कर गए थे। पर, मौर्य राजाओं के 500 साल बाद, जब समुद्रगुप्त दक्षिणापथ में राज्य बनाने आया तो उसे इस इलाके में कितने राजाओं से युद्ध करना पड़ा!

समुद्रगुप्त ने दक्षिणापथ के राजाओं को हरा कर उनके साथ क्या नीति अपनाई? समुद्रगुप्त ने आर्यावर्त के राजाओं के साथ क्या यही नीति अपनाई थी? स्पष्ट करो।

दक्षिणापथ में समुद्रगुप्त की नीति मौर्य राजाओं की नीति से कैसे फर्क थी? स्पष्ट करो।
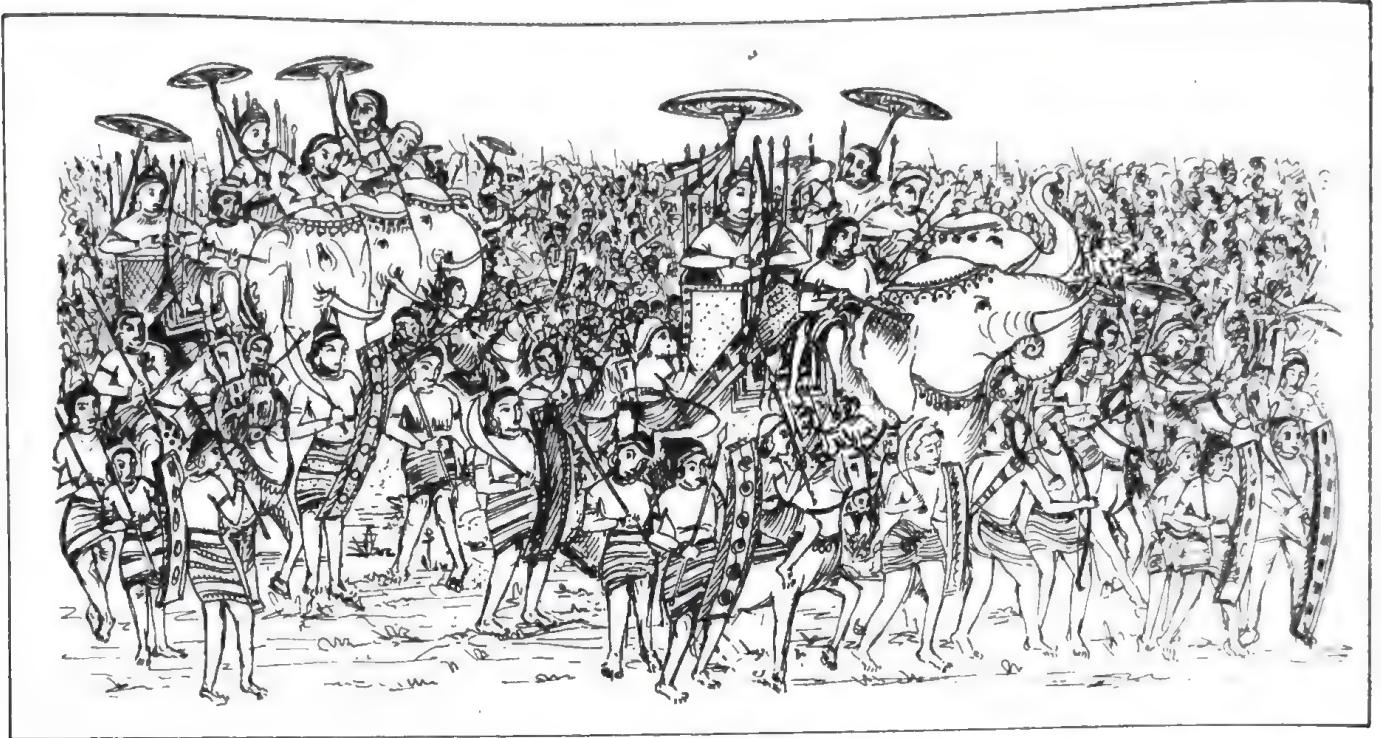
चित्र - 4 युद्ध के लिए तैयार सेना

पड़ोसी राजा और दूसरे देश के राजा

समुद्रगुप्त की विजय और सफलताओं के कारण उसका यश दूर-दूर तक फैलने लगा। वह बहुत पराक्रमी और बलवान राजा माना जाने लगा। दूसरे राजाओं पर इस बात का बहुत असर पड़ा। वे समुद्रगुप्त से बड़े प्रभावित हुए। इलाहाबाद के खम्भे पर खुदी प्रशस्ति में लिखा है-

"समुद्रगुप्त को खुश करने के लिए पड़ौसी राजा भेंट ले कर आते हैं। उसे प्रणाम करते हैं और उसकी आज्ञा का पालन करते हैं। ऐसे पड़ौसी राज्य हैं- समतट, डवाक, कामरूप, नेपाल और कर्त्रिपुर।"

इन पड़ौसी राजाओं को मानचित्र - 2 में ढूंढो।

मानचित्र-1 देखकर बताओ कि महाजनपदों के समय ये राज्य थे या नहीं।

इन राज्यों के राजा समुद्रगुप्त से युद्ध में हारे नहीं थे। फिर क्या सोच कर वे उसकी आज्ञा मानने लगे होंगे?

उस समय कई सारे गणसंघ भी थे। इन गणसंघों के लोग भी समुद्रगुप्त के लिए भेंट ले कर आने लगे। हरिषेण यह भी लिखता है कि दूर देश के राजा समुद्रगुप्त से दोस्ती करना चाहते थे, और उससे शादी ब्याह का संबंध बनाना चाहते थे।

यह सब पढ़ कर तो लगता है कि उन दिनों चारों तरफ समुद्रगुप्त का खूब रौब था, बहुत दबदबा था। पर इस बात से हमें ज़रूर सावधान होना चाहिए कि हरिषेण अपने राजा की प्रशंसा लिख रहा था तो शायद उसने कुछ बातें बढ़ा-चढ़ा कर लिखी होंगी। शायद समुद्रगुप्त का वास्तव में इतना प्रभाव न रहा हो।

अलग अलग नीतियां

पर, हरिषेण की प्रशस्ति हमें एक महत्वपूर्ण बात बताती है। हमें यह पता चलता है कि उस समय समुद्रगुप्त जैसा राजा अपने राज्य की ताकत बढ़ाने के लिए अलग-अलग नीतियों का उपयोग कर रहा था। उसने आर्यावर्त के राजाओं को हरा कर उनका राज्य अपने राज्य में मिला लिया। पर, दक्षिणापथ के राजाओं को हरा कर समुद्रगुप्त ने उनका राज्य उन्हें लौटा दिया।

इस बात का क्या तुम कोई कारण सोच सकते हो कि समुद्रगुप्त ने दक्षिणापथ के राजाओं का राज्य अपने राज्य में क्यों नहीं मिलाया?

क्या दक्षिणापथ के राज्य समुद्रगुप्त की राजधानी से ज़्यादा दूर थे?

हम देखेंगे कि समुद्रगुप्त के बाद आने वाले समय में भी राजा अपनी-अपनी ताकत बढ़ाने के लिए इस नीति का बहुत उपयोग करने लगे। दूसरे राजा को हराकर उसका राज्य लौटा देने की नीति महत्वपूर्ण बन गई।

समुद्रगुप्त ने एक अश्वमेघ यज्ञ किया। तब उसने ऐसे सिक्के जारी किये

गुप्त वंश के अन्य राजा

समुद्रगुप्त के बाद गुप्त वंश में चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य, कुमारगुप्त और स्कन्दगुप्त नाम के राजा हुए। उनके शासन काल में मध्य एशिया के हूण नाम के कबीलों ने कई बार हमला किया। गुप्त राजा हूणों से कई युद्धों में लड़े। पर धीरे-धीरे उनकी ताकत कमज़ोर होती गई। सन् 550 के लगभग गुप्त वंश का शासन खत्म हो गया।

अभ्यास के प्रश्नः

1. इलाहाबाद के खम्भे का परिचय दो। यह खम्भा क्यों महत्वपूर्ण है?
2. क-मौर्य राजाओं के समय दक्षिणापथ में क्या था- कई राज्य/ कुछ गांव व बस्तियां/ कई नगर? मौर्य राजाओं ने दक्षिणापथ में क्या किया?

   ख-समुद्रगुप्त के समय दक्षिणापथ में क्या था- कई राज्य/ कुछ गांव व बस्तियां/ कई नगर? उसने दक्षिणापथ में क्या किया?
3. क-हरिषेण के अनुसार समुद्रगुप्त ने दक्षिणापथ के राजाओं के राज्य क्यों लौटा दिये थे?

   ख-क्या तुम्हें समुद्रगुप्त की इस नीति का कोई और कारण समझ में आता है?
4. समुद्रगुप्त के बारे में वो छः बातें बताओ जो तुम्हें महत्वपूर्ण लगीं।
5. समुद्रगुप्त की कौन सी नीति, उसके बाद आने वाले राजा भी अपनाने लगे थे?

2 गांव ही गांव, खेत ही खेत

(सन् 100 से सन् 1000 तक की बात)

इस पाठ में दिए गए चित्रों को ध्यान से देखो। इनमें से क्या क्या बातें आज भी तुम अपने आसपास देख सकते हो?
किन किन इलाकों की खेती के बारे में इस पाठ में चर्चा होगी?

उन दिनों जब छोटे बड़े राजा महाराजा युद्ध क्षेत्र में लड़ रहे थे और अपने दरबार में कलाकारों और कवियों को बढ़ावा दे रहे थे- गांवों में किसान खेती सुधारने और बढ़ाने के परिश्रम में लगे थे। ये वो समय था जब लोग खेती फैला रहे थे। नए-नए खेतों के साथ नए-नए गांव बसा रहे थे। कई कबीले जो शिकार या पशुपालन किया करते थे वे भी खेती का काम अपनाने लगे थे। इन्हीं गांवों और खेतों पर अधिकार जमाने के लिए इतने सारे राजा लड़ रहे थे। इन्हीं खेतों की उपज से ली गई लगान से राजाओं के पास धन इकट्ठा हो रहा था। उस धन से ही दरबारों का ठाठ-बाठ था और कवियों व कलाकारों को बढ़ावा दिया जा रहा था।

तो चलो लड़ाई के मैदान और राज दरबारों की बातें छोड़कर हम यह बात करें कि उन दिनों खेतों में क्या हो रहा था, किसान क्या प्रयत्न कर रहे थे।

इस अंश में कही बातों को तीन वाक्यों में कहो।

शुरू में खेती-बाड़ी अक्सर नदियों के किनारे ही हुआ करती थी- ऐसी नदियों के किनारे जिनमें साल भर पानी रहता था। पर साल भर बहने वाले नदी-नाले तो बहुत कम थे। अधिकांश नदी-नाले बारिश के मौसम के बाद सूख जाते थे। ऐसे इलाकों में खेती फैलाना मुश्किल काम था। उन इलाकों में जब लोग खेती फैलाने की कोशिश करने लगे तो उन्होंने जहां तक संभव हो सिंचाई की व्यवस्था करने की कोशिश की।

चित्र-1 कई कबीले पहली बार खेती अपनाने लगे थे।

पठार में सिंचाई

जो लोग कर्णाटका, आंध्रप्रदेश, तमिलनाडु व महाराष्ट्र के पठारी इलाकों में खेती फैला रहे थे उन्होंने अपने यहां की ज़मीन के हिसाब से सिंचाई का एक उपाय ढूंढा। चित्र -2 में देख कर समझो कि पठारी इलाकों की ज़मीन कैसी थी और वहां किसानों ने सिंचाई की क्या व्यवस्था की।
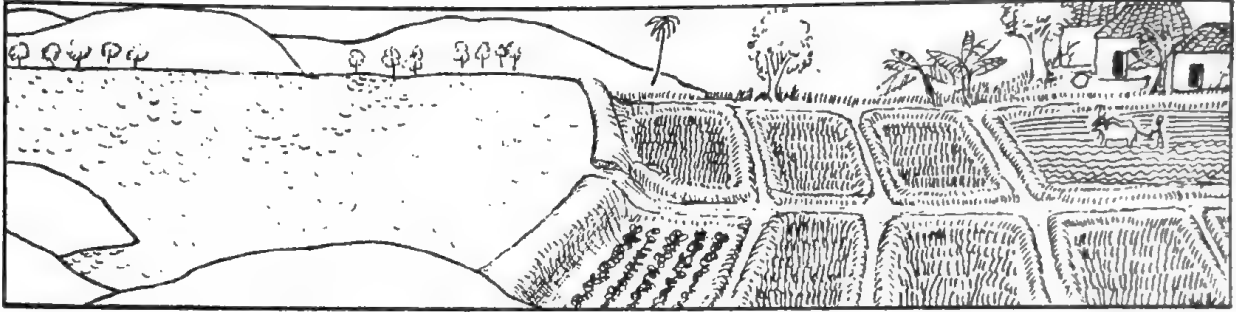
चित्र-2 पठार की ज़मीन और सिंचाई के तालाब।

भारत के मानचित्र में ऊपर बताए राज्यों को पहचानो।

मैदान में सिंचाई

भारत में सिर्फ पठार ही नहीं हैं। मैदानी इलाके भी हैं। मैदानी इलाकों में जो किसान खेती फैला रहे थे उन्होंने सिंचाई का क्या-क्या इन्तज़ाम किया - चित्र-3 में देखो।
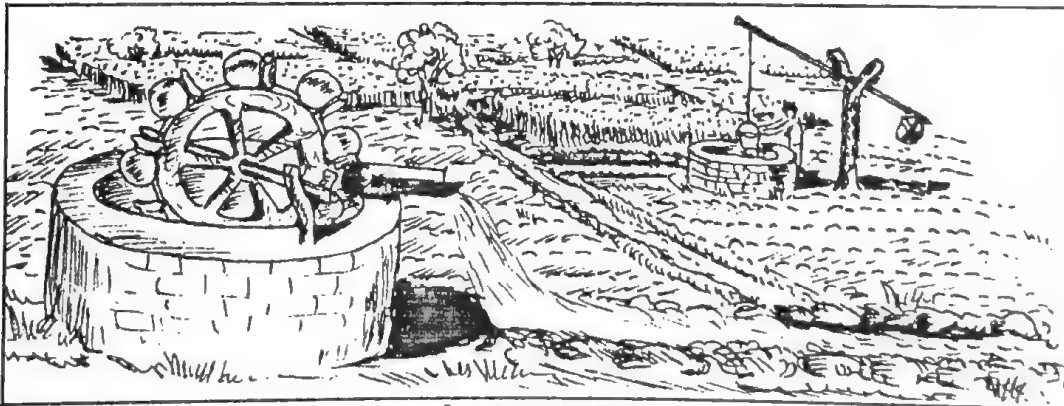
चित्र-3 मैदानी इलाके में सिंचाई।

मैदानी इलाकों में कौन से राज्य आते हैं, गुरुजी की मदद से, भारत के दीवार मानचित्र में देखो।

मैदानी इलाके के किसानों ने तालाब क्यों नहीं बनाए जबकि पठारी इलाके के लोगों ने बहुत तालाब बनाए थे? चित्र-2 और चित्र-3 में दिखाई ज़मीन की तुलना कर के उत्तर ढूंढो।

मैदानी इलाके के किसानों ने सिंचाई के लिए सैकड़ों कुएं व बावड़ियां खोदीं, पर पठारी भाग के लोगों ने ऐसा नहीं किया। पठार में कुआं खोदना कठिन होता है। मिट्टी के ठीक नीचे चट्टान होती है। चट्टान की दरारों में ही कहीं-कहीं

पानी भरा मिलता है। जबकि मैदानी इलाकों में ज़मीन के नीचे बालू व मिट्टी होती है। मिट्टी और बालू के बीच पानी भरा मिल जाता है। इसलिए कुएं बनाना आसान है। तुमने कक्षा-6 में "मैदान का एक गांव, कोटगांव" और "पठार का एक गांव, बालमपुर" के पाठ पढ़े थे। उन पाठों में तुमने यह बात विस्तार से समझी थी कि पठार और मैदान में सिंचाई के उपायों में क्या फर्क है।

उस पुराने समय के किसानों ने भी अपने अनुभव से अपने यहां की ज़मीन के अनुसार सिंचाई की विधियां ढूंढ ली थीं।

पानी खींचने के यंत्र

किसानों ने कुओं से पानी खींचने के तरीके भी ढूंढे। इसके लिए किसानों ने तरह-तरह के यंत्र बनाए। सबसे पहले शायद ढेंकली का उपयोग हुआ।

ढेंकली से पानी कैसे उठाया जाता है चित्र-4 से समझो।
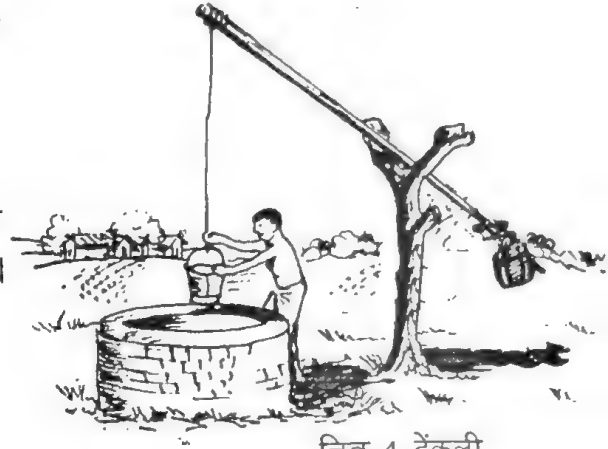
चित्र-4 ढेंकली
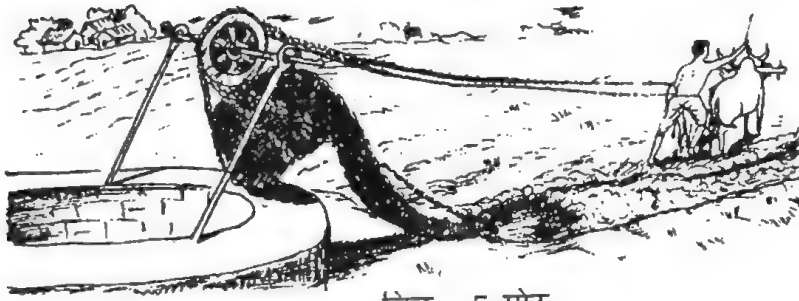
चित्र - 5 मोठ

फिर बैलों को जोतकर मोठ से पानी खींचा जाने लगा।

क्या तुम्हारे यहां ढेंकली और मोठ का उपयोग हुआ करता था? पता करो।

पुराने समय में तो ये ही सिंचाई के यंत्र थे। लोग लगातार बेहतर यंत्र बनाने की कोशिश करते रहे। एक नया यंत्र बना अरघट्ट।

अरघट्ट से पानी कैसे खींचा जाता था चित्र-6 देख कर समझो।

क्या तुम्हारे आसपास इस यंत्र का उपयोग होता था? इसे तुम्हारे क्षेत्र में क्या कहा जाता था?

सिंचाई के इन साधनों को बनाने और लगवाने में बहुत मेहनत और धन खर्च होता था। अधिकतर गांव के धनी लोग ही ये साधन जुटा पाते थे। बहुत से किसान बिना सिंचाई के ही खेती किया करते होंगे जैसे कि आज भी करते हैं।
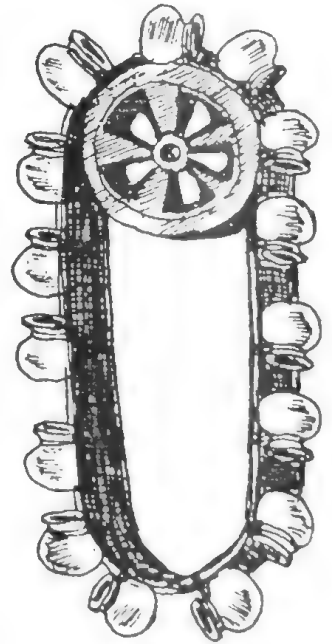
चित्र-6 अरघट्ट
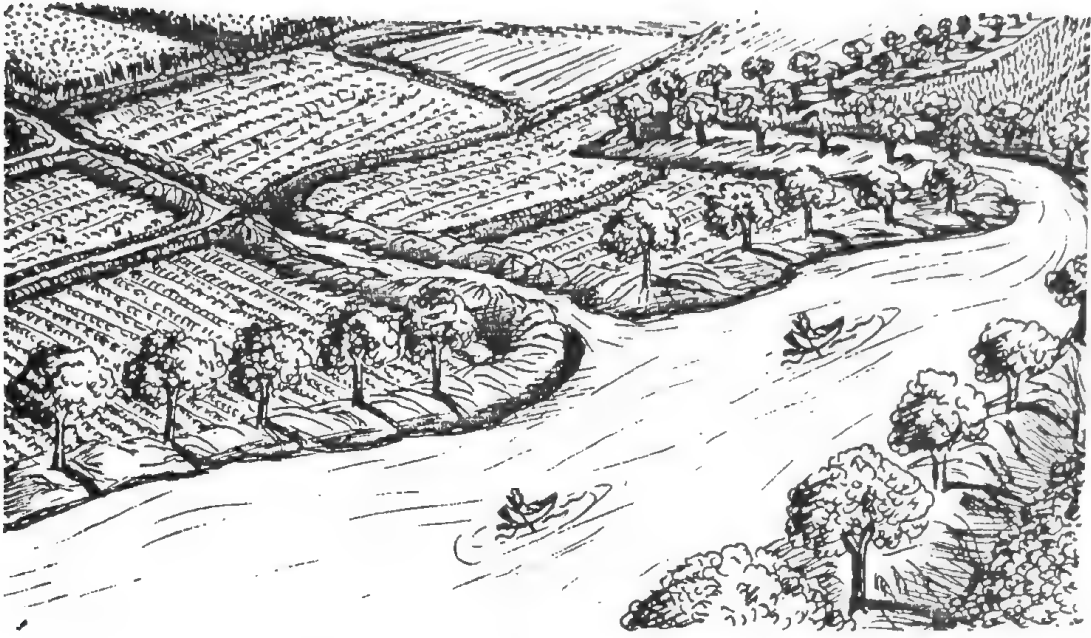
चित्र-7 नदी के मुहाने पर बंधान और नहरों से सिंचाई

नदी का मुहाना

जो किसान नदियों के मुहानों पे रहते थे, उन्हें खेती फैलाने में पानी की बहुत सुविधा थी।

नदी समुद्र के पास आकर कई छोटी-छोटी धाराओं में फैलती हुई बहने लगती है। उसकी धाराओं में हमेशा काफी पानी रहता है। दूर से बह कर आई नदी बहुत सी मिट्टी साथ लाती है। यह मिट्टी नदी की धाराओं के पास बिछती जाती है। यह बहुत उपजाऊ मिट्टी होती है। नदी की धाराएं आगे जा कर समुद्र में मिल जाती हैं। यह इलाका नदी का मुहाना कहलाता है।

नदी के मुहाने पर जो किसान खेती फैला रहे थे उन्हें मिट्टी और खूब पानी का लाभ मिला था। लेकिन समस्या वहां भी थी। मुहाने पर इतना पानी जमा हो जाता था कि खेती करना मुश्किल हो जाता था। नदी की धाराओं में बाढ़ आती रहती थी।

भारत के नक्शे में तुम कुछ बड़ी नदियों के मुहाने ढूंढो। उन नदियों के नाम लिखो।

नदी के मुहानों के बारे में तीन सबसे महत्वपूर्ण बातें लिखो।

बंधान और नहरें

नदियों के मुहानों में बाढ़ पर काबू पाने के लिए किसानों ने धाराओं के किनारे बंधान बनाए ताकि खेतों में पानी न भरे। फिर बंधान में से नहरें निकालीं जिससे जितना पानी चाहिए उतना खेतों तक पहुंचे। (चित्र-7 देखो)

खेतों में फिर भी ज़्यादा पानी भर जाए तो उसके निकास के लिए गहरे नाले बनाए।

बड़े परिश्रम से इतने उपाय करने पर नदियों के मुहानों की उपजाऊ मिट्टी पर किसान साल में तीन-तीन फसलें भी लेने लगे। धान की फसल ऐसी जगहों पर बहुत होने लगी।

चित्र-8 पहाड़ी खेत

पहाड़ी इलाके

जो लोग पहाड़ी भागों में रहते थे वहां सिंचाई करना बड़ा कठिन था। क्योंकि, पानी तेज़ी से बह जाता था। पर वहां के लोगों ने भी खेती के प्रयास किए।

पहाड़ की ढलानों के बीच उन्होंने समतल ज़मीन ढूंढी और उसके जंगल व झाड़ साफ करके खेती की। जंगल में रहने वाले कबीलों ने ऐसी फसलें अपनाईं जो कम पानी में भी उग जाएं- जैसे कोदों, कुटकी, समा, ज्वार आदि। कई कबीलों के लोग इन फसलों की खेती करने लगे। खेती के साथ-साथ वे जंगल से शिकार और फल आदि भी लाते रहे। खेतों के आस-पास उनके छोटे-छोटे गांव भी बस गए।

तुमने कक्षा - 6 में पहाड़ पर बसे एक गांव 'पाहवाड़ी' का वर्णन पढ़ा था। पाहवाड़ी गांव में तुमने ऊपर बताई बहुत सी बातें पाई थीं।

क्या पहाड़ी इलाकों मे सिंचाई की व्यवस्था हो पाई थी?

वहां पर क्या-क्या फसलें उगाई जाने लगीं?

नए-नए गांव व शहर बने

इस तरह पुराने समय के किसानों के प्रयासों से कितने ही गांव बसे और खेतों की उपज बढ़ी। जिन इलाकों में एक समय घना जंगल रहा करता था वहां धीरे-धीरे, दो-तीन-चार सौ सालों में खेत और गांव नज़र आने लगे।लोगों की संख्या (जनसंख्या) पहले से ज़्यादा हो गई। जैसे-जैसे जनसंख्या बढ़ी और गांवों की संख्या बढ़ी, वैसे-वैसे लोगों की ज़रूरत की चीज़ें बनाने वाले बहुत से कारीगर होने लगे। चीज़ें बेचने के लिए बहुत से व्यापारी होने लगे। तब गांवों के बीच छोटे-बड़े शहर भी उभर आए। शहरों में कारीगरों और व्यापारियों की चहल-पहल रहने लगी।

मानचित्र 1 में राजा अशोक के समय के शहर और गांव वाले इलाके दिखाए हैं। शहरों की बिन्दियों को लाल रंग करो। गांव के इलाकों को पीला रंग करो। जंगलों को हरा रंग करो।

अब मानचित्र 2 में सन् 1000 में भारत के जंगल, शहर और गांव वाले इलाके ध्यान से देखो। इस मानचित्र में भी नगरों की बिन्दियों को लाल रंग से रंगो। जंगलों को हरा और गांव के इलाकों को पीला रंगो।

दोनों मानचित्रों की तुलना कर के बताओ कि राजा अशोक के समय में भारत और सन् 1000 में भारत में क्या बदलाव दिख रहे हैं।
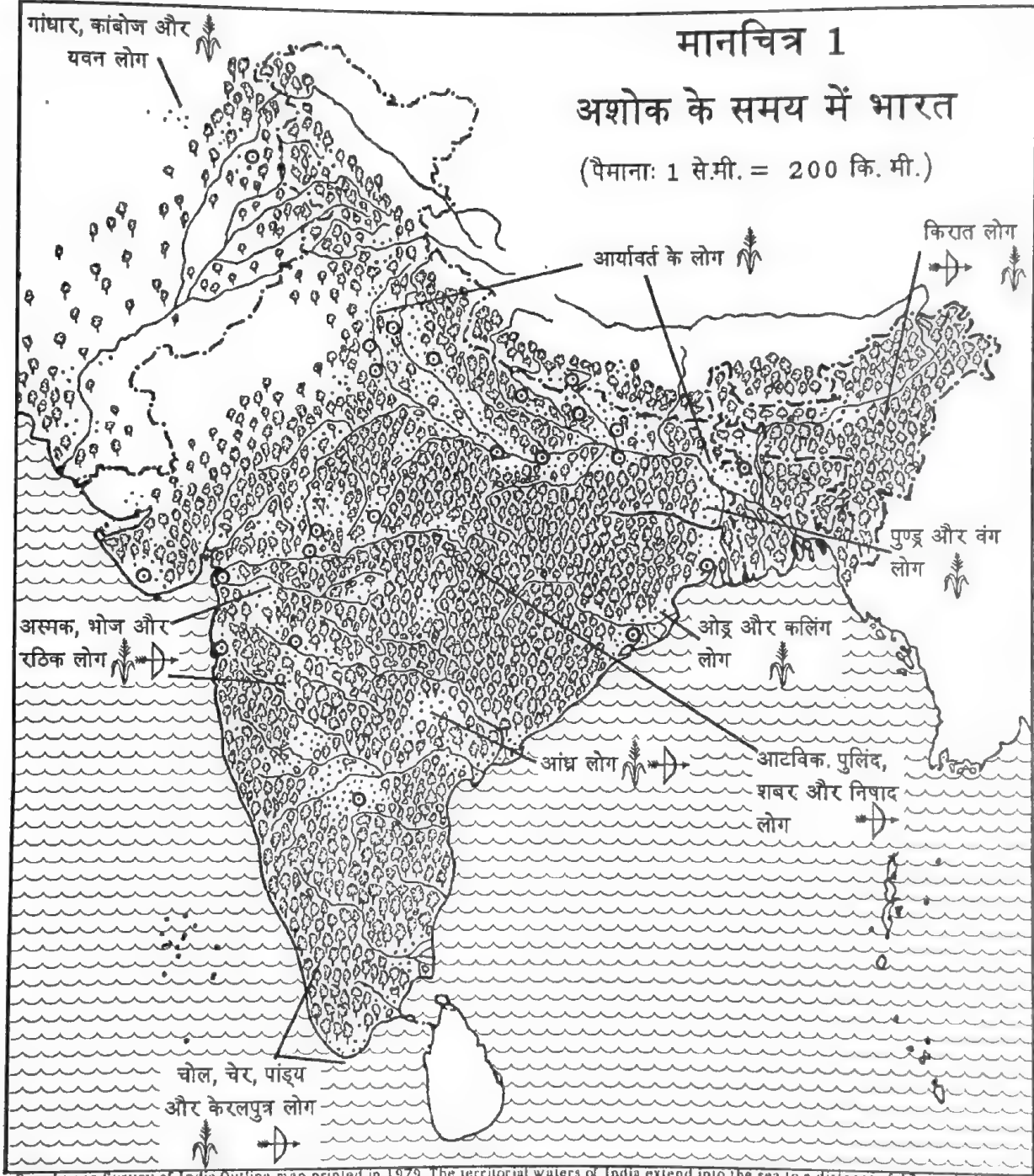
Based upon Survey of India Outline map printed in 1979. The territorial waters of India extend into the sea to a distance of 12 nautical miles measured from the appropriate baseline.

c. Govt of India copyright.

संकेत

	भारत की वर्तमान बाह्य सीमा		गांव के इलाके
	जंगल		मुख्यतः खेती करते थे
⊙	शहर		मुख्यतः शिकार करते थे
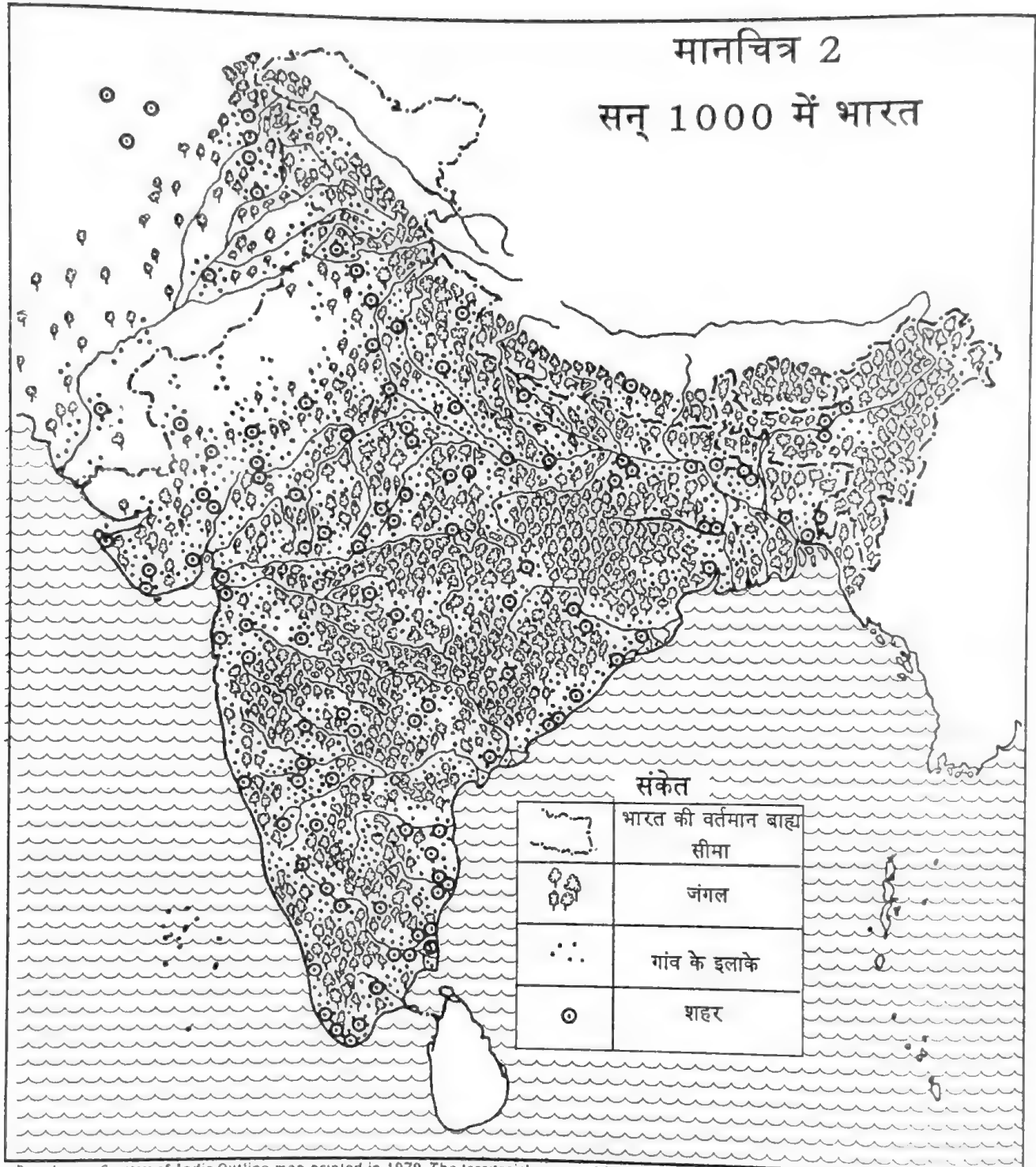
Based upon Survey of India Outline map printed in 1979. The territorial waters of India extend into the sea to a distance of 12 nautical miles measured from the appropriate baseline.

c. Govt of India copyright
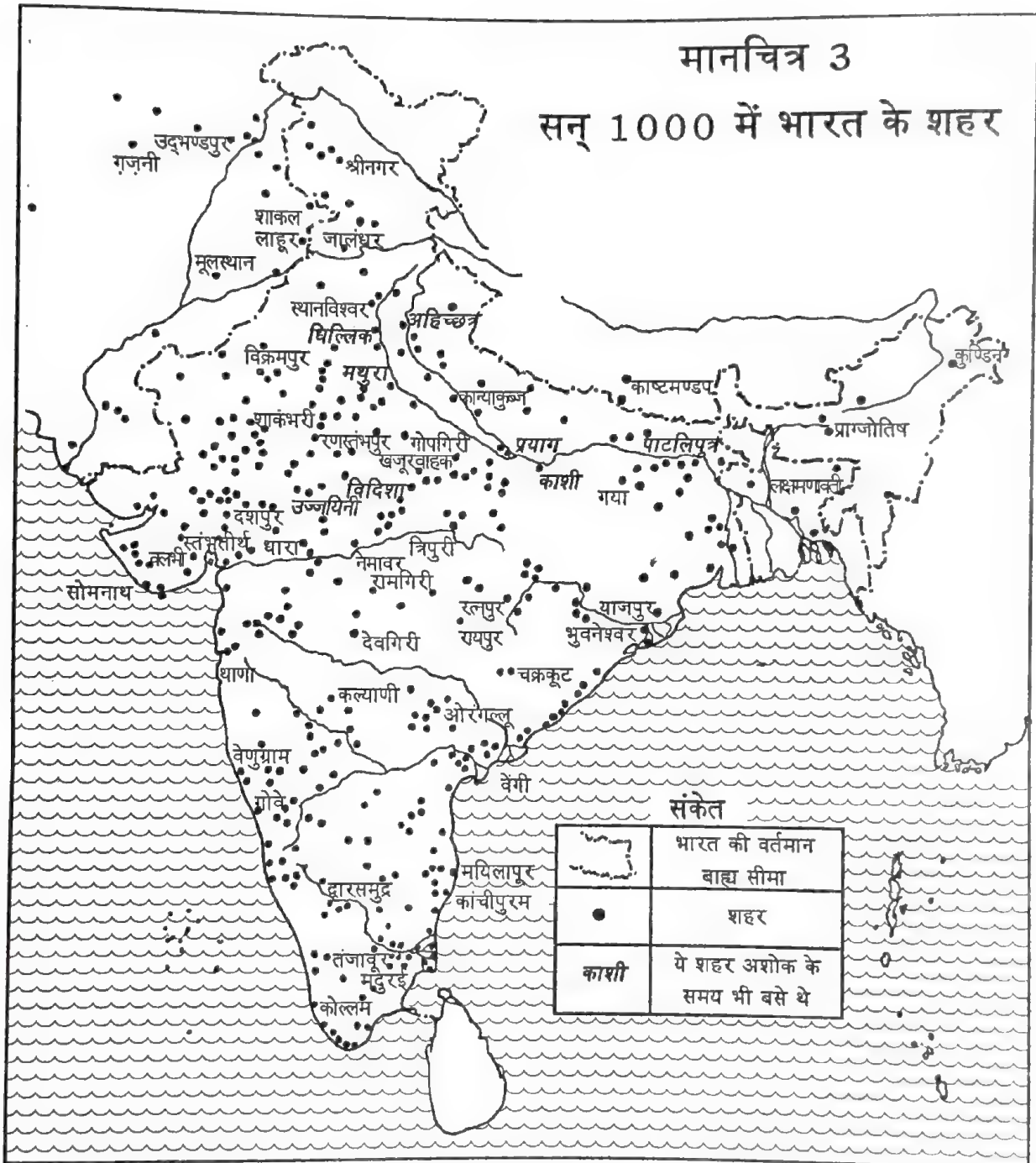
Based upon Survey of India Outline map printed in 1979. The territorial waters of India extend into the sea to a distance of 12 nautical miles measured from the appropriate baseline.
c. Govt of India copyright.

पैमाना : 1 से.मी. = 200 कि.मी.

मानचित्र 3 में उन शहरों के नाम लिखे हैं जो सन् 1000 में भारत में थे। इस मानचित्र में जंगल और गांव नहीं दिखाए हैं ताकि शहरों के नाम साफ-साफ लिखे जा सकें।

मानचित्र - 3 में नगरों के नाम देखो।

उन नगरों को पहचान कर सूची बनाओ जो राजा अशोक के समय में भी थे।

मानचित्र - 3 में दिख रहे बाकी सब नगर राजा अशोक के समय के बाद बसे। क्या इनमें से किसी नगर को तुम पहचानते हो? सन् 1000 में जो नगर बसे हुए थे उनमें से कई नगर आज भी बसे हैं।

मन करे तो पढ़ना......

हमें कैसे पता चलता है कि सचमुच हज़ार, डेढ़ हज़ार साल पहले कई तरह से सिंचाई की व्यवस्था की जाती थी? इस बात का प्रमाण उस समय के आलेखों से मिलता है- (आलेख का मतलब गुरुजी से समझो)।

जैसेः सन् 1209 में लिखे गये कर्णाटका राज्य से मिले एक आलेख का अंश-

"महाप्रधान कुमार पंडितैय के पुत्र बिट्टेय ने कालीदेव के उत्तर में एक तालाब बनवाया। और वहां अपने नाम से बिट्टेनहल्ली नाम का गांव बसाया। उसने एक और तालाब भी बनवाया- बिट्टेयसमुद्रम नाम का।"

अभ्यास के प्रश्न

1. पठारी इलाकों के किसानों ने सिंचाई का क्या इंतज़ाम किया ? पठार पर यह इंतज़ाम आसान क्यों था?
2. मैदानी भाग के किसानों ने सिंचाई का क्या इन्तज़ाम किया? मैदानों में यह इन्तज़ाम आसान क्यों था?
3. क) नदियों के मुहानों पर रहने वाले किसानों को क्या सुविधा थी और क्या कठिनाई थी?
   ख) उन्होंने खेती को सुधारने की क्या व्यवस्था की?
4. क) पहाड़ी इलाकों में कबीलों ने खेती किस तरह की?
   ख) क्या वे पूरी तरह खेती के सहारे जीने लगे?
5. सन् 1000 में नर्मदा नदी के दक्षिण में कितने शहर थे? राजा अशोक के समय में इस इलाके में कितने शहर थे?

3. राजवंशों का बनना

(सन् 400 से सन् 1200 की बात)

तुमने बहुत से राजाओं और राजपरिवारों के बारे में सुना होगा। पर सोचो, कोई राजा कैसे बनता होगा? अगर कोई परिवार यह कहे कि हम बाकी गांववालों पर राज करेंगे तो क्या लोग उनकी बात मानेंगे? इस विषय पर कक्षा में चर्चा करो। सब लोग अपनी अपनी राय दें। फिर इस पाठ को पढ़ना शुरू करो।

सन् 400 से सन् 1200 के बीच के समय में भारत में हर जगह पर राजा होने लगे थे। जिन जगहों पर पहले कभी राजा नहीं हुए थे वहां भी राजा बन गए थे। हर जगह पर राजा कैसे बने-आओ इसके बारे में कुछ सोचें और समझें।

धनी व ताकतवर परिवार

हर क्षेत्र में खेती फैल गई थी, हर क्षेत्र में घनी आबादी बस गई थी, खूब सारे गांव बस गए थे। जैसा कि होता है, हर इलाके में एक दो परिवार धनी और महत्वपूर्ण बनने लगे। शायद शुरू में उनका परिवार काफी बड़ा रहा होगा। उनकी खेती भी बड़ी रही होगी। ऐसे परिवारों की आसपास के क्षेत्र में धाक भी ज़रूर रही होगी। वे शायद लोगों को ज़रूरत के समय मदद कर देते थे और लोग अपने झगड़े व समस्याएं लेकर उनके पास आते थे।

ऐसे कई परिवार अपने क्षेत्र में सिंचाई के नए साधन लगा कर खेती भी फैलाते थे। वे अपने धन से कुएं, बावड़ियां, नहरें, तालाब बनवाते थे। वे नए इलाकों का जंगल साफ करके खेत बनवाते थे। नए गांव बसाते थे।

हर इलाके में एक दो परिवार धनी और ताकतवर बने।
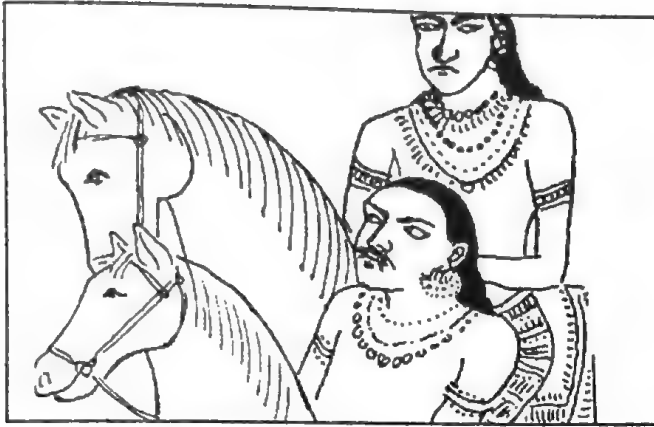
धनी और ताकतवर लोगों ने राजा बनना चाहा।

वे दूसरे लोगों को इन नए गांवों में ला कर बसाते थे। इस तरह बसाए गए लोग ताकतवर परिवारों से दब कर रहा करते थे।

ताकतवर परिवारों की ज़मीन पर काम करने के लिए कई मज़दूर होते थे और उनकी सेवा में बहुत से नौकर चाकर रहा करते थे।

ऐसे बड़े परिवार आसपास के लोगों को डरा-धमका कर भी रखते होंगे ताकि सब लोग उनकी बातें सुनें।

इस तरह धीरे-धीरे हर क्षेत्र में वहां के बड़े परिवारों का स्थान मज़बूत होने लगा। शायद साधारण लोग ऐसे परिवारों को खुश रखने के लिए उन्हें खास मौकों पर भेंट भी लाकर देने लगे।

ताकतवर परिवारों की ताकत के दो कारण रेखांकित करो।

ताकतवर परिवारों का दूसरे लोगों पर क्या असर पड़ा-दो बातें रेखांकित करो।

धनी व ताकतवर परिवारों ने राजवंश बनने की कोशिश की

ऐसा लगता है कि धीरे-धीरे हर क्षेत्र के ताकतवर परिवार सोचने लगे- "क्यों न हम इस इलाके के राजा बनें? मौर्य वंश या गुप्त वंश की तरह हमारा भी वंश राजवंश बने? क्यों न हमारा परिवार इस क्षेत्र में राज्य करे और शासन चलाए और यहां के लोग हमें नियमित रूप से कर व लगान दें? फिर हम और धनी और ताकतवर हो जाएंगे।"

पर लोग किसी भी व्यक्ति को अपना राजा ऐसे ही तो नहीं मान लेते। लोग क्यों अपने बीच में से एक परिवार को राजवंश मानें? कई जगहों पर तो लोगों के बीच अपना कोई राजा पहले कभी हुआ ही नहीं था। इसलिए जब उनमें से कोई व्यक्ति पहली बार राजा बनने की कोशिश करने लगा तो उसे लोगों को मनवाने के लिए बहुत प्रयास करने पड़े।

ताकतवर परिवार चाहने लगे कि ....

उनके सामने समस्या थी कि ....

लोगों को मनवाने के लिए एक काम वे करने लगे। वे ऐसा बताने लगे कि वे महान ऋषियों, देवताओं और राजाओं के वंश के लोग हैं। इस समय भारत में हर क्षेत्र के राजा ऐसी बातें करने लगे। ऐसी बातों का एक उदाहरण पढ़ो। जबलपुर क्षेत्र में कलचूरी परिवार के लोग राजा बन रहे थे। वे अपने परिवार का परिचय इस प्रकार देते थे-

वंशों का परिचय अर्थात् वंशावलियां

"सबसे पहले विष्णु हुए। उनकी नाभी से ब्रह्मा का जन्म हुआ। उनसे जन्मे अत्री ऋषि। अत्री से जन्मे चन्द्रमा। चन्द्रमा से जन्मे बुध। उनसे जन्मे राजा पुरूरवस। पुरूरवस के कुल में भरत हुए। राजा भरत के कुल में हैहैय परिवार हुआ। हैहैय परिवार में राजा अर्जुन हुए। अर्जुन के कुल में कोक्कल का जन्म हुआ। कोक्कल ने कलचूरी वंश की शुरुआत की।"

कलचूरी वंश के लोग अपना संबंध किन देवताओं से बता रहे थे?

किस ऋषि से बता रहे थे?

किन राजाओं से बता रहे थे?

इसी तरह कई परिवार जो राज परिवार बनने की कोशिश कर रहे थे, अपने आपको चन्द्रवंशी पाण्डवों के वंश का बताते थे, कई लोग अपने आपको सूर्यवंशी
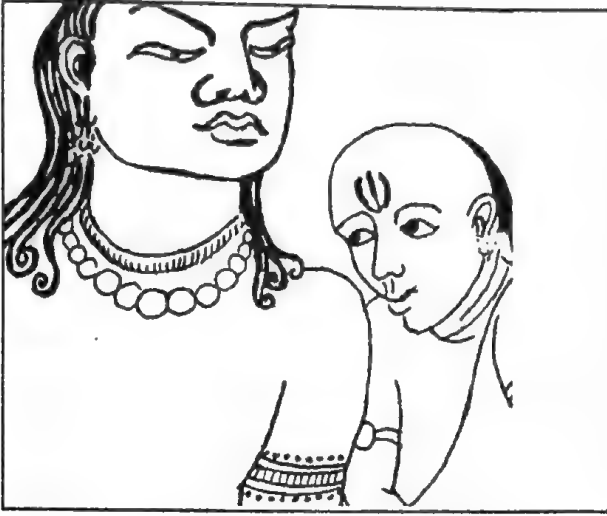
राजाओं ने ब्राह्मणों का सहयोग लिया

रामचन्द्र का वंशज बताने लगे तो कई परिवार यदुवंशी कृष्ण के वंश को अपना वंश बताने लगे। कुछ परिवार ये कहने लगे कि वे वशिष्ठ ऋषि के अग्नि कुण्ड से उत्पन्न हुए हैं।

हर क्षेत्र के धनी और महत्वपूर्ण परिवारों को ऐसी बातें कहने की ज़रूरत क्यों लग रही थी?

तुम्हारे विचार में वे इन बातों से लोगों पर क्या प्रभाव डालना चाहते थे?

शायद वे ताकतवर परिवार लोगों को विश्वास दिलाना चाहते थे कि वे बहुत ऊंचे और महान कुल के हैं। वे सोचते होंगे कि लोग तभी उन्हें राजा मानेंगे। तभी लोगों के मन में उनके प्रति भय और आदर का भाव बैठेगा। लोगों पर प्रभाव डालने की ज़रूरत रही होगी नहीं तो इस समय के सब नए-नए राजवंश अपने परिवार के बारे में ऐसी बड़ी-बड़ी बातें क्यों कहते?

ताकतवर परिवार अपने वंश का रिश्ता इन वंशों से बताने लगे थे ....

ब्राह्मणों का बसना

अपने परिवार के बारे में बड़ी-बड़ी बातें यूं ही नहीं कही जा सकती थीं। जब प्रतिष्ठित लोग उन बातों का समर्थन करें तभी लोगों पर इनका असर पड़ सकता था। राजाओं ने इस काम में ब्राह्मणों का सहयोग लिया।

ब्राह्मणों की बहुत प्रतिष्ठा थी। वे धर्म और ज्ञान को जानने वाले लोग थे। उन्हें राजकाज चलाने का भी लम्बा अनुभव था क्योंकि वे गंगा-यमुना के मैदान में रहते थे। गंगा-यमुना के मैदान में बहुत पहले से राजा हुआ करते थे। इसलिए ब्राह्मणों को राज्य की व्यवस्था करने का अनुभव था।

राजाओं ने दूर-दूर से प्रतिष्ठित ब्राह्मणों को बुलाकर अपने राज्य में बसाया। उन्हें अपने दरबार में बड़ा सम्मान दिया। बसने के लिए ब्राह्मणों को गांव और ज़मीन दान में दी।

जब राजा किसी ब्राह्मण को दान देते थे तो प्रमाण के लिए एक ताम्र-पत्र पर सारी बात लिखवा कर देते थे। (ताम्र-पत्र का अर्थ है तांबे का पट्टा) राजा ब्राह्मणों को दो तरह के दान देते थे - कभी-कभी वे दान में ज़मीन देते थे। इससे वह ब्राह्मण ज़मीन का पूरा मालिक बन जाता था।

कभी-कभी राजा ब्राह्मण को किसी गांव का लगान अपने पास रख लेने का अधिकार दे देते थे। यानी दान दिए गए गांव के किसान जो लगान राजा को देते थे, वे लगान राजा ब्राह्मण को दान कर देता था। इस तरीके से बहुत से ब्राह्मण बसाए गए।

राजाओं ने ब्राह्मणों को दान दे कर राज्य में बसाया
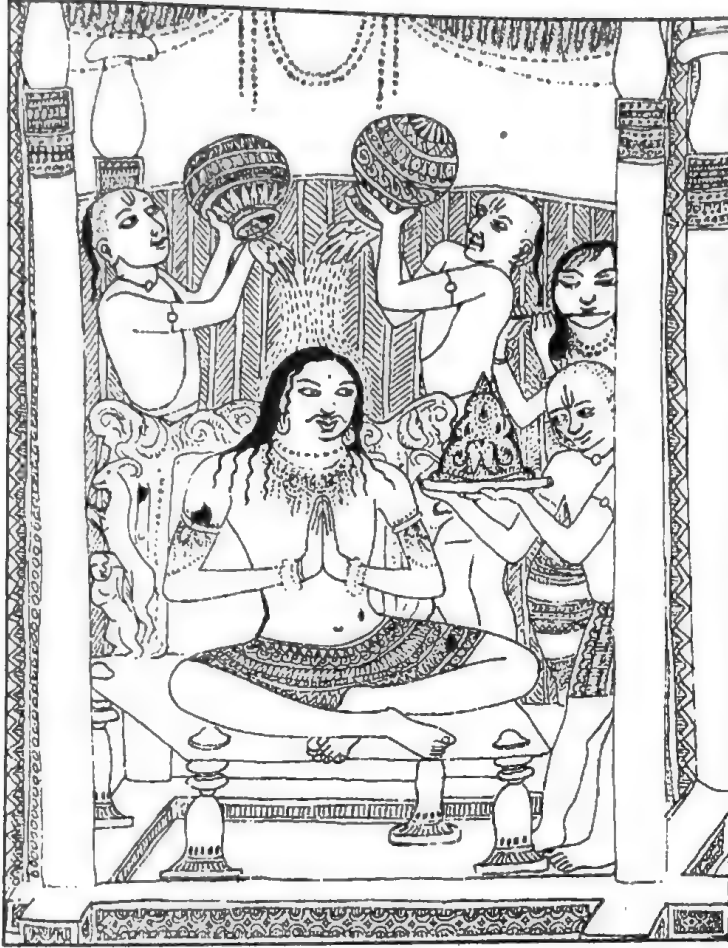
ब्राहम्ण मंत्रों के साथ राजा का अभिषेक करते हुए।

ब्राह्मणों की प्रतिष्ठा थी क्योंकि 1..................

2. ....

ब्राह्मणों ने राजाओं को .... व .... में सहयोग दिया।

ब्राह्मणों को दो तरह के दान मिले - पहले में वे .... के मालिक बने। दूसरे में उन्हें किसी गांव से राजा को मिलने वाला सारा .... मिलता था।

ब्राह्मणों का राजाओं को सहयोग

ब्राह्मणों ने राजाओं के लिए उनके परिवार का परिचय अर्थात् वंशावलियां तैयार कीं। ब्राह्मण जब किसी राजा को देवताओं और ऋषियों के कुल का बताते थे तो लोगों पर इस बात का असर पड़ता था।

ब्राह्मणों ने राजाओं को बड़े-बड़े यज्ञ करने में मदद की। ब्राह्मणों के सहयोग से उस समय के राजा अश्वमेघ और राजसूय जैसे बड़े यज्ञ करने लगे। ऐसे यज्ञ छोटे जनपदों के समय में ही होते थे। ब्राह्मण ऐसे प्राचीन यज्ञ फिर से करवाने लगे।

इससे भी लोगों पर ज़रूर असर पड़ा। राजाओं का दबदबा और रौब बहुत बढ़ा होगा।

सेना

लोगों पर रौब जमाने के लिए हर जगह के ताकतवर परिवारों ने ये सब प्रयास किए। पर साथ ही साथ, वे अपनी सेना भी जुटाने लगे। उन्होंने हथियार, हाथी, घोड़े जुटाए और सैनिक रखे। लोग अगर उनकी बात न मानें तो उन्हें अस्त्र-शस्त्रों के बल पर डराया धमकाया जा सकता था।

जगह-जगह राजवंश हुए

इन तरीकों की सहायता से जब कोई धनी और महत्वपूर्ण परिवार 50-100 गांवों पर अपना अधिकार जमा लेता तो अपने आपको राजवंश कहने लगता था। उस परिवार का मुखिया राजा कहलाता था। राजा और उसके परिवार के लोग अपने अधिकार के गांव व शहरों पर हुकूमत करते। वे लोगों से लगान वसूल करने लगते, लोगों पर अपने आदेश चलाने लगते।

तुम आगे के पाठ में पढ़ोगे कि ये राजा और उनके परिवार के लोग किस तरह शासन चलाते थे।

कुछ परिवार या वंश सौ गांवों पर अपना अधिकार जमा पाए व राजा बन गए, तो कुछ परिवार 200-300 गांवों पर अपना अधिकार जमा पाए और अपने आपको महाराजा कहने लगे।

हर क्षेत्र में एक स्थानीय राजवंश उभर कर आ रहा था। इस सबका नतीजा तुम मानचित्र 1 में देखो। सन् 975 से 1250 के बीच भारत में जितने राजवंश थे यह उनका नक्शा है। देखो कि भारत के हर क्षेत्र में छोटे बड़े कई स्थानीय राजवंश थे।
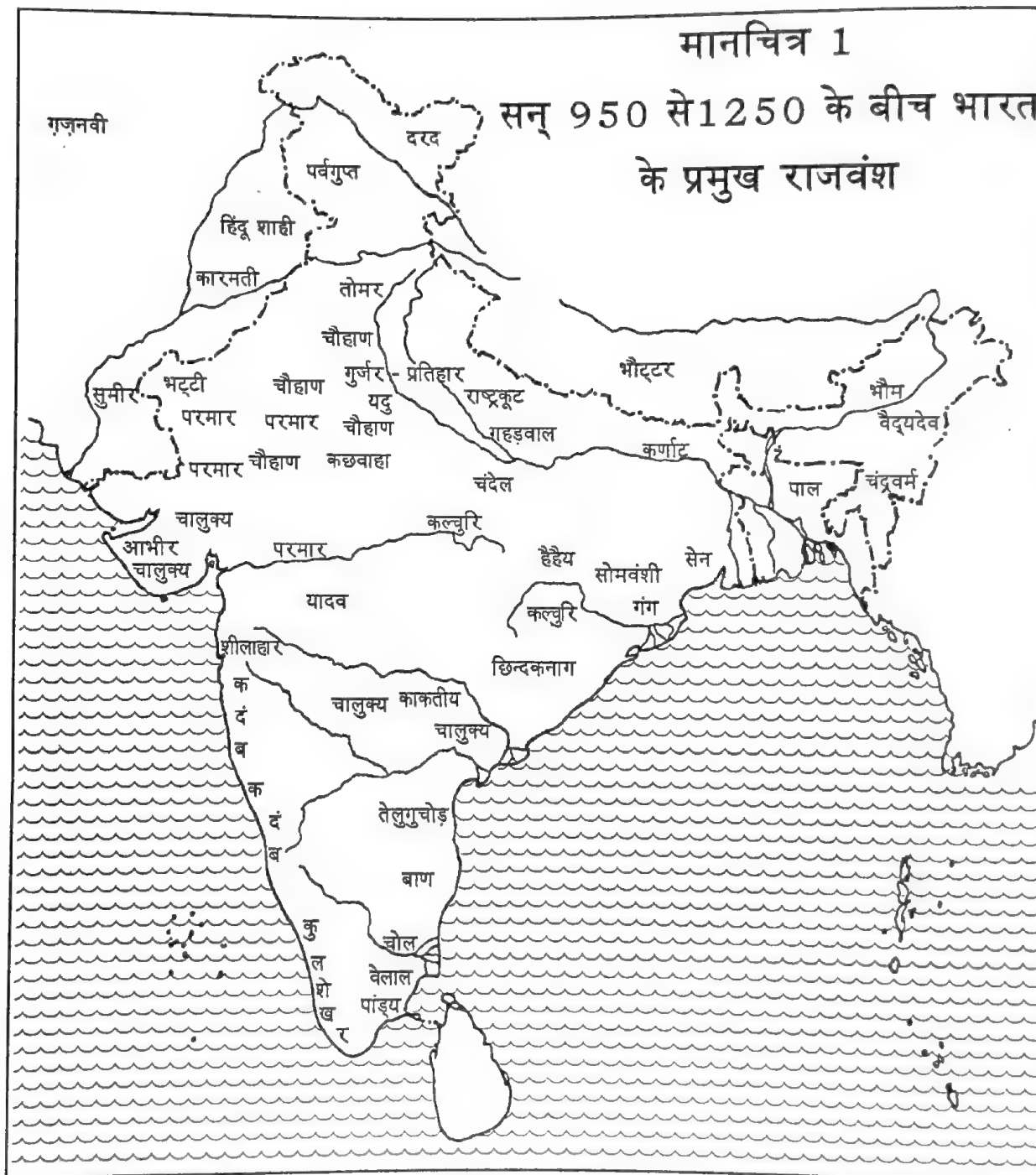
Based upon Survey of India Outline map printed in 1979. The territorial waters of India extend into the sea to a distance of 12 nautical miles measured from the appropriate baseline.

c. Govt of India copyright.

पैमानाः 1 से. मी. = 200 कि. मी.

- भारत की वर्तमान बाह्य सीमा

गिन कर बताओ कि कुल कितने राजवंश थे?
(मानचित्र 1 में हर नाम के आगे नंबर डाल कर गिनो)
राजवंशों के नाम भी पढ़ो। तुम्हें कई राजवंशों के नाम जाने पहचाने लगेंगे क्योंकि उनके वंशज आज भी हैं और शायद तुम्हारी पहचान के लोगों में भी हों।
नक्शे में ढूंढो की तुम्हारी पहचान के ऐसे कौन-कौन से नाम हैं।

पहले से फर्क

राजा अजातशत्रु और राजा अशोक के समय की तुलना में यह समय कितना फर्क हो गया था। अजातशत्रु के समय में भारत के उत्तरी हिस्से में ही राजा हुए थे।

पर, सन् 1250 तक भारत के हर क्षेत्र में राजा हो गए थे। यह बात तुम पृष्ठ 98 के और पृष्ठ 117 के मानचित्रों की तुलना कर के जान सकते हो।

गुरुजी से चर्चा करो भारत के हर क्षेत्र में राजा बनने और हर क्षेत्र में खेती फैलने के बीच क्या संबंध हो सकता है?

ब्राह्मणों के इतिहास की कुछ बातें

दान की सहायता से कई सालों में भारत में हर जगह ब्राह्मण परिवार बस गए। शुरू में ब्राह्मण आर्य कबीलों के साथ हुआ करते थे। वे गंगा-यमुना नदियों के मैदान में रहा करते थे।

वे भारत के बाकी सब इलाकों को "पाप देश" समझते थे। उनका विचार था कि गंगा-यमुना के मैदान को छोड़कर बाकी जगहें ब्राह्मणों के बसने लायक जगहें नहीं हैं। जो ब्राह्मण कभी भूल से उन जगहों पर चला जाता तो उसे प्रायश्चित भी करना पड़ता था।

पर, सन् 400 से 1200 के बीच के समय में जब जगह-जगह के राजाओं से बुलावा आया, तो ब्राह्मण गंगा-यमुना का मैदान छोड़कर हर जगह बसने गए। जिन जगहों को एक समय में "पापदेश" मानते थे, वहां जा कर उन्होंने ज़मीन, गांव, धन और प्रतिष्ठा स्वीकार की।

उन ब्राह्मण परिवारों के वंशज शायद आज भी हमारे बीच हैं।

तुम जहां भी रहते हो वहां के ब्राह्मण परिवारों का इतिहास पूछो।

एक बार हमने अपने परिचय के एक दुबे जी से बातों-बातों में पूछा कि वे होशंगाबाद के पास कब व कैसे आ कर रहने लगे। उन्होंने अपने परिवार की कहानी बताई। वे बोले कि बहुत समय पहले की बात है। मध्य प्रदेश के इस इलाके में कोई ब्राह्मण नहीं रहता था। यहां गोंड, कोरकू आदिवासी लोग रहते थे। फिर यहां के राजा ने उत्तर प्रदेश के इलाके से ब्राह्मणों के लिए बुलावा भेजा। राजा के बुलावे पर दुबे जी के पूर्वज यहां आकर बसे। राजा ने उन्हें बसने के लिए ज़मीन दी।

तुम अगर पूछताछ करोगे तो शायद तुम्हें भी कुछ परिवारों की ऐसी कहानी पता चलेगी। हो सकता है तुम्हें किसी ब्राह्मण परिवार के पास दान का ताम्रपत्र ही मिल जाए!

मन करे तो पढ़ना......

ब्राह्मणों को दिए गए दान का उदाहरण

गुजरात में अलीना नाम की जगह से यह ताम्रपत्र मिला। यह सन् 766 में जारी किया गया था-

"परमभट्टारक महाराजधिराज परममाहेश्वर शीलादित्य ध्रुवभट ने महिलबलि नाम का गांव दान में दिया। यह गांव उपलहेट पाथक में बसा है और आनंदपुर के रहने वाले ब्राह्मण भट्ट आखण्डलमित्र को दान में दिया जाता है, ताकि वे बलि, चरू, वैश्वदेव, अग्निहोत्र व अतिथि सत्कार के यज्ञ कर सकें। यह दान उन्हें सब अधिकारों के साथ दिया जाता है। उन्हें गांव के किसानों से लगान लेने का हक है, उनसे बेगार करवाने का हक है, अपराधियों से जुर्माना लेने का हक है, भाग, भोग, कर, हिरण्य जैसे करों की वसूली करने का हक है। दान दिए इस गांव की तरफ कोई राजकीय अधिकारी हाथ भी नहीं उठाएगा। जब तक चांद और सूरज चमकेंगे तब तक आखण्डलमित्र और उसके वंशज इस गांव को भोग सकते हैं.......यह दान पत्र ज्येष्ठ माह के शुक्लपक्ष की पंचमी को लिखा गया......"
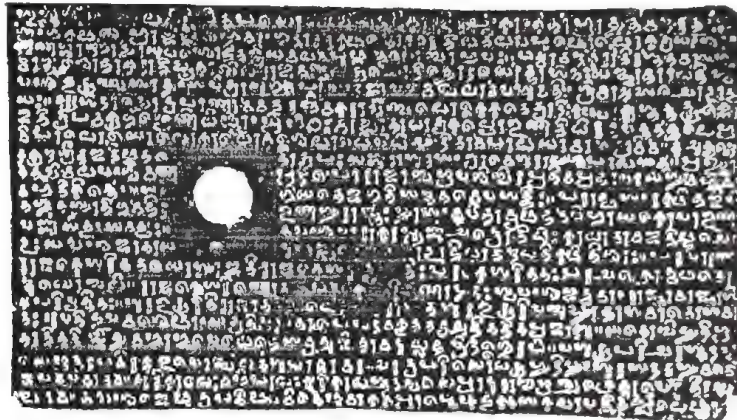
एक ताम्र-पत्र का चित्र

अभ्यास प्रश्न

1. हर क्षेत्र में कैसे परिवार तांकतवर बने? उनके बारे में तीन चार बातें लिखो।
2. अपने परिवार को महान और ऊंचा बताने के लिए ताकतवर परिवारों ने क्या कहा? इस काम में उन्होंने किस की सहायता ली?
3. राजाओं ने ब्राह्मणों को अपने राज्य में क्यों बुलाया?
4. राजाओं ने ब्राह्मणों को किस तरह का दान दे कर बसाया?
5. क) ताकतवर परिवारों ने राजवंश बनने के लिए कौन-कौन से तरीके अपनाए - तीन तरीकों का वर्णन करो।
   ख) क्या आज तुम्हारे गांव या शहर का कोई ताकतवर परिवार इन तरीकों को अपना कर राजा बन सकता है?

4. सामन्त राजा और अधिपति राजा

(सन् 400 से सन् 1200 की बात)

कई सारे युद्ध

सन् 400 और सन् 1200 के बीच के समय में भारत के हर क्षेत्र में बहुत सारे राजा हो गए थे। इन राजाओं के बीच आए दिन युद्ध हुआ करता था। जो राजा छोटे थे वे दूसरे छोटे राजाओं को हरा कर बड़ा बनना चाहते थे। और जो राजा बड़े थे वे दूसरे बड़े राजाओं को झुकाना चाहते थे। जगह-जगह युद्ध का डंका बजने लगा। अपने देश के इतिहास में पहली बार हर जगह इतनी सारी लड़ाईयां हुई होंगी। युद्ध भूमि में हज़ारों लाखों सैनिक मारे जाते थे। पर इसके अलावा, विजयी सेनाएं हारे हुए राज्य के गांवों-शहरों को लूटती और जलाती जाती थीं। युद्ध से चारों ओर तबाही मचती रहती। गांवों व शहरों के साधारण लोग कई कष्ट झेलते थे।

युद्ध से चारों ओर तबाही मचती रहती थी

हारे और जीते राजाओं का रिश्ता

आओ यह जानें कि राजा, जिनके चाहने पर युद्ध लड़े जाते थे- वे जीतने पर क्या-क्या लाभ पाते थे, और हारने पर क्या-क्या नुकसान उन्हें भुगतना पड़ता था। तुम सोच रहे होगे कि जीतने वाले राजा को फायदा ही फायदा होता होगा। वह हारे हुए राजा के राज्य को अपने राज्य में मिला लेता होगा। वहां अपने अधिकारियों को भेजकर लगान इकट्ठा करवाता होगा। उसके पास इस तरह से बहुत धन जमा हो जाता होगा। पर आश्चर्य की बात है कि उन दिनों विजयी राजा हमेशा ऐसा नहीं करते थे। वे पराजित राजा का राज्य अपने राज्य में नहीं मिलाते थे। आमतौर पर वे हारे हुए राजा को उसका राज्य लौटा देते थे।

यह नीति तुमने किस राजा को अपनाते हुए पाया था?

सन् 400 से 1000 के बीच के समय में युद्ध में हारे हुए राजाओं को आमतौर पर अपने राज्य वापिस मिल जाते थे। पर, बदले में उन्हें कुछ शर्तें माननी पड़ती थीं। सबसे पहली बात, पराजित राजा को यह स्वीकार करना पड़ता था कि विजयी राजा उसका स्वामी है और वह विजयी राजा के चरणों में रहने वाला सेवक है। विजयी राजा अधिपति कहलाता था।

पराजित राजा उसका सामन्त कहलाता था। यह दिखाने के लिए कि वह किसी राजा का सामन्त है, पराजित राजा को अपने नाम के आगे यह बात लिखनी पड़ती थी।

उपाधियां

सामन्त राजा कैसे यह बात अपने नाम के आगे लिखते थे इसका एक उदाहरण पढ़ो। इस उदाहरण में सामन्त राजा का नाम क्षितिपाल है। क्षितिपाल भोजदेव नाम के राजा का सामन्त है। इनके नाम के पहले जो कुछ लिखा है वो इन राजाओं की उपाधि है।

उपाधि का अर्थ गुरुजी से समझो। उपाधि के कुछ उदाहरण अपने आस पास की बातों में से जानो।

आओ अब राजा क्षितिपाल और राजा भोजदेव की उपाधियों के उदाहरण पढ़ो-

"परमभट्टारक परमेश्वर महाराजाधिराज श्री भोजदेव के चरणों में रहने वाले महासामन्त महाराजाधिराज श्री क्षितिपाल का शासन था।"

भोजदेव की उपाधि क्या थी- उसके नीचे रेखा खींचो।

क्षितिपाल की उपाधि क्या थी- उसके नीचे रेखा खींचो।

इन दोनों राजाओं की उपाधियों से कैसे पता चलता है कि कौन अधिपति राजा है और कौन सामन्त राजा है?

उपाधियों में फर्क रखना बहुत महत्वपूर्ण बात समझी जाती थी। सामन्त राजा आमतौर पर अपने लिए छोटी उपाधि लगाते थे और अधिपति राजा के नाम के आगे लंबी चौड़ी उपाधि लगाई जाती थी। इसी से पता चलता था कि कौन सा राजा ज़्यादा शक्तिशाली माना जाता था। सामन्त राजा अपने राज्य में जब कोई हुकुम जारी करता तो वह अपनी घोषणा में यह ज़रूर कहता कि वह किस अधिपति राजा का सेवक है।

तुमने शुरू से अभी तक जो अंश पढ़ा उसमें चार महत्वपूर्ण वाक्य रेखांकित करो।

युद्ध क्षेत्र में राजा अपने सामन्तों के साथ

भेंट और सेना की सेवा

सामन्त बनने पर हारे हुए राजा को और भी कई शर्तें माननी पड़ती थीं। उसे अधिपति राजा के प्रति अपनी कृतज्ञता दिखाने के लिए उसके दरबार में समय-समय पर मूल्यवान भेंट भेजनी पड़ती थी। मौके-मौके पर वह खुद अधिपति राजा के दरबार में हाज़िर होता था।

सामन्त राजा का यह कर्त्तव्य बनता था कि जब भी अधिपति राजा मांग करे तब उसे सेवा में हाजिर होना पड़ेगा। खास कर जब अधिपति राजा कोई युद्ध लड़ रहा हो तो वह अपने सामन्त को संदेश भेज सकता था कि आप अपनी सेना ले कर मेरे लिए लड़ने आइए। सामन्त राजा अपनी सेना ले कर अधिपति के लिए लड़ने जाता था।

राजा अजातशत्रु के समय और सन् 400 के बाद के समय में तुलना

सन् 400 से भी बहुत पहले के समय में जो राजा हुए थे- राजा अजातशत्रु, चन्द्रगुप्त मौर्य आदि- वे जब युद्ध में किसी राजा को हराते थे तो उसे राज्य लौटा कर सामन्त नहीं बनाते थे। वे हारे हुए राजा को हटा देते थे और उसके राज्य को अपने राज्य में मिला लेते थे।

सन् 400 के बाद के समय में राजाओं के बीच व्यवहार बदल गया था। सन् 400 के बाद के समय में हारे हुए राजा को सामन्त बना दिया जाता था। विजयी राजा उसका राज्य अपने राज्य में मिलाता नहीं था।

फायदे और नुक्सान की जांच

सामन्त बनाने की नीति से विजयी राजाओं को क्या मिलता था- यह तुमने पढ़ा। पर क्या सामन्त बनाने से विजयी राजा का कुछ नुक्सान भी होता था? वे क्या सोच कर सामन्त बनाने का फैसला करते थे? आओ यह बात समझने के लिए एक कहानी पढ़ें।

चलो हम मान लें कि हम चालुक्य साम्राज्य की राजधानी कल्याणी के राजमहल में पहुंच गये। वहां राजा का दरबार लगा हुआ था। चालुक्य राजा सिंहासन पर बैठा था। उसके दोनों ओर उसके प्रमुख सामन्त, सेनापति, मंत्री और अधिकारी बैठे थे।

राज दरबार में चर्चा

राजसभा में इस विषय पर चर्चा चल रही थी कि कदंब वंश के राजा के साथ कैसा व्यवहार किया जाये। कुछ ही दिनों पहले चालुक्य राजा कदंब राजा को युद्ध में हराकर बंदी बनाकर लाया था।

सभा के कुछ लोग कह रहे थे कि कदंब राजा को मार डाल कर उसके राज्य को चालुक्य राज्य में मिला लेना चाहिए। जबकि दूसरों का कहना था कि कदंब राजा को सामन्त बनाकर उसे उसका राज्य वापिस कर देना चाहिए।

चालुक्य राज्य के एक कोषाध्यक्ष कह रहे थे, "महाराजाधिराज, मुझे लगता है कि हमें कदंब राज्य को अपने राज्य में मिला लेना चाहिये। कदंब राज्य में बहुत अच्छे संपन्न गांव हैं, वहां प्रसिद्ध बंदरगाह हैं जिनमें देश-विदेश के व्यापारी व्यापार करने आते हैं। इनसे खूब सारा कर वहां के राजा को मिलता है। अगर हम इस राज्य को अपने राज्य में मिला लें तो हमें यह सारा कर प्राप्त होगा। इससे हम बहुत धनी हो जायेंगे।"

एक सेनापति खड़े होकर बोले, "राजन् इस धन से हम खूब सारे घोड़े, और नए-नए शस्त्र खरीदकर अपनी सेना को और मज़बूत कर सकते हैं। इसलिए मुझे भी लगता है कि कदंब राज्य को अपने राज्य में मिला लेना चाहिये।"

अब एक उच्च अधिकारी उठकर बोले, "महाराज, मैं इनकी बात से सहमत नहीं हूँ। अगर हम कदंब राज्य को अपने राज्य में मिला लें तो हमें वहां का प्रशासन चलाने के लिए नए अधिकारियों को नियुक्त करना पड़ेगा। कर वसूली के लिए कर्मचारियों को नियुक्त करना पड़ेगा। वहां हमें अपनी सेना को भी तैनात करना पड़ेगा। ज़रा सोचिए इस सबसे कितना खर्चा बढ़ेगा। जो भी कर वहां के गांवों व बंदरगाहों से मिलता है, इसी खर्च में खप जायेगा।"

एक सामन्त खड़े होकर बोला, "महाराजाधिराज, यह बात सही है। अगर आप कदंब राज्य को अपने राज्य में मिलाएंगे तो आपका खर्च बढ़ेगा। पर अगर आप कदंब राजा को अपना सामन्त बना लें तो वह समय-समय पर आपको भेंट देता रहेगा। आपको बिना किसी खर्च के धन मिलता रहेगा।"

एक और मंत्री बोला, "राजन, एक खतरे पर ध्यान दीजिये। अगर हम कदंब राजा को सामन्त बनाकर उसका राज्य लौटा दें तो हो सकता है कि वह फिर से शक्तिशाली बनकर विद्रोह कर दे या फिर हमारे ही राज्य पर हमला कर दे। इसलिए उसे मार डाला जाए और उसका राज्य अपने राज्य में मिला लिया जाए।"

वह सामन्त फिर बोला, "नहीं महाराज, मुझे लगता है कि कदंब राज्य को अपने राज्य में मिलाने से हमारी

कठिनाईयां बढ़ जायेंगी। हम कदंब राजा को मार भी दें, फिर भी कदंब वंश तो बहुत बड़ा वंश है- पूरे कदंब राज्य में इस वंश के लोग फैले हैं। अगर हम उनके राज्य को अपने राज्य में मिला लेंगे तो इस बात की पूरी संभावना है कि कदंब वंश के लोग राज्य वापिस पाने के लिए बगावत शुरू कर देंगे। फिर हमारा टिकना मुश्किल हो जायेगा। हमारी भलाई इसी में है कि हम कदंब राजा को न मारें, उसे उसका राज्य लौटा दें और समय-समय पर उससे भेंट लेते रहें। ज़रूरत पड़ने पर वह हमारी सैनिक सहायता भी करेगा। जब कभी युद्ध होगा तो कदंब राजा हमारी मदद के लिए अपनी सेना के साथ आयेगा।"

कोषाध्यक्ष फिर उठकर बोले, "महाराज, मुझे अभी भी लगता है कि हमें कदंब राज्य को अपने राज्य में मिलाना चाहिए। कदंब राजा को सामन्त बनाने पर हमें जो भेंट मिलेगी या सेना की सहायता मिलेगी वह कितनी सी होगी? इस ज़रा सी भेंट और सैनिक सहायता के बदले में हम कदंब राज्य का सारा धन अपने हाथ से जाने दे रहे हैं। सामन्तों का क्या भरोसा, आज एक तरफ हैं तो कल दूसरी तरफ।"

एक और सामन्त बोला, "महाराजाधिराज पूरे भारत वर्ष में आपका नाम प्रसिद्ध है- सब ओर लोग कहते हैं चालुक्य सम्राट एक महान राजा है- अनेक प्रमुख राजवंश उसकी महानता को स्वीकार करते हैं। अगर आप कदंब राजा को भी अपना सामन्त बना लेंगे तो आपका यश और बढ़ेगा। लोग कहेंगे पुराने और जाने माने कदंब वंश के राजा भी चालुक्य राजा के सामन्त हैं।" इस तरह वाद-विवाद, चर्चा चलती रही।

अगर तुम चालुक्य राजा की जगह होते तो तुम क्या निर्णय लेते - सोचकर बताओ और साथ ही कारण भी चार वाक्यों में लिखो।

सन् 400 से 1200 के बीच के समय में जो कई सारे छोटे बड़े राजा थे- वे सामन्त बनाने की नीति ही अपनाते थे।

अभ्यास के प्रश्न

1. क) उपाधियों से कैसे पता चलता था कि कौन सा राजा सामन्त था और कौन सा राजा अधिपति था?
   ख) मान लो कि राजा जयसिंह राजा भरत सिंह का सामन्त था। इन दोनों के नाम के आगे इनकी उपाधियां लगाओ। और अब उन पर एक वाक्य बनाओ।
2. क) राजा अजातशत्रु के समय में एक राजा उससे हार गया। अजातशत्रु का उससे क्या रिश्ता रहा होगा?
   ख) सन् 800 की बात है। राजा गांगेय राजा भोज से हार गया। राजा भोज और गांगेय का रिश्ता कैसा होगा-वर्णन करो।
3. कहानी से तुम्हें दोनों बातें समझ में आईं। सामन्त बनाने के पक्ष वाली बातें और सामन्त बनाने के खिलाफ वाली बातें।

   कहानी के आधार पर यह तालिका भरो-

सामन्त बनाने में क्या फायदे थे	पर क्या नुकसान थे
1.	
2.	
3.	

अपने राज्य में मिलाने से क्या-क्या फायदे होते	पर क्या नुकसान होते
1.	
2.	
3.	

5. कुछ महत्वपूर्ण राजवंश और कुछ महत्वपूर्ण बातें

(सन् 600 से सन् 1100 के बीच)

एक चीनी यात्री

"यहां अनाजों में धान और गेहूं बहुत होता है। अदरक, सरसों, तरह-तरह की ककड़ी और लौकी होती है। प्याज़ और लहसन बहुत कम उगाया जाता है क्योंकि बहुत कम लोग उन्हें खाते हैं। आमतौर पर दूध, मक्खन, घी, चीनी, गुड़, सरसों का तेल और रोटी खायी जाती है। मछली, बकरी, हिरन आदि का मांस भी खाया जाता है। मगर गाय, गधा, हाथी, घोड़ा, सुअर आदि का मांस खाना सख्त मना है।"

ये सब बातें आज से 1350 साल पहले एक चीनी यात्री ने लिखी थीं। उसका नाम ह्यून् त्सांग था। वह भारत में सन् 630 में आया और कई वर्ष यहां के गांव व शहरों की यात्रा की।

ह्यून् त्सांग बौद्ध धर्म के बारे में अध्ययन करने के लिए हज़ारों मील की कठिन यात्रा करके भारत आया। हां! उस समय तक बौद्ध धर्म मध्य एशिया और चीन तक फैल गया था। उन देशों से कई ऐसे यात्री भारत आते थे। ह्यून् त्सांग ने कई वर्ष तक नालंदा के प्रसिद्ध बौद्ध विहार में अध्ययन किया।

भारत के विभिन्न प्रदेशों और राजाओं के बारे में उसने अपनी पुस्तक में लिखा है। उस समय यहां तीन प्रमुख राजा थे, हर्षवर्धन, पुलकेशिन और महेन्द्रवर्मन।

सन् 600 से सन् 750 के बीच

कन्नौज नगर में राजा हर्षवर्धन शासन करता था। उसने सन् 606 से 647 तक शासन किया। पूरे उत्तर भारत में उसका आधिपत्य बन चुका था। वह अनेकों राजाओं को युद्ध में हरा चुका था। वह दक्षिण भारत पर भी विजय पाना चाहता था। मगर वहां का राजा पुलकेशिन हर्ष को रोकने में सफल रहा।

पुलकेशिन चालुक्य वंश का था और वह वातापि शहर से शासन करता था। वह भी अपना राज्य बढ़ाना चाहता था। उसने सन् 608 से 642 तक शासन किया। वह अपनी सेना के साथ दक्षिण की ओर बढ़ा। उसने कई राजाओं को हराया। फिर वह कांचीपुरम पहुंचा।

ह्यून् त्सांग

एक ताम्रपत्र पर खुदा हर्ष का हस्ताक्षर। इसमें लिखा है- "स्वहस्तो मम महाराजाधिराज श्री हर्षस्य।"

कांचीपुरम में महेन्द्रवर्मन पल्लव वंश का राजा था। वह बहुत शक्तिशाली राजा था। पुलकेशिन ने उसे भी हरा दिया। महेन्द्रवर्मन सन् 600 से 630 तक शासन करता था। कुछ वर्षों के बाद महेन्द्रवर्मन के बेटे नृसिंहवर्मन ने पुलकेशिन को हराकर मार डाला और वातापि शहर को लूटकर जला डाला।

ये राजा लड़ाई में व्यस्त तो रहते थे, मगर साथ ही वे कला और साहित्य में भी रूचि रखते थे- हर्ष के दरबार में बाणभट्ट नामक संस्कृत का कवि रहता था और कांचीपुरम में दण्डिन नाम का कथाकार हुआ करता था।

हर्ष को बौद्ध धर्म से बहुत लगाव था। चीनी यात्री ह्यून् त्सांग से उसकी गहरी दोस्ती थी। उसने बौद्ध भिक्षुओं और विहारों को खूब धन दान में दिया।

तुम्हें याद होगा बौद्ध धर्म के साथ जैन धर्म भी विकसित हुआ था। सन् 600 तक जैन धर्म भी पूरे भारत में फैल चुका था और बहुत लोग उसे मानने लगे थे। राजा पुलकेशिन और महेन्द्रवर्मन दोनों जैन धर्म को मानते थे।

पर इस समय कुछ नए धर्म भी उभरकर आ रहे थे- जैसे वैष्णव धर्म (विष्णु की भक्ति) और शैव धर्म (शिव की भक्ति)। राजा महेन्द्रवर्मन ने अप्पर नामक एक शैव संत के प्रभाव में आकर जैन धर्म छोड़ दिया और शैव धर्म अपना लिया। उसने और उसके बेटे नृसिंहवर्मन ने बड़ी-बड़ी चट्टानों को खुदवाकर बहुत सुन्दर मंदिर भी बनवाये।

पाल, प्रतिहार और राष्ट्रकूट वंश (सन् 750 से सन् 1000)

सन् 750 से 1000 के बीच भारत में तीन बड़े साम्राज्य बने- एक बंगाल में पाल वंश का साम्राज्य, दूसरा उत्तर भारत में प्रतिहार वंश का साम्राज्य और तीसरा महाराष्ट्र में राष्ट्रकूट वंश का साम्राज्य। तीनों शक्तिशाली साम्राज्य थे और इनका आपस में लगातार संघर्ष चलता रहा। तीनों भारत में सर्वे-सर्वा बनना चाहते थे। मगर हरेक को दूसरे दो राजाओं का सामना करना पड़ता था। कोई
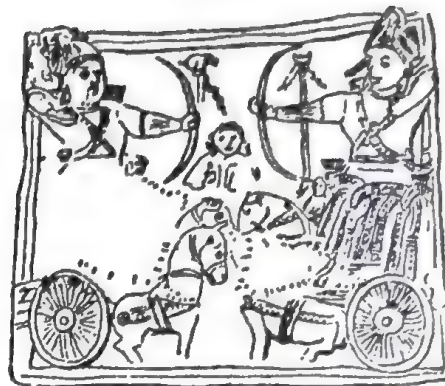
मिट्टी के फलक पर बना युद्ध का चित्र

भी राजा बाकी दोनों को हराकर सर्वे-सर्वा नहीं बन सका। इन राज्यों की लड़ाई लगभग 250 वर्ष चलती रही और इसी के कारण तीनों की शक्ति नष्ट हो गयी।

सन् 1000 से 1200 के बीच

दूर दक्षिण में तमिलनाडु में एक बड़ा शक्तिशाली राज्य बना। चोल वंश के इस साम्राज्य के प्रमुख राजा थे- राजराज चोल (सन् 985 से 1014 तक) राजेन्द्र चोल (सन् 1014 से 1044) और कुलोत्तुंग चोल (सन् 1070 से 1118)। इन्होंने न केवल दक्षिण भारत के राजाओं को हराकर अपने साम्राज्य का विस्तार किया बल्कि श्रीलंका, मलेशिया, इंडोनेशिया के राज्यों को भी हराकर अपने अधिकार में किया। इन राजाओं ने बड़े ही खूबसूरत मंदिर बनवाए।

उसी समय मध्यप्रदेश में परमार वंश के राजाओं ने एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की। इस वंश का सबसे प्रसिद्ध राजा था- भोज। भोज ने सन् 1000 से 1035 तक शासन किया। भोज एक पराक्रमी राजा होने के साथ-साथ विज्ञान और साहित्य और वास्तु कला (यानी इमारतें बनाने की कला) में गहरी रुचि रखता था। राजा भोज ने उस समय के यंत्रों (मशीनों) पर एक पुस्तक भी लिखी थी। उसने अपनी राजधानी धारा में सरस्वती का मंदिर बनवाया जहां आये दिन विद्वानों की चर्चा चलती रहती थी। यह इमारत आज भोजशाला के नाम से प्रसिद्ध है।

इसी समय अफगानिस्तान में एक शक्तिशाली राजा बना जिसका नाम था- महमूद गज़नी। वह सन् 997 से 1010 तक बार-बार उत्तर भारत के राज्यों पर आक्रमण करके धन लूटकर जाता था। महमूद के राज्य में एक बड़ा विद्वान था जिसका नाम था अलबिरूनी। वह गणित, खगोलशास्त्र, (यानी तारों और ग्रहों का ज्ञान) और अलग-अलग धर्मों का गहराई से अध्ययन करना चाहता था। उसने सुना था कि भारत में गुप्त राजाओं के समय में गणित और खगोलशास्त्र के बड़े विद्वान हुए थे। वह उनकी किताबों का अध्ययन करने के लिए भारत आया। यहां आकर अलबिरूनी ने संस्कृत सीखी और कई वर्ष जगह-जगह जाकर पुरानी पुस्तकों का अध्ययन किया। फिर अपने देश में लौटकर उसने सन् 1030 में एक किताब लिखी जिसमें उसने भारत के लोग, उनके धर्म, रीति-रिवाज़, विज्ञान, गणित, और खगोलशास्त्र आदि के बारे में लिखा।

एक नया शब्द सीखो

"समकालीन" : इसका अर्थ है "समान काल का" यानी "उसी समय का"। जैसे राजा हर्ष और चीनी यात्री ह्यून् त्सांग एक ही समय में थे।

हम कह सकते हैं- हर्ष और ह्यून् त्सांग समकालीन थे। तुम हर्ष के समकालीन नहीं हो - सही है ना?

इन वंशों का समकालीन कौन था- सूची में से छाँटो-

चालुक्य वंश का समकालीन -

पाल वंश का समकालीन -

परमार वंश का समकालीन -

सूची : अलबिरूनी, महेन्द्रवर्मन, ह्यून् त्सांग, राजेन्द्र चोल, राष्ट्रकूट वंश, हर्ष, प्रतिहार वंश, महमूद गज़नी।

अभ्यास के प्रश्न

1. सन् 600 से सन् 750 के समय में किन प्रमुख राजाओं के बीच युद्ध हुए?
2. सन् 750 से सन् 1000 के समय में किन प्रमुख वंशों के बीच युद्ध हुए?
3. क) सन् 600 से सन् 1000 के बीच किन पुराने धर्मों का प्रभाव था? किन नए धर्मों का प्रभाव बढ़ने लगा?
   ख) नए धर्मों का प्रभाव बढ़ने लगा था- इस बात का क्या उदाहरण तुमने पढ़ा?
4. सन् 600 से सन् 1200 के बीच किन देशों के यात्री भारत आए? उनके नाम क्या थे? वे भारत क्यों आए थे?
5. किस वंश के राजाओं ने भारत के बाहर भी अपना राज्य बनाया? कहां पर ?
6. राजा भोज का राज्य किस क्षेत्र में था? उसकी राजधानी क्या थी? वह किन बातों में रुचि रखता था?

6. उत्तर भारत के गांव व भोगपति

(सन् 700 से सन् 1200)

नए-नए राजवंश जिस समय बन रहे थे उस समय गांव वालों का जीवन कैसा रहा होगा? उन दिनों के गांव आज के गांवों से बहुत फर्क थे। तब गांवों में कहीं भी बिजली, ट्रैक्टर या मोटर देखने को नहीं मिलती थी। मगर इन बातों के अलावा एक और बड़ा अन्तर था। उन दिनों उत्तर भारत के अधिकांश गांवों पर भोगपतियों का अधिकार था। भोगपति कौन थे- वे गांव में क्या करते थे- चलो आगे पढ़कर देखें।

राजवंशों के समय में अधिकारी

उस समय राजा अपने सगे संबंधियों को ही ऊंचे पदों पर नियुक्त करता था। राज्य के बड़े अधिकारी व सेनापति राजा के वंश के लोग या उसके रिश्तेदार ही होते थे। इसलिए उन्हें राजपुत्र भी कहा जाता था। उन अधिकारियों को तरह-तरह की उपाधियां दी जाती थीं। जैसे, राणा, रावत, ठाकुर आदि।

राजा इन अधिकारियों व सेनापतियों को निश्चित वेतन नहीं देता था। वेतन के बदले में राजा उनसे कहता था, "तुम इन दस गांवों पर भोगपति बनकर भोग करो।" या "तुम इन चालीस गांवों पर भोगपति बनकर भोग करो।" इस तरह वेतन के बदले में राजा अपने अधिकारियों को यह अधिकार देता था कि वे कुछ गांवों व शहरों की लगान अपने पास रखकर भोगें।

भोगपति और गांव

जब राजा ऐसा कहता तो वह भोगपति अपने भोग के गांवों में जाकर अधिकार जमाता। वह उन गांवों के किसानों से उनकी फसल का एक बड़ा हिस्सा लगान के रूप में ले लेता था। साथ ही किसी न किसी बहाने नए-नए कर ज़बरदस्ती इकट्ठा करता था। शादी-ब्याह पर, पेड़ काटने पर, मछली मारने पर, ढोरों पर, घरों पर, अरघट्ट व कुओं पर, यात्रा करने पर, ऐसे किसी भी बहाने भोगपति गांव से कर वसूल करता था। वह गांव वालों से तरह-तरह के काम बिना वेतन दिए भी करवाता था।

राजा के अधिकारी उसके .... होते थे।

राणा, रावत, ठाकुर .... थीं।

उन्हें वेतन के रूप में .... मिलते थे।

भोगपति गांव वालों से बेगार करवाते थे

तब और आज

ज़रा सोचो तुम्हारे गांव या शहर में कोई ऐसे आकर रौब जमाये तो क्या हो? लोगों को कितनी मुसीबत झेलनी पड़ेगी!

वो दिन आज से काफी फर्क थे। आजकल यह निश्चित होता है कि सरकार लोगों से कौन से कर लेती है और कर में कितने पैसे लेती है। इस बात का कानून संसद और विधान-सभा में बनता है। सरकार या सरकारी अधिकारी जब जो चाहें, लोगों से वसूल नहीं कर सकते। मगर उन दिनों ऐसा नहीं था। तब राजा, राणा व ठाकुर लोगों से मनमाने कर वसूलते थे।

गांव का मुखिया

राणा व ठाकुरों के लिए गांव से कर कौन इकट्ठा करता था? यह काम गांव के मुखिया का था। मुखिया गांव वालों से कर इकट्ठा करके भोगपतियों (राणा-ठाकुरों) तक पहुंचाता था। इस काम के बदले उसे कई फायदे मिले हुये थे। मुखिया को अपनी जोत पर कर देने से छूट थी। वह गांव वालों से अपने लिए अलग से कुछ कर भी इकट्ठा कर सकता था।

आजकल गांव से लगान (या तौजी) इकट्ठा करने का काम कौन लोग करते हैं? उन्हें इस काम के लिए क्या मिलता है?

लगान का उपयोग

कर में मिले धन व सामान का भोगपति क्या किया करते थे? क्या वे इस धन को राजा तक पहुंचा देते थे?

नहीं ! उन्हें अधिकार था कि वे अपने भोग के गांवों से मिले करों को अपने पास ही रखें। आखिर यही उनका वेतन था- राजा तो उन्हें अलग से कोई वेतन नहीं देता था। गांव से मिले धन को राणा व ठाकुर अपनी इच्छानुसार खर्च कर सकते थे।

वे इस धन से अपने लिए बड़े महल व किले बनवाते थे। अपने लिए कीमती व बढ़िया अस्त्र-शस्त्र व घोड़े खरीदते थे। बड़े-बड़े मंदिर बनवाते थे। इन सब कामों के लिए वे अपने भोग के गांववालों से बेगार करवाते थे। गांववालों को भोगपति के आदेश पर उसके महल, किले, मंदिर बनवाने पड़ते- इसके लिए उन्हें कोई मज़दूरी नहीं दी जाती थी।

जब भी कोई राणा या ठाकुर गांव से गुज़रता तो लोगों को उसकी खातिरदारी करनी पड़ती थी और उसका सामान ढोना पड़ता था।

कभी-कभी ये भोगपति गांव में कुएं, बावड़ी, अरघट्ट या तालाब भी बनवाते थे- ताकि सिंचाई बढ़े। इसके बदले में वे किसानों से खेती के उत्पादन का कुछ हिस्सा ले लेते थे।

राणा व ठाकुर मंदिरों व मठों को अक्सर "दान" दिया करते थे। पर दान के लिए वे हमेशा अपना धन खर्च नहीं करते थे। वे अपने भोग के गांव वालों से कहते- "आपके गांव के प्रत्येक हल पर या अरघट्ट पर कुछ सिक्के या अनाज मंदिर में मेरे नाम से हर साल जमा करिये।"

इस प्रकार के बहुत से शिलालेख हमें सन् 700 से लेकर सन् 1200 तक मिलते हैं।

भोगपति गांव वालों से किस तरह का व्यवहार करते थे- इस विषय में चार वाक्य रेखांकित करो।

राजा के अधिकारी और भोगपति में अन्तर

तुमने पिछले वर्ष अजातशत्रु और अशोक के बारे में पढ़ा था। इन राजाओं के समय में भोगपति नहीं थे। तब राजा अपने राज्य के कामकाज के लिए अधिकारी, सेनापति और मंत्रियों को नियुक्त करता था। वे लोगों से कर वसूल करके राजा को पहुंचाते थे। इसके बदले में उन्हें राजा नियमित वेतन देता था।

अधिकारियों के बारे में उन दो बातों को रेखांकित करो जो बाद के समय के भोगपतियों से भिन्न थीं।

अभ्यास के प्रश्न

1. सन् 700 से सन् 1200 के समय में उत्तर भारत के गांव से लगान इकट्ठा करने का अधिकार किसको था?
2. उन दिनों गांव का मुखिया अपनी जोत पर लगान नहीं देता था। उसे यह लाभ किस लिए मिला हुआ था?
3. राणा, ठाकुर आदि लोग दान किस तरह देते थे?
4. गांव के लोगों को भोगपतियों को क्या-क्या देना पड़ता था, और उनके लिए क्या-क्या करना पड़ता था?
5. अशोक के समय में राजा के पास राज्य का लगान अधिक पहुंचता होगा या राजवंशों के समय में? कारण समझाओ।
6. अशोक के समय में अधिकारियों की आमदनी निश्चित थी या राजवंशों के समय में ? कारण समझाओ।
7. राणा या ठाकुरों के व्यवहार की क्या बातें आज ग़ैरकानूनी हो गई हैं?
8. भोग में मिले धन का भोगपति क्या उपयोग करते थे?
9. राजा अधिकारियों को भोग करने के लिए गांव क्यों देता था?

भोगपति गांव वालों की बेगार से किले और महल बनवाते थे

7. दक्षिण भारत के गांव

(तलैच्छंगाडु गांव सन् 950 से 1250)

इस पाठ में हम एक बहुत पुराने गांव की कहानी पढ़ेंगे। उस गांव में पहले लोग कैसे रहते थे, फिर वहां क्या-क्या बदलाव आए, लोगों की क्या समस्याएं थीं, उन्होंने उसके लिए क्या किया .... आदि बातें पढेंगे। तुम पहले इस पाठ में दिए चित्रों को देखकर अंदाज़ लगाओ कि उस गांव मे क्या-क्या हुआ होगा।

राज्य की व्यवस्था में सबसे प्रमुख बात होती थी- प्रजा से लगान व कर वसूल करना। अजातशत्रु और अशोक जैसे पुराने राजाओं के समय में यह काम राजा के अधिकारी करते थे। ये अधिकारी लगान वसूल करके राजा को देते थे और राजा उन्हें नियमित वेतन देता था।

पाठ 6 में तुमने पढ़ा कि सन् 700 के बाद उत्तर भारत में राजा अपने रिश्तेदारों व अधिकारियों को गांव भोग करने के लिए देने लगे। ये भोगपति गांव वालों से लगान वसूल करके खुद रख लेते थे। उन्हें राजा से कोई नियमित वेतन नहीं मिलता था।

दक्षिण भारत में लोगों से लगान वसूल करने की एक और व्यवस्था थी। यह क्या व्यवस्था थी- चलो देखें।

"ऊर" और "नाडु"

आज से एक हज़ार वर्ष पूर्व तमिलनाडु के गांवों में एक व्यवस्था थी। वहां के हर गांव में किसानों की एक सभा (समिति) होती थी जिसे "ऊर" कहा जाता था। ऊर में गांव के प्रमुख किसान सदस्य थे। यही ऊर गांव के सब कामकाज चलाती थी- लोगों के बीच झगड़े निपटाना, अपराधियों को दण्ड देना, ज़मीन का लेखा-जोखा, हिसाब-किताब रखना, नहर के पानी का बंटवारा करना आदि। ऊर का एक और महत्वपूर्ण काम था- किसानों से लगान वसूल करके राजा तक पहुंचाना। दक्षिण भारत में गांव के किसानों की सभा ऊर ही, किसानों से लगान वसूल कर के राजा को देती थी।

ऊर सभा की बैठक हो रही है

लगान वसूल करने के काम में दक्षिण भारत और उत्तर भारत में क्या अन्तर लगा दो वाक्यों में लिखो।

उस समय एक और समिति होती थी- जिसका नाम था - 'नाडु'। 20-25 गांवों के बीच एक नाडु समिति होती थी जिसमें उन गांवों के प्रमुख परिवार सदस्य थे। उन गांवों की देख रेख करना, गांवों के बीच झगड़े निपटाना, आदि काम नाडु समिति करती थी।

अगर राजा को गांव में कोई काम करवाना होता था तो वह ऊर या नाडु को आदेश देता था। उस आदेश का पालन ऊर और नाडु करती थीं।

राजा अशोक के समय में राजा अपने अधिकारियों से लगान इकट्ठा करवाते थे व अन्य काम करवाते थे। पर सन् 700 से 1200 के समय में दक्षिण भारत के राजा अपनी सेवा में बहुत कम अधिकारी रखते थे। गांवों में ज़्यादातर कामकाज ऊर और नाडु ही करती थीं। ऊर या नाडु के सदस्यों को राजा कोई वेतन नहीं देता था। उनकी नियुक्ति भी राजा नहीं करता था।

नाडु के काम के बारे में जिन वाक्यों में बताया गया है- उन वाक्यों को रेखांकित करो।

एक गांव की समिति .... थी।

कई गांवों की समिति .... थी।

राजा के अधिकारी और ऊर के सदस्यों के बीच क्या अंतर था?

ऊर के सदस्यों का जीवन .... पर निर्भर था।

वेल्लाल किसान और परैयर मज़दूर

ऊर, नाडु जैसी समितियां कावेरी नदी के किनारे बसे गांवों में पायी जाती थीं। इन गांवों में अधिकतर वेल्लाल जाति के किसान रहते थे। इन किसानों के खेतों में परैयर जाति के मज़दूर काम करते थे। परैयर मज़दूर अछूत माने जाते थे और उन्हें गांव के बाहर ही रहना पड़ता था।

कावेरी नदी के आसपास के गांवों की मिट्टी अच्छी और उपजाऊ थी। इससे वहां हर साल धान की दो-तीन फसलें भी हो जाती थीं।

इस कारण कई वेल्लाल किसान बहुत धनी व ताकतवर थे। ऊर व नाडु में उनका ही बोल-बाला था।

पर, कभी-कभी ऐसी भी परिस्थिति बन जाती थी जब वेल्लाल किसानों और ऊर का महत्व कम हो जाता था। यह स्थिति तब बनती थी जब राजा कोई गांव ब्राह्मणों को दान कर देता था।

तुम्हें याद होगा, उन दिनों राजा ब्राह्मणों को बुला-बुलाकर बसा रहे थे- उन्हें गांव दान में दे रहे थे। कावेरी नदी के मुहाने में ऐसे बहुत से ब्राह्मण बसाये गये।

राजा जब कोई गांव ब्राह्मणों को दान कर देता था तब क्या व्यवस्था होती थी? यह बात एक गांव तलैच्छंगाडु के उदाहरण से पढ़ो।

वेल्लाल .... थे और परैयर .... थे।

तलैच्छंगाडु ब्राह्मणों का हुआ

सन् 950 के लगभग चोल वंश के राजा ने तलैच्छंगाडु नाम का एक संपन्न गांव कई ब्राह्मणों को दान में दे दिया। राजा ने उस इलाके की नाडु समिति के नाम आदेश भेजा कि तलैच्छंगाडु ब्राह्मणों को दान में दिया जा रहा है। नाडु समिति ऐसी व्यवस्था करे कि उक्त गांव इन ब्राह्मणों को प्राप्त हो जाये।

नाडु ने आदेश का पालन किया और तलैच्छंगाडु ब्राह्मणों का हो गया। वेल्लाल किसान अब ज़मीन के मालिक नहीं रहे। ब्राह्मण ज़मीन के मालिक बन गये। कई ब्राह्मण परिवार तलैच्छंगाडु में आकर बस गये। इन परिवारों ने ज़मीन आपस में बांट ली। वेल्लाल किसान अब इन ब्राह्मणों के बटाईदार बन गये।

वेल्लाल बटाईदारों को अब अपनी फसल का एक बड़ा हिस्सा उन ब्राह्मणों को देना पड़ता था। नहर से सिंचित ज़मीन पर ब्राह्मण फसल का दो तिहाई भाग लेते थे और असिंचित ज़मीन पर आधी फसल ब्राह्मणों की हो जाती थी। ब्राह्मण वेल्लालों से अब बेगार (बिना पैसे दिये काम) भी करवा सकते थे।
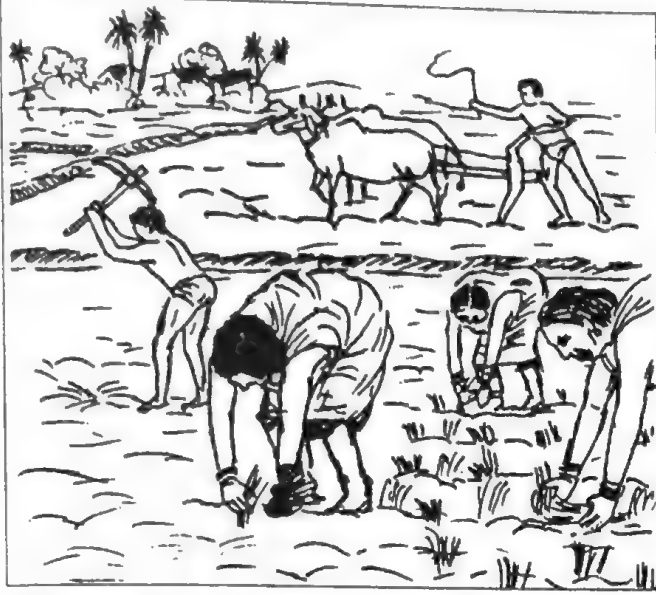
तलैच्छंगाडु में जो परिवर्तन हुये, वे इन दो चित्रों में दिखाये गये हैं। इन दो चित्रों में क्या परिवर्तन तुम्हें नज़र आते हैं?

तुम्हारे गांव में बटाईदार को फसल का कितना मिलता है?

ब्राह्मण गांव के कामकाज की देख-रेख भी खुद करने लगे। वेल्लालों की ऊर समिति भंग (खत्म) हो गई। उसकी जगह ब्राह्मणों ने अपनी एक सभा बनाई जिसे मूलपुरुष सभा कहते थे।

मूलपुरुष सभा में गांव के प्रमुख ब्राह्मण बारी-बारी से सदस्य बनते थे। मूलपुरुष सभा ही अब गांव से लगान वसूल करके राजा को पहुंचाने का काम करने लगी।

ब्राह्मणों को दान में मिलने के बाद तलैच्छंगाडु में क्या-क्या परिवर्तन आये- इसके बारे में चार महत्वपूर्ण वाक्य रेखांकित करो।
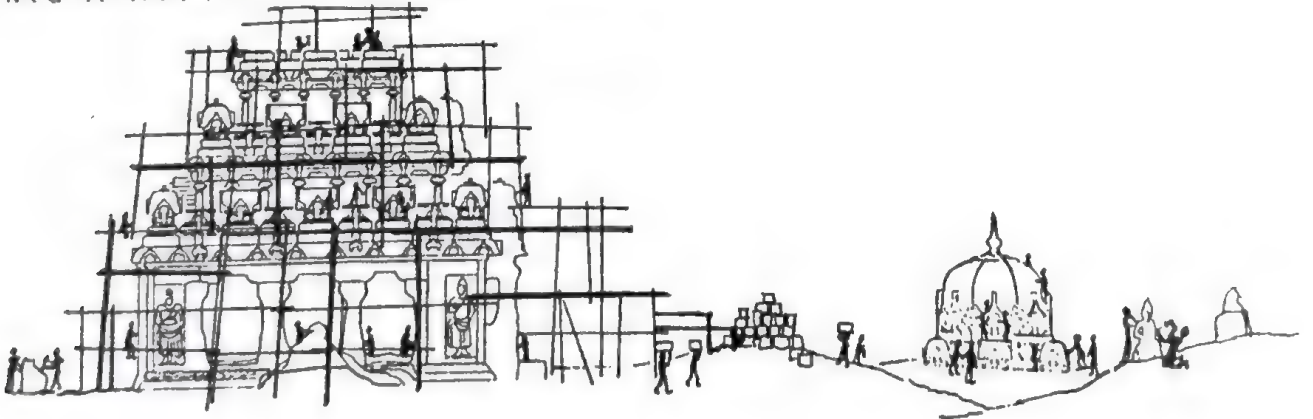
तलैच्छंगाडु के मंदिर

उस समय तलैच्छंगाडु में तीन बड़े और प्रसिद्ध मंदिर थे- दो शिव मंदिर और एक विष्णु मंदिर। उन दिनों कई लोग इन मंदिरों को सोना, चांदी या ज़मीन दान में देते थे। इस प्रकार मंदिरों के पास खूब सारा धन इकट्ठा होता गया। सन् 1000 के लगभग इन मंदिरों को पत्थर से बनवाया गया। समय के साथ मंदिर बड़े होते गये। उनमें तरह-तरह के लोग, पुजारी, नाच गान करने वाले, ढोलक बजाने वाले, पानी भरने वाले, खाना पकाने वाले, माली, आदि काम करने लगे। इन सबका खर्चा मंदिर की ज़मीन से आता था। मंदिर की ज़मीन से राजा को भी लगान मिलता था। मूलपुरुष सभा ही मंदिर से लगान वसूल करके राजा को देती थी।

मंदिरों को पत्थर से बनवाया गया

मूलपुरुष सभा और गांव

एक बार सन् 1006 की बात है। ब्राह्मणों ने चाहा हर साल चैत के महीने में गांव के शिव मंदिर में एक बड़े त्यौहार का आयोजन हो। त्यौहार के खर्च के लिए मंदिर को हर साल धन कहां से मिलेगा? मूलपुरुष सभा ने तय किया कि मंदिर की कुछ ज़मीन पर वे लगान माफ कर देंगे। मूलपुरुषों ने कहा- "हम खुद, अपनी तरफ से उस ज़मीन पर राजा को हर वर्ष लगान देंगे। मंदिर को लगान नहीं देनी पड़ेगी। इससे जो धन बचेगा उससे हर साल मंदिर में त्यौहार मनाया जाए।"

एक और बार की बात है। तलैच्छंगाडु की मूलपुरुष सभा ने तय किया कि गांव के विष्णु मंदिर में रोज़ दस ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिये। इस खर्च के लिए मूलपुरुषों ने मंदिर को सौ 'काशु' (सोने के सिक्के) दिये। सौ काशु जुटाने के लिए मूलपुरुष सभा ने गांव के कारीगरों से वसूली की- बढ़ई से सात काशु लिए, सुनार से भी सात काशु लिए, और लोहार से भी, धोबी से साढ़े तीन काशु लिए, शराब बनाने वालों से 35 काशु लिए। बचे हुए पैसे अपनी तरफ से जोड़कर सभा ने मंदिर को दान दिया।

ऊपर के अंश में किन दो वाक्यों से मूलपुरुष सभा का गांव पर अधिकार पता चलता है, रेखांकित करो।

उत्तर भारत के गांवों में इस तरह के अधिकार किसे मिले हुए थे?

झगड़े सुलझाना, दण्ड देना

मूलपुरुष सभा गांव के झगड़े, विवाद सुलझाने और दण्ड देने का काम भी करती थी। एक बार तो कुछ ब्राह्मणों और मंदिर के बीच ही ज़मीन को लेकर झगड़ा हो गया। गांव की ज़मीन के एक टुकड़े पर चार ब्राह्मण खेती करवाते थे। एक दिन शिव मंदिर की समिति ने दावा किया कि वो ज़मीन वास्तव में मंदिर की है। उन्होंने कहा कि उस खेत की सीमा पर एक पत्थर गढ़ा हुआ था जिस पर मंदिर का त्रिशूल बना था। उन चार ब्राह्मणों ने चोरी छिपे उस पत्थर को उखाड़ फेंका और खुद उस खेत पर अधिकार जमा लिया। वे चार ब्राह्मण इस आरोप को झूठा कह रहे थे। काफी विवाद हुआ।

मंदिर के हक को सिद्ध करने के लिए मंदिर में एक नौकर ने खुद को आग लगा कर आत्म-बलिदान किया। उस समय की मान्यता थी कि जो व्यक्ति अपने कथन को सिद्ध करने के लिए मरने तक को तैयार हो वह सच ही कह रहा होगा। जब बात यहां तक पहुंची तो मूलपुरुष सभा ने अपने दस्तावेज़ निकाल कर देखे। दस्तावेज़ों से पता चला कि खेत मंदिर का ही था।

तब मूलपुरुष सभा ने उन चार ब्राह्मणों को दण्ड के रूप में यह आदेश दिया कि वे खेत मंदिर को सौंप दें। साथ ही, जिस नौकर ने आत्म-बलिदान दिया था उसकी एक कांसे की मूर्ति बनवा कर मंदिर में रखवाएं। उस मूर्ति की पूजा के लिए वे चार ब्राह्मण अपनी कुछ ज़मीन मंदिर को दान करें।

मूलपुरुष की बैठक
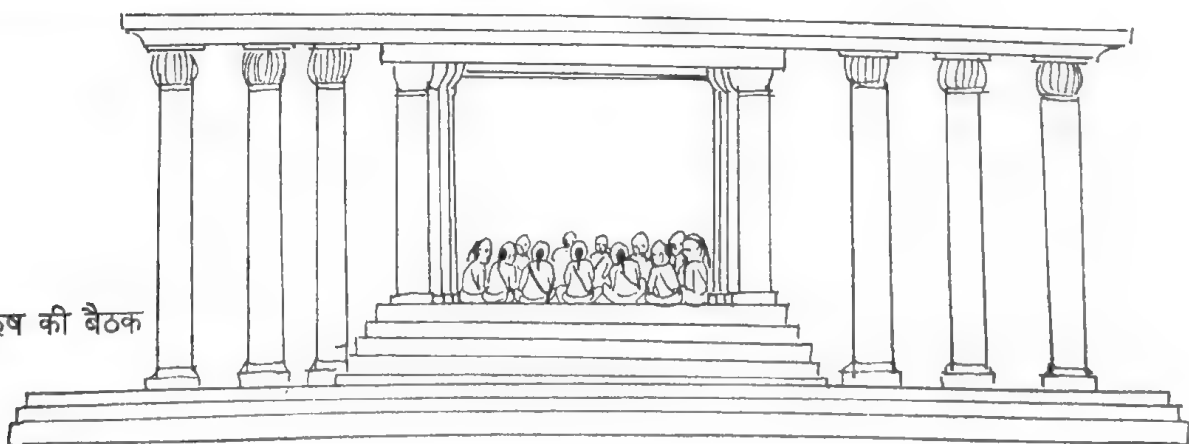
ब्राह्मणों की सभा पर नाडु का दबाव

असल में यद्यपि गांव के स्तर पर ब्राह्मणों की मूलपुरुष सभा को सब अधिकार थे, पर ऐसा नहीं था कि मूलपुरुष सभा अपनी हर बात मनवा सकती थी। तलैच्छंगाडु को छोड़कर उस इलाके के बाकी गांव तो वेल्लाल किसानों के ही थे। उस इलाके की नाडु सभा भी पहले की ही तरह कामकाज संभालती थी। नाडु अगर कोई बात का दबाव डाले तो ब्राह्मणों की मूलपुरुष सभा आसानी से अपनी मनमानी नहीं कर सकती थी।

एक बार ऐसी ही स्थिति बन गई। तलैच्छंगाडु गांव के ब्राह्मण अपने बटाईदारों को खेत की उपज का जो हिस्सा देते थे, वो उन्होंने कम कर दिया। वेल्लाल जाति के किसान जो उनके बटाईदार थे, बहुत क्रोधित हुए और कई वेल्लालों ने ब्राह्मणों की बात नहीं मानी। तब ब्राह्मणों ने अपने नौकरों को बटाईदारों के घर भेजकर तोड़-फोड़, मारपीट मचानी शुरू कर दी।

जब कई वर्षों तक यह तनातनी चलती रही तो तलैच्छंगाडु के किसानों ने नाडु की सभा में अपनी समस्या रखी। नाडु सभा ने विचार करके तय किया कि ब्राह्मण भूस्वामियों (ज़मीन के मालिकों) की ज़ोर ज़बरदस्ती चुपचाप सहन नहीं की जाएगी। नाडु ने आसपास की सब ब्राह्मण सभाओं को चेतावनी दी कि अगर वे अपने बटाईदारों के साथ ठीक समझौता नहीं करेंगे तो बटाईदार उनके खेत नहीं जोतेंगे और गांव छोड़कर चले जाएंगे।

आखिरकार ब्राह्मणों ने वेल्लाल किसानों के साथ फसल के हिस्से पर समझौता कर लिया। वे बटाईदारों को पहले जितना हिस्सा देना मान गये।

इन उदाहरणों से हम जान सकते हैं कि दक्षिण भारत के गांवों में किसानों, ब्राह्मणों आदि की समितियां समाज के कई कामकाज संभालती थीं। राजा के अधिकारियों या राजा द्वारा नियुक्त किए गए भोगपति जैसे लोगों का उन गांवों पर प्रभाव नहीं था।

पुराने समय के गांवों के बारे में कई किस्से मालूम पड़ते हैं। दक्षिण भारत में यह प्रथा थी कि लोग गांव में होने वाली महत्वपूर्ण घटनाओं को मंदिर की दीवार पर खुदवा देते थे। तुम अगर आज भी तलैच्छंगाडु जाओ तो वहां तुम्हें वही शिव मंदिर मिलेगा जो 1000 साल पुराना है- और उसकी दीवार पर वे बातें खुदी हुई मिलेंगी, जो हमने यहां तुम्हें बताई हैं। अगर तुम तमिल भाषा जानते हो तो उन बातों को पढ़ सकते हो।

अभ्यास के लिए प्रश्न

1. ऊर के सदस्य कौन थे? ऊर का क्या काम था?
2. नीचे दो घटनायें दी गयी हैं। इनमें से कौन सी उत्तर भारत की है और कौन सी दक्षिण भारत की है- पहचानो और कारण बताओ।

क) राजपुत्र लाखणपाल, एक दिन नड्डुले गांव में पहुंचा और गांव वालों को बुलाकर कहा- "यहां के मंदिर में पूजा के ख़र्च के लिए, गांव के प्रत्येक हल पर एक पाई गेहूं दिया जाए।"

ख) एक दिन राजा के दरबार से एक संदेशक गांव में आया। किसानों की सभा में जाकर उसने राजा का संदेश बताया। संदेश था- "आप के गांव के मंदिर में पूजा ठीक से नहीं हो रही है। आप ऐसी व्यवस्था करें कि मंदिर को पूजा के लिए पर्याप्त धन मिले।" किसानों की सभा ने तय किया कि गांव के हर हल पर एक चांदी का सिक्का मंदिर को दिया जायेगा।

3. मूलपुरुष सभा ही गांव से लगान वसूल करके राजा को पहुंचाती थी। यह बात कौन सी घटना से पता चलती है? उस घटना के बारे में तीन वाक्य लिखो।
4. गांव के कारीगरों पर मूलपुरुष सभा का अधिकार था। यह बात कौन सी घटना से पता चलती है?
5. आजकल ज़मीन जायदाद के मामले दीवानी अदालत में तय होते हैं- पुराने समय में दक्षिण भारत के गांवों में ज़मीन के झगड़ों को कहां सुलझाया जाता था?
6. तलैच्छंगाडु में ब्राह्मण भूस्वामी, वेल्लाल बटाईदारों पर क्यों मनमानी नहीं कर सके?
9. तलैच्छंगाडु में सन् 950 से 1250 तक हुई घटनाओं के बारे में हमें कैसे पता चलता है?

8. हर्ष के समय शबर वनवासी
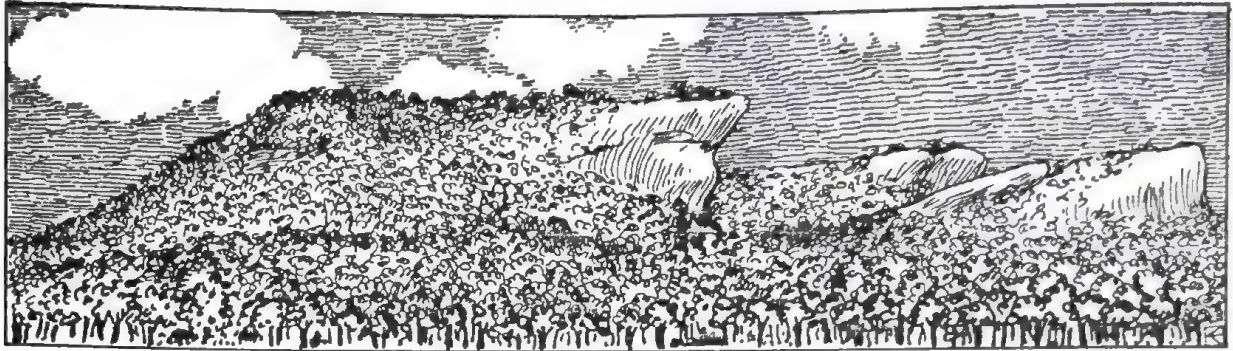
विंध्याचल के पर्वत व वन

खेतिहर गांव और जंगल की बस्तियां

उत्तर भारत और दक्षिण भारत के गांवों के बारे में तुमने पिछले दो पाठों में पढ़ा था। ऐसे गांव अधिकतर नदियों के मैदान व पठारी इलाकों में बसे थे। वहां के अधिकतर किसान हल-बैल से खेती करते थे। वे नए-नए सिंचाई के साधनों का उपयोग कर रहे थे। इस कारण उनके गांव संपन्न थे। वहां घनी आबादी होती थी। घर पास-पास सटे हुये बना करते थे। उन्हीं गांवों से राजा व भोगपतियों को लगान मिलता था। उन गांवों में ही ब्राह्मण आकर बसते थे और वहीं छोटे-बड़े मंदिर बने थे। वहां कई कारीगर व मज़दूर भी रहते थे।

मगर उन गांवों से भिन्न कई गांव थे। ये जंगलों के बीच. बसी बस्तियां थीं। राजवंशों और सामंतों के समय में आज से काफी अधिक जंगल थे। बहुत से कबीले पहाड़ों और जंगलों में रहते थे। जंगल की चीज़ों के सहारे अपनी गुज़र बसर करते थे।

पहाड़ों और जंगलों में रहने वाले लोगों के बारे में तुमने पाठ 2 में क्या जाना था?

हर्षचरित और बाणभट्ट

विंध्याचल पर्वत के जंगलों में रहने वाले शबर नाम के वनवासियों का वर्णन हमें हर्षचरित में मिलता है। हर्षचरित उसी राजा हर्षवर्धन की जीवनी है जिसके बारे में तुम पढ़ चुके हो। हर्ष की यह जीवनी कवि बाणभट्ट ने लिखी थी।

बाणभट्ट लिखता है कि जब हर्ष की बहन राज्यश्री के पति की युद्ध में मृत्यु हुई तो वह दुख न सह सकी और कहीं चली गई। हर्ष उसे ढूंढते-ढूंढते विंध्य पर्वतों पर पहुंचा। हां वही विंध्य पर्वत जो भोपाल से होशंगाबाद के रास्ते में पड़ते हैं। इन पर्वतों के जंगल में हर्ष अपनी बहन को ढूंढता रहा। यूं तो अक्सर हम भी इन जंगलों से गुज़रते हैं। पर राजा हर्ष ने आज से 1400 साल पहले इन जंगलों में क्या देखा?

विंध्याचल पर्वत के वन में शिकार

राजा हर्ष ने देखा कि जंगल में कोई सड़क नहीं बनी है- केवल पगडंडियां हैं। मगर ये पगडंडियां भी साफ नज़र नहीं आती हैं- जंगलों से गुज़रने वाले बहुत कम हैं- शायद इसलिये। इन्हीं पगडंडियों पर चलते-चलते उसे कई दृश्य देखने को मिले। कहीं उसने देखा शेर को पकड़ने के लिए पेड़ों के बीच जाल बिछे हैं। जगह-जगह लोग लकड़ी जलाकर काठकोयला बना रहे हैं।

जंगल में बीच-बीच में कुछ शिकारी भी उसे दिखाई दिये। जानवरों और पक्षियों को पकड़ने के लिए वे तरह-तरह के जाल व फन्दे लिए हुये हैं। ये जाल व फन्दे
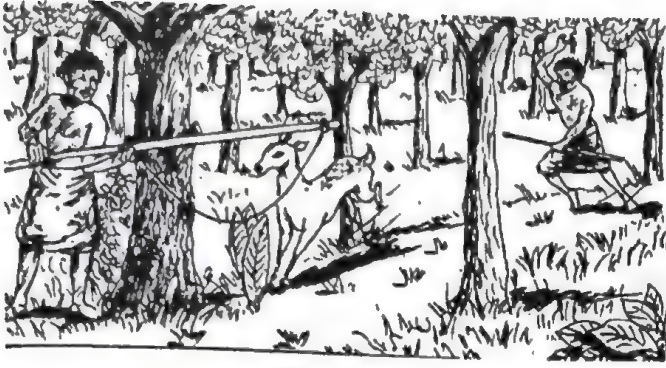
वनों में शिकार

जानवरों की शिराओं और तंतुओं से बने हैं। कुछ बहेलिये भी मिले। उनके पास पिंजरे में तीतर और शाहबाज़ बंद हैं। यहां वहां छोटे बच्चे भी टहनियों में गोंद लगाकर छोटी चिड़ियों को मारने की कोशिश कर रहे हैं।

बेचने जाते हुए

पगडंडियों पर जंगल के लोग जंगल से मिली चीज़ों का गट्ठर सर पर लादकर उन्हें बेचने जाते मिले। कई चीजें ले जा रहे थे- सिधु पेड़ की छाल, फल, सन के गट्ठे, शहद, मोरपंख, मोम, खदीर पेड़ की लकड़ी, खस, छाल, जड़ें, गुग्गल (धूप), सेमल की रूई आदि।

क्या इनमें से कोई चीज़ तुम्हारे आसपास मिलती है? क्या लोग उसे इकट्ठा करते हैं?

बेचने जाते हुए

जंगल के बीच खेती

बस्तियों के आसपास बरगद पेड़ के चारों तरफ सूखी लकड़ी से घेरा बना है। इनमें लोगों के पशु रहते हैं। कहीं दूर-दूर पर खेत दिख जाते हैं। हां- यहां के जंगलों में खुली जगह की कमी है- इसलिए खेत बहुत कम हैं और बिखरे हुए हैं।

यहां ज़मीन साफ कर के हाल ही में खेत बनाए गए हैं। कटे हुए पेड़ों के ठूंठ दिख रहे हैं। कुछ ठूंठों में तो पत्ते फिर से फूटने लगे हैं।

खेत जोतने के लिए ये लोग हल बैल का उपयोग नहीं करते हैं। यहां की मिट्टी लोहे की तरह काली और कठोर है। इसे वे कुदाल से खोदते हैं।

खेतों के बीच मचान बने हुए दिख रहे हैं- निश्चय ही यहां जंगली जानवरों का फसलों को खतरा रहता होगा।
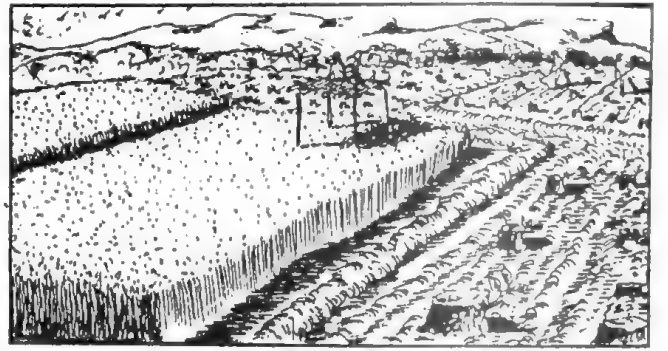
शबरों के खेत

वनवासियों की खेती के बारे में पांच महत्वपूर्ण शब्द रेखांकित करो।

बस्ती, बाड़े, घर

ऐसे चलते-चलते शाम हो रही थी, तो हर्ष एक बस्ती में आ पहुंचा। उसने देखा कि वनवासियों के घर एक-दूसरे से कुछ दूर-दूर बने हैं। हर घर के चारों तरफ झाड़ियों और कांटों का बाड़ा बना है। कहीं-कहीं बांस का झुरमुट भी है। इन्हीं से शायद वे अपने धनुष बनाते होंगे।

बाड़े में कुछ न कुछ उगता रहता है। अरण्डी, बैंगन, तुलसी, सिगरू (प्याज़ जैसी सब्ज़ी), सरकण्डा, कोदों, कुटकी, लौकी आदि। लम्बे डंडों पर लौकी की बेलें चढ़ी हैं। बाड़े में एकाध खदिर या बेर के पेड़ भी हैं। इनके नीचे बछिये बंधे हैं। घरों की छतों पर मुर्गे आवाज़ लगा रहे हैं।
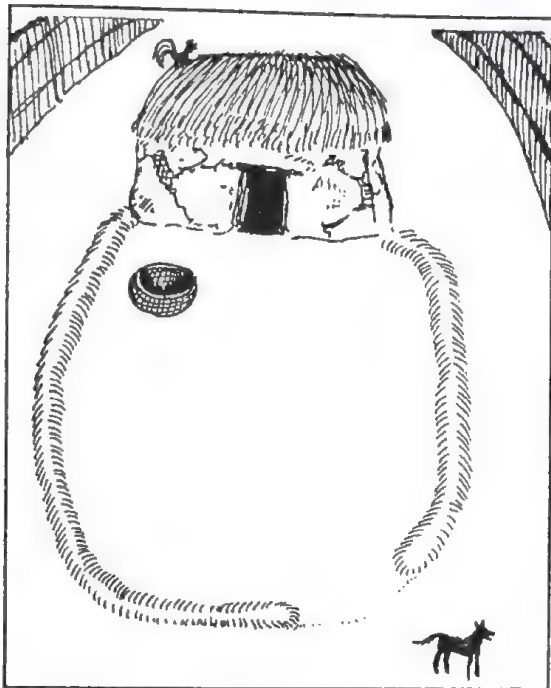
घर का आंगन

हर्ष ने देखा कि वनवासियों के घर बांस की खपच्चियों, पत्तों, व सरकण्डों के बने हैं। घरों में यहां वहां बहुत सी चीज़ें रखी हुयी हैं। इनमें से कई चीज़ें औरतों ने जंगल से इकट्ठी की हैं। वाकई कितनी सारी चीज़ें हैं! सेमल की रूई, जंगली धान, सिंघाड़े, गुड़, मखाने, बांस, चटाई, दवाई की जड़ी-बूटियां, खिरनी के बीज, महुआ आदि। बड़ी मात्रा में महुआ की शराब भी जमा की हुई है।

ये चीज़ें ऊपर दिए गए घर के चित्र में बनाओ या लिखो।

शबर युवक

हर्ष उस रात इसी गांव के पास रुका। अगले दिन सुबह उठ कर फिर अपनी बहन को ढूंढने निकला। चलते-चलते उसकी भेंट शबर कबीले के एक युवक से हुई। वह शबर कबीले के मुखिया का बेटा था। शबर युवक काले रंग का था। उसकी नाक चपटी और होंठ मोटे थे। उसके कानों में तोते के पंख लगे थे। कांच के मनके की बालियां वह कानों में पहने था। उसकी कलाई पर सुअर के बालों में सांप के ज़हर की काट बंधी हुई थी। हाथों में उसके टिन के कड़े थे। उसकी तलवार का हत्था किसी जानवर के सींग का बना था। तलवार खाल की म्यान में बंद थी।

शबर युवक की पीठ पर भालू और चीते की खाल से बनी तरकश लटक रही थी। उसमें ज़हरीले बाण रखे थे। उसके बाएं कंधे पर धनुष टंगा था। धनुष से एक तीतर और एक खरगोश लटक रहा था।

शबर युवक के चित्र में वो सब चीज़ें नहीं बनी हैं जो वह पहने था। उन्हें बनाओ।

शबर युवक के शरीर पर किन-किन जानवरों की चीज़ें थीं- सूची बनाओ।

शबर युवक ने हर्ष को प्रणाम किया और उसे तीतर और खरगोश भेंट में दिया। हर्ष ने उससे पूछा- "क्या तुमने मेरी बहन को इस जंगल में देखा है?" शबर युवक ने कहा,
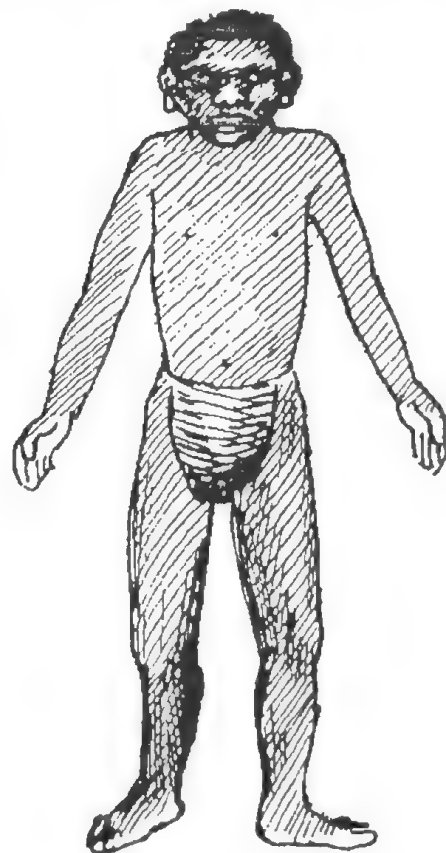
शबर युवक

"महाराज हम इस जंगल का चप्पा-चप्पा पहचानते हैं। मगर हमने आपकी बहन को नहीं देखा। यहीं पास में एक नदी है। उसके किनारे कुछ मुनि रहते हैं। उनके आश्रम में शायद आपको कोई खबर मिलेगी।"

हर्ष जब उस आश्रम में पहुंचा तो मुनियों ने उसका स्वागत किया। उन्होंने बताया कि "पास में एक भद्र महिला आग जलाकर उसमें जलकर मरने की तैयारी कर रही है। शायद वह आपकी बहन हो।" हर्ष भागता-भागता उस अग्निकुण्ड के पास जा पहुंचा। वहां उसने पाया कि वास्तव में वह उसकी बहन राज्यश्री ही थी जो जीवन से निराश होकर आत्महत्या कर रही थी। हर्ष और मुनियों ने राज्यश्री को खूब समझाया और रोकने में सफल हुए। फिर हर्ष अपनी बहन के साथ अपनी राजधानी लौट आया।

यह कहानी पढ़ते-पढ़ते आज से तेरह-चौदह सौ साल पहले विंध्य पर्वत के जंगलों में रहने वालों का जीवन हमारी आंखों के सामने तैर आया है। उन लोगों के जीवन की कितनी सारी छोटी-छोटी बातों पर बाणभट्ट का ध्यान गया था और कैसे बड़ी बारीकी से उसने विंध्यवासियों के जीवन का वर्णन लिखा है, पढ़कर आश्चर्य होता है।

तब और आज

आज भी अगर तुम विंध्य और सतपुड़ा पर्वतों के जंगलों में जाओ या बस्तर के जंगलों में तो तुम्हें ऐसे बहुत से दृश्य देखने को मिल जाएंगे।

तुमने कक्षा 6 में पाहवाड़ी गांव का वर्णन पढ़ा था। पाहवाड़ी सतपुड़ा पर्वत के जंगलों में बसा गांव है। आज के पाहवाड़ी गांव की बातों और हर्ष के समय के शबर वनवासियों की बातों में तुम्हें क्या कुछ समानताएं नज़र आईं?

1. खेत में 2. बस्ती व घरों में 3. बाड़े में 4. जंगल से लाई चीज़ों में

पर अब इन वनवासी लोगों का जीवन भी काफी बदलने लगा है। अब उनका जीवन पूरी तरह वैसा नहीं रहा जैसा हर्ष के समय में था।

उनके जीवन में क्या बदलाव आए हैं शायद तुम्हें इन बातों का कुछ ज्ञान हो। गुरुजी की मदद से इन बातों पर चर्चा करो और 6-7 वाक्य लिखो।

अभ्यास के लिए प्रश्न

1. इनमें से कौन सी बातें जंगलों में बसे वनवासियों के बारे में हैं और कौन सी बातें दूसरे खेतिहर गांवों की हैं? सूची में से अलग-अलग छांटकर तालिका में भरो।
   सूची- कुदाल से खेती, पहाड़ी खेत, सटे-सटे घर, हल बैल से खेती, दूर-दूर बने घर, अरघट्ट, ब्राह्मण, शिकार करके भोजन जुटाना, मंदिर, जंगलों की चीज़ों को इकट्ठा करके बेचना, कारीगर, राजा को कर देना।

वनवासी लोग	खेतीहर गांव

2. क- हर्ष के समय में वनवासी लोग क्या उगाते थे?
   ख- क्या बेचते थे?

9. एक पुराना शहर - सीयडोणि

पुराने समय के लोग, उनकी चीज़ें व बातें- सब गुज़र गई हैं। सब खत्म हो गये हैं। फिर भी इतिहास की पुस्तकों में लिखा होता है कि पुराने समय में ऐसा होता था, वैसा होता था। यह सब बातें पुराने ज़माने की बची हुयी निशानियों से ही पता चलती हैं।

राजवंशों और सामंतों के समय की बची हुयी निशानियों में से शिलालेख बड़े काम की चीज़ें हैं। शिलालेख का मतलब है पत्थर (शिला) पर कोई बात खोद कर लिखी गयी है। इन शिलालेखों में लिखी बातों को पढ़कर और समझकर ही इतिहासकार बताते हैं कि पहले के दिनों कैसा होता था।

लेकिन इसमें एक दिक्कत भी होती है। शिलालेखों में पुराने समय की बातें उस तरह से नहीं लिखी होती हैं जैसे तुम्हारे पाठ में तुम्हें लिखी मिलती हैं। आओ इस पाठ में एक नया अभ्यास करें। एक पुराने शहर के शिलालेख पढ़ें और पता करें कि उस समय शहरों में क्या होता था, कैसे होता था।

एक पुराना शहर

जब हम भोपाल से झांसी जाते हैं तब रेलगाड़ी ललितपुर नाम के स्टेशन पर रुकती है। ललितपुर के पास आज एक छोटा सा गांव बसा है, जिसका नाम सीरोनखुर्द है। वहां आज से लगभग एक सौ साल पहले सन् 1887 में एक बड़ा लम्बा शिलालेख मिला। उसको जब लोगों ने पढ़कर देखा तो पता चला कि वहां सन् 900 के लगभग एक बड़ा शहर बसा हुआ था। शिलालेख से ही पता चलता है कि उस शहर का नाम सीयडोणि था।

मगर आज तो वहां केवल एक छोटा सा गांव मात्र है। इस पुराने शहर का कोई नामोनिशान नहीं है। शायद पूरा शहर समय के साथ नष्ट होकर मिट्टी में दब गया है। इस शहर का केवल एक निशान बचा है - यह शिलालेख। इसमें सीयडोणि के राजा, व्यापारी, कारीगर, मंदिर, सड़क, घर, बाज़ार - इन सबके बारे में कई बातें लिखी हैं। चलो हम भी इसे पढ़ कर उस खोये हुए शहर के बारे में पता करें। इस शिलालेख में सन् 902 से लेकर सन् 967 तक की कई घटनाओं का ज़िक्र है।

यह कितने साल पुरानी बात हुई?

सबसे पहले सन् 902 की बात है। सन् 902 के शिलालेख में लिखा है-

"सांगट के पुत्र, चण्डूक नामक एक नमक व्यापारी ने शहर के दक्षिणी भाग में श्री नारायण भट्टारक के लिए एक मंदिर बनवाया। पूरे शहर के लोगों ने मिलकर इस मंदिर को एक खेत दान में दिया। खेत से श्री नारायण भट्टारक के लिए चन्दन, स्नान, धूप, दीप, नैवेद्य (भोग) का इन्तज़ाम हो सकेगा।"

ऐसी बहुत घटनाओं का ज़िक्र सीयडोणि नगर के शिलालेख में मिलेगा।

आगे पढ़ने से पहले एक मिनिट रुको। पाठ के अंत में सीयडोणि का एक नक्शा आधा बना हुआ है। इसमें नारायण भट्टारक के मंदिर को पहचानो।

नारायण भट्टारक का मतलब है, नारायण भगवान। नारायण भट्टारक का मंदिर किसने बनवाया था?

मंदिर

सामंत और मण्डी

सन् 906 की एक घटना के बारे में पढ़ो। शिलालेख में लिखा है-
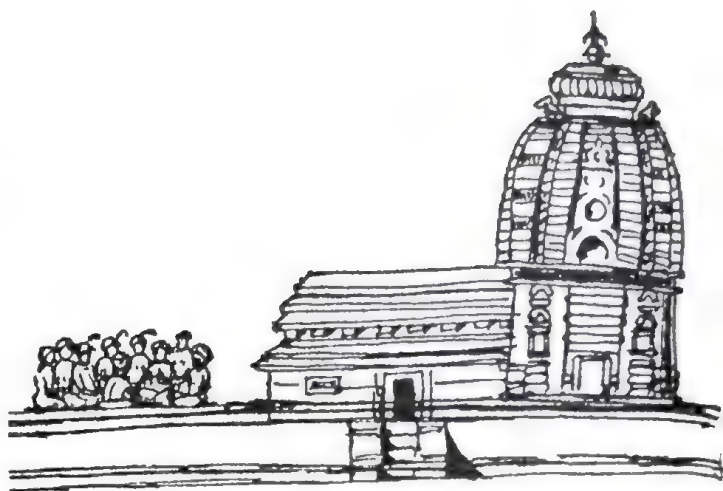
"सीयडोणि में रहने वाले महाप्रतिहार महासामंताधिपति श्री उन्दभट ने सारे अधिकारियों को सूचित किया - नारायण भट्टारक के मंदिर में पूजा पाठ के लिए यह व्यवस्था की जा रही है कि सीयडोणि के मण्डपिक (यानी मण्डी) में से रोज़ मंदिर को कुछ सोने के सिक्के दिए जायेंगे। जब तक चांद और सूरज रहेंगे तब तक यह व्यवस्था जारी रहेगी। अगर कोई इसका विरोध करे (बाधा डाले) तो उसे पांच महापाप लग जायेंगे। यह उन्दभट के हस्ताक्षर हैं।"

सीयडोणि में किस नाम का सामन्त रहता था?

उसने मंदिर में पूजा पाठ के लिए क्या व्यवस्था की?

नक्शे में देखो कि मण्डी की सबसे उचित जगह कौन सी होगी? वहां तुम सीयडोणि की मण्डी बना दो।
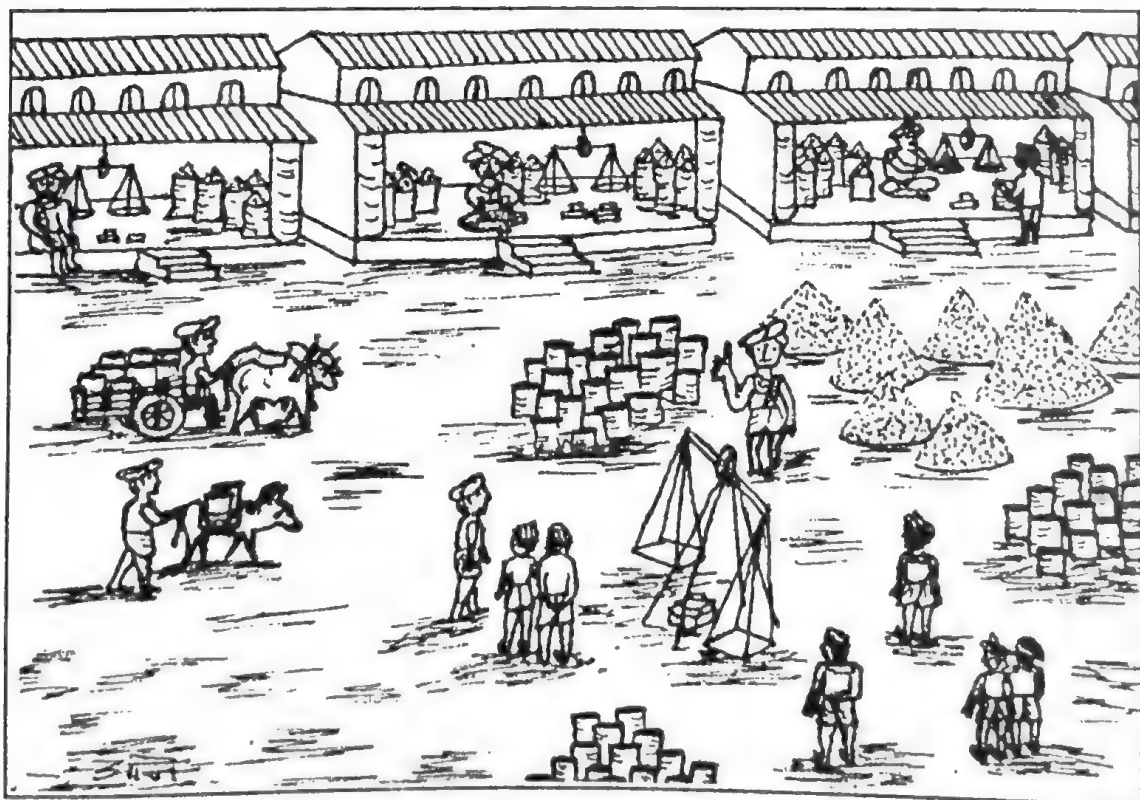
मण्डी

जब सीयडोणि में सामन्त रहता था तो उसका महल भी तो रहा होगा। ठीक जगह सोच कर नक्शे में सामन्त का महल भी दिखाओ।

शक्कर बनानेवाले कंदुक

सन् 907 में,

"शहर के व्यापारियों की समिति के प्रमुखों और सारे कन्दुकों (शक्कर बनाने वालों) के सामने यह व्यवस्था की जा रही है। नमक व्यापारी नागक ने, जो कि चण्डूक का पुत्र है, बहुत कीमत चुकाकर चार-पांच कन्दुकों से यह इन्तज़ाम किया है। ये शक्कर बनाने वाले रोज़ अपने उत्पादन का एक हिस्सा मंदिर को देते रहेंगे। यह नागक के हस्ताक्षर हैं।"

सन् 907 में चण्डूक नहीं, बल्कि उसका बेटा दान कर रहा था। इस आलेख में तुमने कुछ नए लोगों के बारे में भी पढ़ा। ये शक्कर बनाने वाले शायद एक साथ एक ही गली या मोहल्ले में रहते होंगे।

अब तुम नक्शे में शहर के एक कोने में कन्दुकों का मोहल्ला दिखाओ।

कन्दुक

नागक कौन था? नागक ने मन्दिर को दान देने का इन्तज़ाम किस के साथ किया और क्या इन्तज़ाम किया? नागक ने दान की व्यवस्था किस के सामने की?
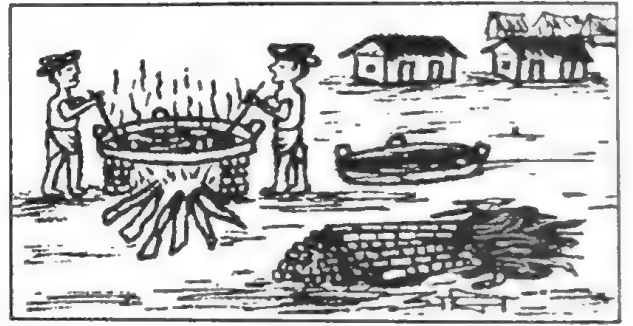
बाज़ार और दुकानें

सन् 909 में,

"चण्डूक वणिक (व्यापारी) ने प्रसन्नहट्ट (प्रसन्न बाज़ार) में अपनी वीथी (दुकान) नारायण मंदिर को दान में दी। इस वीथी के पूर्व में सुभादित्य की वीथी है, दक्षिण में भट्टदेव का घर है, पश्चिम में चूंआ की वीथी है और उत्तर में हट्टरथ्य (बाज़ार की सड़क) है।"

सन् 909 में ही,

"ताम्बूलिक (पान बेचने वाला) केशव जो कि बटेश्वर का पुत्र है ने चतुर्हट्ट (चतुर बाज़ार) में अपनी वीथी नारायण मंदिर को दान में दी।"

सन् 909 में नारायण मंदिर को किस-किस की दुकानें दान में मिलीं? ये दुकानें किन बाज़ारों में थीं?

नक्शे में किसी जगह पर चतुर्हट्ट बनाओ।

प्रसन्नहट्ट में चण्डूक की दुकान बनाओ। दुकान के चारों तरफ जो चीज़ें थीं उन्हें भी सीयडोणि के नक्शे में दिखाओ।

चण्डूक ने जब अपनी दुकान दान में दी तो आलेख में यह क्यों लिखवाया कि दुकान के चारों तरफ क्या था?
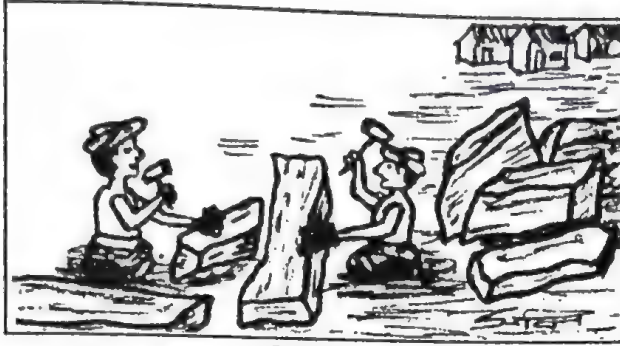
सिलाकूट

सन् 947 में,

"सूत्रधार जेजक, विसिआक, भलुआक और जागूक नाम के सिलाकूटों (पत्थर की सिलायें बनाने वाले) व अन्य सिलाकूटों ने निश्चय किया कि वे नारायण भट्टारक को प्रत्येक पत्थर पर कुछ द्रम्म (पैसे) दान में देंगे।"

शायद उस समय सीयडोणि के घर, महल, मंदिर पत्थर के बनते थे- ये सिलाकूट पत्थरों को तोड़कर इमारत बनाने में मदद करते होंगे।

"पुरन्दर ने नारायण भट्टारक के मंदिर के अन्दर चक्रस्वामि (विष्णु) की मूर्ति की स्थापना की। उस मूर्ति के सामने दिया जलाने के लिए केसव, दुर्गादित्य, केसुलाक, उजोणेक, तुण्डिय आदि सारे तैलिकों (तेल बनाने वालों) ने तय किया कि वे तेल निकालने के हर कोलू पर कुछ तेल दिए के लिए दान में देंगे।"

सिलाकूटों व तैलिकों का मोहल्ला भी नक्शे में दिखाओ।

सीयडोणि के सिलाकूटों और तैलिकों ने मंदिर को किस प्रकार दान दिए?

तो तुमने हज़ार साल पहले के एक शहर में झांक कर देख लिया। उन बीते हुए लोगों के काम धाम और उस शहर की रौनक और चहल-पहल भी तुम्हारे मन में छायी होगी। क्या कुछ होता रहता था उन दिनों! क्या तुम्हारे आसपास कोई शहर है जो हज़ार साल पुराना है? शायद उस शहर में भी कभी वही नज़ारे देखने को मिलते होंगे जो तुमने सीयडोणि में झांक कर देखे। अब कोई तुमसे पूछे क्यों भई तुमने क्या देखा तो क्या बताओगे?

हम पूछते हैं और तुम बताओ।

** तुम्हें सीयडोणि नगर का सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति कौन लगा? यानी बहुत जाना माना व्यक्ति जिसकी शहर में बड़ी धाक हो? उसके बारे में कुछ बताओ।*

** बताओ कि सीयडोणि नगर की बनावट कैसी थी? वहां कितने बाज़ार थे? एक या अधिक? बाज़ारों के नाम भी थे क्या? (जैसे आज भी शहरों में बाज़ारों के नाम होते हैं - इतवाराबाज़ार, शास्त्री मार्केट।)*

** वे लोग उस समय बाज़ार को क्या कहते थे? बाज़ार शब्द तो फारसी भाषा का शब्द है। भारत में इसका उपयोग तुर्की लोगों के आने के बाद ही होने लगा। अंग्रेज़ों के भारत आने के बाद बाज़ार के लिए कौन सा शब्द इस्तेमाल होने लगा?*

** सीयडोणि के बाज़ारों में क्या सिर्फ दुकानें ही थीं - और लोगों के घर कहीं अलग थे - या दुकानों के बीच घर थे?*

** "दुकान" भी फारसी शब्द है। दुकानों को तब क्या कहा जाता था?*

** सीयडोणि के किन व्यापारियों से तुम मिले? उनके नाम बताओ। वे किन चीज़ों का व्यापार करते थे?*

** सीयडोणि में कौन-कौन सी चीज़ें बनाने वाले लोग थे?*

** कौन-कौन से कारीगर सीयडोणि में थे?*

* उस समय के कई लोगों के नाम आजकल के लोगों के नामों से फर्क नज़र आते हैं क्या?
* सीयडोणि के मंदिरों को दान क्या नगद सिक्कों में दिया जाता था? कुछ उदाहरण बताओ।
* उन दिनों पैसे को रुपया तो नहीं कहते होंगे। तो क्या कहते थे?
* क्या मंदिरों को ज़मीन जायदाद भी दान में दी जाती थी? कुछ उदाहरण दो। देवता की पूजा के लिए इससे कैसे लाभ मिलता होगा?
* शहर के कारीगर किस-किस तरह से मंदिर को दान देते थे?
* शहर का भोगपति किस तरह से दान देता था?
* क्या ऐसा लगता है कि आसपास के गांव के लोग सीयडोणि आते थे?
* सीयडोणि के बारे में तुम्हें कौन से सन् से कौन से सन् तक की बातें पता चलीं?

सन् 900 के लगभग अपने देश के कोने-कोने में शहर बस रहे थे। इनमें से कई सीयडोणि की तरह नष्ट हो गए- मगर बहुत सारे आज भी आबाद हैं। मध्यप्रदेश में ही ऐसे बहुत सारे शहर थे।

राजा अशोक के समय में मध्यप्रदेश में केवल तीन शहर थे- कौन-कौन से- बता सकते हो?

सन् 1000 तक आते-आते मध्यप्रदेश में ही कितने सारे शहर हो गए। साथ दिए नक्शे में देखो।

इनमें से कई शहर सीयडोणि जैसे नष्ट हो गए हैं। आज वहां केवल उनके खण्डहर बचे हैं- टूटे मंदिर, ईंट और पत्थर के ढेर, दूर-दूर तक बिखरी हुई खंडित मूर्तियां। इन वैभवशाली शहरों का आज केवल इतना ही बचा है।

मण्डप नाम के शहर को नक्शे में ढूंढो।
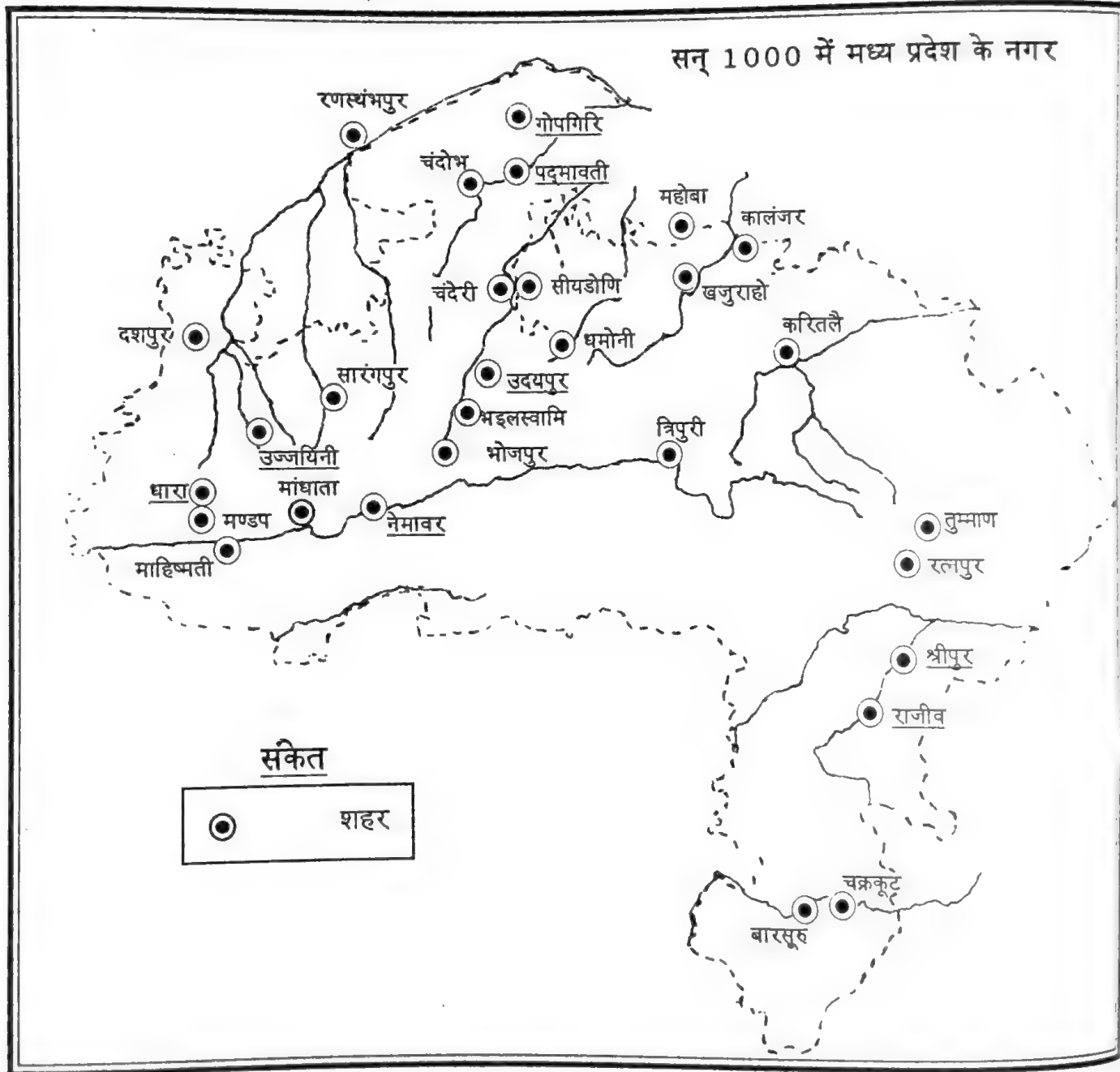
यह शहर एक ऊंचे पहाड़ पर बसा हुआ था। एक समय एक बड़े राज्य की राजधानी हुआ करता था मण्डप नगर। मगर वहां आज खण्डहरों के अलावा केवल एक छोटा सा गांव है। यह जगह आज मांडू कहलाती है। भोजपुर भी ऐसा ही एक शहर था। भोपाल के पास आज भी भोजपुर मंदिर के खण्डहर देखे जा सकते हैं।

मगर कुछ ऐसे भी शहर थे जो समय के साथ अपनी पुरानी जगह से हटकर किसी दूसरी जगह पर बस गये। यह कैसे हो सकता है- शहर कैसे उठकर चल सकता है? मगर हो न हो यह सच बात है। अक्सर तुमने सुना होगा कि फलाना गांव तो वहां बसा था फिर यहां आकर बस गया।

उसी तरह शहर भी अपनी जगह बदलते हैं। नक्शे में भईलस्वामि नाम के शहर को देखो। यह ऐसा ही एक शहर है। यह शहर आज अपनी पुरानी जगह से दो-तीन किलोमीटर की दूरी में बसा है और विदिशा कहलाता है। विदिशा से कुछ बाहर निकलने पर पुराने शहर का मिट्टी से ढका हुआ मलबा दिखाई देने लगता है।

बहुत सारे ऐसे शहर हैं जो तब से आज तक बने हुए हैं- मगर उनके नाम कुछ-कुछ बदल गये हैं। जैसे- चन्देल राजाओं की राजधानी का नाम खजूरवाहक था- आज उसका नाम खजुराहो है।

नीचे कुछ ऐसे ही पुराने शहरों के आधुनिक नाम दिये जा रहे हैं। नक्शे में उनके पुराने नाम हैं और उनके नीचे एक रेखा भी खींची गयी है। क्या तुम इन शहरों के पुराने नाम नक्शे में से पहचान कर यहां लिख सकते हो?

क्र.	*नए नाम*	*पुराने नाम*
1.	*सिरपुर*	
2.	*राजिम*	
3.	*नेमावर*	
4.	*माहेश्वर*	
5.	*धार*	
6.	*मंदसौर*	
7.	*उदयपुर*	
8.	*उज्जैन*	
9.	*ग्वालियर*	
10.	*पवाया*	
11.	*चन्देरी*	
12.	*रायपुर*	

10. समाज में जाति पाति

पाठ पढ़ने से पहले कक्षा में इन प्रश्नों पर विचार करो-
तुम्हारे गांव या शहर में कौन सी जातियां हैं? क्या हर जाति का कोई काम निश्चित है? क्या लोग अपनी जाति का पुराना काम ही करते हैं? जात-पात की बात का किस-किस चीज़ में ध्यान रखा जाता है? कभी तुम्हारे मन में जात-पात के बारे में कई सवाल उठे होंगे। कक्षा के सभी विद्यार्थी अपने अपने सवालों को बताएं। फिर इस पाठ को पढ़ें।

जाति क्या है?

आज भी भारत के सभी भागों में जात-पात की बातें देखने को मिलती हैं। यहां अधिकतर लोग अपने-आप को किसी न किसी जाति का मानते हैं। अक्सर जाति के आधार पर कुछ लोगों को जन्म से ऊंचा और कुछ लोगों को जन्म से नीचा माना जाता है। यहां तक कि समाज के कुछ लोगों को अछूत भी माना जाता है। उन लोगों पर तरह तरह का अत्याचार भी किया जाता है। तुम्हारे गांव या शहर में भी लोग कई जातियों में बंटे होंगे और एक दूसरे से जाति पाति के अनुसार व्यवहार करते होंगे।

इन विषयों पर तुम कई बार बातचीत करते होगे। लेकिन, क्या तुमने कभी सोचा है कि जाति क्या है - और जाति की क्या पहचान है? उदाहरण के लिए तुम कुछ लोगों का परिचय पढ़ो- "मैं रामू टेलर हूं", "मै गजानन पंडित हूं", "मैं भीरू लोहार हूं," "मैं शरदचन्द्र शिक्षक हूं।"

इनमें से किन लोगों की जाति तुम पहचान पाए? उन्हें रेखांकित करो।

तुमने ज़रूर भीरू को लोहार जाति का माना होगा। पर तुमने रामू को टेलर जाति का नहीं कहा होगा। तुम शायद सोच रहे हो कि लोहार जाति है, पर टेलर तो जाति नहीं। यह एक धन्धा है। हम ऐसा क्यों सोचते हैं? आओ इसके कुछ कारण स्पष्ट करें। तुम पढ़कर बताओ कि क्या तुम्हें ये कारण ठीक लगते हैं।

1. टेलर एक जाति नहीं है क्योंकि कोई जन्म से टेलर नहीं बन सकता। कोई भी कपड़े सिलने का काम सीख कर टेलर बन सकता है।

2. टेलर एक जाति नहीं है क्योंकि सब टेलर आपस में ही शादी करें ऐसा कोई नियम नहीं है - टेलर का लड़का कचहरी के बाबू की लड़की से शादी कर सकता है या फिर शिक्षक की लड़की से। ऐसा कोई नियम नहीं है कि टेलर का लड़का टेलर की लड़की से ही शादी करे।

3. टेलर जाति नहीं है क्योंकि ऐसा कोई नियम नहीं है कि वह टेलर के साथ ही उठ बैठ सकता है, टेलर के हाथ का खाना ही खा सकता है।

इसलिए टेलरी केवल एक धंधा है जाति नहीं।

जाति जन्म से तय होती है। एक जाति के लोग केवल आपस में शादी कर सकते हैं, जाति के बाहर शादी नहीं कर सकते। यह भी तय होता है कि एक जाति के लोग किस के साथ उठ बैठ सकते हैं, किस के हाथ का खाना खा सकते हैं, आदि।

क्या तुम अब कारण सहित बता सकते हो कि नीचे की सूची में से कौन-कौन सी जातियां हैं? और कौन-कौन से धन्धे हैं?

1. शिक्षक

2. डाकिया

3. बसोड़

4. ब्राह्मण

5. लोहा कारखाने में काम करने वाला मज़दूर

6. यादव

7. हरवाहा

8. कुम्हार

जाति व्यवस्था में एक और बात देखने को मिलती है- वह है लोगों को जन्म से ऊंचा या नीचा मानना। जो लोग जात-पात मानते हैं वे एक ब्राह्मण को चाहे वह कितना भी अनपढ़ हो ऊंचा मानेंगे न कि किसी अछूत कहलाने वाले को चाहे वह कितना भी विद्वान हो।

तो आओ थोड़ा समझें कि क्या पुराने ज़माने में भी जाति पाति की ऐसी बातें मानी जाती थीं? तब वे किस रूप में मानी जातीं थीं और किस तरह फैलीं? क्या उन दिनों भी जाति पाति का किसी ने विरोध किया या नहीं?

पिछले पाठों में तुमने पुराने ज़माने के कितने ही लोगों से मुलाकात कर ली है। उत्तर भारत के किसान, वेल्लाल किसान, परैयर मज़दूर, ब्राह्मण, शबर वनवासी, सीयडोणि नगर के व्यापारी व कारीगर, छोटे बड़े राजा और सामन्त। तुमने इन लोगों के आपसी रिश्तों को भी देखा और समझा है। अब इन रिश्तों की एक और ख़ास बात पर हम ध्यान देंगे। वह है जाति पाति के संबंधों की बात।

लाचार शिकारी अछूत जाति बने

शबर वनवासी तो जंगलों में अलग रहते थे। उनका अपना मुखिया भी था। शबर लड़के की दी हुई भेंट राजा हर्ष ने स्वीकार भी कर ली थी। यानी उन दिनों शबरों को तो अछूत नहीं समझा जाता था।

लेकिन कई और कबीलों और झुण्डों के लोगों को समाज में अछूत का सबसे निचला स्थान दिया जा चुका था। आओ पढ़ें कि यह कब और कैसे हुआ?

निषाद, चाण्डाल, केवट – तुमने अक्सर ये नाम सुने होंगे। ये वे लोग थे जो बहुत पुराने समय से शिकार कर के जिया करते थे। तुमने कक्षा 6 के पाठों में पढ़ा कि कैसे गौतम बुद्ध और राजा अशोक के समय में गंगा-यमुना के मैदान में खेती फैलने लगी थी। जिन जंगलों में निषाद, चाण्डाल जैसे शिकारी शिकार करते थे, उन जंगलों को काटा गया और गांव बसाए गए। गांव बसाने वाले लोगों और जंगलों मे रहने वाले कबीलों के बीच लड़ाई भी होती
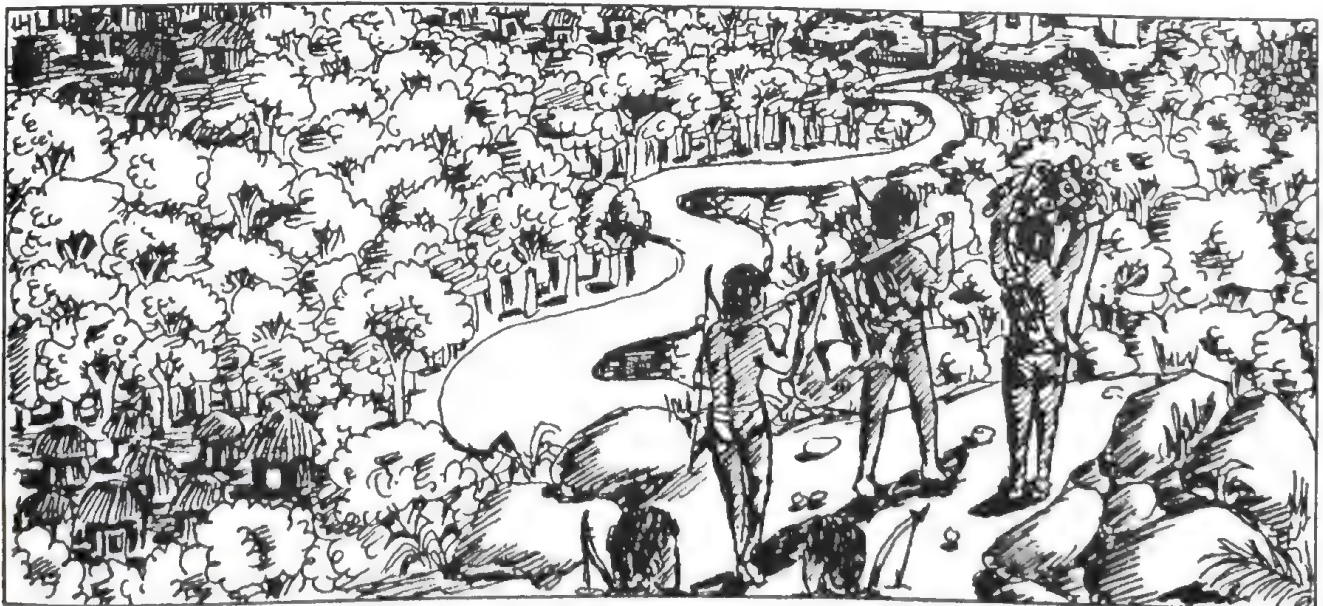
जंगल की चीज़े शहर ले जाकर बेचना

थी। मगर गांव बसाने वालों के लोहे के तीर और तलवार के सामने शिकारी लोग टिक नहीं पाए। उनके जंगलों की जगह गांव व शहर बसते गए।

अछूत माने जाने वाले लोग शहर के बाहर बस्तियों में रहते थे

ऐसे में शिकारी कबीले क्या करते? बहुत से कबीले तो दूसरे जंगलों में चले गए। मगर कई लोग नए गांवों-शहरों के आस-पास ही रह गए। उन्होंने ऐसा क्यों किया होगा?

गांव व शहर के लोगों को जंगल की कई चीज़ों की ज़रुरत पड़ती थी–जैसे, लकड़ी, बांस, खाल, मांस, कन्दमूल, फल, शहद आदि। कई शिकारी लोग जंगलों से इन चीज़ों को बटोरकर लाने लगे व गांव-शहरों में बेचने लगे। जंगल की चीज़ों के बदले में उन्हें अनाज, कपड़ा, लोहा आदि मिल जाता था।

समय के साथ कई सारे शिकारी लोग गांव-शहरों के आस-पास बसने लगे। उन्हें शहर या गांव के बीच में रहने तो नहीं दिया गया इसलिए उन्होंने बाहर ही अपनी बस्तियां बना लीं। अब धीरे-धीरे गांव शहर के लोग इन शिकारियों से कई और तरह के काम करवाने लगे। वे उन्हें ऐसे काम देने लगे जो वे खुद नहीं करना चाहते थे पर जो उनके लिए ज़रुरी भी थे। जैसे मांस के लिए जानवर मारना, मरे जानवर को हटाना, उसकी खाल निकालकर साफ करना, चमड़े की चीज़ें बनाना, मछली मारना, लकड़ी काटना, शमशान में काम करना। वे इन्हें गन्दे काम मानते थे – इसलिए अब लाचार चाण्डाल, निषाद आदि शिकारियों से इन्हें करवाने लगे। साथ ही उन्होंने यह नियम बना दिया कि शिकारी कबीले इन कामों को छोड़ कर और कोई काम धन्धा नहीं करेंगे।

गांव-शहर के लोग कहने लगे कि ये लोग 'गन्दे' काम करते हैं, इसलिए ये पवित्र नहीं हैं। इन्हें छूने या देखने से ही बाकी लोग अपवित्र हो जायेंगे। इसलिए इन्हें अछूत माना गया और कहा गया कि जो निषाद, चाण्डाल आदि कुल में जन्म लेगा वह जन्म से अछूत बन जाएगा और बड़ा होकर वही काम करेगा जो उनके लिए तय किए गए हैं।

गांव व शहर के लोग इन शिकारी लोगों को घृणा की दृष्टि से देखते थे। उन लोगों की बोल-चाल, वेश-भूषा, रीति-रिवाज़ भी गांव-शहर वालों से बहुत फर्क थे। इस कारण से गांव-शहर के लोग इन शिकारियों से हिल मिल कर रहना नहीं चाहते थे। अछूत बनाए गए कबीलों के लोग आपस में ही उठते बैठते रहे, आपस में ही शादी ब्याह करते रहे। वे अपने पुराने देवी देवताओं व रीति रिवाज़ों को मानते रहे।

राजा हर्ष के समय तक आते-आते (यानी सन् 600 तक) और जंगल कटे, और खेत बढ़े, सिंचाई के साधन बढ़े, खेतों में काम भी बढ़ा। खेतों में काम करने के लिए मज़दूरों की ज़रुरत पड़ी। तब इन अछूत मानी जाने वाली जातियों से खेतों में मज़दूरी करवाई जाने लगी। पर, उन्हें कभी खुद ज़मीन का मालिक बनने का अधिकार नहीं था।

तुम तलैच्छंगाडु गांव में वेल्लाल किसानों के परैयर मज़दूरों से मिले हो। ये परैयर मज़दूर भी अछूत जाति के माने जाते थे। क्या तलैच्छंगाडु में परैयर लोग खेती

के मालिक थे?

"अछूतों" की मेहनत पर समाज के अनेक ज़रुरी काम चलते थे। पर इन्हीं मेहनत करने वालों को अपवित्र, अछूत बता कर उनका अपमान होता रहा। इस प्रकार वही कबीले जो जंगलों में आजादी से शिकार करते थे, सारा जंगल जिनका था, वे उसी स्थान पर, कई अपमान सहते हुए, दूसरों की सेवा करने लगे।

शिकारी कबीलों के लोग अछूत बनाए जाने के बावजूद क्या सोच कर गांव व शहरों के पास बसे होंगे?

उन पर किस तरह के बन्धन लगाए गए थे?

समाज में सब के लिए जाति पाति के नियम

बहुत पहले से समाज में ब्राह्मण अपने को सबसे पवित्र व ऊंचा मानते आए थे। दूसरी तरफ सबसे नीचे का दर्ज़ा अछूत कही गई जातियों को दिया गया। अलग-अलग इलाकों में जो राजवंश बन रहे थे, उनके कुलों को क्षत्रिय मानकर ऊंचा दर्ज़ा मिला। वेल्लाल किसान जैसी कई और जातियों को शूद्रों का निचला दर्ज़ा दिया गया। कई तरह के व्यापारियों व कारीगरों की भी जातियां हो गई थीं– जैसे कुम्हार, बढ़ई, लोहार, माली, कहार, तांबूलिक, सोनार, गंधिक, वणिक (बनिया)। इनमें से कुछ लोगों से तुम सीयडोणि शहर में मिले हो।

समाज के सभी तरह के लोगों के लिए नियम कायदे बन रहे थे–कि कौन किससे ऊंचा होगा और कौन नीचा, किस के बीच रोटी-बेटी का रिश्ता होगा और किन के बीच नहीं, कौन किसकी सेवा करेगा और कौन सेवा करवाएगा।

समाज में लोगों के बीच जो रिश्ते बन रहे थे उन्हें देखते हुए आपसी व्यवहार के कई नियम कायदे 'धर्मशास्त्र' नामक ग्रंथों में लिखे जाने लगे। धर्मशास्त्र ग्रंथों को ज़्यादातर ब्राह्मणों ने तैयार किया। इनमें लिखा गया कि लोग जिस जाति में जन्म लेते हैं उसी जाति का धंधा उन्हें अपनाना चाहिए। अगर कोई व्यक्ति अपने बाप-दादाओं का धंधा नहीं करता तो वह अधर्म है और उसे पाप लगेगा। इसी तरह दूसरी जाति में शादी करना भी पाप है और ऐसा करने वाले को भी दण्ड दिया जाना चाहिए।

उन दिनों लोगों के बीच ऊंच-नीच का भाव लागू करने की भी बहुत कोशिश की गई। धर्मशास्त्रों में यह लिखा गया कि अगर एक ब्राह्मण और एक शूद्र एक ही तरह के अपराध करते हैं तब भी ब्राह्मण को कम दंड और शूद्र को अधिक दंड दिया जाना चाहिए। अगर ऊंची जाति के लोग पैसा उधार लेते हैं तो उनसे कम ब्याज लेना चाहिए। अच्छे जरी रेशम के कपड़े ऊंची जाति के लोग ही पहन सकते हैं। नीची जाति के लोगों को फटे पुराने व सादे कपड़े ही पहनने चाहिए। नीची जाति के लोगों को हर तरह से ऊंची जाति के लोगों की सेवा करनी चाहिए। मन्दिरों व यज्ञों में ऊँची जाति के लोग ही भाग ले सकते हैं, नीची जाति के नहीं।

धर्मशास्त्रों में लिखने के अलावा ब्राह्मणों ने राजाओं से कहा कि जो लोग जात-पात के नियम तोड़ते हैं उन्हें दंड दिया जाए। उनका कहना था कि अगर राज्य में जात-पात के नियम लागू न होंगे तो अनर्थ हो जाएगा। नीची जातियां बराबरी करने लगेंगी और ऊंची जातियों की सेवा नहीं करेंगी। ऐसे में राज्य कैसे चलेगा?

वेलिर पुजारी, मुखिया और कबीले के लोग

असम, कश्मीर, केरल आदि प्रदेश हैं, जात-पात की बातें फैली नहीं थीं।

मगर जैसे जैसे सब इलाकों में राजा, महाराजा और सामंत बने, जैसे जैसे उन इलाकों में ब्राह्मण बसते गए, वैसे ही जात-पात की बातें भी फैलती गईं। उदाहरण के लिए, तमिलनाडु इलाके में एक कबीला बहुत पुराने समय से रहता था। यह था वेलिरों का कबीला। इस कबीले के अपने मुखिया थे, और पुजारी थे। उनके देवता थे मुरुगन। वेलिर लोग मुरुगन और अपनी एक देवी माता के लिए नाचगान करते थे व पशु बलि चढ़ाते थे।

धीरे-धीरे वेलिर कबीला खेती करने लगा। उनके कई गांव बसे। वेलिर लोगों में ऊंचे नीचे का फर्क आना शुरु हुआ। वेलिरों के मुखिया राजा बनने लगे। उन्होंने ब्राह्मणों को अपने इलाके में बुलाकर बसाया। जब ब्राह्मण जाकर वेलिरों के बीच बसे तो वे वेलिरों के राजा को ऊंची क्षत्रिय जाति का बताने लगे। वेलिरों के पुजारी को ब्राह्मण जाति का दर्जा दिया गया। उन्हें वेद पाठ करना, यज्ञ करना सिखाया गया। वेलिरों के ये पुजारी आगे जा कर द्रविड जाति के ब्राह्मण कहलाए। ब्राह्मणों ने वेलिर कबीले के खेती करने वाले लोगों को नीची शूद्र जाति का बताया।

दूसरी जाति का धंधा नहीं करना, दूसरी जाति में शादी न करना—तुम्हारे विचार में इन नियमों को लागू करने का क्या महत्व था, कक्षा में चर्चा करो।

तुम देखते होगे कि नियम बनते हैं पर कई बार लोग नियमों का पालन नहीं भी करते हैं। इसी तरह उन दिनों जाति-पाति के नियम तो बन रहे थे पर उन्हें कभी-कभी ज़रुरत पड़ने पर अनदेखा भी किया जाता था। इस बात के उदाहरण मिलते हैं कि कोई शूद्र जाति का होकर भी राजा बन गया और क्षत्रिय जाति के राजा ने दूसरी जाति की लड़की से शादी कर ली। फिर भी आज की तुलना में उन दिनों इन नियमों का ज़्यादा सख्ती से पालन होता था।

तुम्हारे परिवार व गांव में इन नियमों का कितना पालन होता है?

ऐसी बातों के चार उदाहरण सोचो जिनमें आजकल जाति के नियम कमज़ोर हो गए हैं।

जातपात की बातें पूरे भारत में फैलीं

शुरु शुरु में जात-पात के नियम सिर्फ गंगा-यमुना के मैदान और मालवा जैसे पुराने जनपदों के इलाके में ही माने जाते थे। भारत के अन्य भागों में, जैसे आज जहां बंगाल, कर्णाटका, तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश, मध्यप्रदेश,

मुखिया क्षत्रिय जाति का राजा बना और पुजारी ब्राह्मण बना

ये ही किसान वेल्लाल भी कहलाए। इन्हीं से हम तलैच्छंगाडु में मिले थे।

वेलिर कबीले के लोग तीन जातियों में बंट गए थे। ये थीं— ———, द्रविड ——— और शूद्र।

जिन ब्राह्मणों को वेलिर राजाओं ने बुलाकर बसाया था वे अपने आपको द्रविड ब्राह्मणों से ऊंचा मानते होंगे/ बराबर मानते होंगे/ नीचा मानते होंगे?

वेलिरों के राजा क्षत्रिय जाति के हो गए। इसी तरह सीयडोणि का सामन्त भी शायद क्षत्रिय ही माना जाता होगा। क्षत्रिय होते पर भी इन दोनों में क्या अन्तर हो सकता है? विचार करो।

शबर वनवासी भी खेती करते थे और तलैच्छंगाडु के वेल्लाल किसान भी। वेल्लाल किसान शूद्र जाति के माने गए। उनमें और शबर वनवासियों में क्या अन्तर हो सकता है?

जात-पात का विरोध

जात-पात के भेदभाव का शुरु से ही बहुत विरोध हुआ। सबसे पहले तो गौतम बुद्ध, महावीर और उनके विचारों को मानने वाले लोगों ने ही इस बात का खण्डन किया कि ब्राह्मण जन्म से ही सबसे ऊंचे और पवित्र हैं। उनका विचार था कि जन्म के आधार पर लोगों के बीच भेदभाव करना ग़लत है। बाद में कई और सन्त हुए जिन्होंने जाति के भेदभाव को ठुकरा कर जीने की कोशिश की। उनके बारे में हम आगे पढ़ेंगे।

आज अपने देश में जो कानून लागू हैं उनके अनुसार तो जातपात का भेदभाव करने से दण्ड मिल सकता है। छुआछूत मानना, कुएं, स्कूल, अस्पताल, होटल, मन्दिर आदि सार्वजनिक जगहों में हरिजनों को न आने देना कानूनी जुर्म है। पर, जातपात को खतम करने के कानूनों के बावजूद ये भेदभाव पूरी तरह मिट नहीं पाए हैं।

तुम्हारे विचार में जातपात खत्म करने के लिए किस तरह की कोशिश की जानी चाहिए?

अभ्यास के प्रश्न

1. सबसे पहले किन लोगों को अछूत जाति माना गया? अछूत जाति कहलाने से पहले वे क्या करते थे?
2. वनवासी लोगों को जनपद के लोगों ने किस तरह के काम करने को दिए और क्यों?
3. द्रविड ब्राह्मण एक जाति है - यह कैसे बनी थी?
4. जात-पात के नियमों में ऊंच-नीच का भेदभाव किस तरह था? कुछ उदाहरण बताओ। इस भेदभाव का विरोध कैसे हुआ?

11. हिन्दू धर्म के देवी देवता और रीति रिवाज़

तुमने कक्षा 6 में लोगों के पूजा-पाठ और धर्म के बारे में कई बातें पढ़ी। शिकारी मानव, सिंधु घाटी के लोग, आर्य, आदि लोगों के धर्मों के बारे में तुमने पढ़ा था। गुरुजी की मदद से उन बातों को याद करो और चर्चा करो कि इनमें से कौन-कौन सी बातें आज भी हमारे धर्म में हैं।

आज के देवी देवता व पूजा के तरीके

अपने देश के बहुत सारे लोग हिन्दू धर्म को मानते हैं। हिन्दू धर्म मानने वाले लोग बहुत सारे देवी देवताओं की पूजा करते हैं, उन्हें तरह-तरह के तरीकों से पूजते हैं। दिया और अगरबत्ती जलाके, फूल और भोग चढ़ाके, मूर्तियों की पूजा होती है। कभी-कभी कुण्ड में अग्नि जलाके होम होता है। इसे यज्ञ भी कहते हैं। कभी-कभी बकरे या मुर्गे की बली भी चढ़ती है।

अपनी कक्षा में चर्चा करके इस तालिका को भरो–

देवी देवता

1. कौन सी देवियां पूजी जाती हैं?	*2. कौन से देवता पूजे जाते हैं?*	*3. कौन से जीव जन्तु पूजे जाते हैं?*	*4. कौन से पेड़ पौधे पूजे जाते हैं?*

पूजा करने के तरीके

1. जीवन में कब-कब यज्ञ करवाया जाता है और ब्राम्हणों को दक्षिणा दी जाती है?	*2. यज्ञ आदि किन देवताओं के नाम किया जाता है?*	*3. देवी माता के लिए पशु बलि कब दी जाती है?*	*4. किन देवी-देवताओं के लिए बलि चढ़ती है?*	*5. धूप, दीप भोग से किसकी पूजा होती है?*

भारत में हर जगह हिन्दू धर्म मानने वाले लोग शिव, विष्णु, राम, कृष्ण जैसे देवताओं को मानते हैं। दुर्गा, पार्वती, काली आदि देवी माताओं को मानते हैं, और कई पेड़-पौधों, जीव जंतुओं को भी पुजते हैं। अलग-अलग समय पर यज्ञ, ब्राम्हणों को दान-दक्षिणा, पशु-बलि और धूप, दीप, भोग से पूजा करना यह सब किया जाता है। तुम्हें क्या लगता है, कि अपने देश के सब लोगों का धर्म शुरू से ऐसा था? क्या तुम्हें ऐसा लगता है कि हमारे पूर्वज हमेशा से आज के लोगों की तरह कई विधियों से कई देवी, देवताओं की पूजा करते थे?

बुद्ध और अशोक के समय में

अगर हम आज से 2500 वर्ष पूर्व लोगों के धर्म के बारे में पूछताछ करने निकलते तो क्या पाते? उन दिनों भारत में बहुत अलग-अलग तरह के लोग रहते थे। इन लोगों का रहन-सहन, पहनावा, रीति-रिवाज, बोल-चाल सब एक दूसरे से भिन्न था।

पहले तुम पृष्ठ 101 के नक्शे में देखो, उन दिनों भारत में कौन-कौन लोग रहते थे। साथ ही यह भी देखो वे क्या काम करते थे - शिकार या खेती। नीचे की तालिका भरो।

लोग	उनका काम

ये सब लोग हमारे पूर्वज थे। इन लोगों के देवी-देवता पूजने के तरीके भी अलग-अलग थे।

1. शिकारियों का धर्म : जंगलों में जो शिकारी थे उनका धर्म कैसा था? हर शिकारी कबीले के अपने देवी देवता थे। कोई कबीला सांप को देवता मानता था, तो कोई पीपल के पेड़ को। कोई कबीला जंगली सुअर की पूजा करता था तो कोई और मछली, हाथी या फिर वानर को पूज्य मानता था। ये लोग नाच-गाकर पूजा करते थे। ये
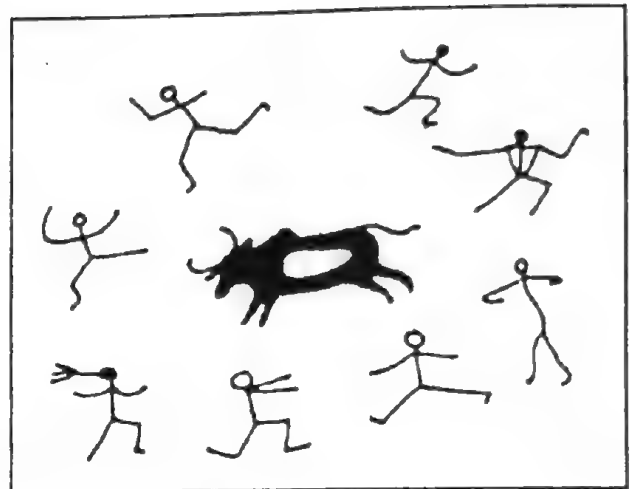
शिकारियों का नाच

लोग न तो यज्ञ करते थे, न पूजा पाठ न व्रत रखते थे।

2. खेती करने वालों का धर्म: उन दिनों खेती करने वाले कबीले भी थे। इन लोगों का धर्म कैसा था? इन कबीलों के भी अलग-अलग देवी-देवता थे। मगर आम तौर पर ये खेती करने वाले धरती को मां मानते थे - धरती अनाज आदि देकर लोगों के पेट जो पालती है। अक्सर देवी के क्रोध को शांत करने के लिये वे बकरा, भैंस, मुर्गा जैसे जानवरों की बलि चढ़ाते थे। फिर उसके मांस को प्रसाद के रूप में खाते थे। यही उनका पूजा करने का तरीका था। ये लोग अग्नि या राम या शिव की पूजा नहीं करते थे। न ही ये लोग यज्ञ आदि संस्कार करते थे।

3. वैदिक धर्म : उस समय कुछ और लोग रहते थे जो इन्द्र, वरुण, अग्नि, मित्र आदि देवताओं के लिये यज्ञ, हवन या होम करते थे। इन लोगों के बीच वेद मंत्र पढ़ना एक ज़रूरी संस्कार भी था। मगर ये लोग पीपल या सांप या देवी मां को नहीं पूजते थे। ये लोग नाच गाकर या देवी को बलि चढ़ाकर पूजा नहीं करते थे।

4. शैव व वैष्णव धर्म : तुम सोच रहे होगे, क्या उन दिनों शिव, विष्णु, राम या कृष्ण की पूजा नहीं होती थी? क्या लोग मंदिरों में जाकर देवी देवताओं की पूजा नहीं करते थे?

हां, बुद्ध व अशोक के दिनों मंदिर बने ही नहीं थे। कुछ थोड़े से लोग शिव की पूजा करते थे, कुछ और विष्णु या राम की पूजा करते थे। यमुना नदी के पश्चिम में यदु व सूरसेन नाम के लोग रहते थे जो कृष्ण की पूजा करते थे। देवता की मूर्तियां बनाना, उन्हें नहलाना, धूप-दीप, भोग चढ़ाना, नाम जपना, यह सब उनका पूजा करने का तरीका था। ये लोग यज्ञ, या देवी मां की पूजा नहीं करते थे। शुरू में वैदिक धर्म मानने वाले लोग भी शिव, विष्णु की मूर्ति-पूजा के तरीके को तुच्छ मानते थे।

सही जोड़ियां बनाओ–

धरती को देवी मां मानकर पूजना, यज्ञ करना, मूर्ति को धूप-दीप चढ़ाना, ब्राह्मण को दान देना, देवी माता के लिये पशुबलि चढ़ाना, मिलकर नाचना, भैंसे की पूजा, देवता के लिये मन्दिर बनाना।

इस तरह अलग-अलग प्रांत या कबीले के लोगों के देवी-देवता अलग थे। उनकी पूजा की विधियां अलग-अलग थीं। यह स्थिति आज से 2500 साल पहले थी।

अशोक के समय के बाद धर्मों का मेलजोल

अशोक के समय के बाद भारत के लोगों के जीवन में बहुत सारे बदलाव आये। अलग-अलग प्रांतों में कई शिकारी कबीले खेती करने लगे। वे अन्य खेती करने वाले कबीलों से घुल मिल गये। अब लोगों ने एक दूसरे के धर्म की बातें भी अपनाईं, जैसे शिकारियों के सांप, नाग, भैंस, पीपल, आदि को अन्य खेती करने वाले भी पूजने लगे – उनके लिये नाच गान करने लगे। तो क्या उन्होंने देवी मां के लिये बलि चढ़ाना छोड़ दिया? नहीं, वे नाग और पीपल के साथ देवी मां को भी पूजते रहे। शिकारी लोग भी अब खेती करने वालों की देवी मां की पूजा करने लगे।

गुप्त राजाओं के समय में बने देवगढ़ के नारायण मंदिर की मूर्ति

इन लोगों के बीच ब्राह्मण भी आकर बसे। उन्होंने अपने धर्म की बातें, जैसे इंद्र, वरुण, अग्नि आदि देवताओं के लिये यज्ञ करना, वेद पढ़ना, ब्राह्मणों को दान दक्षिणा देना आदि फैलाईं। उन दिनों ब्राह्मणों की बहुत प्रतिष्ठा थी। कई महत्वपूर्ण परिवारों ने ब्राह्मणों के धर्म की बातों को अपनाया। अब लोग पहले की तरह पीपल, नाग या देवी मां को पूजते थे, साथ ही वे यज्ञ करना, दान-देना ये बातें भी मानने लगे। ब्राह्मण भी अब पीपल, नाग, देवी मां की पूजा करने लगे।

धर्म में नई बातें कैसे अपनाई जाती हैं इसके उदाहरण तो तुमने भी देखे होंगे। जैसे संतोषी माता की पूजा कुछ साल पहले तक नहीं होती थी। फिर इस देवी की पूजा फैली और लोगों के धर्म में घुलमिल गई।

क्या तुमने हाल में किसी नये देवी, देवता, बाबा आदि की पूजा अपनाई जाती देखी है? चर्चा करो कि नए देवी, देवताओं की पूजा कैसे तुम्हारे यहां फैली और लोगों द्वारा अपनाई गई।

अशोक के समय के बाद शिव, विष्णु, और कृष्ण जैसे देवताओं की पूजा भी कई लोगों ने अपनाई। पूजा करने का एक नया तरीका भी बन रहा था। जगह-जगह शिव और विष्णु की मूर्तियां बनाकर मंदिर में रखी जाने लगीं। समुद्रगुप्त जैसे गुप्त राजाओं के समय से बहुत सारे मंदिर बनने लगे। उनमें रखी मूर्तियों को नहलाना, सजाना, धूप, दीप, भोग चढ़ाना, फूलों से अर्चना करना, यह बातें सब लोगों में फैलने लगीं। इन देवताओं को पूजने वालों ने भी ब्राह्मणों के प्रभाव में

आकर शिव और विष्णु के लिये यज्ञ करना और वेद मंत्र पढ़ना शुरू कर दिया।

क्या शिव और विष्णु को अपनाने के बाद लोगों ने अपने पुराने धर्म- नाग, पीपल, देवी या भैंसे की पूजा छोड़ दी? नहीं। लोग अपने पुराने देवी, देवता पूजते रहे और साथ-साथ उन्होंने एक दूसरे के देवी, देवता व उनको पूजने के तरीके अपनाये।

पहले जो लोग केवल नाग, भैंसा या पीपल को पूजते थे– वे अब देवी मां, शिव, विष्णु, कृष्ण को भी पूजने लगे, ब्राह्मणों को दान भी देने लगे और यज्ञ भी करवाने लगे।

जो लोग पहले केवल देवी मां को पूजते थे अब वे लोग नाग, पीपल, भैंसा, शिव, विष्णु, इन्द्र को भी मानने लगे। जो लोग पहले केवल इन्द्र, वरुण आदि देवताओं के लिये यज्ञ करते थे, वे अब नाग, भैंसा, पीपल, देवी मां, शिव, कृष्ण आदि देवताओं को भी पूजने लगे। इस तरह अलग-अलग लोगों का धर्म घुलमिल गया। इसी घुलने मिलने से हिन्दू धर्म बना है। आज भी हिन्दू लोग इसी मिले-जुले धर्म को मानते हैं।

मिले जुले धर्म के उदाहरण

जब हिन्दू लोग शंकरजी की पूजा करते हैं, तब साथ ही सांप, बैल, दुर्गा माता को भी पूजते हैं। जब सत्यनारायण की कथा होती है, तब नारायण (विष्णु) की पूजा के साथ वेद मंत्र पढ़े जाते हैं और यज्ञ (हवन) भी किया जाता है। नव दुर्गा के समय देवी मां की पूजा के साथ हवन भी किया जाता है और पशु बलि भी दी जाती है।

इन तीन उदाहरणों में से छांटो –

1. शिकारियों के धर्म से ली गई है ....

2. कौन सी बात वैदिक धर्म से ली गई है ....
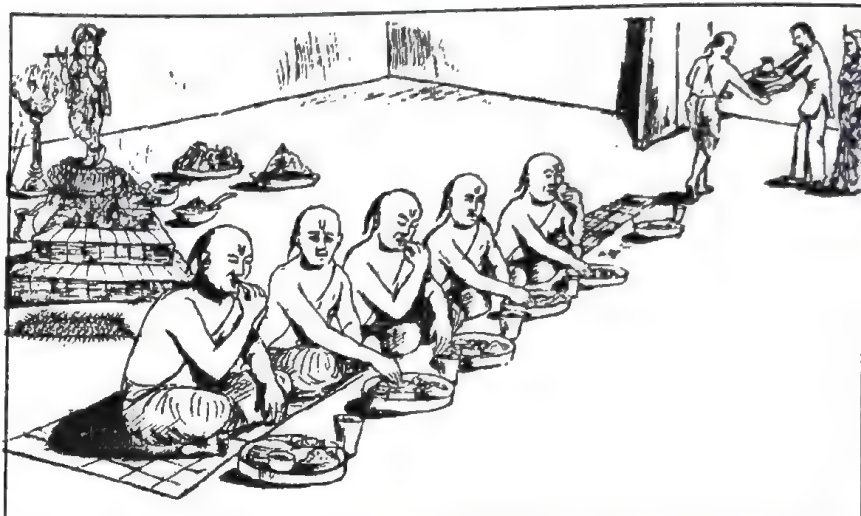
सत्यनारायण की पूजा में यज्ञ और ब्राह्मण भोजन

3. कौन सी बात खेती करने वाले कबीलों के धर्म से ली गई है ....

4. कौन सी बात वैष्णव-शैव धर्मों से ली गई है ....

अमीर और गरीब लोगों के धर्म में फर्क

मगर सारे लोगों का धर्म एक जैसा नहीं रहा। गांव और नगर के धनी संपन्न और ताकतवर लोगों ने यज्ञ, हवन, शिव और विष्णु की पूजा आदि बातों को ज़्यादा अपनाया। इन लोगों ने ब्राह्मणों और मंदिरों को बढ़ावा दिया।

इनके विपरीत साधारण और ग़रीब लोग नाग, पीपल और देवी मां की पूजा अधिक करते रहे। ग़रीब लोगों के पास ब्राह्मणों को अच्छी दान-दक्षिणा देने व यज्ञ करवाने का साधन भी कम था। फिर उनके बीच ब्राह्मणों का धर्म कैसे फैलता? संपन्न और ऊँची जाति के लोग 'अछूत' माने जाने वाले लोगों को शिव और विष्णु के मंदिरों में प्रवेश नहीं करने देते थे। इस कारण भी ग़रीब लोगों में शिव व विष्णु को पूजने की प्रथा कम ही फैली।

इसीलिये जब कि अमीर लोगों के धर्म में यज्ञ-हवन, मंदिर, विष्णु व शिव बहुत माने जाने लगे, ग़रीब लोगों के धर्म में देवी पूजा, बलि चढ़ाना, नाग, पीपल, भैंसे की पूजा ज़्यादा मज़बूती से बनी रही।

भक्त और संत

राजा हर्ष के समय और उसके बाद कई भक्त और संत हुये। इन लोगों ने ब्राह्मणों के धर्म और आम लोगों के धर्म से अलग कुछ विचार, लोगों में फैलाये। ये संत कहते थे कि ईश्वर उसी को प्राप्त होता है जो सच्चे दिल से भगवान से प्रेम करे, भगवान की भक्ति में डूब जाये। मंत्रों से, संस्कारों से, ब्राह्मणों को दक्षिणा देने से या फिर पशुओं की बलि देने से ईश्वर नहीं मिलता। इस तरह के संतों के प्रभाव में भी कई लोग आये। खासकर ग़रीब लोगों के बीच इन संतों के विचार लगातार बने रहे।

ग़रीब लोग नाग, पीपल, और देवी मां की पूजा अधिक करते रहे।

अभ्यास के प्रश्न

1. सही या गलत बताओ–

अ. पूरे भारत में एक ही कबीले के लोग रहते थे।

ब. राजा अशोक के समय शिव व विष्णु की पूजा पूरे भारत में नहीं फैली थी।

स. शुरू में पीपल, नाग, भैंसे आदि का पूजन शिकारी कबीलों के धर्म में होता था।

द. वैदिक धर्म में देवी माता की पूजा होती थी।

प. शुरू में खेतीहर कबीले देवी माता के लिये यज्ञ करते थे।

2. खेतीहर कबीलों के लोगों ने अशोक के समय के बाद अपने धर्म में कौन सी नई बातें अपनाईं?

3. वैदिक धर्म मानने वाले लोगों ने अपने धर्म में क्या नई बातें अपनाईं?

4. शिव और विष्णु की पूजा करने वालों ने अपने धर्म में क्या नई बातें अपनाईं?

5. शिकारी कबीलों ने अपने धर्म में क्या नई बातें अपनाईं?

6. अमीर और गरीब लोगों के धर्म में क्या फर्क रहा व क्यों?

7. भक्त और संतो ने ईश्वर की पूजा का क्या रास्ता बताया?

12. इस्लाम धर्म
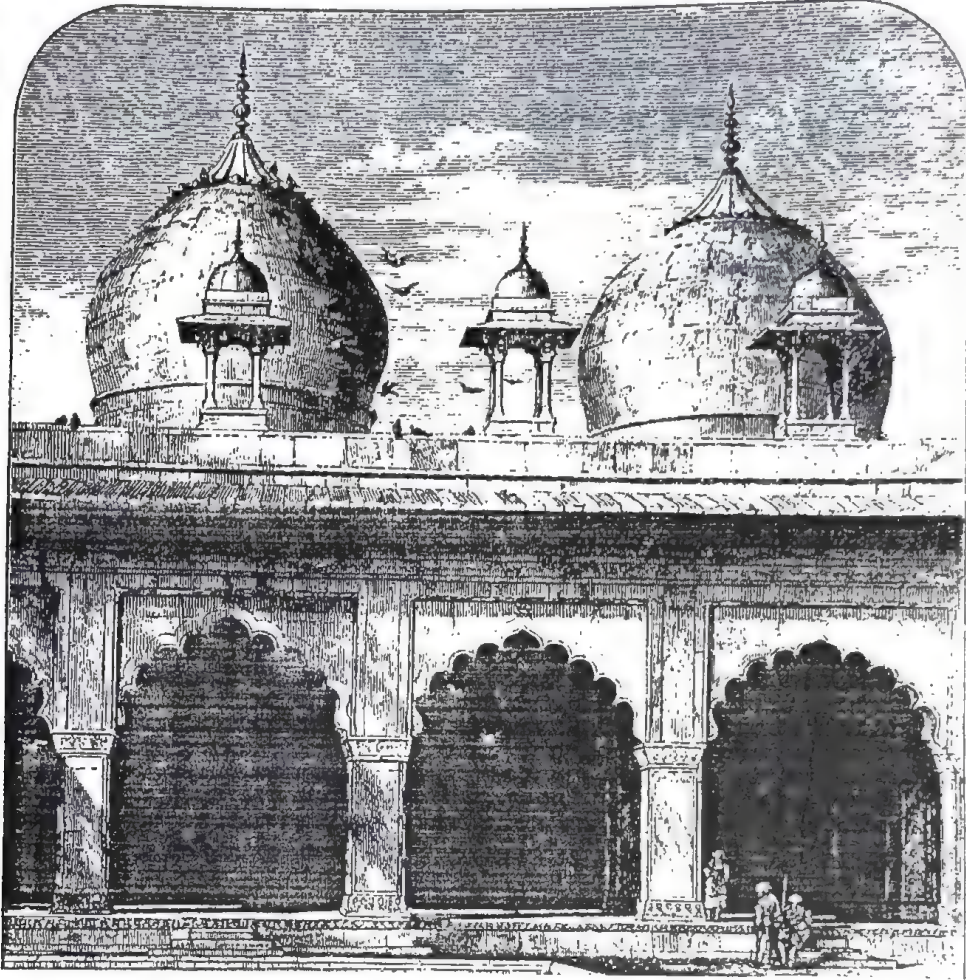
पिछले पाठ में हमने यह देखा कि हिन्दू धर्म कैसे बना। अब हम अपने देश के एक और महत्वपूर्ण धर्म, इस्लाम धर्म के बारे में कुछ पढ़ें। यह चित्र है एक मस्जिद के आंगन और दीवार का जिसकी ओर मुंह करके मुसलमान नमाज़ पढ़ते हैं।

इस्लाम धर्म को मानने वाले दिन में पांच बार ईश्वर, यानी अल्लाह से प्रार्थना करते हैं। इसे नमाज़ पढ़ना कहा जाता है। अगर तुम्हारे आसपास कोई मस्जिद है तो तुम्हें दिन में पांच बार उसकी मीनार से यह आवाज़ गूंजती हुई सुनाई देगी– "अल्लाह ओ अकबर........" यानी अल्लाह महान है। इस आज़ान (यानी पुकार) को सुनते ही मुसलमानों को पता चलता है कि यह प्रार्थना करने का समय है। वे जहां भी हों, ज़मीन साफ करके उस पर एक साफ कपड़ा बिछाते हैं और मक्का शहर की दिशा में मुंह करके नमाज़ पढ़ते हैं। हर शुक्रवार को किसी गांव या शहर के सब मुसलमान मस्जिद में इकट्ठा होकर नमाज़ पढ़ सकते हैं।

तुमने ध्यान दिया होगा कि मस्जिद में किसी देवी-देवता की मूर्ति नहीं होती। एक बड़ा आंगन होता है

जिसमें सब मुसलमान इकट्ठा हो कर नमाज़ पढ़ सकें। पश्चिम की तरफ जिस ओर मुंह करके नमाज़ पढ़ी जाती है एक दीवार होती है। इस्लाम धर्म में मूर्ति पूजा बिलकुल मना है। ऊंच-नीच, छुआछूत का भेद-भाव करना भी बहुत गलत माना गया है। यह इस बात से भी स्पष्ट होता है कि मस्जिद में सभी मुसलमान एक साथ कतार में खड़े होकर नमाज़ पढ़ते हैं।

इस्लाम धर्म में लोग यह मानते हैं कि एक ही ईश्वर है अल्लाह। हम सब उसके बंदे हैं। और हज़रत मोहम्मद अल्लाह का पैगाम यानी संदेश लाने वाले पैगम्बर हैं। हज़रत मोहम्मद ने जब अल्लाह का पैगाम (संदेश) लोगों को बताना शुरू किया, तब इस्लाम धर्म की शुरुआत हुई। ऐसा कब हुआ था और कहां हुआ था?

हज़रत मोहम्मद

यह अरब देश की बात है। वहां के मक्का नामक शहर में सन् 571 में हज़रत मोहम्मद का जन्म हुआ था। उस समय अरब में अनेक छोटे-छोटे कबीले थे जो लगातार एक दूसरे से लड़ते रहते थे। ये लोग बहुत सारे देवी-देवताओं को मानते थे। मोहम्मद इन लोगों के बीच यह संदेश देने लगे कि ईश्वर एक है। बहुत सारे देवी-देवताओं और उनकी मूर्तियों की पूजा करना गलत है। एकमात्र ईश्वर, अल्लाह, की सीधे और सरल तरीके से प्रार्थना करनी चाहिए। मोहम्मद ने कहा अल्लाह को मानने वाले सब लोग बराबर हैं और एक हैं। इसलिए उन्हें आपस में लड़ना झगड़ना नहीं चाहिए।

मुसलमान मानते हैं कि मोहम्मद के माध्यम से अल्लाह ने जो संदेश लोगों के लिए भेजे वे कुरान नाम की किताब में लिखे हुए हैं। कुरान मुसलमानों का धार्मिक ग्रंथ है।

शुरू में मक्का शहर के कई लोगों ने मोहम्मद की बातों का विरोध किया था। यहां तक कि मोहम्मद को मक्का छोड़कर दूसरे शहर मदीना जाना पड़ा था। पर धीरे-धीरे अरब के सारे कबीले मोहम्मद की बातें मानने लगे।

अरब देश में शुरू होकर इस्लाम धर्म दुनिया के कई देशों में फैला। बहुत से लोग मुसलमान बने। सन् 1000 तक यह धर्म कहां-कहां फैला था नक्शा नं. 1 में देखो।

दुनिया भर के मुसलमान चाहे वो किसी भी देश के हों, अल्लाह को ही अपना ईश्वर मानते हैं और हज़रत मोहम्मद को उनका पैगम्बर मानते हैं।

सन् 1000 में इंस्लाम धर्म इन जगहों में फैला था
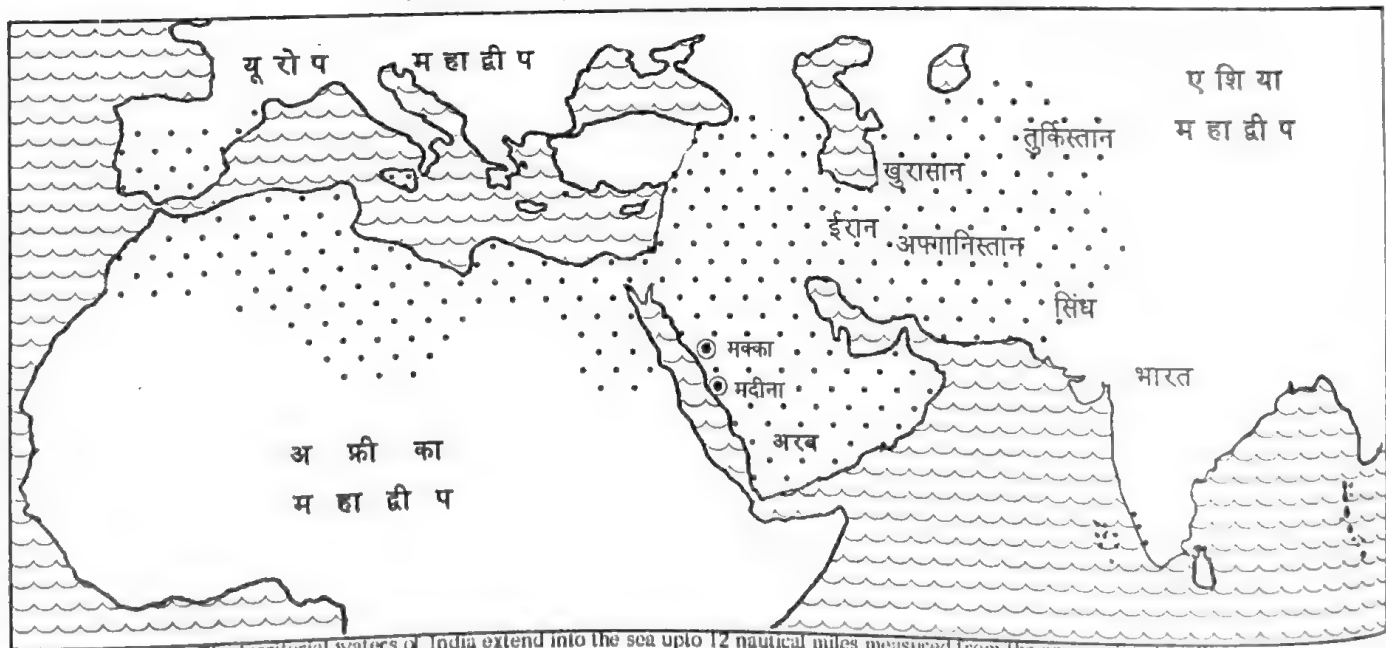
इस्लाम धर्म की प्रमुख बातें

एक ईश्वर: मुसलमानों का सबसे महत्वपूर्ण विश्वास है कि ईश्वर एक ही है और हज़रत मोहम्मद उसके संदेशवाहक हैं।

नमाज़: हर मुसलमान को दिन में पांच बार नमाज़ पढ़ना होता है।

हज: हज़रत मोहम्मद के जीवन से जुड़ी जगहें, मक्का और मदीना दुनिया भर के मुसलमानों के लिए तीर्थ स्थल हैं। हर साल लाखों मुसलमान अरब देश में मक्का-मदीना का हज (यानी तीर्थ) करने जाते हैं।

रोज़ा: इस्लाम धर्म की रीतियों में एक और महत्वपूर्ण रीति है, एक महीने का रोज़ा (यानी उपवास) रखना। जिस माह में रोज़े रखे जाते हैं उसे रमज़ान का महीना कहते हैं। रमज़ान के महीने में मुसलमान सुबह सूरज उगने से पहले खाना खा लेते हैं और फिर सूर्यास्त होने पर मस्जिद से गोला फूटता है ताकि लोग जान जाएं कि रोज़ा तोड़ने का समय हो गया। इस महीने के आखिर में ईद का त्यौहार मनाया जाता है।

दान: कुरान के अनुसार मुसलमानों के लिए एक और नियम बहुत ज़रूरी है। नियम है कि हर मुसलमान को अपनी धन-संपत्ति का एक बटा चालीसवां हिस्सा ग़रीब लोगों में बांट देना चाहिए। कुरान में इस बात पर ज़ोर दिया गया है कि अमीर लोग पैसे की होड़ में न लगे रहें।

ये इस्लाम धर्म की पांच प्रमुख बातें हैं। उन्हें एक-एक करके बताओ।

इस्लाम धर्म भारत आया

इस्लाम धर्म की शुरुआत अरब देश में हुई थी। आओ देखें कि यह धर्म भारत कैसे आया।

कई अरब व्यापारी जो इस्लाम धर्म को मानते थे, भारत के पश्चिमी तट पर व्यापार करने आते थे। वहां के बंदरगाहों में वे छोटी-छोटी बस्तियां बनाकर बसे। राजाओं ने उन्हें बसने में मदद की। उन्हें अपने घर, गोदाम और मस्जिद बनाने के लिए ज़मीन दी। इन व्यापारियों के प्रभाव से आस-पास के कई लोग मुसलमान बने।

ईद मिलन

भारत के पश्चिम में इस्लाम धर्म एक और घटना के कारण आया। मोहम्मद बिन कासिम ने जब सिंध पर अपना राज्य बनाया तो उसके साथ कई अरब लोग सिन्ध और मुल्तान में बसे। उनके कारण वहां के लोगों को इस नए धर्म के बारे में पता चला।

भारत के उत्तरी हिस्सों में इस्लाम धर्म की जानकारी ईरानी शरणार्थियों के जरिए आई। सन् 900 के लगभग, ईरान देश पर तुर्क कबीले हमले कर रहे थे। इन हमलों से बचने के लिए कई ईरानी लोग भारत आए। उनमें कई लोग कारीगर थे, कई लोग सन्त थे। कुछ सिपाही भी शरण लेने वालों में थे। राय राणाओं ने इन शरणार्थियों को अपने राज्य में बसाया। राय राणाओं की सेनाओं में कई ईरानी सिपाही शामिल कर लिए गए। ये ईरानी लोग मुसलमान थे। इनके संपर्क में आकर बहुत से लोगों को इस्लाम धर्म के बारे में मालूम पड़ा।

सन् 1190 के बाद भारत में तुर्क लोगों ने राज्य बना लिया। इस समय तक आते-आते तुर्क लोग भी इस्लाम धर्म मानने लगे थे। तुर्कों के साथ बड़ी संख्या में ईरानी, अफगानिस्तानी, खुरासानी लोग भी भारत आ कर बसे।

सन् 1210 के करीब जब मंगोल नाम के कबीलों ने खुरासान, ईरान, ईराक, अफगानिस्तान के राज्यों को हरा कर उनके शहर नष्ट कर डाले तब मंगोलों से बचने के लिए वहां के बहुत से लोग भारत आए।

इस्लाम धर्म मानने वाले कौन-कौन लोग भारत आए और क्यों आए- सूची बनाओ।

ये लोग अपने साथ अपने यहां के रीति-रिवाज़ व धर्म (जो कि इस्लाम धर्म था) तो साथ लाए ही पर अपने हुनर, पहनावा, पकवान भी लेकर आये थे। उनके साथ उठने-बैठने मिलने-जुलने से भारत के लोगों ने उनकी कई बातें सीखीं और अपनाईं। तुम पायजामा कुर्ता या फिर सलवार कमीज़ पहनते होगे। तुर्क-ईरानी लोगों के आने से पहले भारत में लोग आमतौर पर इस तरह के सिले हुए कपड़े नहीं पहनते थे। तब तो धोती या साड़ी ही पहनते थे। पायजामा-कुर्ता, सलवार-कमीज़- इनका चलन तुर्क-ईरानी लोगों से सीख कर ही हुआ।

तुम हलवा या गरम-गरम समोसे व कचोड़ी तो चटकारे लेकर खाते होगे। इन पकवानों का चलन भी तुर्क-ईरानी लोगों के आने के बाद ही हुआ। ईरानी व तुर्क लोगों ने ऐसे पकवान बनाने के तरीके और कपड़े सिलने के तरीके यहां के लोगों को सिखाये।

कागज़ बनाना

चरखे से सूत कातना

ईरानी व ईराकी कारीगरों ने इमारत बनाने के कुछ नए तरीके यहां के कारीगरों को सिखाये- ये क्या तरीके थे तुम आगे के पाठ में पढ़ोगे।

भारत में पुराने समय में किताबें किस पर लिखी जाती थीं क्या तुम्हें मालूम है? पत्तों पर, पेड़ की छालों पर, रेशम के कपड़ों पर या फिर तांबे के पट्टों पर। उस समय यहां के लोग कागज़ बनाना नहीं जानते थे। कागज़ बनाने का तरीका ईरान के लोगों ने चीनियों से सीखा हुआ था। जब ईरानी लोग यहां आ बसे तो वे साथ में कागज़ बनाने का तरीका भी लाये। यहां भी कागज़ बनने लगा और कागज़ पर लिखा जाने लगा।

एक और चीज़ जो भारत के कारीगरों ने इन लोगों से सीखी - चरखे से सूत कातना। इससे पहले तकली से सूत काता जाता था जिसमें बहुत समय लगता था।

इस तरह इन लोगों के आने से देश-विदेश की कई बातें भारत में आईं। भारत के लोगों ने ये सीखीं और उनके जीवन, रहन-सहन में कई बदलाव आये।

इस्लाम धर्म मानने वाले लोगों से भारत के लोगों ने जो चीज़ें सीखीं उनकी सूची बनाओ।

दूसरे देशों के मुसलमान भी भारत से कई बातें सीखने आते थे। अलबिरूनि भारत इसीलिए आया था। वह क्या-क्या सीखने आया था, याद करके बताओ।

लोगों के धर्म में और विचारों में भी बदलाव आए। भारत के बहुत से लोगों ने इस्लाम धर्म अपनाया और यहां भी मस्जिद में नमाज़ पढ़ने, रोज़ा रखने जैसी बातों का चलन शुरू हुआ। भारत में जैसे बहुत सुन्दर मंदिर बन रहे थे, वैसे ही बहुत सुन्दर मस्जिदें भी बनीं।

तुम इस बात पर ध्यान दे चुके हो कि जब यहां के लोगों ने कोई नया धर्म अपनाया तो अपने पुराने धर्म की बहुत सी बातों को बनाए भी रखा। इसी तरह जब भारत के लोगों ने इस्लाम धर्म अपनाया तब अपने कई पुराने रीति-रिवाजों और रस्मों को बनाए रखा।

सूफी और भक्त सन्त

सन् 1100 से 1500 के बीच भारत में कई ऐसे सन्त हुए जिनका नाम तुम आज भी सुनते होगे। कबीर, नानक, दादू, रैदास, तुकाराम, रामानंद, बल्लभाचार्य इनके दोहे तुम अपनी हिन्दी की पुस्तक में भी पढ़ते होगे।

लोगों की साधारण भाषा में लिखे और गाए गए गीत व दोहे ईश्वर के प्रति भक्ति भाव से भरे हैं। इनमें बहुत से ऐसे विचार हैं जिनको तब से लेकर अब तक लोग मानते आए हैं।

इन्हीं भक्त संतों की तरह कई मुसलमान संत भी थे जो सूफी संत कहलाते थे। अजमेर के ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती, पंजाब के बाबा फरीद, दिल्ली के हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया बहुत जाने माने संत हुए थे। अजमेर में ख्वाजा साहब की मृत्यु तिथि पर मनाया जाने वाला उर्स (यानी त्यौहार) अपने देश के बड़े त्यौहारों में से एक है। हज़ारों हिन्दू व मुसलमान उर्स के दिन अजमेर जाते हैं और ख्वाजा जी की कब्र (यानी दरगाह) पर चादर चढ़ाते हैं, और मन्नत मांगते हैं।

इन भक्त संतों और सूफी संतों के विचार आपस में बहुत मिलते-जुलते थे। सूफियों ने इस बात पर जोर दिया कि सच्चे दिल से अल्लाह को प्रेम करना और अपने बुरे कामों पर पश्चाताप करना अल्लाह को पाने का सही तरीका है। धन दौलत व पद-सब त्याग कर ग़रीबों और लाचारों की सेवा करना ही धर्म है। वे कट्टर रस्मों के खिलाफ थे। वे ऐसी रस्मों पर ज़ोर देते थे जिनमें भक्त का मन अल्लाह की भक्ति में डूब जाए। सूफियों के डेरे पर झूम-झूम कर गीत गाने (यह कव्वाली हुआ करती थी) व नाचने की प्रथा थी।

सूफी संत बीच शहर में अमीर मुसलमानों के साथ न रहकर शहर के बाहर ग़रीबों की बस्तियों के पास रहते थे। उनके घरों में अमीर-ग़रीब, हिन्दू-मुसलमान सभी आते थे और साथ भोजन करते थे।

ये संत सुल्तानों से अपने आपको दूर ही रखते थे। उनका मानना था कि सुल्तान कुरान में बताए रास्ते पर न चलकर पाप और अत्याचार के तरीके अपनाते हैं। सूफियों के इस व्यवहार से बहुत लोग उनकी तरफ खिंचे चले आते थे, चाहे वे हिन्दू हों या मुसलमान।

सूफियों की तरह ही भक्त-सन्तों ने भी लोगों के बीच यह भावना फैलायी थी कि ईश्वर को पाने के लिये सच्चे दिल से प्रेम करना ही एक मात्र तरीका है। उन्होंने भी आम लोगों की बोली में कई सुन्दर गीतों की रचना की जिसे भक्त लोग मगन होकर गाते थे। वे भी ऊंच-नीच, जात-पात के भेद-भावों के खिलाफ थे और कहते थे कि ईश्वर का भक्त चाहे वह ब्राह्मण हो या अछूत वे उसकी इज्ज़त करते हैं। ये संत सूफियों के विचारों से प्रभावित हुए और सूफी सन्त इनके विचारों से प्रभावित हुए। इनमें से कई संत कहने लगे कि हिन्दू और मुसलमान दोनों का ईश्वर एक है। ईश्वर को पाने का रास्ता भी एक समान है।

लल्ला देद कश्मीर की विधवा ब्राह्मण औरत थी। कई सूफी संत उसे अपना पीर या गुरु मानते थे। वो कहती थी–

"शिव सब जगह मौजूद है, सब में मौजूद है। फिर हिन्दू और मुसलमान में फर्क मत करो। अगर तुम समझदार हो तो अपने आप को समझो। यही ईश्वर की सही समझ है।"

इन सन्तों के विचारों की मदद से हिन्दू और मुसलमान लोगों ने एक दूसरे के धर्म की समान बातें समझीं। लोगों के बीच यह विचार बैठने लगा कि एक ही ईश्वर है– चाहे उसे अल्लाह, राम, शिव, विष्णु जैसे अलग-अलग नामों से जाना जाता है।

अभ्यास के लिए प्रश्न

1. इनके बारे में तुम क्या जानते हो– कुरान, मक्का-मदीना, हज, रमज़ान, नमाज़, पैगम्बर मोहम्मद, दरगाह और उर्स?
2. किन लोगों के साथ इस्लाम धर्म भारत आया?
3. सन् 1000 से पहले ईरानी लोग भारत क्यों आये? राय-राणाओं ने उन्हें किस तरह की सहायता दी?
4. भक्त और सूफी संतों के मन में ईश्वर को प्राप्त करने का तरीका एक सा था या फर्क था? वो क्या तरीका था?

13. देहली में तुर्कों का राज्य बना

तुमने अक्सर पढ़ा होगा कि कोई राजा युद्ध में जीत गया या कोई और राजा हार गया। वास्तव में युद्ध में क्या-क्या होता होगा, सब अपनी-अपनी बात बताओ। अगर कोई युद्ध में जीते तो उसका कारण क्या हो सकता है - इस बात पर भी चर्चा करो।

महमूद गज़नी

उन दिनों की बात है जब भारत में कई छोटे बड़े राजा और सामन्त थे। उत्तर भारत में चौहाण, तोमर, गहड़वाल, चन्देल, चालुक्य जैसे वंशों के राज्य थे। ये अपने आपको राजपूत वंश कहते थे।

पृष्ठ 158 में दिए गए नक्शे में ईरान, अफ़गानिस्तान, खुरासान व तुर्किस्तान पहचानो।

हम इन जगहों की बात इसलिए कर रहे हैं क्योंकि वहीं से तुर्क लोग भारत में भी राज्य बनाने आए। उनका भारत आना कैसे हुआ? कौन राजा था जो भारत आया?

तुर्क लोगों द्वारा पहला बड़ा हमला तब हुआ जब महमूद गज़नी नाम के तुर्क राजा ने भारत पर हमला किया। पर वह भारत में राज्य नहीं बनाना चाहता था। उसकी नज़रें ईरान, अफगानिस्तान व खुरासान के क्षेत्र में ही दूसरे तुर्क राजाओं को हरा कर अपना राज्य बढ़ाने में लगी थीं।

जब महमूद गज़नी भारत में राज्य बनाना नहीं चाहता था फिर वह भारत क्यों आया? इसलिये कि वह अपनी सेना बनाने के लिए धन जुटाने की कोशिश कर रहा था। इस कोशिश में उसने सन् 1000 से सन् 1025 तक 17 बार विभिन्न राजपूत राज्यों पर आक्रमण किया। हर बार आकर वह धन लूट कर चला जाता था। इस सिलसिले में उसने कई राजाओं को हरा कर उनके धन पर कब्ज़ा किया। उन मंदिरों और बौद्ध मठों को तोड़ा व लूटा जिनमें बहुत धन दौलत इकट्ठी हुई थी।

तुर्क राजा आपस में लड़ते थे

मोहम्मद ग़ोरी

राज्य बनाने के इरादे से जो तुर्क राजा भारत आया उसका नाम था मोहम्मद ग़ोरी। वह अफगानिस्तान में ग़ोर नाम की जगह से आया था। मोहम्मद की लड़ाई एक दूसरे तुर्क राजा से चल रही थी। यह था खुरासान का शाह।

मोहम्मद और शाह दोनों तुर्क थे। पर दोनों ही एक दूसरे से लड़ कर अपना राज्य बढ़ाना चाहते थे। मोहम्मद ग़ोरी को लगा कि शाह से जीतना मुश्किल काम है, तो क्यों न कहीं और अपना राज्य फैलाएं?

पृष्ठ 164 के मानचित्र में ग़ोर और गज़नी ढूंढो। ये जगहें दिल्ली से किस दिशा में हैं?

महमूद गज़नी और मोहम्मद ग़ोरी के बीच तुम्हें क्या फर्क दिखा?

ग़ोरी ने सबसे पहले पंजाब में मुल्तान शहर पर आक्रमण किया और मुल्तान को हथिया लिया। फिर राजस्थान के रेगिस्तान से होते हुए वह गुजरात की तरफ बढ़ा। गुजरात उन दिनों एक बहुत ही सम्पन्न क्षेत्र था। मगर गुजरात में राज्य करने वाला चालुक्य वंश का राजा भीम, उसे रोकने में सफल हुआ। मोहम्मद मुश्किल से अपनी जान बचा कर लौटा।

मोहम्मद ने इस पराजय से हिम्मत नहीं हारी। उसने अपनी हार पर विचार किया और बहुत सोच समझके व तैयारी करके उसने पंजाब पर पहले कब्ज़ा करने की ठानी। 1190 तक पूरा पंजाब मोहम्मद के अधीन हो गया। भटिण्डा तक उसका शासन चलने लगा। वहां उसने अपने अधिकारी व सैनिक तैनात किए।

मोहम्मद ग़ोरी जिन जगहों पर राज्य करता था उन्हें नक्शे में इस चिन्ह से दिखाओ -

क्या तुम नक्शा देख कर बता सकते हो कि मोहम्मद के लिए गुजरात की तुलना में पंजाब पर विजय पाना ज़्यादा आसान क्यों था?

नक्शा देख कर यह तालिका भी भरो–

सन् 1200 में उत्तर भारत के राज्य

	जगह	राजवंश
1.	अनहिलवाड़ा	
2.	अजमेर	
3.	देहली	
4.	कन्नोज	
5.	लखनउटी	
6.	खजुराहो	
7.	धार	

पृथ्वीराज चौहान

जिन दिनों ग़ोरी हमले कर रहा था उन्हीं दिनों अजमेर के चौहाण वंश के राजा भी अपने राज्य का विस्तार करने में लगे हुए थे। वे 1150 तक देहली के तोमर वंश को हरा चुके थे। पृथ्वीराज चौहाण ने बुन्देलखण्ड के चन्देल वंश के राजा को महोबा नाम की जगह पर हराया। इसी युद्ध में आल्हा और ऊदल लड़े थे और महोबा की रक्षा में उन्होंने अपनी जान गंवाई थी। उन्हीं की याद में आज भी सावन के महीने में आल्हा गाया जाता है।

क्या तुम्हें आल्हा और ऊदल की कहानी मालूम है? नहीं मालूम तो गुरुजी से पूछो।

तुर्क राजाओं की तरह राजपूत राजा भी आपस में लड़ते रहे थे। महोबा की जीत के बाद पृथ्वीराज कन्नोज के गहड़वाल राजा जयचन्द से लड़ना चाहता था। पर जयचन्द शक्तिशाली था और पृथ्वीराज की उससे लड़ने की हिम्मत नहीं हुई। तब पृथ्वीराज राज्य बढ़ाने के लिए गुजरात की तरफ बढ़ा। पर चालुक्य राजा भीम ने जैसे मुहम्मद को हराया था, वैसे ही पृथ्वीराज को भी हरा दिया।

राजपूत राजा आपस में लड़ते थे
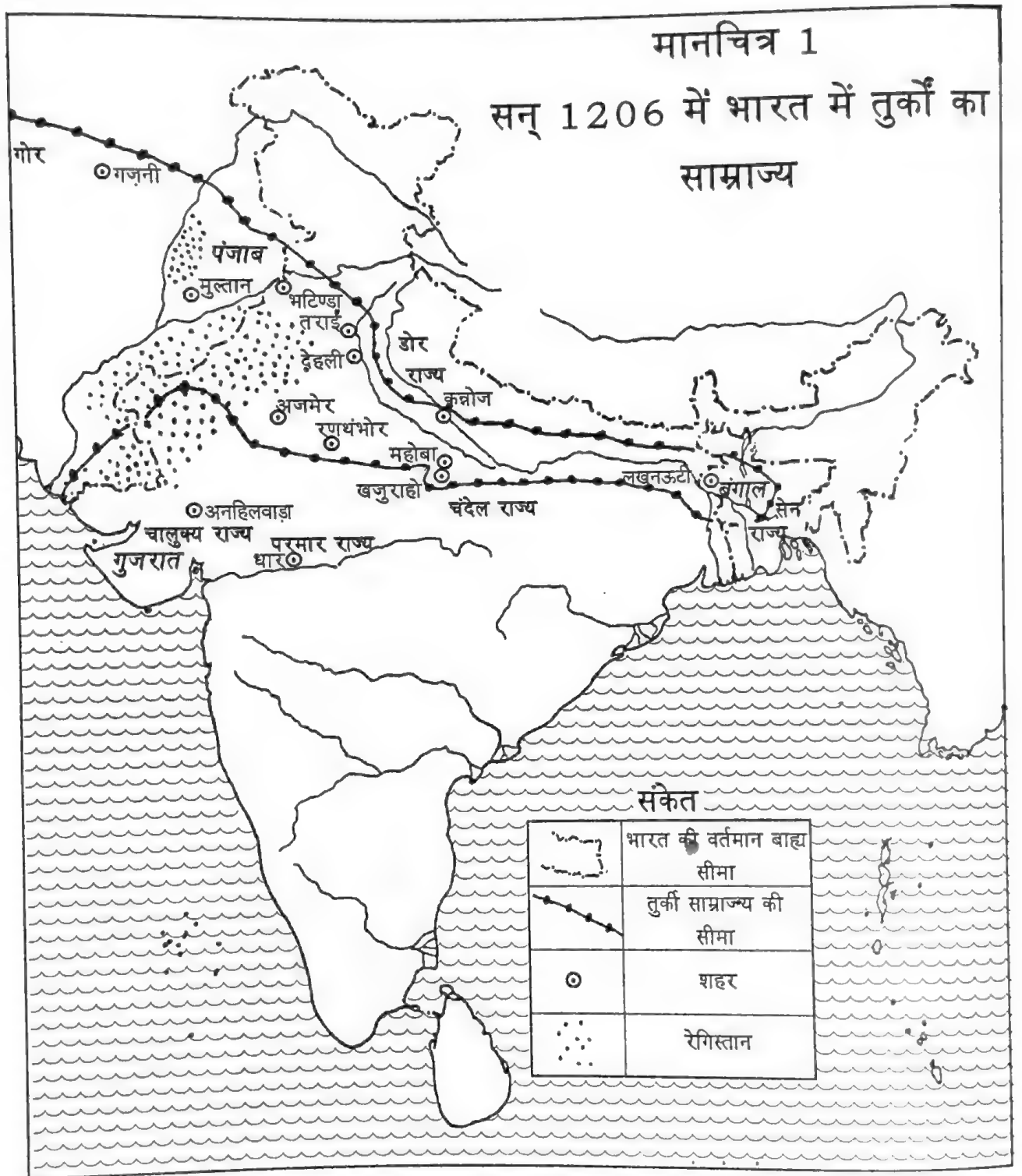
Based upon Survey of India Outline map printed in 1979. The territorial waters of India extend into the sea to a distance of 12 nautical miles measured from the appropriate baseline.

c. Govt of India copyright.

पैमाना : 1 से. मी. = 200 कि. मी.
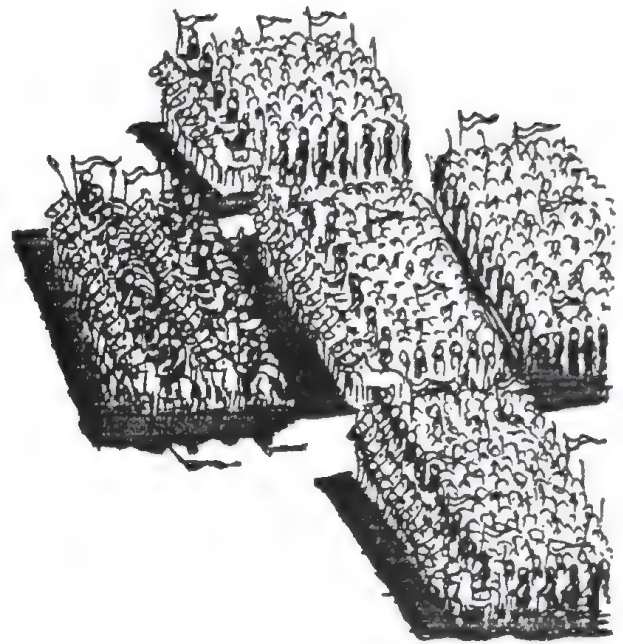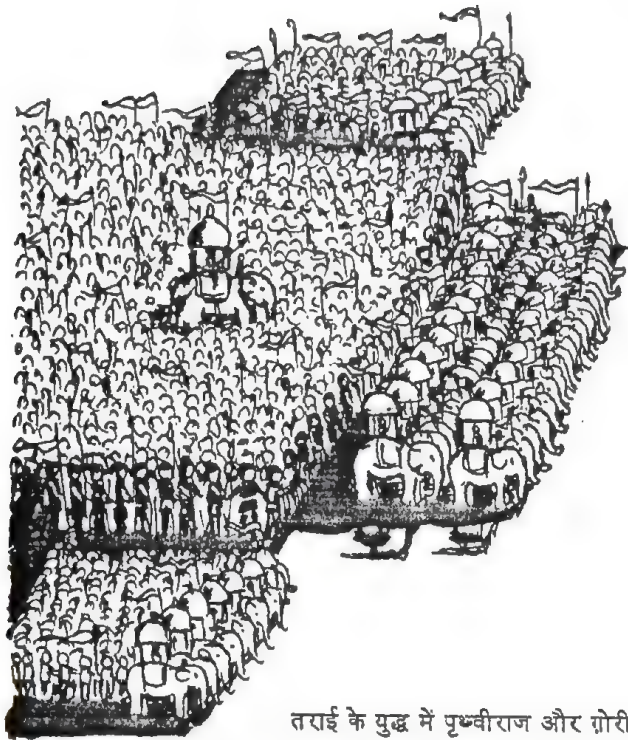
तराई के युद्ध में पृथ्वीराज और ग़ोरी की सेनाएं। दोनों सेनाओं में फर्क बताओ

पृथ्वीराज जिन जगहों पर राज्य करता था उन्हें नक्शे में इस चिन्ह से दिखाओ–

भीम से हारकर पृथ्वीराज दिल्ली लौटा। अब वह राज्य विस्तार के लिए किस ओर बढ़े? उसकी निगाहें पंजाब की तरफ गईं। पर पंजाब में तो मोहम्मद ग़ोरी धाक जमाए था। अब स्वाभाविक था कि पृथ्वीराज और मोहम्मद के बीच युद्ध हो।

तराई का युद्ध

पृथ्वीराज ने भटिण्डा पर हमला बोलने की तैयारी कर ली। यह सुनकर मोहम्मद भी ग़ोर से अपनी सेना लेकर भटिण्डा पहुंचा। दोनों राजाओं की सेना तराई नाम की जगह पर 1191 में लड़ीं। मोहम्मद हार गया और जान बचाकर भाग खड़ा हुआ। पृथ्वीराज ने भटिण्डा को अपने राज्य में मिला लिया।

एक साल तक मोहम्मद ने खूब तैयारी की और एक ताकतवर सेना जुटाई। 1192 में उसने फिर से पृथ्वी पर हमला बोला। पृथ्वीराज ने आसपास के राजाओं से मदद मांगी और उनमें से कुछ राजाओं ने मदद भी की। इस तरह पृथ्वीराज चौहाण के पास तीन लाख से अधिक सैनिक हो गए। मोहम्मद के पास केवल एक लाख बीस हज़ार सैनिक थे। लेकिन मोहम्मद के पास घुड़सवारों की बहुत ही मज़बूत पलटनें थीं। घोड़े और घुड़सवार दोनों मज़बूत इस्पात के कवच से लैस थे। वे बड़ी तेज़ी से, फुर्ती से आक्रमण कर सकते थे।

मोहम्मद ने तराईं से कुछ दूरी पर अपना डेरा डाला। वहां अपनी सेना की सारी भारी-भरकम चीज़ें- भोजन सामग्री, बैलगाड़ी आदि छोड़ दीं। साथ ही कुछ 10,000 घुड़सवार भी वहां तैनात किए ताकि ज़रूरत पड़ने पर बुलाया जा सके। बाकी सैनिकों के साथ वह तराई पहुंचा।

युद्ध शुरू होने पर सेनाओं की स्थिति ऐसी थी। एक तरफ पृथ्वीराज की सेना थी। उसने अपनी सेना को चार भागों में विभाजित किया था। बीच में पृथ्वीराज अपनी टुकड़ी के साथ था। उसके आगे उसका सामन्त गोविन्दराय अपने हाथियों के साथ खड़ा था। पृथ्वीराज के दाएं और बाएं सेना की टुकड़ियां थीं। मोहम्मद के विपरीत पृथ्वीराज ने अपनी पूरी की पूरी सेना तराई में ही तैनात कर दी थी।

गोविन्दराय पृथ्वीराज का सामन्त था- इस बात से तुम क्या समझते हो?

पृथ्वीराज की सेना के सामने मोहम्मद की सेना थी। उसने अपनी सेना को पांच भागों में बांटा था। पृथ्वीराज की तरह वह अपनी टुकड़ी के साथ बीच में था। उसके सामने शक्तिशाली घुड़सवारों व धनुष-धारियों की एक टुकड़ी थी। मोहम्मद के दाएं, बाएं व पीछे भी सेना की टुकड़ियां थीं।

चित्र में पृथ्वीराज कहां रहा होगा, मोहम्मद कहां रहा होगा और गोविन्दराय कहां रहा होगा?

गोविन्दराय ने आक्रमण शुरू किया। उसके हाथी तेज़ी से बढ़ कर आगे आए और मोहम्मद के सैनिकों को कुचलने लगे। इतने में मोहम्मद के घुड़सवारों ने आगे बढ़कर तीनों तरफ से हाथियों को घेर लिया और उन पर तीरों की वर्षा शुरू कर दी। घायल हाथी न आगे भाग पाए न दाएं न बाएं। वे बड़ी तेज़ी से मुड़कर पीछे की तरफ भागे। अब तुम ही सोचो पृथ्वीराज की सेना का क्या हुआ होगा?

जब पृथ्वीराज की सेना में हलचल मच गई तो मोहम्मद के घुड़सवार तेज़ी से दौड़ते हुए आगे बढ़े और पृथ्वीराज की पूरी सेना को घेर लिया। घुड़सवार पृथ्वीराज की सेना में भी थे पर वे तुर्क घुड़सवारों जैसे कुशल नहीं थे। उनके घोड़े भी उतनी अच्छी नस्ल के न थे। पृथ्वीराज की सेना में हाथी और पैदल सैनिक ही अधिक थे। आखिर तुर्क घुड़सवारों की तुलना में वे कितना तेज़ भागते? कई घंटों तक मारकाट, भागदौड़ चलती रही और अन्त में पृथ्वीराज हार कर भाग निकला।

तुर्कों की जीत के बाद

मोहम्मद ने पृथ्वीराज को अपना सामन्त बना लिया और उसे राज्य लौटा दिया। पर कुछ सालों बाद मोहम्मद ग़ोरी ने तय कर लिया कि वह हिन्दुस्तान में ही अपना राज्य जमाना चाहता है। वो पूरे उत्तर भारत को अपने कब्ज़े में करने की ठान चुका था। इसीलिए उसने पृथ्वीराज चौहाण को मार डाला और दिल्ली व अजमेर पर अपना अधिकार जमा लिया।

मोहम्मद ने पृथ्वीराज के बेटे को एक छोटे से क्षेत्र में राजा बना रहने दिया। मोहम्मद ने उसे रणथंभोर पर राज्य करने भेज दिया और वह खुद दिल्ली और अजमेर से राज्य करने लगा।

नक्शा देख कर बताओ कि दिल्ली और अजमेर पर नियंत्रण करने से मोहम्मद ग़ोरी दूसरे किन राज्यों पर हमला कर सकता था?
सन् 1207 तक तुर्कों ने किन-किन राज्यों को हरा कर अपने अधीन कर लिया– नक्शे में देखो।

जब किसी राजपूत राजा को हरा कर विजयी तुर्क उसकी राजधानी में प्रवेश करते थे तो अक्सर वहां के महलों व मंदिरों को लूट कर तोड़ डालते थे। वे इस्लाम धर्म मानते थे और इस्लाम धर्म के अनुसार ईश्वर के लिए मंदिर व मूर्ति बनाना ठीक नहीं माना जाता। तुर्क सुल्तानों यानी राजाओं को लगता था कि मंदिर व मूर्ति तोड़ कर उन्हें धार्मिक यश व पुण्य मिलेगा। मंदिर तोड़ने से वे हारे हुए लोगों पर अपनी जीत और ताकत भी जता पाते थे।

पर जब नई-नई जीत की खुशी का मौका बीत जाता और हारे हुए लोग तुर्कों का शासन स्वीकार कर लेते तो तुर्क सुल्तान उन्हें अपने टूटे हुए मंदिरों की मरम्मत करने देते थे। तब वे अपने राज्य के लोगों के साथ मुसलमान बनने की ज़ोर ज़बरदस्ती भी नहीं करते थे। उन्हें यह लगता था कि ऐसा करने से लोग उनका विरोध करेंगे और इस कारण वे अपना राज्य मज़बूत नहीं बना पायेंगे। इस बात का ज़िक्र उस समय के कई ग्रंथों में मिलता है।

अपना राज्य मज़बूत करने के लिए तुर्क सुल्तान हारे हुए राजाओं को सामन्त के रूप में भी नहीं रहने देते थे। वे हारे हुए राजाओं को हटा कर उनके राज्य पर खुद शासन करते थे। 15-16 सालों में तुर्कों ने भारत में अपना इतना बड़ा साम्राज्य कैसे बना लिया यह तुमने इस पाठ में देखा।

तुर्कों की जीत के कारणों पर विचार

तुर्कों की सफलता के बारे में इतिहासकार काफी विचार करते हैं। वे साचते हैं, यह कैसे संभव हुआ कि दूर ग़ोर से आया हुआ मोहम्मद 16 सालों के अंदर पंजाब से बंगाल तक अपना शासन स्थापित कर पाया और सब राजाओं को एक के बाद एक हराता चला गया। मोहम्मद ग़ोरी से पहले भी कई राजपूत राजा हुए थे जिन्होंने आसपास के कई राजाओं को हराया था। राजपूत राजा वीरता से लड़ने में बड़ा गर्व महसूस करते थे। पर यह कैसे हुआ कि तुर्क सेना वीर से वीर राजपूत सेना से भी श्रेष्ठ साबित हुई?

इतिहासकार इस बारे में छानबीन करते हैं और राजपूतों की हार व तुर्कों की जीत का अलग-अलग कारण बताते हैं। इतिहासकारों के बीच इस बात को लेकर सहमति नहीं है। चलो अब हम कुछ इतिहासकारों की बात पढ़ें और देखें कि किस का मत सही लगता है?

पहला मतः

"तुर्क लोग इस्लाम धर्म को मानते थे और वे भारत में इस्लाम धर्म की स्थापना के लिए आए थे। इसलिए वे बहुत जोश से लड़े। इस कारण वे जीते।"

इस मत को जांचने के लिए इन प्रश्नों पर विचार करो–

क्या राजपूतों को लड़ने में जोश नहीं रहता था?

क्या वास्तव में तुर्क लोग भारत के लोगों को मुसलमान बनाने के लिए आए थे? तो क्या उन्होंने ऐसा किया? क्या उन्होंने अपना राज्य स्थापित करने के बाद सब लोगों को मुसलमान बना दिया?

अब बताओ क्या तुम्हें तुर्कों की जीत के कारण का यह पहला मत सही लगता है?

दूसरा मतः

"तुर्क लोगों में एकता थी, इसीलिए वे जीते। राजपूत लोग आपस में लड़ते थे, उनमें एकता नहीं थी। इसलिए वे हार गए।"

इस मत को जांचने के लिए इन प्रश्नों पर विचार करो–

क्या तुर्क राजा आपस में नहीं लड़ते थे?

क्या तुर्क लोगों के पास ज़्यादा सेना थी, और राजपूत राजा के पास, भेद-भाव के कारण, कम सेना थी?

अब बताओ क्या तुम्हें तुर्कों की जीत के कारण का दूसरा मत सही लगता है?

तीसरा मतः

"भारत में जाति व्यवस्था के कारण नीची मानी जाने वाली जातियों में बहुत असंतोष था। राजपूत राजा भी जाति-पाति बहुत मानते थे। तुर्क लोग मुसलमान थे। वे जाति-पाति का भेद-भाव नहीं करते थे। इसलिए नीची मानी जाने वाली जातियों के लोगों ने उनका समर्थन व सहयोग किया। इसलिए तुर्क जीतते गए।"

इस मत को जांचने के लिए इन बातों पर विचार करो–

तुर्क लोग मुसलमान ज़रूर थे और छुआछूत में विश्वास भी नहीं करते थे। पर इसका यह मतलब नहीं था कि वे सब के साथ बराबरी का व्यवहार करते थे। मुसलमान होने के बावजूद वे इस बात पर गर्व महसूस करते थे कि वे तुर्क हैं। तुर्कों को वे सबसे श्रेष्ठ मानते थे। तुर्कों के अलावा दूसरे लोगों को वे अपने बराबर कतई नहीं मानते थे। अतः तुर्क लोग भले ही किसी को अछूत और अपवित्र न मानते हों पर उनमें दूसरों को अपने से नीचा मानने का घमण्ड था। राजपूतों को भी अपनी शक्ति और जाति का बहुत घमण्ड था।

इस बात को ध्यान में रखते हुए बताओ क्या तुम्हें यह तीसरा मत ठीक लगता है कि तुर्क राजपूतों से जीते क्योंकि उन्होंने अछूत माने जाने वाले लोगों का मन जीत लिया?

चौथा मतः

"तुर्क लोग इसलिए जीते क्योंकि उनके पास बेहतर सेना थी। उनके पास फुर्तीले घुड़सवार व घोड़े थे– राजपूतों की सेना भारी भरकम व धीमी थी। इसलिए वे हार गए।"

इस मत को जांचने के लिए तराई के युद्ध का वर्णन याद करो।

क्या तुम्हें तुर्कों की जीत के बारे में चौथा मत ठीक लगता है?

अगर फुर्तीले घोड़ों के कारण तुर्क सेना जीती तो मोहम्मद ग़ोरी पहले राजा भीम और पृथ्वीराज से कैसे हार गया था?

अभ्यास के प्रश्न

1. मोहम्मद गज़नी कहां राज्य बनाना चाहता था– ईरान, खुरासान या भारत में ?
2. मोहम्मद ग़ोरी किन राजाओं से हारकर पंजाब में राज्य बनाने के लिए मुड़ा?
3. पृथ्वीराज चौहाण किन राजाओं से हारकर पंजाब में राज्य बनाने के लिए मुड़ा?
4. पृथ्वीराज चौहाण और मोहम्मद ग़ोरी ने कहां युद्ध लड़े? आज से कितने साल पहले? यह जगह किस शहर के पास है– कलकत्ता, भोपाल, दिल्ली, जबलपुर?
5. तुर्कों की सेना और राजपूतों की सेना में क्या फर्क था?
6. एक इतिहासकार का मत है कि राजपूत तुर्कों से इसलिए हारे क्योंकि उनमें एकता नहीं थी और वे आपस में लड़ते रहते थे।इस मत को तुम ठीक मानोगे या नहीं- कारण सहित समझाओ।
7. जीत के बाद तुर्कों के व्यवहार के बारे में चार महत्वपूर्ण बातें बताओ।

14. सुल्तानों का शासन जमा

कुतुब मीनार : देहली में कुतुबुद्दीन ऐबक ने यह मीनार बनवाया

सुल्तान के गुलाम अधिकारी

मोहम्मद ग़ोरी भारत के उत्तरी हिस्सों पर अपना राज्य बना चुका था। उसने चौहाण, गहड़वाल, सेन, चन्देल आदि कई वंशों के राजाओं को हरा कर अपना राज्य बनाया था। वह खुद ग़ोर में रहता था और भारत में उसके राज्य के अलग-अलग प्रान्तों में उसके अधिकारी शासन चलाते थे। ये अधिकारी मोहम्मद ग़ोरी के गुलाम थे क्योंकि ग़ोरी ने इन्हें खरीद रखा था।

गुलाम राज्य के अधिकारी थे। इस बात से तुम्हें हैरानी हो सकती है। पर उन दिनों यह प्रथा थी। तुर्किस्तान के युवकों को खरीद कर उन्हें युद्ध और प्रशासन के काम में प्रशिक्षण देकर सुल्तानों को बेचा जाता था। इसलिए वे गुलाम कहलाते थे। पर किसी सुल्तान की सेवा में आने पर, योग्य और होनहार गुलामों को ऊंचे और ज़िम्मेदारी के पद भी सौंपे जाते थे और इसके बदले उन्हें ऊंचा वेतन मिलता था। सुल्तान मोहम्मद ग़ोरी की सेवा में भी ऐसे कई गुलाम थे और भारत में उसके राज्य का शासन चलाते थे।

सन् 1206 में जब मोहम्मद की मृत्यु हुई उसका एक महत्वपूर्ण गुलाम अधिकारी था कुतुबुद्दीन ऐबक। उसने ग़ोर के राज्य से अपना संबंध तोड़ दिया और भारत में ही तुर्क राज्य को मज़बूत बनाया। इस राज्य का सुल्तान कुतुबुद्दीन ऐबक खुद बना। यह राज्य अब देहली सल्तनत कहलाया क्योंकि इसकी राजधानी देहली थी।

अपने गुलामों को अधिकारी बनाने से राजा को क्या फायदे हो सकते थे, कक्षा में चर्चा करो।

देहली सल्तनत का क्षेत्र फैला

ऐबक के बाद आने वाले सुल्तानों ने देहली सल्तनत का राज्य दूसरी जगहों में फैलाया। देहली के प्रमुख सुल्तान ये थे– इल्तुतमिश, रज़िया बेगम, बल्बन, अलाउद्दीन खलजी, मोहम्मद तुग़लक, फिरुज़शाह। खासकर अलाउद्दीन खलजी ने कई नए राज्यों को जीतकर सल्तनत के अधीन किया। उसकी सेनाओं ने देवगिरी, द्वारसमुद्र और मदुरई के राजाओं को हराकर उनके राज्य का बहुत धन लूट लिया। अलाउद्दीन ने राजस्थान और गुजरात के कई क्षेत्रों को भी अपने अधीन कर लिया।

इस तरह इन सुल्तानों के प्रयास से देहली सल्तनत की हुकूमत कहां से कहां तक फैल गई यह तुम सन् 1334 के नक्शे में देखो। सन् 1207 में सल्तनत का राज्य कहां तक था यह तुम पिछले नक्शे में देख चुके हो।

मोहम्मद ग़ोरी के बाद जो क्षेत्र सल्तनत के अधीन किए गए उन्हें नक्शा 1 में पहचान कर रंगो।

इस नक्शे की तुलना सन् 1000 के राजवंशों के नक्शे से भी करो। उस समय भारत में कितने सारे छोटे-छोटे राजवंश थे। अब वे तुर्कों से हार गए थे और दिल्ली सल्तनत के अधीन थे।

सुल्तान और हारे हुए राजाओं का रिश्ता

हारने के बाद इन पुराने राजाओं का क्या हुआ होगा? तुम 'राजवंश का बनना' और 'उत्तर भारत के गांव' वाले पाठों में इन ताकतवर लोगों के बारे में बहुत सी बातें पढ़ चुके हो। कैसे वे गांव व शहरों का 'भोग' करते थे, लोगों से तरह-तरह के कर वसूल करते थे, लोगों से अपने लिए बेगार करवाते थे, अपने किले, महल व मन्दिर बनवाते थे, अपनी सेना खड़ी करते थे। गांव व

शहरों में उनका कितना दबदबा और रौब था। पर अब उन पर देहली के सुल्तानों का शासन था।

वास्तव में सुल्तानों के सामने हमेशा यह समस्या रही कि इन हारे हुए राजवंशों और सामंतों से कैसा व्यवहार करें। सुल्तान चाहते तो थे कि इन राजाओं को हटाकर पूरे क्षेत्र पर खुद शासन चलाएं। मगर तुम तो समझते हो कि ऐसा करने में क्या-क्या कठिनाईयां थी। सबसे कठिन बात तो थी दूर-दूर के नये क्षेत्रों के शासन का प्रबंध करना, वहां अपने अधिकारी व सैनिक नियुक्त करना और खुद वहां के लोगों से कर इकट्ठा करना। तुर्क लोग तो ईरान और अफगानिस्तान से आये थे। वे न तो यहां की भाषा जानते थे न यहां के रीति-रिवाज़, और न ही वे यहां की शासन व्यवस्था के बारे में समझते थे। इस कारण शुरू में उन्हें यहां शासन प्रबंध करने में कठिनाईयां आयीं।

इसके लिये उन्होंने शुरू में एक उपाय सोचा। उन्होंने तय कर लिया कि वे हर हारे हुए राजा से कितना कर लेना चाहते हैं। यह राशि तय करने पर वे हारे हुये राय-राणाओं से कहते–"तुम्हें अपने यहां के लोगों से इतना कर इकट्ठा करके हमें देते रहना होगा। बाकी तुम जैसे संभालते थे वैसे संभाल सकते हो।"

(तुम्हें याद होगा कि राय, राणा, ठाकुर, रावत आदि राजपूत परिवारों के भोगपतियों की उपाधियां थीं।)

क्या पुराने समय के राजा भी अपने सामंतों से ऐसा ही कहते थे?

अक्तादार

सुल्तानों ने कर वसूल करने का इन्तज़ाम तो कर लिया पर अपनी सुरक्षा के लिए और राय राणाओं पर निगरानी रखने के लिये भी कोई उपाय करना ज़रूरी था। इसके लिए सुल्तानों ने अपनी सल्तनत (या राज्य) को कुछ
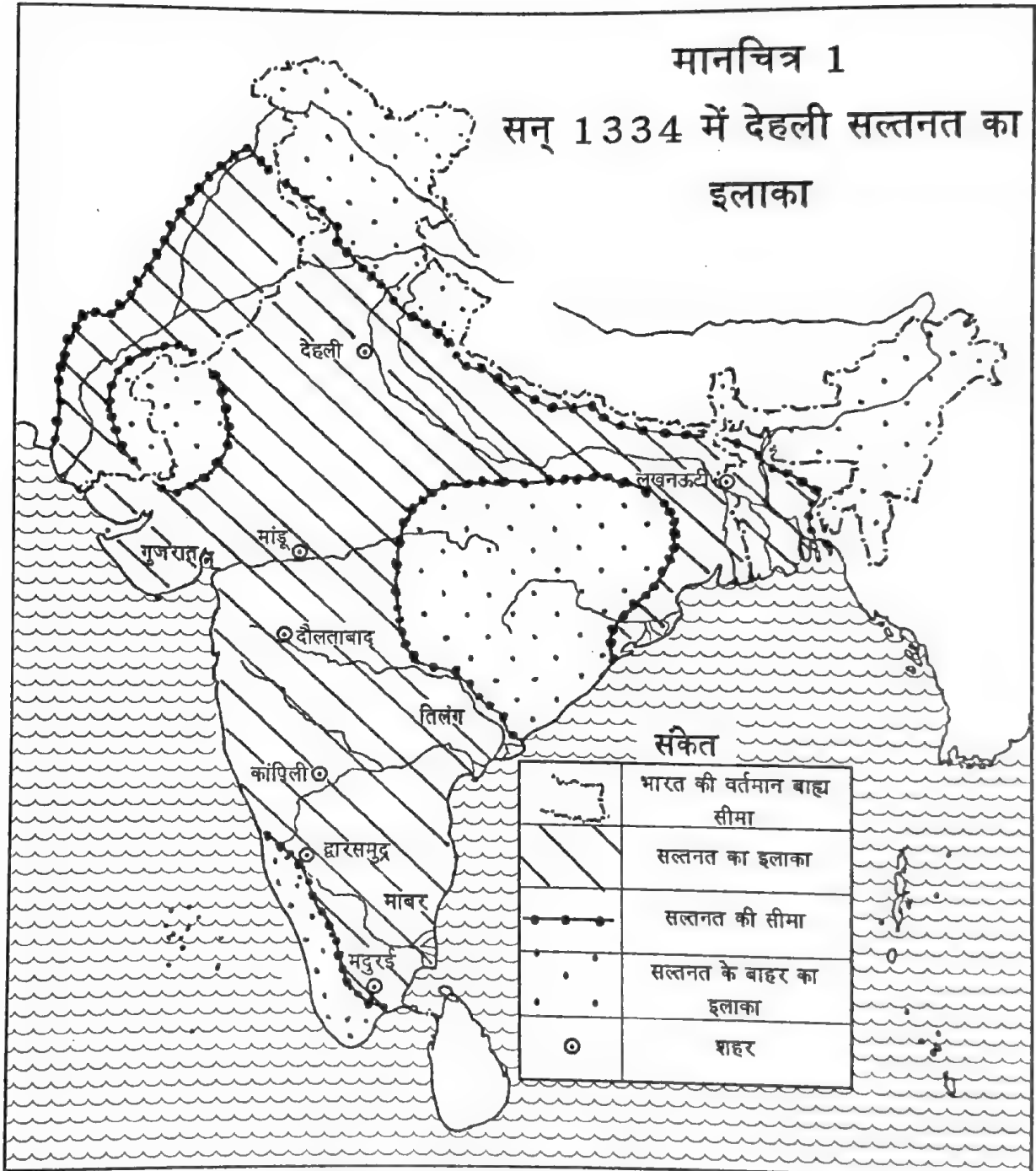
पैमाना: 1 से. मी. = 200 कि.मी.

प्रांतों में बांटा। वे प्रांतों को 'अक्ता' कहते थे। हर अक्ते में वे अपने एक ज़िम्मेदार सेनापति को नियुक्त करते थे, जो वहां के बड़े शहर में रहता था। उसे 'अक्तादार' कहा जाता था।

अक्तादार के पास अपनी सेना होती थी और प्रशासन चलाने के लिए अधिकारी होते थे। अक्तादार इनकी सहायता से राज्य की रक्षा करते थे और राय राणाओं से कर वसूल करते थे। अपने अक्ते से इकट्ठे किए गए कर से ही वे अपना, अपने अधिकारियों का और अपने सैनिकों का खर्चा चलाते थे। इस खर्चे के ऊपर जो कर बचता था उसे अक्तादार सुल्तान को भेज देते थे।

पर हारे हुए राय-राणा अक्सर सोचते थे "मैं क्यों अपने यहां का इतना सारा कर इकट्ठा करके तुर्कों को दूं? मैं पहले की तरह खुद ही क्यों न रख लूं? जब वे आकर मांगेंगे तब देखा जायेगा।"

मौका देखकर राय-राणा आदि कर देना बंद कर देते थे। फिर सुल्तान या उसके अक्तादारों को ऐसे विद्रोही राजाओं व राणाओं पर हमला करके ज़बरदस्ती उनसे कर वसूल करना पड़ता था।

अक्तादारों के कुछ काम बताओ। सल्तनत में एक अक्तादार होता होगा या कई?

इस तरह लगभग सौ साल बीत गये। इतने समय में तुर्क लोग यहां के लोगों की भाषा, तौर-तरीकों और खेती-बाड़ी जैसी बातें समझने लगे। अब तुर्क सुल्तानों को लगने लगा कि राय-राणाओं की जगह वे खुद गांव-गांव से कर इकट्ठा करवा सकते हैं।

अलाउद्दीन खलजी ने कर बदले

इसी समय अलाउद्दीन खलजी सुल्तान बना। अलाउद्दीन ने आदेश दिया कि उसके राज्य में कर इकट्ठा करने का एक नया तरीका लागू होगा। तुम्हें याद होगा– भोगपति गांव के लोगों से कई मौकों पर तरह-तरह के कर वसूल करते थे।

आमिल कर वसूल करते हुए

भोगपतियों द्वारा वसूल किए गए करों की सूची को एक बार फिर पढ़ो। ('उत्तर भारत के गांव' पाठ में)

अलाउद्दीन ने आदेश दिया कि अब इतने सारे अलग-अलग कर किसानों से नहीं लिए जायेंगे। किसानों से केवल तीन तरह के कर लिए जायेंगे– भूमि पर कर, घर पर कर और मवेशियों पर कर। इनमें सबसे प्रमुख कर था भूमि कर। सुल्तान ने पटवारियों की मदद से हर गांव की ज़मीन नाप कर हिसाब लगवाया कि प्रत्येक गांव में आम तौर पर कितनी फसल होती है। उसने तय किया कि हर गांव से आधी फसल सुल्तान को लगान के रूप में दी जाएगी। किसान जो उगाएगा उसका आधा सुल्तान को देगा। अब राय-राणाओं के ज़माने की तरह किसानों से मौके-बे-मौके नाना प्रकार के अनगिनत कर नहीं वसूले जायेंगे। अब फसल के समय किसानों को स्पष्ट रूप से आधी उपज सुल्तान को देनी होगी।

आमिल

इस तरह अलाउद्दीन ने कई छोटे-छोटे करों को मिलाकर एक बड़ा कर बना दिया, भूमि कर। इस कर को गांव-गांव से इकट्ठा करने के लिए उसने अपने अधिकारी नियुक्त किए। इन अधिकारियों को आमिल कहा जाता था। अब सुल्तान ने राय-राणाओं से कर वसूल करना छोड़ दिया। उसके आमिल सीधे गांवों में जा कर किसानों से कर वसूल करने लगे। राय-राणाओं को अब यह छूट नहीं थी कि वे पहले की तरह लोगों से कर वसूल करें और उसका एक बंधा हुआ हिस्सा ही सुल्तान को भेजें।

अलाउद्दीन की नीति बताने वाले दो सबसे महत्वपूर्ण वाक्य रेखांकित करो।

कई छोटे-छोटे करों के बजाये एक बड़ा कर वसूल करने में सुल्तान के अधिकारियों को क्या सुविधा हुई होगी? किसानों को इस बात से फायदा हुआ होगा या नुक्सान?

राय-राणाओं पर अलाउद्दीन की नीति का क्या असर पड़ा होगा?

मुखिया का काम बदला

अलाउद्दीन के सुल्तान बनने से पहले गांव के मुखिया गांव वालों से तरह-तरह के कर इकट्ठा करके राय-राणाओं को देते थे। इस काम के बदले मुखिया किसानों से कुछ कर अलग से अपने लिए भी वसूल कर लेते थे और वे अपनी ज़मीन पर भी राय-राणाओं को कोई कर नहीं देते थे।

अलाउद्दीन ने मुखियाओं की यह स्थिति नहीं मानी। सुल्तान ने बड़ी सख्ती से आदेश दिया कि खेत के हर टुकड़े पर कर वसूल किया जाएगा चाहे वो छोटे से छोटे किसान का हो या गांव के मुखिया का।

अलाउद्दीन को यह बात भी ठीक नहीं लगी कि किसानों से सरकार जो कर लेती है उसके अलावा गांव के मुखिया अपने लिए भी अलग से कुछ वसूल करें। उसने मुखियाओं को सख्ती से आदेश दिया कि वे किसानों से कोई अतिरिक्त वसूली नहीं करेंगे। ऐसा करने का अब उनके पास कोई कारण नहीं रहा था क्योंकि अब मुखिया की जगह सुल्तान का आमिल (यानी अधिकारी) किसानों से कर जमा करने का काम करने लगा था। मुखिया सिर्फ आमिल की मदद कर सकते थे।

तुम्हें क्या लगता है— अलाउद्दीन की इन नीतियों से गांव के मुखियाओं का रौब व उनकी ताकत पहले के दिनों से कुछ कम हुई होगी?

वो बातें गिनाओ जो अलाउद्दीन के समय में राय-राणा और मुखिया नहीं कर सकते थे।

चौधरी और ज़मींदार बने

अलाउद्दीन और उसके बाद के सुल्तान अपने राज्य के खर्च को पूरा करने के लिए और अपने राज्य को मज़बूत बनाने के लिए बहुत सख्ती और सावधानी से लगान जमा करवाने लगे थे। वो इस बात का बहुत ध्यान रखने लगे थे कि कर वसूली में कोई कमी न हो। जो किसान कर नहीं देते थे या जो आमिल कर की चोरी करते थे उन्हें कठोर सज़ा दी जाती थी।

पर इस काम में सुल्तानों को स्थानीय लोगों की मदद की ज़रूरत पड़ती रही। अपनी बात गांव वालों को बताने व समझाने के लिए और गांवों की स्थिति के बारे में जानने के लिए सुल्तान गांवों के प्रमुख परिवारों की मदद लेते रहे।

ये प्रमुख परिवार कौन से थे? इनमें से बहुत से परिवार तो वो थे जो पुराने समय में राय-राणा या मुखिया हुआ करते थे। सुल्तान के आमिल कर वसूली के काम में इन प्रमुख लोगों से सहायता लिया करते थे। इस सहायता के बदले में उन्हें कर का एक छोटा सा निश्चित हिस्सा दे दिया जाता था। इन प्रमुख लोगों को चौधरी या ज़मींदार कहा जाने लगा।

पुराने समय के कई राय, राणा, ठाकुर और मुखिया सुल्तानों के समय में चौधरी या ज़मींदार बन गए। सुल्तानों

ज़मींदार और गांव वाले
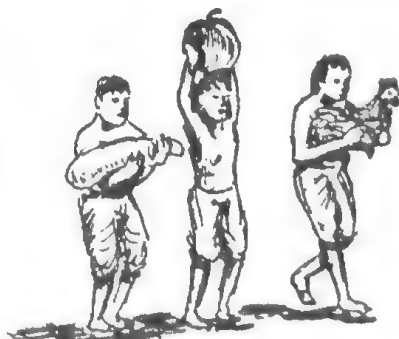
के अधीन होने से उनके पास राय-राणाओं जैसी ताकत और शान तो नहीं रही। पर फिर भी वे सुल्तानों के लिए महत्वपूर्ण लोग बने रहे और सुल्तान उनकी मदद लेते रहे।

देहली सल्तनत का टूटना

इन सब समस्याओं से जूझते हुए देहली से कई सुल्तान शासन करते रहे। सन् 1388 में सुल्तान फिरुजशाह तुग़लक की मृत्यु के बाद देहली सल्तनत का विशाल राज्य कई छोटे-छोटे राज्यों में बंट गया। इनमें अलग-अलग सुल्तान शासन करने लगे।

ऐसा ही एक राज्य मांडू में बना। मांडू नाम की जगह इन्दौर के पास है। वहां माण्डू के सुल्तानों के बहुत सुन्दर महल, मस्जिद और किले हैं। मांडू का एक प्रसिद्ध सुल्तान था होशंगशाह। सुल्तान होशंगशाह के नाम पर ही होशंगाबाद शहर का नाम पड़ा है।

अभ्यास के प्रश्न

1. अलाउद्दीन ने सल्तनत का राज्य कहां फैलाया– उत्तर भारत में/दक्षिण भारत में/पूर्व भारत में/पश्चिम भारत में।
2. सल्तनत शासन के शुरू-शुरू में गांवों से कर कौन इकट्ठा करता था– अक्तादार/राय-राणा। अलाउद्दीन के नियम के बाद गांव से कर कौन इकट्ठा करने लगा– आमिल/राय-राणा।
3. सामन्तों के समय में किसानों को किस तरह से कर देने पड़ते थे? अलाउद्दीन के नियम के बाद उन्हें किस तरह से कर देने पड़े?
4. सामन्तों के समय में गांव के मुखियाओं की स्थिति क्या थी? अलाउद्दीन के समय से उनकी स्थिति क्या हो गई?
5. किसानों से इकट्ठे किए गए कर का एक छोटा सा निश्चित हिस्सा किसे दिया जाता था– मुखिया को या चौधरी व ज़मींदार को? उन्हें यह हिस्सा कौन देता था और किसलिए?

15. कैसे पता करें – क्या हुआ क्या नहीं हुआ

कोई भी बात जब होती है तब हम कैसे जान पाते हैं कि असल में क्या हुआ था? अगर हमारी आंखों देखी बात हो तो हम उसे सच मान लेते हैं जो हमने देखा। पर आजकल तो किताबों, पत्रिकाओं, अखबार, टी. वी., रेडियो से हमें सैकड़ों ऐसी बातें पता चलती रहती हैं जो हमने अपनी आंखों से नहीं देखीं। क्या तुम ऐसी बातों पर पूरा-पूरा विश्वास कर लेते हो? क्या तुम ऐसा कभी सोचते हो कि किसी घटना या व्यक्ति के बारे में अखबार में जो लिखा है या टी. वी. पर जो बताया है वो आधी बात है– कई बातें बताई ही नहीं गईं– और अगर तुम इन छूटी हुई बातों को जानते तो शायद उस घटना या व्यक्ति के बारें में अपने विचार बदल देते?

दरअसल, यह समस्या, कि कैसे पता करें– क्या हुआ क्या नहीं हुआ– इतिहासकारों के सामने बहुत बार आती है। वो तो ऐसी बातों के बारे में लिखते हैं जो पुराने समय में बीत चुकीं और जो उन्होंने अपनी आंखों से नहीं देखीं।

राजाओं और सामंतों के काल के बारे में जब हम पढ़ रहे थे तो हमने कई शिलालेखों और ताम्रपत्रों के बारे में पढ़ा। इन्हीं लेखों से हमें उस समय के गांव व शहरों के बारे में कई बातें मालूम पड़ीं। उस समय के बारे में जानकारी हासिल करने में शिलालेखों ने हमारी खूब मदद की थी।

सल्तनत के बारे में हमें जानकारी कैसे मिलती है? तब इतने सारे शिलालेख या ताम्रपत्र नहीं खुदवाये गये थे। लेकिन सल्तनत के समय में इतिहास की कई पुस्तकें लिखी गईं थी, जिनमें हर सुल्तान के समय में क्या-क्या बातें हुईं, उनके विवरण हमें मिलते हैं।

अक्सर ऐसा भी होता है कि एक ही सुल्तान पर दो या तीन इतिहासकार अलग-अलग बातें बताते हैं। एक कहता है फलां सुल्तान बहुत अच्छा और नेक आदमी था, सारी प्रजा सुख शांति से रहती थी। दूसरा इतिहासकार उसी सुल्तान के बारे में बताता है कि वह बहुत बदमाश था और सारी प्रजा उससे दुखी थी। अब किसकी बातें हम सच मानें?

आज जब हम सल्तनत का इतिहास लिखते हैं तो हमें इस परेशानी से निपटना होता है। उदाहरण के लिये, मान लो हमें मुहम्मद तुग़लक नाम के सुल्तान के बारे में जानना है। हम उसके शासन के बारे में कैसे जान सकते हैं? मालूम करने पर हमें पता चलता है कि उसके शासन के बारे में उस समय के दो इतिहासकारों ने लिखा है, जिनके नाम ज़िया बरनी और एसामी हैं।

बरनी और एसामी की लिखी किताबों को पढ़कर पता चलता है कि सन् 1328 में मुहम्मद तुग़लक ने एक आदेश जारी किया था। उसने देहली के निवासियों को आदेश दिया कि वे देहली से दूर दक्षिण में दौलताबाद जाकर बसें।

सुल्तान मोहम्मद तुग़लक का आदेश रेखांकित करो। पृष्ठ 171 के मानचित्र में देखो दौलताबाद और दिल्ली कहां पर हैं। (पाठ में जो और जगहों के नाम आयेंगे उन्हें भी इस नक्शे में ढूंढना)

सुल्तान मुहम्मद तुग़लक ने ऐसा क्यों किया? लोग जब देहली से दौलताबाद गये तो क्या-क्या हुआ? ये बातें बरनी ने अपनी किताब में लिखीं और एसामी ने भी अपनी किताब में लिखीं।

ज़िया बरनी

ज़िया बरनी ने अपनी पुस्तक 'तारीख-ए-फिरुज़शाही' में लिखा–

"एक योजना सुल्तान के दिल में आयी कि दौलताबाद को राजधानी बनाया जाए। यह इसलिये क्योंकि दौलताबाद उसके साम्राज्य के मध्य में है। देहली, गुजरात, लखनऊटी, तिलंग, माबर, द्वारसमुद्र तथा कम्पिला, इस शहर से लगभग समान दूरी पर स्थित हैं। इस विषय में उसने किसी से परामर्श नहीं किया। उसने आदेश दिया कि उसकी अपनी मां और राज्य के सारे बड़े अधिकारी व सेनापति अपने सहायक व विश्वासपात्रों के साथ दौलताबाद की ओर चलें। दरबार के हाथी, घोड़े, खज़ाना तथा बहुमूल्य वस्तुएं दौलताबाद भेज दी जायें। इसके पश्चात सूफी संत व आलिमों (इस्लामी ग्रंथों के अध्ययन करने वाले) तथा देहली के प्रतिष्ठित व प्रसिद्ध लोग दौलताबाद बुलाये गये। जो लोग दौलताबाद गये उन्हें सुल्तान ने खूब सारा धन इनाम में दिया।

एक साल बाद सुल्तान देहली लौटा। उसने आदेश दिया कि देहली तथा आस-पास के कस्बों के निवासियों को काफिलों में दौलताबाद भेजा जाए। देहली वालों के घर उनसे मोल ले लिये जाएं। इन घरों की कीमत खज़ाने से दौलताबाद जाने वालों को दे दी जाए। ताकि वे वहां जाकर अपने लिए घर बनवा लें।

शाही आदेशानुसार देहली तथा आसपास के निवासी दौलताबाद की ओर भेज दिये गये। देहली शहर इस प्रकार खाली हो गया। कुछ दिन तक देहली के सारे दरवाज़े बन्द रहे, शहर में कुत्ते बिल्ली तक न रह पाये।

देहली के निवासी जो वर्षों से वहां रहते चले आ रहे थे, लम्बी यात्रा के कष्ट से रास्ते में ही मर गये। बहुत से लोग, जो कि दौलताबाद पहुंचे अपनी मातृभूमि से बिछड़ने का दुख सहन नहीं कर सके। वे वापस होने की इच्छा में ही मर गये। यद्यपि सुल्तान ने देहली से जाने वाली प्रजा को अत्यधिक इनाम दिये, वह परदेस व कष्टों को सहन न कर सकी।

इसके बाद दूसरे प्रदेशों से आलिमों, सूफियों तथा प्रतिष्ठित व्यक्तियों को लाकर देहली में बसाया। मगर इस प्रकार लोगों के लाने से देहली आबाद न हो सकी।

लगभग पांच छः साल बाद सुल्तान ने आदेश दिया कि जो भी दिल्ली लौटना चाहता है वह लौट सकता है। कुछ लोग लौट गए मगर बहुत से परिवार दौलताबाद में ही बस गये।"

पुराने समय के इतिहासकार बरनी का यह वर्णन पढ़ कर तुम्हें सुल्तान मोहम्मद तुग़लक कैसा राजा लगा- अत्याचारी/ लोगों पर संदेह करने वाला/ बदला लेने की इच्छा रखने वाला/ राज्य के हित में सोच समझ के योजना बनाने वाला/ किसी की सलाह लिए बग़ैर काम करने वाला।

सुल्तान मुहम्मद तुग़लक ने अपनी राजधानी देहली से दौलताबाद क्यों हटाई– क्या कारण नज़र आता है?

क्या सुल्तान यह चाहता था कि लोगों को देहली से निकालते समय तरह-तरह के कष्ट पहुंचाये जाएं?
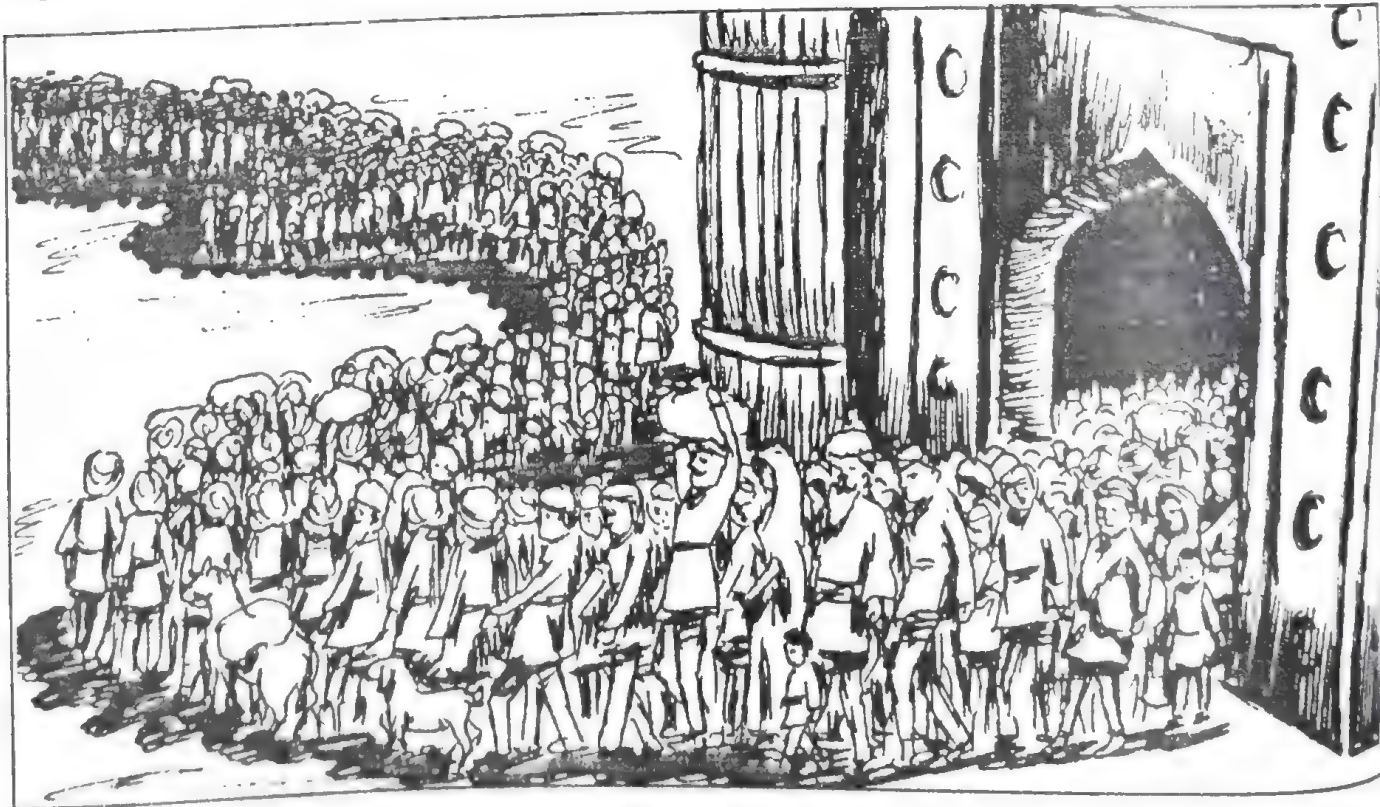
एसामी

एसामी ने अपनी किताब "फ़ुतुह उस सालातिन" में लिखा–

"सुल्तान को देहली वालों पर संदेह था और वह उनके लिए मन में विष छिपाये रहता था। उसने गुप्त रूप से एक कुत्सित योजना बनाई कि एक महीने में देहली का विनाश कर दिया जाये। उसने सूचना कराई कि- "जो कोई सुल्तान का हितैषी हो वह दौलताबाद की ओर प्रस्थान करे। जो कोई इस आज्ञा का पालन करेगा उसे अत्यधिक संपत्ति मिलेगी, जो कोई इसका पालन न करेगा उसका सिर काट डाला जाएगा।"

उसने आदेश दिया कि देहली में आग लगा दी जाए और सभी लोगों को नगर से बाहर निकाल दिया जाए। परदेवाली स्त्रियों तथा एकांतवासी सूफियों को उनके घरों से बाल पकड़कर निकाला गया। इस प्रकार वे लोग देहली से निकले।

मेरे दादा भी उसी शहर में रहते थे। उनकी उम्र 90 वर्ष थी और वे एकांतवासी संत थे। वे कभी अपने घर से नहीं निकलते थे। वे पहले पड़ाव में ही मर गये। उन्हें वहीं दफन कर दिया गया।

सभी बूढ़े, युवक, स्त्री तथा बालक यात्रा करने के लिए विवश थे। बहुत से बालक दूध बिना मर गये। अनेकों लोगों ने प्यास के कारण प्राण त्याग दिये। उस काफिले में से अत्यधिक कठिनाई सहन करके केवल दसवां भाग ही दौलताबाद पहुंच सका। सुल्तान ने इस तरह एक बसा हुआ शहर नष्ट कर डाला।

जब देहली में कोई न रह गया तो सारे द्वार बन्द कर दिये गये। सुना जाता है कि कुछ समय बाद उस नीच और अत्याचारी बादशाह ने आसपास के गांवों से लोगों को बुलाकर देहली को बसवाया। तोतों और बुलबुलों को बाग से निकालकर कौओं को बसा दिया।

न जाने सुल्तान को किस प्रकार उन निर्दोष लोगों पर संदेह उत्पन्न हो गया कि उसने उनके पूर्वजों की नींव उखाड़ डाली और आज तक उनकी सन्तानों के विनाश में तल्लीन है।"

पुराने समय के इतिहासकार एसामी का यह वर्णन पढ़ कर तुम्हें सुल्तान मोहम्मद तुग़लक कैसा राजा लगा- अत्याचारी/ संदेह करने वाला/ लोगों का भला चाहने वाला/ राज्य के हित में सोच समझ के योजना बनाने वाला/ किसी की सलाह लिये बगैर काम करने वाला।

सुल्तान मुहम्मद तुग़लक ने अपनी राजधानी दिल्ली से दौलताबाद क्यों हटाई - क्या कारण नज़र आता है?

क्या सुल्तान यह चाहता था कि लोगों को दिल्ली से निकालते समय तरह-तरह के कष्ट पहुंचाये जाएं?

तुमने बरनी का अंश पढ़ कर मुहम्मद तुग़लक के बारे में अपनी राय बनाई थी– कि वह कैसा राजा था और क्या चाहता था।

अपनी राय को एक बार फिर से पढ़ो। यह बताओ कि एसामी को पढ़ने के बाद तुमने अपनी राय क्या बदल दी? अगर हां तो बताओ कि तुमने अपनी राय क्यों बदली?

तुम्हारे ध्यान में यह बात आ गई होगी कि मुहम्मद तुग़लक की योजना के बारे में कुछ बातें ऐसी हैं जिन्हें बरनी भी कहता है और एसामी भी। जैसे सुल्तान ने लोगों को देहली से दौलताबाद जाने का आदेश दिया। यह बात दोनों की किताब में लिखी है।

पर देहली से दौलताबाद जाने की घटना के बारे में बरनी कई ऐसी बातें लिखता है जो एसामी नहीं लिखता। जैसे बरनी लिखता है कि सुल्तान अपने राज्य की राजधानी, बीचों बीच बनाना चाहता था, इसलिए उसने लोगों को दौलताबाद भेजा।

पर एसामी के अनुसार सुल्तान के मन में ऐसा विचार नहीं था। एसामी के अनुसार सुल्तान लोगों को कष्ट देना चाहता था। इसलिए उसने देहली खाली करवाई।

यह हमारे लिए परेशानी की बात है। अब हम यह कैसे जानें कि सुल्तान के मन में वास्तव में क्या विचार था? इस विषय में हम बहुत पक्की तरह से कुछ नहीं कह सकते हैं। ऐसी कठिनाई बहुत बार हमारे सामने आती है।

नीचे कई बातें लिखी हैं [illegible] और बताओ कि कौन सी बातें वे हैं जिन्हें बरनी भी कहता है और एसामी भी–

और कौन सी बातें वे है जो दोनों में से कोई एक जना ही कहता है:

1. जो लोग दौलताबाद गए उन्हें सुल्तान ने इनाम दिया।

2. देहली से दौलताबाद जाने में लोगों को काफी कष्ट

हुआ।

3. सबसे पहले सुल्तान के परिवार व प्रशासन के लोगों को भेजा गया। फिर सूफ़ी सन्तों और विद्वानों को भेजा गया, फिर एक साल बाद आम जनता को भेजा गया।

4. जिसने जाने से इनकार किया उसे मार डाला गया।

5. जो जाने को राज़ी था उसका घर खरीद लिया गया।

6. देहली में कई पीढ़ियों से रहने वाले पुराने लोगों को भेजा गया।

7. देहली को नए लोगों से बसाया गया।

सात में से कितनी बातें दोनों कहते हैं? उन बातों को कोई विद्यार्थी एक साथ पढ़ दे।

जो बातें दोनों जने लिखते हैं उनके बारे में तो हम सोच सकते हैं कि वे ज़रूर हुई होंगी। पर जो बातें एक ही व्यक्ति कह रहा है उनके बारे में हम झट से पक्की तरह नहीं कह सकते कि वे ज़रूर हुई होंगी।

कोई विद्यार्थी उन बातों को भी पढ़ दे जो बरनी या एसामी में से एक इतिहासकार ही कह रहा है।

बीते हुए समय के बारे में जब इतिहासकार आज लिखते हैं तो वे अक्सर इस कठिनाई से जूझते हैं। बीते समय के बारे में कुछ बातें तो पक्की तरह से कही जा सकती हैं, पर बहुत सी बातों के बारे में पक्की तरह से नहीं कहा जा सकता।

16. पुरानी इमारतें

लकड़ी से पत्थर तक

शिकारी मानव की तो गुफाएं थीं। पर, खेती की शुरुआत के समय लकड़ी व मिट्टी की झोपड़ियां थीं और सिन्धु घाटी के शहरों में ईंट के मकान थे। मनुष्य की इमारतें बनाने की कोशिश के ये उदाहरण तुमने देख लिए हैं।

सिंधु घाटी के शहरों के नष्ट होने के बाद बहुत लम्बे समय तक ईंट की इमारतें नहीं बनीं। लोग लकड़ी और मिट्टी से ही घर व इमारतें बनाते थे। लकड़ी के होने के कारण ये घर व इमारतें समय के साथ सड़ कर खत्म हो गईं। इनके बहुत कम निशान मिलते हैं। फिर भी जो निशान मिलते हैं उनसे जान पड़ता है कि जनपदों के समय में लकड़ी से बने घर, बागुड़ और तोरण द्वार का दृश्य कुछ ऐसा दिखता था – (चित्र-1)
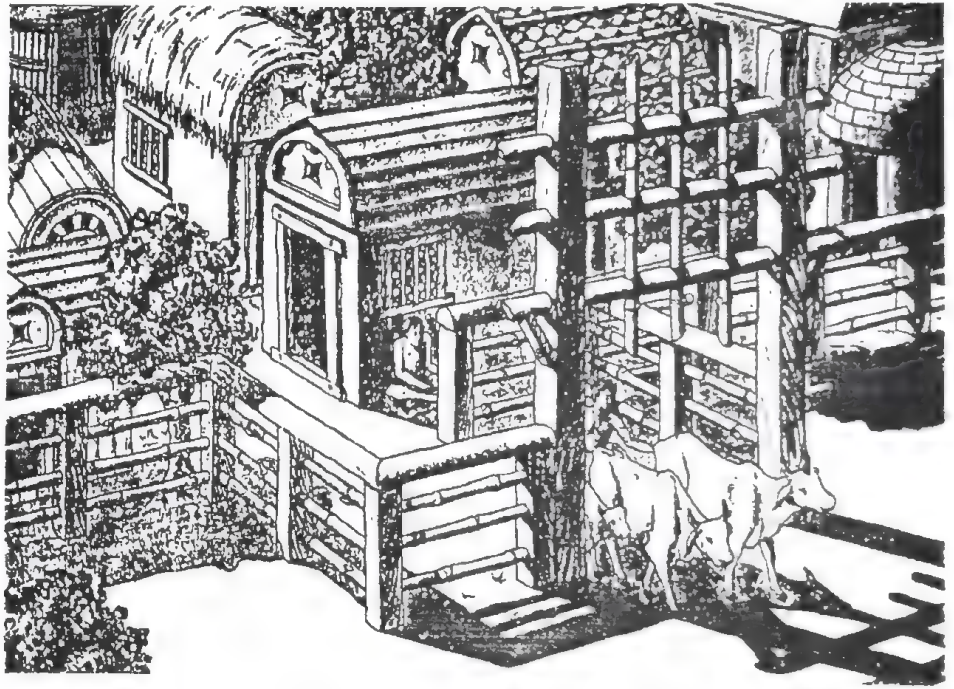
चित्र 1. लकड़ी का घर, बागुड़ और तोरण

तोरण द्वार व बागुड़ बनाने के लिए लकड़ियां कैसी जोड़ी गईं हैं– चित्र देखकर समझो। तुम आस-पास के पेड़ की डाली व टहनी जुटा कर ऐसा द्वार व बागुड़ (यानी रेलिंग) बनाओ।

बुद्ध की मृत्यु के बाद जगह-जगह उनकी अस्थियों के ऊपर स्तूप या गुम्बद बनाए गए। स्तूप मिट्टी की कच्ची ईंटों से या पत्थर के टुकड़ों से बने।

सांची का स्तूपः यह भोपाल से विदिशा जाने के रास्ते में पड़ता है। राजा अशोक के समय में यानी आज से 2300 साल पहले यह स्तूप बना था। भारत में जिन सबसे पुरानी इमारतों को हम आज भी देख सकते हैं उनमें से एक है सांची का स्तूप।

स्तूप अन्दर से खोखला नहीं है– ठोस है। उसके चारों तरफ रेलिंग (यानी बागुड़) और तोरण द्वार हैं- पर ये पत्थर के बने हैं। अब इमारत बनाने वाले कारीगर पत्थर से इमारतें बनाने की कोशिश करने लगे थे। पर

चित्र 2. सांची स्तूप

उन्हें लकड़ी के द्वार, बागुड़ आदि बनाने का ही ज़्यादा अभ्यास था। इसलिये शायद शुरू में उन्होंने लकड़ी के द्वार व बागुड़ की नकल करके ही पत्थर के द्वार व बागुड़ बनाए।

सांची के स्तूप के द्वार व बागुड़ का यह पास का दृश्य देखो। यह पहचानो कि पत्थर के टुकड़ों को उसी तरह जोड़ा है जैसे लकड़ी के द्वार व बागुड़ को जोड़ा गया था। यह क्या तरीका था? क्या जोड़ने के लिए सीमेन्ट चूने आदि का इस्तेमाल हुआ लगता है?

गुफा मंदिर

उन दिनों यद्यपि रहने के लिए तो इमारतें लकड़ी से ही बनती रहीं- ऐसे बड़े-बड़े महल तक लकड़ी से ही बनाए जाते थे– (चित्र-3) पर लकड़ी की बजाए पत्थर से इमारतें बनाने की कोशिश जारी रही। खास कर धार्मिक इमारतों को पत्थर से बनाने की कोशिश रही ताकि वे लंबे समय तक नष्ट न हो।
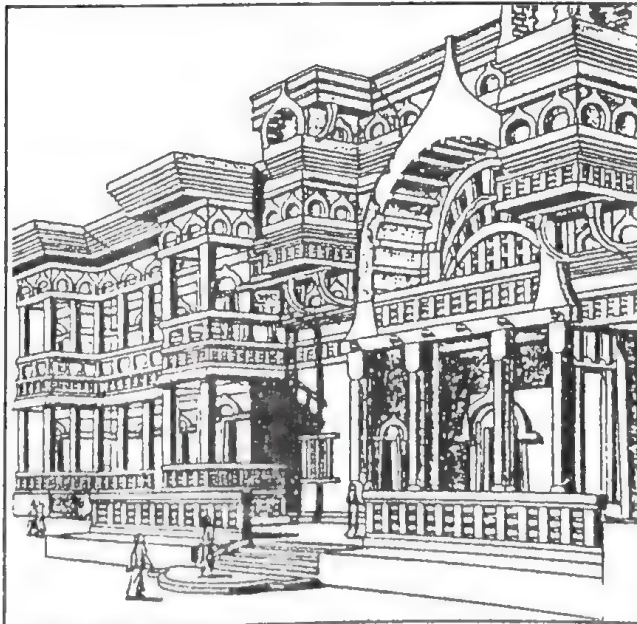
चित्र 3. लकड़ी का महल
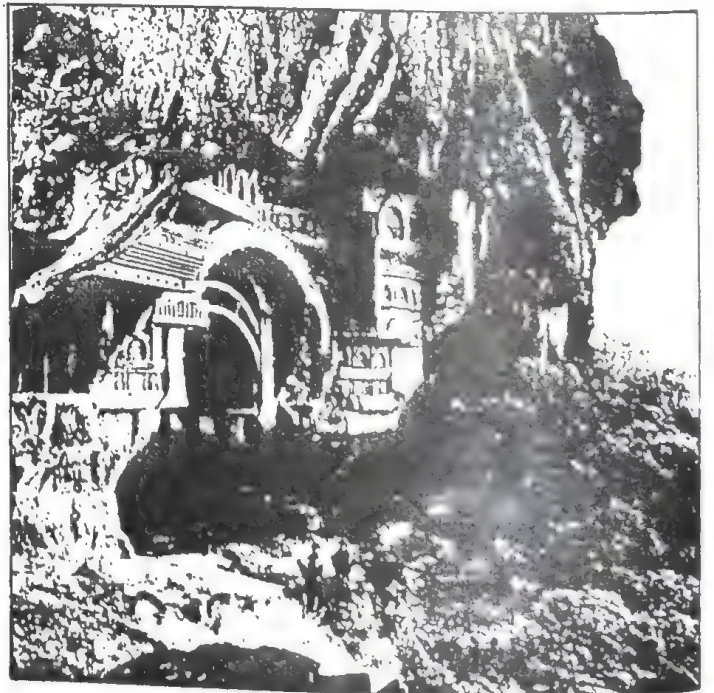
चित्र 4. भाज की गुफा

पर कैसे बनाएं पत्थर से इमारतें? कैसे पत्थर को निकाले, फोड़ें, काटें- क्या करें? उन दिनों कारीगर इस तरह अपना दिमाग बहुत लड़ाते होंगे। और देखो उन्होंने पत्थर से इमारतें बनाने की क्या तरकीब निकाली- हां पहाड़ ही खोद डाला। चट्टान खोद कर गुफा बनाई और उसी में अपनी छैनी हथौड़ी से खम्भे, दरवाजे, आले तराश दिए। जैसा घर वे लकड़ी से बनाते थे वैसा घर उन्होंने पहाड़ काट कर बनाने की कोशिश की। (चित्र-4) इस गुफा का चित्र तुम्हें लकड़ी के महल के चित्र जैसा दिख रहा है न?
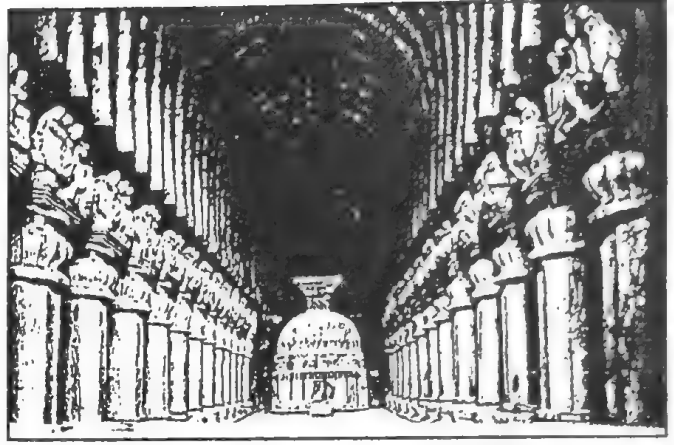
चित्र 5. कार्ले का चैत्य

सैकड़ों ऐसी गुफाएं बनाई गईं। बहुत सुन्दर गुफाएं। किन्हीं में बौद्ध भिक्षु रहते थे, किन्हीं में जैन मुनि रहते थे और किन्हीं में ब्राह्मण। ये गुफाएं विहार कहलाती थीं। फिर जब देवताओं की मूर्तियां बनने लगीं तो इन गुफाओं में मूर्तियां भी बनाई जाने लगीं। बौद्ध भिक्षुओं ने बड़ी गुफाएं कटवा कर उनके अन्दर स्तूप बनवाए। वे गुफा में स्तूप के सामने बैठकर प्रार्थना करते थे। इसे चैत्य कहा जाता था। ऐसे गुफा मंदिर व चैत्य व विहार तुम इन जगहों पर देख सकते हो- विदिशा के पास उदयगिरि, औरंगाबाद के पास अजिंठा, एल्लोरा और पुणे के पास कार्ले। अजिंठा गुफाओं के अन्दर वे रंगीन चित्र भी सुरक्षित हैं जो हज़ारों साल पहले किन्हीं चित्रकारों ने बनाए थे। उनमें अभी भी रंग दिखता है। पर तुम तो 10-20 हज़ार साल पुराने शिकारी मानव के बनाए चित्र भी देख चुके हो। कितनी पुरानी चीज़ें बची रहतीं हैं - हमसे अपने समय की बातें कहती रहती हैं।

पहाड़ काट-काट कर मंदिर और चैत्य बनने लगे थे- पर हर जगह पहाड़ नहीं हैं। क्या वहीं मंदिर आदि बनेंगे जहां पहाड़ हैं? क्या पत्थर से किसी भी जगह पर इमारत खड़ी नहीं की जा सकती?

चित्र 6 अजिंठा की गुफाओं का चित्र

चित्र 7. शुरू-शुरू के मंदिर - सांची स्तूप के पास

तरह-तरह के मंदिर

समय के साथ कारीगरों ने ऐसा सोचा होगा। और यह भी सोचा होगा कि चट्टानों के टुकड़े काट-काट कर उनसे इमारत खड़ी तो की जा सकती है, पर पत्थर एक के ऊपर एक कैसे खड़े रहेंगे? कुछ समय में ही लुढ़क-लुढ़का गए तो? जो भी डर व झिझक उनके मन में रही हो पर उन कारीगरों ने इस दिशा में कोशिश तो की।

चित्र 8. उड़ीसा का एक मंदिर
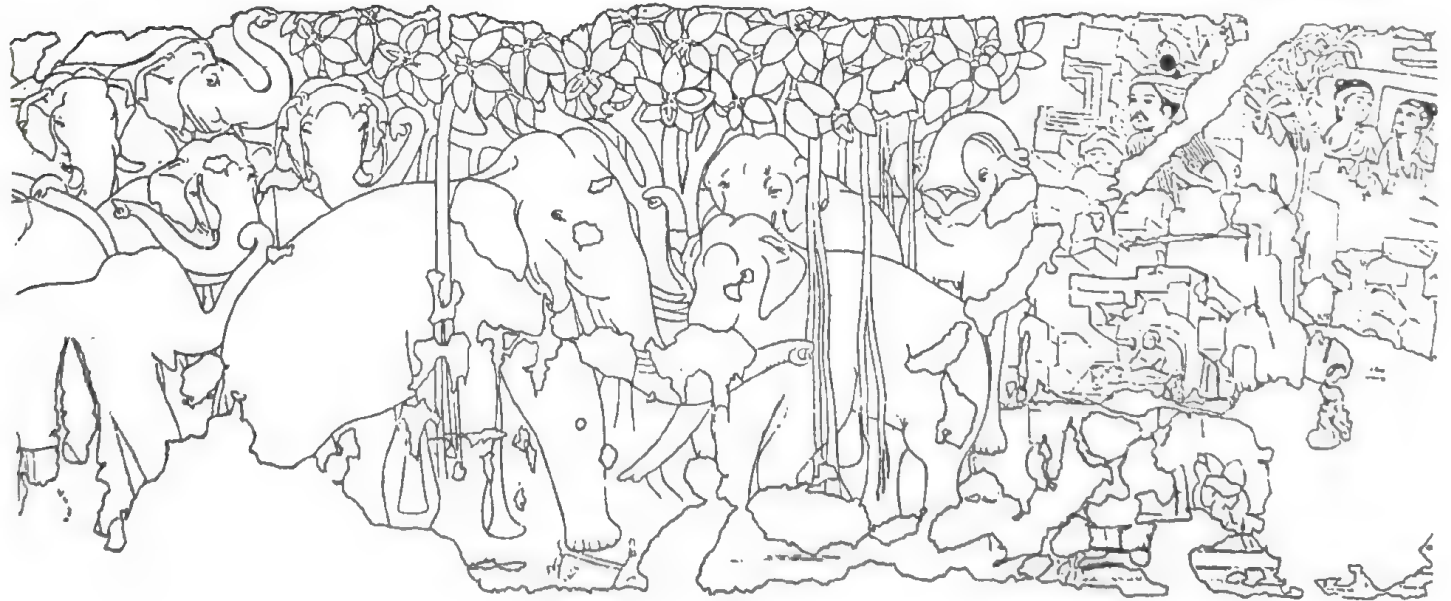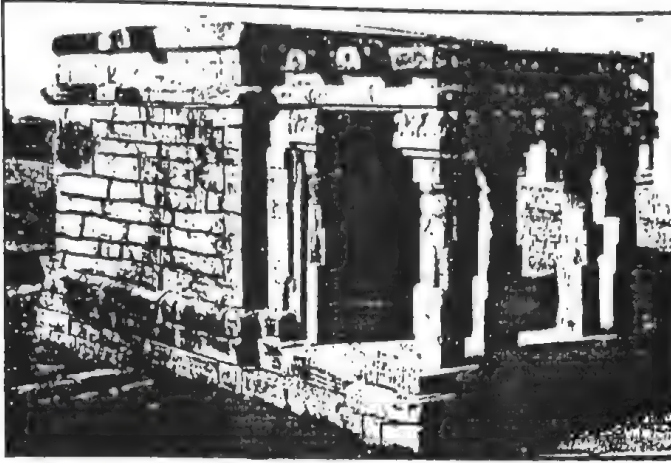
पहले छोटी और सरल सी इमारत बनाई। चित्र-7 देखो- यह मंदिर सांची में बुद्ध की मूर्ति रखने के लिए बनाया गया था। सबसे शुरू के मंदिर ऐसे बने थे। पत्थर की शिलाएं काट कर एक के ऊपर एक बड़ी सावधानी से रखी हैं। जिससे उनका संतुलन बना रहे- वे लुढ़क न जाएं, खिसक न जाएं। पत्थर को चूने व गारे के घोल से मज़बूती से जोड़ने की विधि उन दिनों के कारीगर इस्तेमाल नहीं करते थे। इस विधि क बग़ैर ही पत्थर इस तरह एक के ऊपर एक चढ़ाते जाते थे जिससे वे वर्षों तक टिके रहेंगे। एक दूसरे के भार से ही ये पत्थर सैकड़ों सालों तक सधे रहे हैं। आज भी तुम कई ऐसे मंदिर देख सकते हो। कभी देखने का मौका मिले तो ध्यान देना कि कैसे बहुत बड़ी-बड़ी इमारतें भी पत्थर के टुकड़ों को एक के ऊपर एक टिका कर खड़ी की गई हैं।
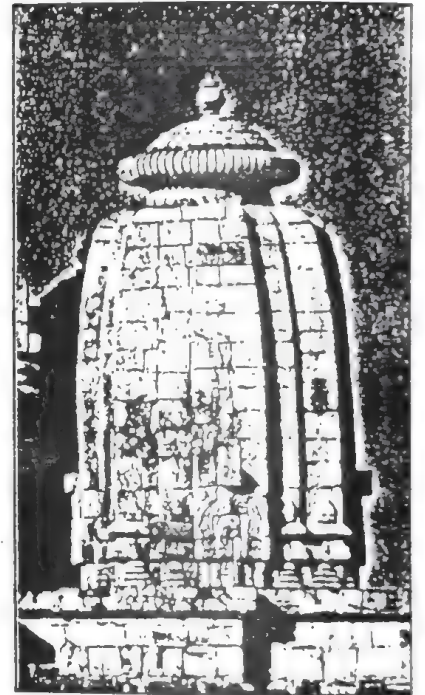
चित्र 9. तमिलनाडु का एक शिव मंदिर

पर इन मंदिरों में अचम्भे और आश्चर्य की सिर्फ यह बात नहीं है। पत्थरों पर तराशी गई मनुष्य और जानवरों की आकृतियां, फल, बेल-बूटे, और तरह-तरह के सुन्दर डिज़ाईन आदि बताते हैं कि उस पुराने समय के कारीगर कितने मंजे हुए कलाकार थे।

अब जब कहीं भी मंदिर आदि बनाए जा सकते थे, तो वाकई भारत के हर क्षेत्र में कई सुन्दर मंदिर बने। हर क्षेत्र के कलाकारों ने और राजाओं व सामन्तों ने अपनी पसन्द की शैली में मंदिर बनवाए।

यहां तुम उड़ीसा, खजुराहो और तमिलनाडु के मंदिरों की अलग-अलग बनावट पर ध्यान दो। यह भी देखो कि समय के साथ कारीगर पहले की तुलना में बहुत सुंदर और मुश्किल इमारतें बनाने लगे थे।

चि6 10. खजुराहो का कंडरिया महादेव मंदिर

शुरू-शुरू के सरल व छोटे मंदिर की तुलना में बाद के इन मंदिरों में अधिक कमरे व बरामदे हैं। शुरू के मंदिर में सिर्फ एक कमरा था जिसमें मूर्ति रखी जाती थी– (इसे गर्भ गृह कहा जाता है) और उसके आगे खम्भों वाला एक खुला बरामदा था। मंदिर की छत सपाट थी। चित्र में इन बातों पर ध्यान दो। इन बाद के मंदिरों में गर्भगृह (मूर्ति कक्ष) के सामने एक और कमरा बनने लगा- यह मण्डप कहलाता था- और उसके आगे फिर खम्भों वाला बरामदा बनता था। यह अर्द्धमण्डप कहलाने लगा। बाद के मंदिरों की छतें भी सपाट नहीं रहीं।

चित्र 11.(क)

कुशल व साहसी कारीगरों ने पत्थर की शिलाओं को इस तरह रखने की तरकीब निकाल ली थी कि छत के ऊपर एक शिखर उठता जाए। बिना चूने की जुड़ाई के इतना ऊंचा शिखर उठाना बहुत जोखिम का काम था। पर उन कारीगरों ने यह जोखिम उठाने का साहस ही नहीं किया, उन्होंने इस शिखर को तराश कर खूबसूरती से सजाया भी।
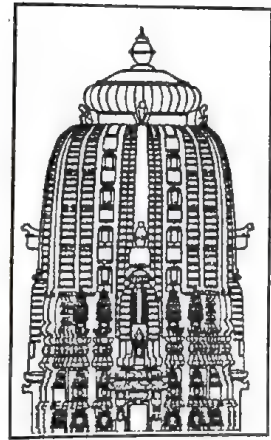
तुमने तमिलनाडु, उड़ीसा और खजुराहो के मंदिरों के जो चित्र देखे हैं उनमें शिखर की बनावट पर खासतौर से गौर करो। शिखर बनाने की शैली तीनों में अलग है। देखें तुम इन तीन शैलियों को अलग-अलग पहचान सकते हो या नहीं.....
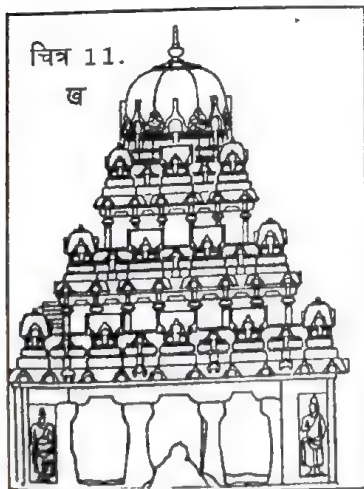
चित्र 11. ख

तुम्हारे आसपास जो पुराने मंदिर हैं उनकी बनावट किस शैली से मिलती जुलती है?

क्या उन मंदिरों में गर्भगृह (—कक्ष) मण्डप व अर्द्धमण्डप, तीनों बने हुए हैं?

चित्र 11. ग

चित्र 12. गुंबद

चित्र 13. मेहराब

चित्र 14. मीनार
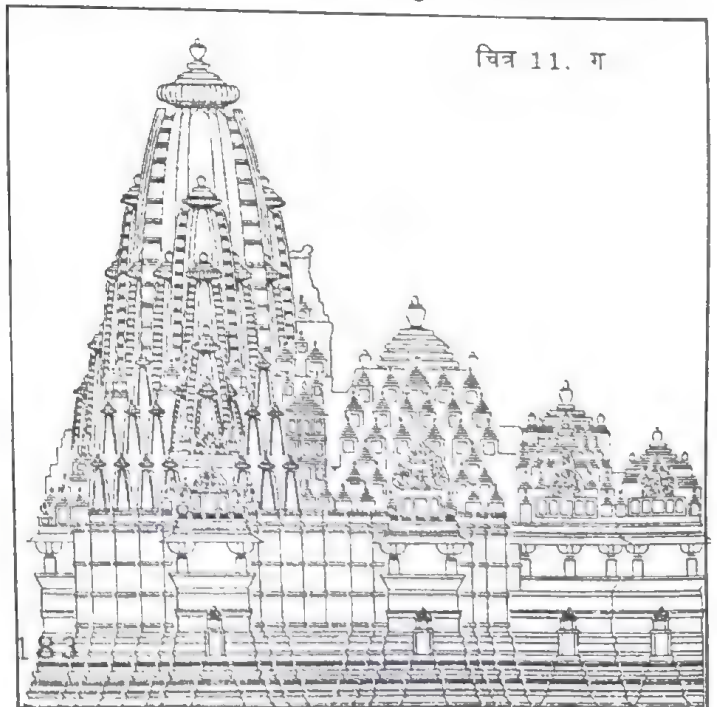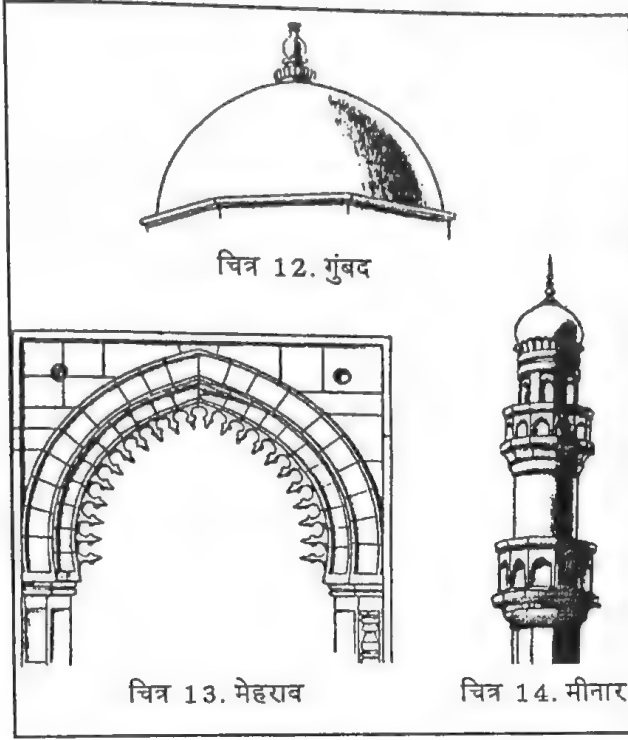
इस्लामी इमारतें

ईरानी व ईराकी कारीगर जब भारत आए तो अपने साथ इमारत बनाने की एक नई विधि लेते आए। वे अपनी इमारतें कैसे बनाते थे– उनके चित्र तुम पिछले पाठों में देख चुके हो।

क्या कोई ऐसी बातें नज़र आईं जो स्तूपों, मंदिरों में तुमने देखी ही नहीं थीं?

मुसलमानों की इमारतों की तीन खास बातें थीं। मेहराब, गुम्बद और मीनार। मेहराबें, गुम्बद व मीनारें उनकी सब इमारतों में देखे जा सकते हैं।

मस्जिद में मीनार से क्या किया जाता है, याद आया?

चूने और गारे के घोल से पत्थर या ईंट की मज़बूत जुड़ाई कर के ही मेहराबें व गुम्बद बनाए जा सकते हैं। ये चित्र एक मेहराब के पत्थरों को दिखाता है– देखो कि पत्थर कैसे एक दूसरे से जोड़े गए हैं। चूने की जुड़ाई के बिना क्या मेहराब का ऊपरी हिस्सा बनाया जा सकता है?

इसी तरह ये गुम्बद ठोस नहीं है। अन्दर से खोखला है। ठोस गुम्बद तो चट्टान को काटकर बनाया जा सकता है। या पत्थर के टुकड़ों को एक के ऊपर एक रख के भी गोल स्तूप बनाया जा सकता है। पर अन्दर से खोखला गुम्बद बनाने के लिए जुड़ाई के बिना काम नहीं चलेगा। ईरान व ईराक के कारीगर ईंट या पत्थर के टुकड़ों को चूने से जोड़-जोड़ कर ऐसे गोल गुम्बद बनाते थे।
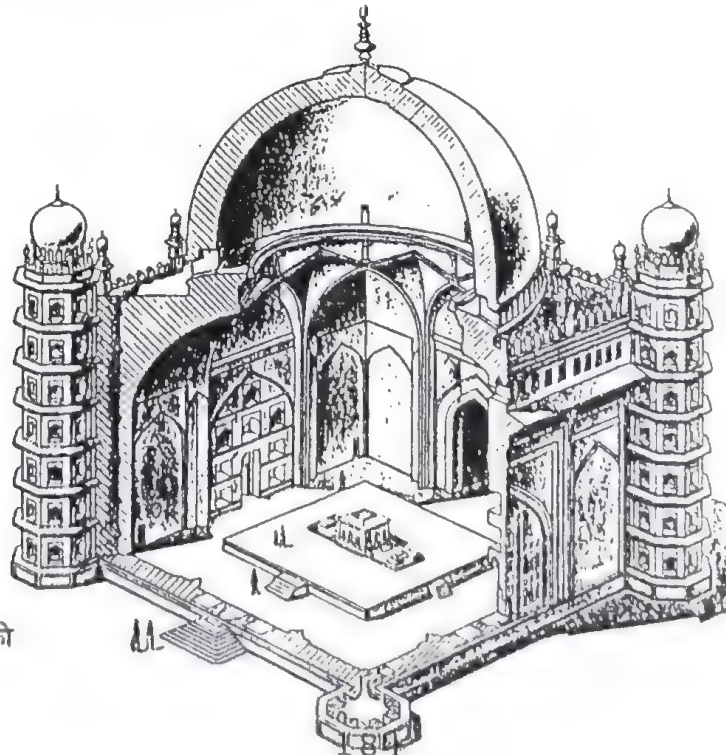
चित्र 15. अंदर से देखो गुंबद को
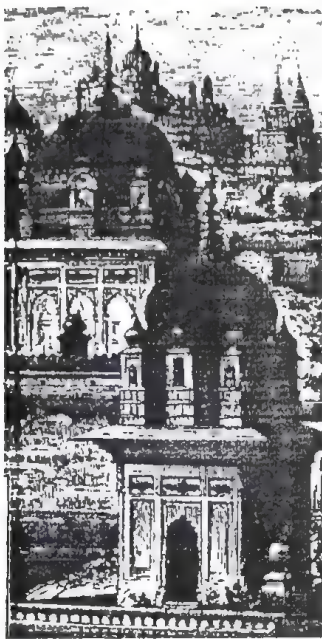
चित्र 16. सोनगढ़ के मंदिरः इनमें मीनार, गुंबद और मेहराब पहचानो
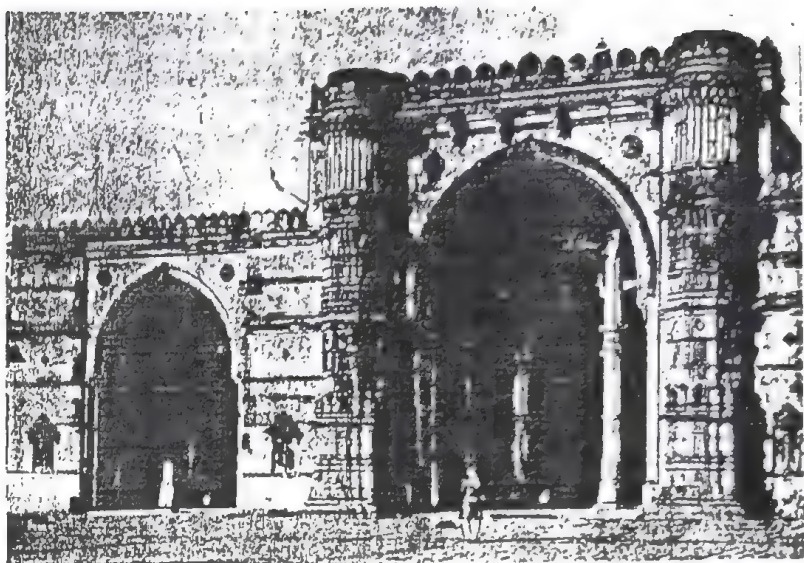
चित्र 17. अहमदाबाद की मस्जिद में खंभे

मिली-जुली शैलियां

ईरानी व ईराकी कारीगरों से ये बातें भारत के कारीगरों ने सीखीं। उन कारीगरों ने भी भारत के कारीगरों के हुनर सीखे। मंदिरों में मेहराबें व गुम्बद बनने लगे। और कई मस्जिदों में पत्थर पर पत्थर रख कर तराशे हुए खम्भे बनने लगे। पिछले पाठों में तुमने तुर्कों के आने के बाद बनी मस्जिद आदि के चित्र देखे थे। उनमें मीनारें, मेहराबें और गुम्बद पहचानो।

तुम्हारे आस-पास जो मंदिर व मस्जिद हों उनमें भी इन चीज़ों को पहचानो।

अभ्यास के प्रश्न

1. सही-सही जोड़ो–

सबसे पहले	-	चूने की जुड़ाई से मेहराबें, गुम्बद, मीनारें,
फिर	-	लकड़ी की इमारतें
उसके बाद	-	गुफा रूपी इमारतें
उसके बाद	-	पत्थर के टुकड़ों से बनीं इमारतें।

2. सामन्तों के समय के कारीगर मंदिरों में मेहराबें और गुम्बद क्यों नहीं बनाते थे?
3. लकड़ी का महल और भाज की गुफा बनाने में कारीगरों ने एक चीज़ बदली–एक चीज़ पहले जैसी रही। जानते हो क्या? सही विकल्प चुनो - इमारत बनाने की विधि/इमारत की बनावट।
4. "एक पुराना शहर" पाठ में जो मंदिर बना है उनमें ये चीजें पहचानो- शिखर, गर्भगृह, मण्डप, अर्द्धमण्डप।

नागरिक शास्त्र

याद करें पिछले साल की बातें

खाली स्थान भरोः

पिछले साल हम ने खेती, किसानों और खेतिहर मज़दूरों के बारे में पढ़ा। तरह-तरह के किसानों से हमारी पहचान हुई। ——— (छोटे किसान/बड़े किसान) स्वयं या अपने परिवार वालों की मेहनत से खेती करते हैं जबकि ———— (छोटे किसान/बड़े किसान) मज़दूरों से काम करवाते हैं।

गांव और शहरों में सुविधाओं के प्रबन्ध के बारे में भी हमने जाना। ———— (पंचायत/नगरपालिका) गांव की समस्याओं की देख-रेख करती है। यदि वह ठीक से काम न करे तो ———— (मुख्यमंत्री/सरपंच/पंचायत इंस्पेक्टर) को शिकायत की जा सकती है। छोटे नगरों में सुविधाओं का प्रबन्ध ———— (नगर पालिका/नगर निगम/पंचायत) करती है और बड़े नगरों में ———— (नगर पालिका/नगर निगम/पंचायत) सुविधाओं का प्रबन्ध करती है।

जिले में काम करने वाले पुलिस विभाग, ——— विभाग, ———— विभाग— ———— विभाग होते हैं। पूरे जिले की देख रेख ——— करता है।

खेती की उपज और उसकी बिक्री के बारे में भी हम पढ़ चुके हैं। गेहूं, धान, चना, सोयाबीन और ऐसी बहुत सी फसलें थोक में ——— (हाट/मण्डी) में बेची जाती हैं। फुटकर में कृषि उपज ——— में बिकती है। खेती की उपज के अलावा हाट में तुमने ——— (कारीगर, मज़दूर, कर्मचारी) द्वारा बनाई गई चीज़ें और —— —— (घर पर, बाज़ार में, कारखाने में) बनी चीज़ें भी बिकती देखीं।

1. उद्योग

हमारे देश में बहुत सारे लोग खेती का काम करते हैं। 100 में से 60-65 लोग खेती के काम में ही लगे हैं। खेती के अलावा और भी कई काम हैं जो लोग अपनी जीविका के लिए करते हैं। खेती में चीज़ें ऊगाई जाती हैं, बनाई नहीं जाती हैं। पर हमारे काम की बहुत सी चीज़ें हैं जो दूसरी चीज़ों से बनाई जाती हैं।

नीचे दी गई वस्तुओं में से ऐसी वस्तुएं छांटो जो खेतों से प्राप्त नहीं होती हैं पर किसी और वस्तु से बनाई जाती हैं–

गेहूं, जूते-चप्पल, किताब, मटके, धनिया, ज्वार, शक्कर, सेव, साइकिल, गन्ना, आम, कपड़ा, चश्मा, कुर्सी, मोटर, तेल, हल-बखर, कढ़ाई, आलू, टोकरी, सूपा, प्याज़।

जैसे फसल उगाना खेती का काम है, चीज़ें बनाने का काम उद्योग का काम है। जो चीज़ें उद्योग में बनती हैं, उन्हें उद्योग के उत्पादन (यानी उद्योग में बनाई जाने वाली वस्तुएं) कहते हैं। जो चीज़ें तुमने दी गई सूची में से छांटी, वे सब उद्योग के उत्पादन हैं।

इन चीज़ों के अलावा उद्योग के उत्पादनों की जितनी लम्बी सूची तुम बना सकते हो बनाओ–

कच्चा माल

उद्योग में बनने वाली चीज़ें किसी और चीज़ से बनती हैं। जैसे कपड़ा कपास से बनता है, कागज़ लकड़ी से बनता है, आदि। जिस चीज़ से उद्योग में कोई और चीज़ तैयार होती है, उसे तैयार वस्तु का कच्चा माल कहते हैं। कपास, कपड़े का कच्चा माल है, लकड़ी कागज़ का कच्चा माल है और कागज़ किताब का कच्चा माल है।

पहले दी गई सूची में तुमने जो उद्योग की वस्तुएं छांटी थीं उनका कच्चा माल नीचे की तालिका को कापी में उतारकर भरो।

	तैयार वस्तु	कच्चा माल
1.	कपड़ा	कपास
2.	किताब	कागज़
3.		
4.		
5.		

(एक उद्योग में एक से अधिक कच्चा माल भी हो सकता है जैसे साइकिल या मोटर में)

जिस तरह खेती में कई लोग काम करते हैं, उसी तरह उद्योग में भी कई सारे लोग काम करते हैं। पर भारत में खेती की तुलना में उद्योग में कम लोग काम करते हैं। यहां पर 100 काम करने वाले लोगों में से 10 लोग ही उद्योग का काम करते हैं। 100 में से बाकी 25 लोग अन्य काम करते हैं- जैसे ट्रक चलाना, इलाज करना, व्यापार आदि।

उद्योग में तरह-तरह की चीज़ें बनती हैं और उनमें तरह-तरह के लोग भी काम करते हैं।

आगे कुछ चित्र दिए हुए हैं। कौन से चित्र उद्योग का काम करने वाले लोगों के हैं? ये लोग क्या बना रहे हैं?

उद्योग में उत्पादन कई तरह से होता है। बेचने के लिए कोई वस्तु बनाना, यही हर उद्योग का काम है, चाहे उत्पादन बनाने वाले के घर पर हो रहा हो या कारखाने में। स्वयं या घर के लिए कोई चीज़ बनाना उद्योग का काम

नहीं कहलाता। अगले पाठों में हम कुछ अलग-अलग तरह के उद्योगों की सैर करेंगे और समझेंगे कि वहां काम कैसे होता है? कौन-कौन काम करते हैं इनमें? क्या-क्या अंतर हैं इन उद्योगों में।

उद्योग से संबंधित कई सारे शब्द हैं। कुछ तो उद्योग में काम कर रहे लोगों के नाम हैं, जैसे— मालिक, मज़दूर, कारीगर, सुपरवाईज़र, मैनेजर, दलाल, परमानेन्ट और टेम्परेरी मज़दूर। ये नाम तुमने सुने भी होंगे। फिर उद्योग के काम से संबंधित कई शब्द हैं - कच्चा माल, औज़ार, प्रक्रिया, कारखाना, प्रदूषण, रसायन, मशीन, शेड .... इन शब्दों का क्या मतलब है यह भी आगे के पाठों को पढ़कर कुछ समझ में आयेगा।
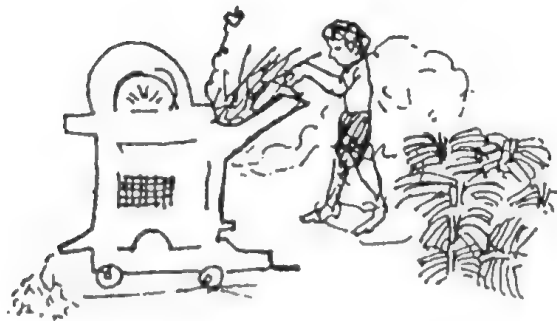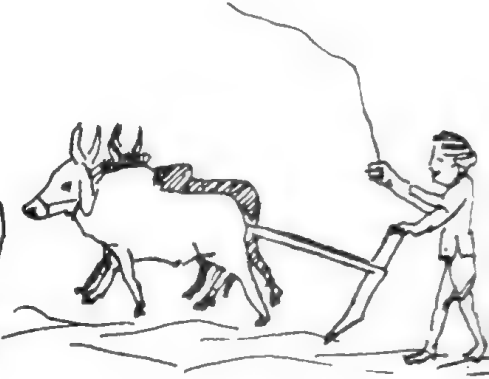
2. कसेरा : एक दस्तकार

(या कारीगर)

शाम का समय है। ठक-ठक-ठक-ठक दूर से ही आवाज़ गूंज रही है। कसेरे मोहल्ले की गली में खड़े हो तो बात करना मुश्किल हो जाता है।

पर ये ठक-ठक की आवाज़ है किसकी? इन 8-10 घरों के सामने बैठ कर कसेरे लोहे और लकड़ी के हथोड़ों से पीतल की चादर पीट रहे हैं। कोई बटलोई (पीतल का घड़ा) का पेंदा मोड़ रहा है, तो कोई ऊपर का भाग। कोई कुड़ा बना रहा है तो कोई बनी हुई बटलोई पर सुन्दरता के लिए मुठार चढ़ा रहा है। इसी से ठक-ठक की आवाज़ सुनाई दे रही है।

दस्तकार कैसे काम करते हैं- चलो यह पता करने के लिए कसेरों के बारे में जानें।

परिवार ने मिलकर घर पर बर्तन बनाए

बंसीलाल और उसका परिवार भी कसेरा मोहल्ले में रहते हैं। बंसीलाल बटलोई, कुड़ा (अनाज का नाप) तपेले (पतीली) आदि बनाता है। उसके साथ उसका भाई और दो लड़के भी काम करते हैं।

घर पर ही बर्तन बनाने का काम सुबह 6 या 6.30 बजे से शुरू हो जाता है। काम की जगह घर के सामने वाले भाग में है। बल्ला-बल्ली, मोगरी, लोनी कई सारे छोटे-छोटे औज़ार लेकर वे अपनी जगह पर बैठ जाते हैं। कठेलना (लोहे का एक गोल सा रिंग) तो वहीं जमीन में गढ़ा हुआ है। बर्तन रखकर ठोकने के लिए छोटे-बड़े सरिए भी जमीन में गढ़े हुए हैं। इन्हीं के पास बैठकर काम होता है। अंगारों की भी दो जगहें हैं जिन पर झलाई (पीतल के दो भागों को जोड़ने) का काम होता है।

बंसीलाल, उसका भाई मन्नूलाल और दोनों बेटे रामेश्वर और अर्जुन चाय पीकर, अपने औजार लेकर

चित्र 1. कसेरे के काम करने की जगह

काम की जगह पर बैठ गए। आज वे लोग बटलोई बना रहे हैं। बटलोई तीन भागों में होती है। नीचे का पेंदा, बीच का भाग और फिर बटलोई का मुंह। तुम्हारे घर पर बटलोई हो तो उसे ध्यान से देखना।

रामेश्वर और अर्जुन बटलोई के पेंदे के भाग को पीट-पीट कर बड़ा कर रहे हैं। यह भाग पीतल की गोल चादर को मशीन से दबाकर बनाया जाता है। बंसीलाल और मन्नूलाल बटलोई के बीच के भाग को ठोंक-ठोंक कर मोड़ रहे हैं। यह भाग पीतल की गोल चादर को ही पीटकर बनाया जाता है।

बंसीलाल, मन्नूलाल और बंसीलाल के दो बेटे मिलकर एक दिन में 8-10 बटलोई के पेंदे और बीच के भाग

पीतल की चादर को ठोंक पीटकर तैयार करते हैं। फिर ऊपर के भाग में एक गोल छेद किया जाता है, जिसमें मुंह बिठाया जाएगा।

बटलोई के मुंह को ध्यान से देखो। क्या यह भी पीतल की चादर को ठोंक पीट कर बनाया गया लगता है? नहीं! बटलोई के मुंह बंसीलाल और मन्नूलाल और उनके जैसे कसेरे नहीं बनाते। ये मुंह पीतल को पिघला कर और ढाल कर बनाए जाते हैं। ढलाई का काम मोहल्ले में केवल एक ही घर में होता है।

अगले दिन झलने का काम होना है। सुबह से ही अंगारे तैयार करने का काम शुरू हुआ। पहले बीच के भाग में जो छेद काटा गया था, उसमें मुंह बिठाकर झाला गया। ये काम मन्नूलाल और बंसीलाल कर रहे थे। दूसरे अंगारे पर रामेश्वर और अर्जुन बैठे थे। उन्हें बंसीलाल और मन्नूलाल बीच का भाग देते जाते (जिसमें मुंह झाला हुआ था) और वे दोनों बीच और नीचे के भाग को आपस में झल देते।

केवल ग़लत वाक्यों को सुधारकर लिखो।
क) बंसीलाल ने काम के लिए मज़दूर रखे।
ख) बंसीलाल उधार से औज़ार लाने के लिए व्यापारी के पास गया।
ग) कसेरा अपने घर पर काम करता है।

चित्र 2. कसेरे के अपने औज़ार

बटलोई के तीन भाग कौन से होते हैं और उन्हें कैसे बनाया जाता है?

बटलोई के तीनों भाग झाल दिए गए हैं। अब बटलोई चमकाई जाएगी। बटलोई को चमकाने के लिए उसे राल से खरात पर चिपका कर घुमाते हैं। खरात के साथ-साथ बटलोई भी घूमती है। बटलोई घूमती जाती है और ये लोग लोनी और चमक के रुंदे से उसकी छिलाई करते हैं। देखते ही देखते बटलोई चमक उठती है।

चाहे पीतल की चादर मोड़ने का काम हो, चाहे झलने का, चाहे चमकाने का- ये लोग सुबह छः बजे से जो लगते हैं रात को नौ बजे से पहले फुरसत नहीं पाते। बस 10-11 बजे भोजन करने के लिए घंटे दो घंटे के लिए काम छोड़ते हैं और थोड़ी देर शाम को नाश्ते के लिए। 40 किलो, यानी 10 बटलोई, वे दो दिन मे तैयार कर लेते हैं।

चित्र 3. बटलोई के बीच का भाग मोड़ते हुए

कसेरे के बटलोई बनाने के काम को क्रम से जमाओ

1) बटलोई के पैंदे को झलना

2) पैंदे को तैयार करना

3) बीच के भाग को तैयार करना

4) चमकाना

5) मुंह बिठाकर झलना

बंसीलाल का परिवार बटलोई का एक हिस्सा बनाने के लिए दूसरे परिवार पर निर्भर है। वह कौन सा हिस्सा है?

गुरुजी से चर्चा करो कि 'पिघलाकर ढालने' और 'पीट-पीटकर बड़ा करने' से क्या अंतर है।

बंसीलाल के भाई ने बर्तन बेचे

8 दिनों में काफी सारा माल तैयार हो गया। बटलोई, कुड़े, तपेले। अब मन्नूलाल सब माल लेकर शहर के एक व्यापारी के यहां गया। व्यापारी ने क्या उससे पूरा माल नगद में खरीदा? नहीं - नए बर्तनों के बदले में कुछ पुराना पीतल दिया और कुछ पैसे दिए। पहले तो उसने हर एक चीज़ तौली-बटलोई अलग, तपेले अलग और कुड़े अलग। जितना पीतल का वजन था उतना ही पुराना पीतल व्यापारी ने तौल कर मन्नूलाल को दिया।

यह पुराना पीतल व्यापारी के पास आया कहां से? जो लोग व्यापारी के पास पीतल के नए बर्तन खरीदने आते हैं, वे घर पर पड़े पुराने टूटे-फूटे पीतल के बर्तन व्यापारी को देते हैं। व्यापारी इस से कुछ कम वज़न के नए पीतल के बर्तन खरीददार को देता है, और बनवाई के पैसे अलग लेता है।

तुम्हारे गाँव या शहर में पीतल के बर्तन बेचने की दुकान हो तो वहाँ जाकर पता करना कि पुराने पीतल के बर्तन के बदले में नया पीतल किस प्रकार बिकता है।

व्यापारी ने तो हर चीज़ अलग-अलग तौली थी। ऐसा क्यों? उसने मन्नूलाल को सिर्फ पुराना पीतल ही नहीं दिया, वस्तु की बनवाई के पैसे भी दिए। बनवाई के पैसे हर वस्तु के लिए अलग-अलग होते हैं।

1994 में कसेरे को मिलने वाले बनवाई के पैसे

वस्तु	बनवाई के पैसे
बटलोई	30 रु. किलो
कुड़ा	35 रु. किलो
तपेला	30 रु. किलो

छोटी-बड़ी बटलोई मिलाकर मन्नूलाल12 बटलोई बेचने ले गया था। कुल वज़न 72 किलो था तो मन्नूलाल को 72 किलो पुराना पीतल और बटलोई की बनवाई 72 X 30 = 2160 रु. मिले। पैसे और पीतल लेकर मन्नूलाल घर पहुंचा। तब उसके घर पर काम चालू था। बंसीलाल और उसके लड़के काम कर रहे थे।

उसने अपने भाई बंसीलाल के साथ बैठकर हिसाब किया। बर्तनों के लिए मिले पैसों में से कुछ रुपये बंसीलाल ने पीतल की नई चादर लेने के लिए अपने पास रख लिए। मन्नूलाल ने 72 किलो का माल बेचा था और 72 किलो पुराना पीतल लेकर आया था। 18 किलो पीतल बटलोई के मुंह ढलवाने के लिए उसने अपने पास रख लिया। बाकी पीतल नई चादरों के लिए बंसीलाल को दिया।

चित्र 4. बीच और नीचे के भाग की झलाई

चित्र 5. बटलोई को खरात पर चमकाया जा रहा है

व्यापारी के पास पुराना पीतल कहां से आता है?

कसेरे के पास पुराना पीतल कहां से आता है?

कसेरा पुराने पीतल का क्या करता है?

बंसीलाल पीतल की चादरें खरीदने गया

बंसीलाल 2 दिन बाद पीतल की चादर लेने चीचली गया। ट्रक में लादकर अपने साथ पुराना पीतल ले गया। ट्रक वाले को 50 रु. दिए। चीचली में पीतल की गोल चादर बनाने और इन चादरों को दबाकर बटलोई के पैंदे बनाने के कारखाने भी हैं। इन कारखानों में पुराना पीतल लिया जाता है। पैंदे की चादर मशीन से दबा कर गहरी भी की जाती है।

कारखाने के एक शेड में पुराना पीतल तौला जा रहा है। दूर-दूर से कई कसेरे पीतल लेकर आए हैं। जितना भी पीतल तुलता है, उसी वज़न के पीतल की नई चादरें तौल कर कसेरे को दी जाती हैं। चादरें अलग-अलग मोटाई (जिसे गेज कहते हैं) की होती हैं। जिसे जिस मोटाई की चादर चाहिए, वह छांट कर तुलवा लेता है।

पीतल की नई चादर के लिए पुराने पीतल के अलावा कसेरे को कुल 12 रु. प्रति किलो के हिसाब से नई चादर की बनवाई के लिए पैसे भी देने होते हैं। बंसीलाल ने 100 किलो की छोटी-बड़ी चादरें लीं। उसे इन चादरों के लिये 1200 रुपये देने पड़े।

ये चादरें ट्रक पर लदवाकर वह वापस घर पहुँचा। ट्रक वाले को भी 50 रुपये सामान लाने का भाड़ा दिया। इस बीच उसके घर पर उसके लड़के और मन्नूलाल बटलोई, तपेला बनाने का काम कर रहे थे।

पुराना पीतल जो बाकी बचा था, मन्नूलाल ने छगन कसेरे को बटलोई के मुंह ढलवाई के लिए दिया। छगन और उसका भाई लल्लन, मन्नूलाल के घर के सामने रहते हैं और ढलाई का ही काम करते हैं। ये लोग बटलोई, तपेला नहीं बनाते।

इस तरह मन्नूलाल और बंसीलाल के यहां बर्तन बनाने का सामान फिर से इकट्ठा हो गया- पीतल की चादर, बटलोई के पैंदे और बटलोई के मुंह। अब वह इन चीज़ों से नए बर्तन बनाएगा और फिर यह चक्र शुरू होगा: जैसे कि तुम अगले पृष्ठ पर दिए गए चित्र में देख सकते हो।

चित्र मे तीन खाली स्थान हैं। चक्र को समझते हुए इन्हें भरो।

नीचे इस चक्र का वर्णन दिया है। परन्तु इस चक्र में कुछ चीज़ें छूट गई हैं- सही विकल्प चुनकर खाली स्थान में भरो।

(पीतल की चादर, कुड़ा, तपेला, बटलोई, व्यापारी, पीतल के कारखाने, पुराना पीतल, बटलोई के मुंह।)

एक हफ्ते या दस दिन में नए बर्तन तैयार करके मन्नूलाल इन्हें ---- के पास बेचने जाएगा। उसके यहां से वह ------- लाएगा। इसे बंसीलाल ------------ ले जाएगा। वहां से ---------- ले कर आएगा।

मन्नूलाल छगन को पुराना पीतल देकर---------- बनवाएगा। फिर इन सब चीज़ों से बंसीलाल और मन्नूलाल का परिवार ---------- और ---------- बनाएगा।
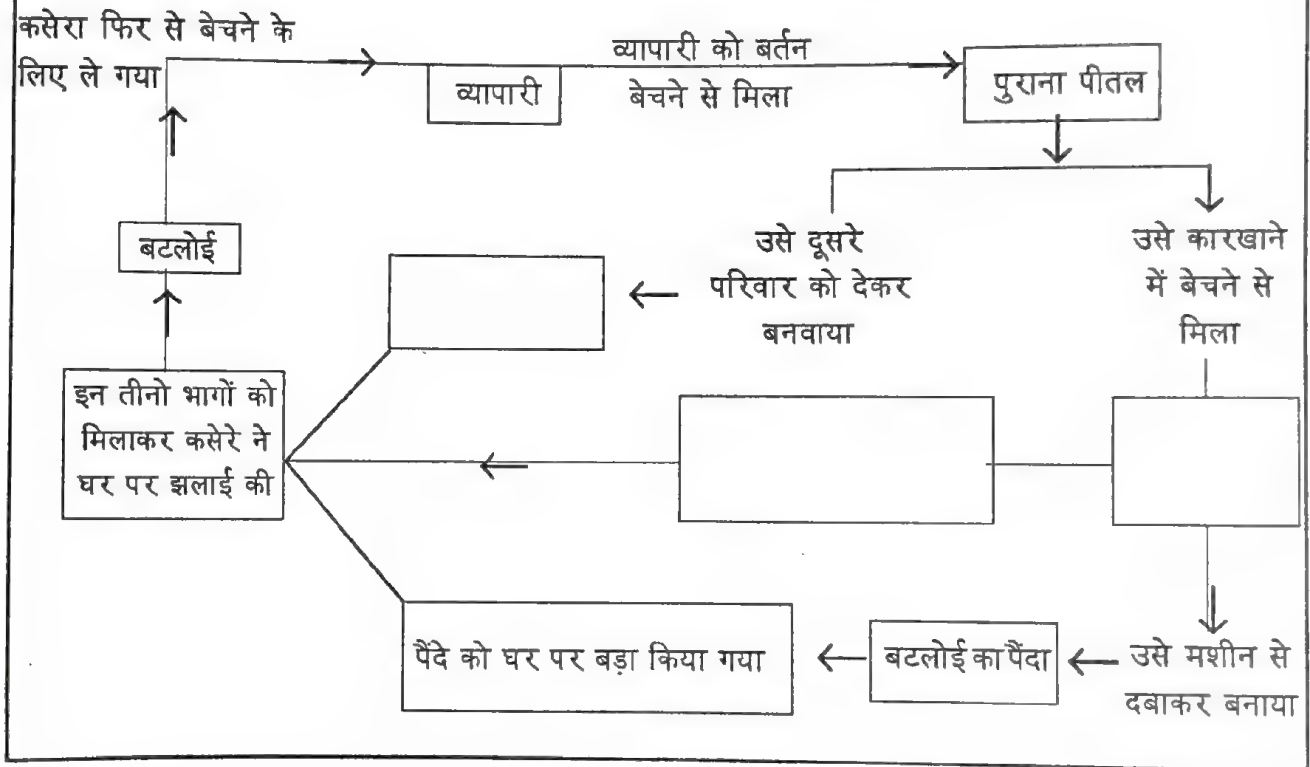
आमदनी और खर्च

तुमने देखा था कि मन्नूलाल और बंसीलाल के परिवार में 4 लोग कसेरे का काम करते हैं। जो बर्तन मन्नूलाल बेचने गया था, वे उसके परिवार ने मिलकर 5 दिन में बनाए थे।

व्यापारी से जो पैसे मिले उन पैसों से बंसीलाल और मन्नूलाल के घर का खर्च चलता है। कभी-कभी कुछ बचत भी हो जाती है। उनके घर पर कुल12 सदस्य हैं।

परन्तु हमेशा कसेरों की आमदनी एक सी नहीं होती है। मन्नूलाल और बंसीलाल का परिवार दो दिनों में करीब 40 किलो पीतल के बर्तन तो बना सकता है, पर हमेशा इतने बर्तन बिकते नहीं है। कभी हफ्ते भर में व्यापारी 100 किलो का माल ही लेता है, तो कभी महीने भर में 200 किलो का। यह बात जुड़ी हुई है खेती से। जब फसल अच्छी होती है तब कसेरों का धंधा भी अच्छा चलता है। फसल खराब होती है तो मंदा पड़ जाता है। इसी तरह शादी और त्यौहार के मौसम में और जब फसल कटती है, तब कसेरों का काम भी बढ़ जाता है।

कौन-कौन से महीनों में कसेरों का काम ज्यादा होगा और कब कम होगा? आपस में चर्चा करके बताओ।

कसेरे क्यों कम हो गए?

कसेरे मोहल्ले में बात चल रही थी। आज से 50-60 साल पहले मन्नूलाल के कस्बे मे करीब 100 घर कसेरों के थे। रात भर ठक-ठक की आवाज़ से आकाश गूंजता था। अब तो शाम को ही काम बंद हो जाता है। और कसेरों के 7-8 घर ही बचे हैं।

ऐसा क्यों हुआ? मुख्य रूप से स्टील एवं अल्यूमिनियम के बर्तनों का असर कसेरों के धंधे पर पड़ा है। पीतल के
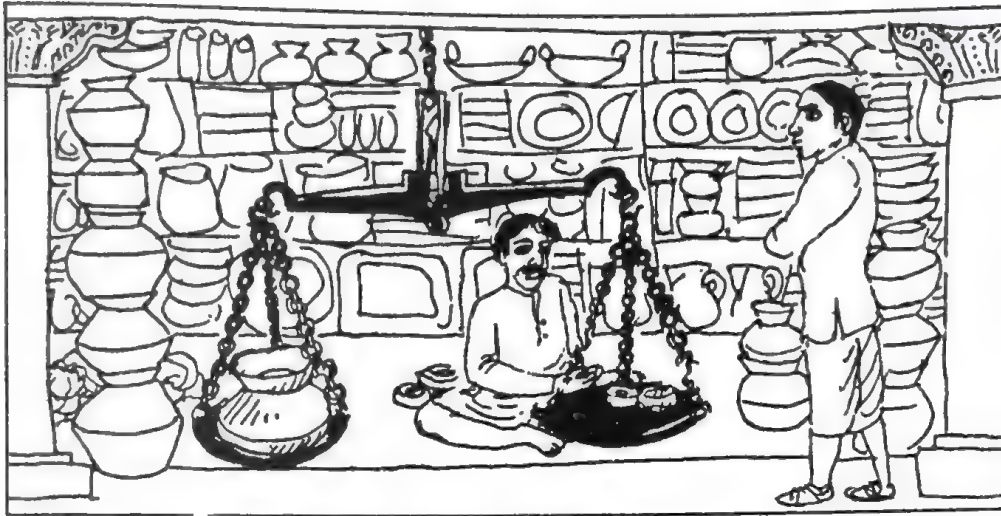
चित्र 6. दुकान पर पीतल के बर्तन तौले जा रहे हैं

बर्तनों को चमकाने और कलई करने में बहुत मेहनत लगती है। स्टील तो फट से साफ हो जाता है। इसलिए लोग अब स्टील के बर्तन ज़्यादा इस्तेमाल करने लगे हैं।

एक और कारण से कसेरे यह काम छोड़ रहे हैं। इसमें मेहनत बहुत लगती है। सुबह से शाम तक बैठ कर पीतल पर हथोड़े मारते रहो, छिलाई करते रहो। थक जाते हैं बहुत। बदन दुखने लगता है। कम शारीरिक मेहनत वाले धंधों में भी तो आजकल पैसा मिल जाता है। कई कसेरों ने यह काम छोड़ कर बर्तन या कपड़ों की दुकान लगा ली है। कई पढ़ लिख कर नौकरी करने लगे हैं।

ये है इन कसेरों की जिन्दगी और काम। घर पर ही सुबह से शाम दिन भर मेहनत करना। स्वयं कच्चा माल लाना और तैयार बर्तन बेचना। इसी माईने में कसेरा एक दस्तकार है।

दस्तकारों के और उदाहरण

कुम्हार नदी पर से मिट्टी लाता है। उसे छानता है, गूंधता है। दो एक दिन में मिट्टी तैयार होती है। जब मिट्टी खत्म होने को होती है तभी वह जाकर और मिट्टी ले आता है।

वह चाक पर मिट्टी को घुमाता है। उसे बढ़ाकर मटके बनाता है। मिट्टी को ऊपर लकड़ी के गुटकों से थपथपाता है, ताकि मटके का रूप बनता जाए। इन मटकों को सुखाकर उन्हें भट्टी में पकाता है। भट्टी के लिए लकड़ी खरीदता है।

मटके बन जाने पर उन्हें स्वयं गांव-गांव ले जाकर या पास के बाज़ार में बेचता है। गर्मी के दिनों में उसका काम बढ़ जाता है और बिक्री भी बढ़ जाती है। कुम्हार भी एक दस्तकार है।

इस प्रकार अन्य दस्तकार हैं - जुलाहा, कपड़े पर छपाई करनेवाला, बसोड़, चर्मकार, रंगरेज़ आदि।

दस्तकार का काम

दस्तकार के काम की कुछ विशेषताएं हैं। पहली बात, वह अपने घर पर काम करता है। वहां उसके अपने औज़ार होते हैं और वह अपना काम करने का समय खुद तय करता है। यानी कोई दूसरा व्यक्ति उसके काम करने का समय तय नहीं करता।

एक शिक्षक, आफिस का बाबू या बैंक कर्मचारी अपने घर पर काम नहीं करते। उनके काम का स्थान अलग है। उसी प्रकार कारखाने में काम करने वाले मज़दूर व अफसर अपना काम कारखाने में ही करते हैं। इनकी तुलना में दस्तकार अपने घर पर ही काम करता है।

इनमें से कौन अपना काम करने का समय खुद तय नहीं करते हैं?

कुम्हार, बसोड़, सरकारी बाबू, शिक्षक, कारखाने का मज़दूर, बैंक मैनेजर।

यह भी बताओ कि इनके काम करने के समय कौन तय करता है?

दस्तकार के काम की दूसरी विशेषता है कि उसके परिवार के लोग मिलकर वह चीज़ बनाते हैं। आमतौर

पर वे मज़दूर नही लगाते है।

दस्तकार के काम की तीसरी विशेषता है कि वह स्वयं कच्चा माल खरीदता है और सामान बनाकर उसे बेचने की व्यवस्था करता है। यानी या तो वह खुद लोगों को बेचता है या फिर किसी व्यापारी द्वारां बेचता है। इनकी तुलना एक दर्ज़ी से करो जो दूसरों को कपड़े सिल कर देता है पर वे कपड़े उसके नहीं होते। यदि कोई दर्ज़ी खुद कपड़ा खरीदकर उसे सिले और फिर उसे बेचे तो वह दस्तकार माना जाएगा। आगे के पाठ मे यह अंतर और स्पष्ट हो जाएगा।

अभ्यास के प्रश्न

1. बंसीलाल और मन्नूलाल जैसे कसेरे क्या बनाते हैं? इन चीज़ों का वे क्या करते हैं?
2. उनके काम के लिए कच्चा माल क्या है, ये कच्चा माल वे कैसे प्राप्त करते हैं?
3. कसेरों को अपने माल के बदले में क्या मिलता है?
4. कसेरों के कुछ औज़ारों के नाम बताओ। उनके चित्र भी अपनी कॉपी में बनाओ।
5. कसेरे कहां पर और कब काम करते हैं?
6. धंधा अच्छा चले तो एक हफ्ते में बंसीलाल के परिवार की लगभग कितनी कमाई हो जाती है?
7. कसेरा बटलोइ कैसे बनाता है, समझाओ।
8. कसेरा बटलोइ् बनाने के प्रक्रिया मे किन कामों के लिए दूसरों पर निर्भर है? सूची बनाओ
9. व्यापारी को पुराना पीतल कैसे प्राप्त होता है और वह उसका क्या करता है?
10. नीचे कुछ दस्तकारों के बारे मे तालिका दी गई है। इसे पूरा करो।

दस्तकार	क्या बनाता है	कच्चा माल	कच्चा माल कैसे प्राप्त करता है
कुम्हार			
बसोड़			
जुलाहा			

11. पृष्ठ 196 पर कुम्हार के काम के बारे में तुमने पढ़ा। इस के आधार पर कुम्हार के काम को समझाने के लिए एक रेखा-चित्र बनाओ।
12. कसेरे का धंधा क्यों कम हुआ है?
13. क्या ऐसे सभी व्यक्ति जो घर पर उत्पादन करते हैं, उन्हें दस्तकार कहा जाएगा? समझाओ।

3. बीड़ी और बीड़ी बनाने वाले

(ठेकेदारी प्रथा से काम)

समीना बीड़ी बनाने के पैसे लेने गई

आज सट्टेदार सद्दू मियां के यहां बहुत से लोग जमा हैं। ये लोग बीड़ी बनाने का काम करते हैं। वे सद्दू मियां के घर से तेन्दू पत्ते की गड्डियां, तम्बाकू और धागा ले जाते हैं। फिर बीड़ी बनाकर सद्दू मियां को देते हैं।

सब लोग हफ्ते में निश्चित दिन अपने पैसे लेने आते हैं। रोज़ बनी हुई बीड़ियां देने आते हैं। साथ ही वे और बीड़ियां बनाने के लिए पत्ते, तम्बाकू, धागा ले जाते हैं। सद्दू मियां के घर पर लंबी कतार लगी है। वहां आदमी, औरत, लड़के, लड़कियां सभी हैं।

हर परिवार के एक व्यक्ति के नाम से सद्दू मियां के पास एक खाता है। सद्दू मियां अलग-अलग खातों में हर परिवार द्वारा जमा बीड़ियां लिख देता है, और हफ्ते के हिसाब से बीड़ी बनाने का पैसा दे देता है।

समीना भी उस कतार में खड़ी है। वह और उसकी अम्मा अमीना बी, बीड़ी बनाते हैं। समीना की उम्र 12 वर्ष है। खाता तो उसकी मां के नाम से है परन्तु आज समीना ही पैसे लेने आई है। समीना की मां बीमार है। इसीलिए समीना बीड़ियां भी नहीं ला पाई है। बीमार मां और छोटे भाई साजिद (जो सिर्फ 3 वर्ष का है) की देखभाल करने वाली वह अकेली है। उसी को खाना बनाना पड़ता है और घर की देखभाल भी करनी पड़ती है। वह मुश्किल से सब काम संभाल पाई है। ऐसे में बीड़ी बनाने की फुरसत कहां से मिलती?

जब समीना का नंबर आया तो उसने सद्दू मियां को अपनी मां का कार्ड बताया। सद्दू मियां ने पूछा "क्यों री! आज बीड़ी नहीं लाई? और तेरी अम्मा कहां है?" समीना ने कहा "3-4 दिनों से वह बुखार में पड़ी है। तभी तो मैं भी बीड़ियां नहीं बना पाई। आप इस हफ्ते के पैसे दे दीजिए। अम्मा ने 3 से 5 तारीख तक बीड़ियां जमा की थीं।" सद्दू मियां ने अमीना बी का खाता खोलकर देखा। छंटाई की बीड़ियां काटकर 2500 बीड़ियों का हिसाब बना। छंटाई की बीड़ियां काटने के बाद सट्टेदार 1000 बीड़ी बनाने के 22 रुपए 50 पैसे देता है। (मई 1994 में)

समीना को सद्दू मियां ने कितने पैसे दिए?

सद्दू मियां ने कहा "500 बीड़ी के पत्ते और तम्बाकू तुम्हारी अम्मा के पास हैं। जल्दी से बीड़ी बनाकर ले आना नहीं तो पत्ते तम्बाकू लौटा देना।"

समीना घर पहुंची तो देखा कि मां का बुखार कुछ कम हो गया है। पर बदन में दर्द अभी भी था। फिर भी वह

चित्र 1. सट्टेदार के घर पर

खाना बनाने की तैयारी कर रही थी। समीना ने उन्हें मना किया और खुद आटा सान कर रोटी बनाने लगी।

शाम तक अमीना बी की तबियत कुछ और अच्छी हो गई। तब समीना ने कुछ पत्ते भिगो दिए। सोचा कल वह कुछ बीड़ियां बना लेगी। गीले पत्तों की ही बीड़ियां बनती हैं। सूखे पत्तों को मोड़ने पर वे टूट जाते हैं।

समीना के पिताजी भी बीड़ी बनाया करते थे। वे 5-6 घंटों में 1000 बीड़ी बना लेते थे। तब समीना छोटी थी। उसके पिताजी और मां बीड़ी बनाते थे। एक दिन में 1500 बीड़ी बन जाती थीं। तीन साल हुए उसके पिताजी को खांसी और दमे की शिकायत शुरू हुई। बीड़ी बनाने की रफ्तार कम होती गई। फिर खांसी में खून जाने लगा। डॉक्टर ने बताया कि उन्हें तपेदिक की बीमारी है जो अक्सर बीड़ी बनाने वालों को हो जाती है। बहुत इलाज किया, पर समीना के अब्बा बच नहीं पाए। दो साल पहले उनकी मौत हो गई। तब से अमीना बी ही बीड़ी बनाती हैं और अब समीना भी उनका हाथ बंटाती है।

समीना ने बीड़ियां बनाईं

अगले दिन समीना और उसकी मां फरमा रख कर कैंची से पत्ते काटने बैठ गए। दोनों ने एक घंटे काम करके 300 पत्ते काटे। काटे हुए पत्ते गीली बोरी में रख दिए। समीना ने अपनी मां से कहा कि अब वह आराम करें। उसने खाना खाया और फिर खुद सूपा लेकर बीड़ी बनाने बैठ गई। सूपे के बीच में तम्बाकू रखी थी और एक तरफ गीली बोरी में लिपटे हुए कटे पत्ते। सूपे के उठे हुए हिस्से में एक तार लगा था जिस पर धागे की गिट्टी फंसी थी। सूपा, फर्मा, कैंची, चाकू सब अमीना के अपने ही हैं।

क्या ये सब चीज़ें तुम्हें चित्र 4 में दिख रही हैं?

बीड़ी किन चीज़ों से बनती है? यानी बीड़ी बनाने का कच्चा माल क्या है?

बीड़ी बनाने के लिए किन औज़ारों की ज़रूरत पड़ती है? ये औज़ार किस के हैं?

चित्र 2. पत्ते काटती समीना

समीना पत्ते का एक टुकड़ा उठाती, चाकू से उसका डंठल साफ करती और उसमें चुटकी भर तम्बाकू रखती। फिर वो पत्ते को गोल-गोल पुंगी की तरह मोड़ती। तम्बाकू को ध्यान से पत्ते पर फैलाना पड़ता–न ज़्यादा ठूंस-ठूंस कर और न ही ज़्यादा खाली।

फिर वह बीड़ी के पीने वाले सिरे पर धागा लपेटती। उसे उल्टा करके जलाने वाले सिरे को एक सलाई से टोंक देती। बीड़ी बनाकर सूपे में रखती जाती। कोई पत्ता टूट जाता या बीड़ी मुड़ जाती तो उसे अलग रख देती। जब 25 बीड़ी बन जातीं तो उनका एक बंडल बांध कर ज़मीन पर रख देती। उसके छोटे-छोटे हाथ तेज़ी से पत्ते लपेटते जा रहे थे। बीच-बीच में उसे मां को भी देखना पड़ता था। वह एक घंटे में करीब 50 बीड़ियां ही बना पाती थी। बीड़ी बनाते-बनाते समीना अपना जी हल्का करने के लिए गाना

चित्र 3. बीड़ी बनाती समीना

गुनगुना रही थी–

"पत्ते को उठाया
ज़र्दे से भरा
उसको लपेटा
पीछे से बांधा
आगे से टोंका
सूपे में रखा
चुटकी की बीड़ी सलाई की बीड़ी
बन गई रे बन गई
सारी की सारी, बीड़ी हमारी।"

सूपे में तम्बाकू खत्म हो जाता तो सूपे के नीचे रखे डिब्बे से थोड़ा और ले लेती। बहुत संभाल कर उसे तंबाकू का उपयोग करना पड़ता था। सट्टेदार नापतौल कर 1000 बीड़ियों के लिए 300 ग्राम तम्बाकू ही देता है। यदि तम्बाकू कम पड़ गई तो पैसे काट लेता है। पत्ते के टुकड़े यदि सूपे में खत्म हो जाएं तो पास में बोरी में लिपटे पत्तों में से और ले लेती।

समीना शाम तक बैठी बीड़ियां बनाती रही, तब कहीं जाकर 300 बीड़ियां बनीं। शाम को बाकी पत्ते भिगो दिए।

दूसरे दिन समीना ने 300 बीड़ियां सद्दू मियां को दीं और एक हज़ार बीड़ियों के लिए पत्ते, तम्बाकू और धागा ले आई। अब तो उसकी अम्मी की तबियत कुछ ठीक थी तो वे दोनों मिलकर एक दिन में 800 बीड़ियां बना सकती हैं।

बीड़ी किस तरह बनाई जाती है अपने शब्दों में लिखो।

यदि समीना और उसकी अम्मा मिलकर एक दिन में लगभग 800 बीड़ियां बना लेते हैं तो उन्हें एक दिन में कितने पैसे मिलते हैं? यदि वे महीने में 22 दिन काम करें तो एक महीने में उनकी कितनी कमाई हो जाती है?

कसेरे के काम और बीड़ी बनाने के काम मे क्या अंतर हैं?

क्या समीना सद्दू मियां को बीड़ी बेचती है या देती है? इन दोनों बातों में क्या अंतर है?

बीड़ी बनाने वालों के अधिकार

करीब 100 परिवार सद्दू मियां के यहां बीड़ियां जमा करते हैं। दो प्रकार के बीड़ी बनाने वाले सद्दू मियां के यहां बीड़ियां जमा करते हैं। एक, जिनके पास कार्ड हैं और दूसरे जिनके पास कार्ड नहीं हैं। करीब 50-60 परिवार ऐसे हैं जिनके पास कार्ड हैं। कार्ड का होना बहुत महत्वपूर्ण है। इसी के आधार पर इन बीड़ी बनाने वालों को बीड़ी मालिक का मज़दूर माना जाता है और फैक्ट्री कानून के अनुसार वे कई सुविधाओं के हकदार हो जाते हैं। इसलिए सट्टेदार सारे मज़दूरों के बारे में जानकारी नहीं दर्शाता है। ये सुविधाएं इस प्रकार हैं -

1. हर तीन महीनों में हर 100 रुपए के काम पर 5 रु. ऊपर से यानी बोनस 5% मिलना चाहिए।

2. मज़दूर की आमदनी में से 6.25% (यानी हर 100 रु. पर 6 रु. 25 पैसे) काट कर बैंक में जमा किये जाने चाहिए। मालिक को भी इतने ही पैसे हर मज़दूर

बीड़ी बनाने वालों की बीमारियां

दिन भर बैठे एक टक काम करने से बहुत से बीड़ी बनाने वालों को तरह-तरह की बीमारियां होती हैं। तम्बाकू के साथ काम करने से सिर भारी होने लगता है। आँखें दुखने लगती हैं। सांस लेने में तकलीफ भी होती है। फेफड़ों की बीमारियां और फेफड़ों का कैंसर भी अधिक होता है। और फिर इतनी तेज़ी से उंगलियों से काम करने पर उंगलियों में भी गांठें पड़ने लगती हैं। इन बीमारियों की वजह से काम करने की क्षमता कम हो जाती है और कमाई भी कम हो जाती है।

के बैंक खाते में अपनी तरफ से जमा करना चाहिए। इस खाते को 'प्रॉविडेन्ट फन्ड' कहते हैं। इस फन्ड का पैसा मज़दूर के उपयोग के लिए है। केवल कार्ड वालों को ही यह अधिकार है।

3. जिनके पास ये कार्ड हैं, वे जब भी काम चाहें, उन्हें मिल सकता है। यदि 2-3 दिन बीच में काम नहीं भी किया फिर से उन्हें जब भी काम लेने आना हो, उन्हें मना नहीं किया जा सकता।

4. जिनके भी नाम पर ये कार्ड हैं, उन्हें बिना शुल्क के इलाज, उनके बच्चों को छात्रवृत्ति और घर बनाने के लिए बिना ब्याज के उधार मिल सकता है।

5. यदि उन्हें तपेदिक या कैंसर जैसी जान लेवा बीमारी होती है, तो मालिक को चाहिए कि उन्हें जीविका के लिए एक न्यूनतम आमदनी दे।

पहली तीन सुविधाएं तो आजकल कार्ड वालों को आम तौर से मिल रही हैं। परन्तु प्रॉविडेन्ट फण्ड का पुराना हिसाब- (1974-1985 तक का) अभी तक नहीं दिया गया है। चौथी और पांचवीं सुविधाएं भी आमतौर पर इन बीड़ी मज़दूरों को नहीं मिलतीं।

दूसरी बात यह कि अक्सर पूरा परिवार बीड़ी बनाने का काम करता है। परन्तु बीड़ियां जमा होती हैं परिवार के एक ही व्यक्ति के नाम पर। इसलिए सुविधाएं भी मिलती हैं एक ही व्यक्ति को, पूरे परिवार को नहीं।

कार्ड वाले मज़दूरों के अलावा अधिकांश बिना कार्ड वाले मज़दूर हैं। ये लोग भी बीड़ी बनाकर सट्टेदार के यहां जमा करते हैं। पर इन्हें ऊपर दी गई कोई भी सुविधा उपलब्ध नहीं है। जिनके नाम से बीड़ियां जमा की जाती हैं, हर दो-तीन महीनों में उनका नाम बदल दिया जाता है। उदाहरण के लिए यदि एक महीने मल्लू के नाम से एक परिवार की बनाई गई बीड़ियां जमा की जा रही हैं तो अगले महीने उसके भाई सोहन के नाम से जमा की

चित्र 4. बीड़ियां बन रही हैं
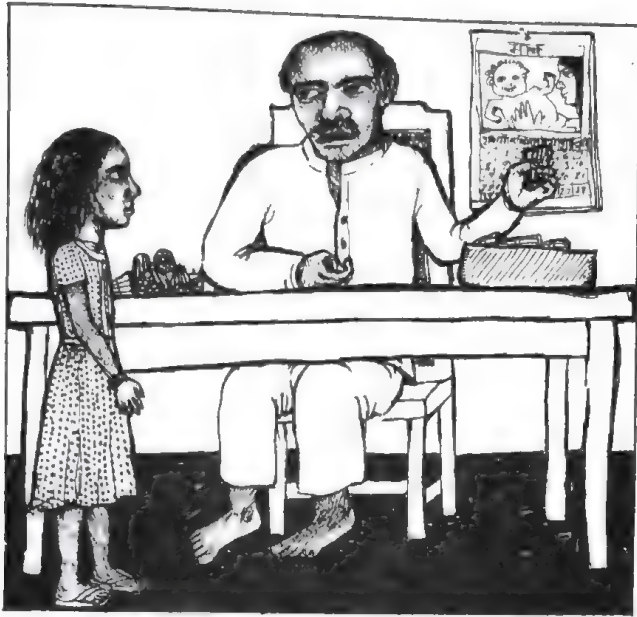
चित्र 5. समीना बीड़ियां जमा कर रही है

जाएंगी। फिर उसकी पत्नी का नाम डाला जा सकता है। ऐसा क्यों किया जाता है? इसलिए कि कानून के हिसाब से यदि तीन महीनों से अधिक एक नाम से बीड़ियां जमा की जाती हैं, तो उन्हें कार्ड मिलना ज़रूरी है। कार्ड नहीं है तो उन्हें कभी भी काम देने से मना किया जा सकता है। कार्ड से उन्हें सभी सुविधाओं का हक हो जाता है।

गुरुजी से चर्चा करो कि कसेरे को क्या इस तरह की सुविधाएं मिल सकती है।
कार्ड वाले बीड़ी मज़दूरों को कौन सी सुविधाएं मिलती हैं और कौन सी मिलनी चाहिए?
सट्टेदार के खातों में बिना कार्ड वाले मज़दूरों के नाम क्यों बदले जाते हैं?

सट्टेदार का काम

सद्दू मियां के यहां उनके काम का ये सिलसिला चलता रहता है। बीड़ी बनाने वालों से रोज़ बीड़ी इकट्ठी करना। उन्हें तेंदूपत्ते और तम्बाकू देना। हर हफ्ते उनका हिसाब करना। कारखाने में ले जाकर बीड़ियां जमा करना। मालिक से हफ्ते का हिसाब करना और पत्ते, तम्बाकू लेकर आना। यही सब तो सट्टेदार का काम है।

सद्दू मियां के घर के लोग भी बीड़ियां बनाते हैं। पहले सद्दू मियां भी बीड़ियां बनाया करते थे पर उन्होंने अब यह काम छोड़ दिया है।

सद्दू मियां के यहां बीड़ी बनाने वालों ने बीड़ियां जमा कर दी थीं। रोज़ करीब एक लाख बीड़ियां सद्दू मियां के घर पर जमा की जाती हैं। सद्दू मियां और उसके बेटे रफीक ने बीड़ियां गिनीं। बीड़ियों की छंटाई की। फिर वे दोनों कारखाने में बीड़ियां जमा करने गए।

कारखाने के मालिक ने 22 रु. 50 पैसे प्रति हज़ार के हिसाब से बीड़ी बनाने के पैसे सद्दू मियां को दिए। उन्होंने पूरी बीड़ियों का हिसाब किया चूंकि खराब बीड़ियां सद्दू मियां ने पहले ही छांट ली थीं।

सद्दू मियां बीड़ी बनाने वालों को 1000 बीड़ियों के 22 रु. 50 पैसे देने के बजाए 1025 बीड़ियों के 22 रु. 50 पैसे देते हैं। वे 25 बीड़ियां अधिक इसलिए लेते हैं चूंकि कई बार बीड़ियां खराब निकल जाती हैं और उन्हें हटाना पड़ता है।

पर जितनी बीड़ियां सद्दू मियां छंटाई के लेता है, उतनी खराब नहीं निकलतीं। इसलिए सद्दू मियां को कुछ अधिक फायदा होता है। बीड़ियां जमा करने, पत्ते और तम्बाकू बांटने आदि कामों के लिए मालिक सद्दू मियां

चित्र 6. सट्टेदार के यहां पत्ते दिए जा रहे हैं
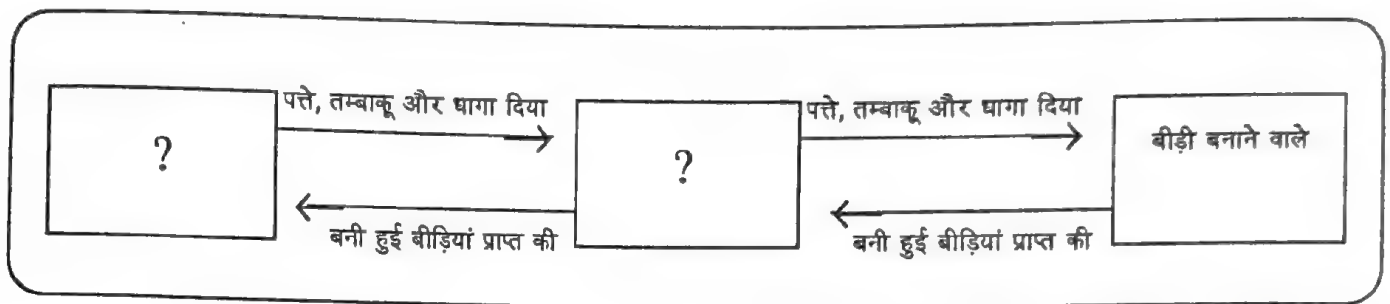
को हर 1000 बीड़ियों पर 50 पैसे कमीशन अलग से देता है। सद्दू मियां को 50 पैसे प्रति हज़ार के हिसाब से 1,00,000 बीड़ियों का रोज़ 50 रु. कमीशन मिल जाता है।

आजकल 1000 बीड़ी के लिए 22 रु. 50 पैसे बीड़ी बनाने की मज़दूरी का सरकारी रेट है। पर सभी जगह मालिक ये रेट नहीं देते हैं। कहीं पर 18 रु. देते हैं तो कहीं 20 रु. और फिर कई जगह सट्टेदार भी इसमें से कुछ पैसे रख लेते हैं। कहीं पर बीड़ी बनाने वालों को 15 रु. ही मिल पाते हैं तो कहीं पर 12 रु.।

समीना और उसके जैसे कई परिवार बीड़ी बनाते हैं और सट्टेदार के यहां जमा कर देते हैं। वे इन बीड़ियों को स्वयं बेच नहीं सकते। इन्हें सट्टेदार भी नहीं बेच सकता क्योंकि तेंदू पत्ते, तम्बाकू और धागा ये सब कच्चा माल सट्टेदार या बीड़ी बनाने वालों का नहीं, बीड़ी कारखाने के मालिक का है।

कारखाने का मालिक यह सब कच्चा माल सट्टेदार को दे देता है, बीड़ी बनाने वालों को देने के लिए। बीड़ी बनाने वाले मज़दूर बीड़ी बनाकर सट्टेदार को देते हैं। सट्टेदार इन बीड़ियों को बीड़ी कारखाने में जमा करता है।

ऊपर दिए गए रेखा चित्र को समझकर उसके खाली स्थान भरो।

कसेरा एवं बीड़ी बनाने वालों की तुलना करते हुए केवल गलत वाक्यों को सुधारो।

क) बीड़ी बनाने वाला खुद बीड़ी बेचता है।

ख) बर्तन बनाने वाला कसेरा खुद बर्तन बेचता है।

ग) बीड़ी बनाने वाला अपना कच्चा माल खुद खरीदता है।

घ) कसेरा अपना कच्चा माल सट्टेदार से लेता है।

ङ) बीड़ी बनाने की बीड़ी सट्टेदार की होती है।

च) कसेरे के बर्तन उसके अपने होते हैं।

बीड़ी का कारखाना और कारखाना मालिक

अब चलें तीर छाप बीड़ी के कारखाने में, जहां सद्दू मियां बीड़ियां जमा करता है। यह मनमोहन का कारखाना है। अप्रैल का महीना है तो तेन्दू पत्ते तुड़वाने वह जंगल गया है। उसका छोटा भाई आनंद कारखाने की देखरेख कर रहा है।

मनमोहन हर साल जंगल का ठेका लेता है। तेन्दू पत्ते तोड़ने के लिए जंगलों की नीलामी होती है। जो जंगल मिल

चित्र 6. सिकाई

बीड़ी बनाने वाले परिवार	बनी हुई बीड़ी	?	बनी हुई बीड़ी	?	सिकाई, पैकिंग के लिए	?	बेचने के लिए	गांव शहरों के बाजार

जाए, उसमें ठेके से मज़दूर लगाए जाते हैं। तेन्दू के पेड़ों की छंटाई आदि के बाद फरवरी से जून के महीने तक पत्तों को तोड़ा जाता है। पत्तों को तुड़वाना, गड्डी बनवाना, उन्हें सुखाना और बोरों में भरकर ट्रक से कारखाने तक भेजना ये सब मनमोहन ही करवाता है। बोरियां उतरवा कर गोदाम में रखवाई जाती हैं। अब तम्बाकू भी खत्म होने को है। इसके लिए मनमोहन का मंझला भाई हैदराबाद गया हुआ है। आनंद ने बंबई से धागा मंगवाने के लिए फोन लगाया है। इस प्रकार यहां मालिक ही कच्चा माल इकट्ठा करने का काम करता है।

सद्दू मियां बीड़ियां लेकर आए है। मुंशीजी उसका हिसाब कर रहे है। छंटी हुई बीड़ियां तंदूर में सिकने जाती है जैसा कि तुम चित्र-10 मे देख सकते हो। मज़दूर छंटे हुए बंडल ट्रे में जमाते है। तंदूर मे सिकाई के समय बीच-बीच में बण्डलों को पलटना पड़ता है ताकि वे चारों तरफ से अच्छी तरह सिक जाए। सिकाई में कई बार कुछ बीड़ियां टेढ़ी हो जाती हैं। कोई बीड़ी अधिक सिक जाती है तो कोई कम। इनको सिकाई के बाद अच्छी बीड़ियों से अलग किया जाता है यानी फिर से छंटाई का काम। सिकी हुई बीड़ियों को पैकिंग के लिए दूसरे कमरे में भेजा जाता है। इस कमरे में काग़ज़, लेई और लेबल लेकर

चित्र 7. पैकिंग

मज़दूर बीड़ियों के बण्डलों की पैकिंग कर रहे है।

कारखाने में सिकाई, छंटाई और पैकिंग करने वाले मज़दूरों को प्रति दिन के हिसाब से मज़दूरी मिलती हैं। इन्हें **फैक्ट्री कानून** के अंतर्गत वही सुविधाएं मिलनी चाहिए जो कार्ड वाले बीड़ी मज़दूरों को मिलती है। मज़दूरों से बात करने पर उन्होंने बताया कि पहले की तुलना में कुछ सुविधाएं जैसे, छुट्टियों के पैसे, बोनस आदि का लाभ मिला है। परन्तु इलाज, बच्चों के लिए छात्रवृत्ति, गंभीर बीमारी में मुआवज़ा आदि का लाभ अभी भी नहीं मिल पा रहा है।

बीड़ियां बनकर पैक हो गईं। मनमोहन के कारखाने में रोज़ लगभग एक लाख बीड़ियां तैयार होकर पैक होती हैं। ये बीड़ियां आस-पास के गांवों और शहरों में बिकती हैं। इस बिक्री से कारखाने के मालिक को काफी फायदा होता है।

तुमने देखा कि समीना और अन्य लोगों के घरों पर बनायी बीड़ियां लेकर सद्दू मियां कारखाने में आए थे। शेष काम कारखाने में हुआ और यहीं से पैक किए हुए बीड़ी के बण्डल बाज़ार मे बिकने के लिए चले जाते हैं। क्या बाज़ार में बेचने का काम सद्दू मियां करते हैं? नहीं। बेचने का काम कारखाने के मालिक ही, करते हैं।

ऊपर दिए रेखा-चित्र को समझते हुए, खाली स्थान भरो।

कारखाने का मालिक बीड़ी का कच्चा माल कैसे इकट्ठा करता है?

बीड़ी के कारखाने में क्या-क्या होता है, अपने शब्दो में लिखो?

रोज़ के हिसाब से मज़दूरी और नग के हिसाब से मज़दूरी मिलने में क्या अंतर है?

यदि कारखाने का मालिक सट्टेदार से बनी हुई बीड़ी खरीदता तो उसे कौन से काम नहीं करने पड़ते?

ठेकेदारी प्रथा से काम

ठेकेदारी (या सट्टेदारी) प्रथा के कारण काम आसानी से बांटा जा सकता है। कुछ खास और बड़े काम जैसे तेंदू पत्ते का ठेका, बीड़ियों की सिकाई, बीड़ी बेचने की व्यवस्था आदि मालिक खुद करता है। दूसरे काम वह ठेके पर दे देता है।

जहां उत्पादन का कार्य कोई कारखाने का मालिक करवाता है वहां उसे कई प्रकार के काम करना होते हैं। ठेकेदारी प्रथा में इन बातों की जवाबदारी जैसे व्यवस्था करना, काम करवाना, मज़दूरों को पैसे देना, आदि ठेकेदार (या सट्टेदार) की होती है। मालिक इन सब कामों से मुक्त हो जाता है। ठेकेदार के मज़दूरों को कारखाने के मज़दूर नहीं माना जाता। अधिकांश यह पाया गया है कि इन मज़दूरों को कम पैसों में काम करना पड़ता है और फैक्ट्री कानून के सरकारी नियमों के अनुसार सभी सुविधाएं भी नहीं मिल पातीं।

बीड़ी मज़दूरों ने कानूनी लड़ाई लड़कर परिवार में काम कर रहे लोगों को सुविधाएं मिलने का हक़ दिलवाया। कोर्ट ने यह फैसला दिया कि सट्टेदार जिन परिवारों द्वारा काम करवाता है वे वास्तव में किसी कारखाने के मालिक के मज़दूर के रूप में काम रहे हैं। तभी से ऐसे लोगों को पहचान के लिए कार्ड देने की व्यवस्था शुरू की गई। कार्ड वाले लोगों को क्या-क्या सुविधाएं मिलनी चाहिए इसके बारे में भी तुमने पढ़ा।

तुमने बीड़ी बनाने वालों के काम में एवं कसेरे जैसे दस्तकार, के काम में कई अंतर स्पष्ट देखे होंगे। दस्तकार सामान किसी भी व्यापारी को बेच सकता है। बीड़ी जैसी ठेकेदारी व्यवस्था में बनाने वाले परिवार को बीड़ी उसी कारखाने के मालिक के पास पहुंचानी होती है जिससे उसे धागा, तम्बाकू और पत्ते मिले थे। कच्चा माल देने के कारण मालिक निश्चित कर पाता है कि उसी को बना हुआ माल प्राप्त होगा। अतः ठेकेदारी प्रथा में अपने हिसाब से सामान बेचने की छूट नहीं होती है और इस कारण बहुत बार सामान का वाजिब दाम नहीं मिलता है।

सामान बनाने वाले को अच्छे दाम मिल जाएं इस हेतु, कहीं-कहीं लोगों ने एक रास्ता निकाला है। उन्होंने आपस में मिलकर एक सहकारी सोसाइटी बनाई है जिसका मुख्य काम उत्पादन की बिक्री करना होता है।

अपने गुरुजी के साथ चर्चा करो कि सहकारी समिति द्वारा बिक्री करने से उत्पादक को क्या लाभ हो सकता है?

मध्यप्रदेश में ही बीड़ी बनाने के करीब 300 कारखाने हैं। लगभग पंद्रह लाख लोग बीड़ी बनाने का काम करते हैं। हमने जो तीर छाप बीड़ी का कारखाना देखा, वह तो एक छोटा कारखाना है। कुल मिलाकर मध्यप्रदेश में रोज लगभग बीस करोड़ बीड़ियां बनती हैं। सागर और जबलपुर में लाखों लोग बीड़ी बनाने का काम करते हैं। भोपाल में ही करीब 10,000 लोग बीड़ी बनाते हैं।

बीड़ी के समान कई उद्योग हैं जहां ठेकेदारी प्रथा से घर पर उत्पादन किया जाता है। हाथ करघे पर बना कपड़ा, रस्सी बनाना, गलीचा बनाना आदि ऐसे कुछ उद्योगों के उदाहरण हैं।

तुमने अपने आस-पास बहुत लोगों को बीड़ी पीते देखा होगा। दिन भर में एक दो बण्डल पी जाते हैं। बीड़ी पीने से तपेदिक, कैंसर जैसी जानलेवा बीमारियां हो जाती हैं। बीड़ी पीने से पैसा खर्च होता है, परिवार दुखी रहता है और सेहत पर भी विपरीत असर पड़ता है।

अभ्यास के प्रश्न

1. बीड़ी का कच्चा माल क्या-क्या है? इसकी व्यवस्था कौन करता है?
2. पृष्ठ 198 पर बने चित्र (चित्र-1) को देखकर बताओ कि वहां क्या हो रहा है? इस चित्र से सट्टेदार के काम के बारे मे क्या पता चलता है?
3. समीना ने बीड़ी किस प्रकार बनाई 6-8 वाक्यों में लिखो।
4. बीड़ी बनाने वालों को किस तरह की बीमारियां होती हैं?
5. बीड़ी किस प्रकार बनती है? नीचे दिए कथनों को क्रम से जमाते हुए, रेखा-चित्र बनाओ।
    1. घर में लोगों ने बीड़ी बनाकर सट्टेदार को दीं।
    2. सट्टेदार ने तेंदु पत्ते, तंबाकू और धागा बीड़ी बनाने वालों को बांटे।
    3. सट्टेदार ने 1000 बीड़ी के 22 रुपए 50 पैसे के हिसाब से बीड़ी बनाने वालों को पैसे दिए।
    4. सट्टेदार ने मालिक तक बीड़ियां पहुंचाईं और अपने पैसे ले लिए।
    5. मालिक ने तंदूर में उन्हें सिकवाया और छंटाई करवाई।
    6. तेंदू पत्ते, तम्बाकू और धागा मालिक ने सट्टेदार को दिया।
    7. बीड़ी के बंडल पानवालों और दुकानदारों तक पहुंचे।
    8. मालिक ने बंडल पर अपना लेबल चिपकवाया।
    9. मालिक ने तंबाकू, धागा और तेंदु पत्ते का इंतज़ाम किया।
6. कसेरे की तरह, बीड़ी बनाने वाला बीड़ी क्यों नहीं बेचता है?
7. सद्दू मियां का काम एक ठेकेदार का है-इस वाक्य को समझाओ।
8. यदि कसेरे के काम में एक सट्टेदार हो तो उसका काम कैसे बदल जाएगा? कच्चा माल, बनवाई, बर्तन बेचना.. इन बातों को ध्यान में रखते हुए लिखो।
9. बीड़ी बनाने का काम कारखाने में भी हो सकता है, फिर इसे ठेकेदारों द्वारा घर पर क्यों करवाया जाता है?
10. कार्ड वाले बीड़ी मज़दूर और बिना कार्ड वाले मज़दूर में क्या अन्तर है - समझाओ।

4. चमड़ा कमाने का कामः बड़े कारखाने में उत्पादन की प्रक्रिया

कारखाने में उत्पादन और घर पर उत्पादन में क्या अंतर है- इस पाठ के चित्रों को देखकर अंदाज़ लगाओ।

तुमने एक दस्तकार का काम देखा। कसेरा कैसे अपने घर पर काम करता है और सभी प्रकार का काम, यानी कच्चा माल लाने से बेचने तक वही करता है। इसकी तुलना में बीड़ी बनाने वाला परिवार, घर पर काम ज़रूर करता है परन्तु ठेकें पर। उसे केवल बीड़ी बनाकर देनी है पर और कोई व्यवस्था नहीं करनी पड़ती। इनकी तुलना में कारखाने का काम घर पर नहीं, एक निश्चित जगह पर होता है।

यहां काम किस प्रकार किया जाता है और उसकी व्यवस्था कौन करता है, इस पाठ में पढ़ोगे। यह एक बड़े कारखाने का उदाहरण है ताकि कारखाने में काम करने का रूप तुम्हारे सामने उभरकर आए। आजकल दैनिक उपयोग में लाया जा रहा बहुत सा सामान इस प्रकार के कारखानों में बनता है। कारखाने छोटे बड़े हो सकते हैं। छोटे कारखाने का उदाहरण तुम अगले पाठ मे पढ़ोगे।

हम चमड़े का बड़ा कारखाना देखने के लिए निकले। टेम्पो में बैठ कर शहर से कुछ दूर गए। एक-एक रुपया किराया लगा। कारखाने की छत दूर से दिख गई। जब टेम्पो
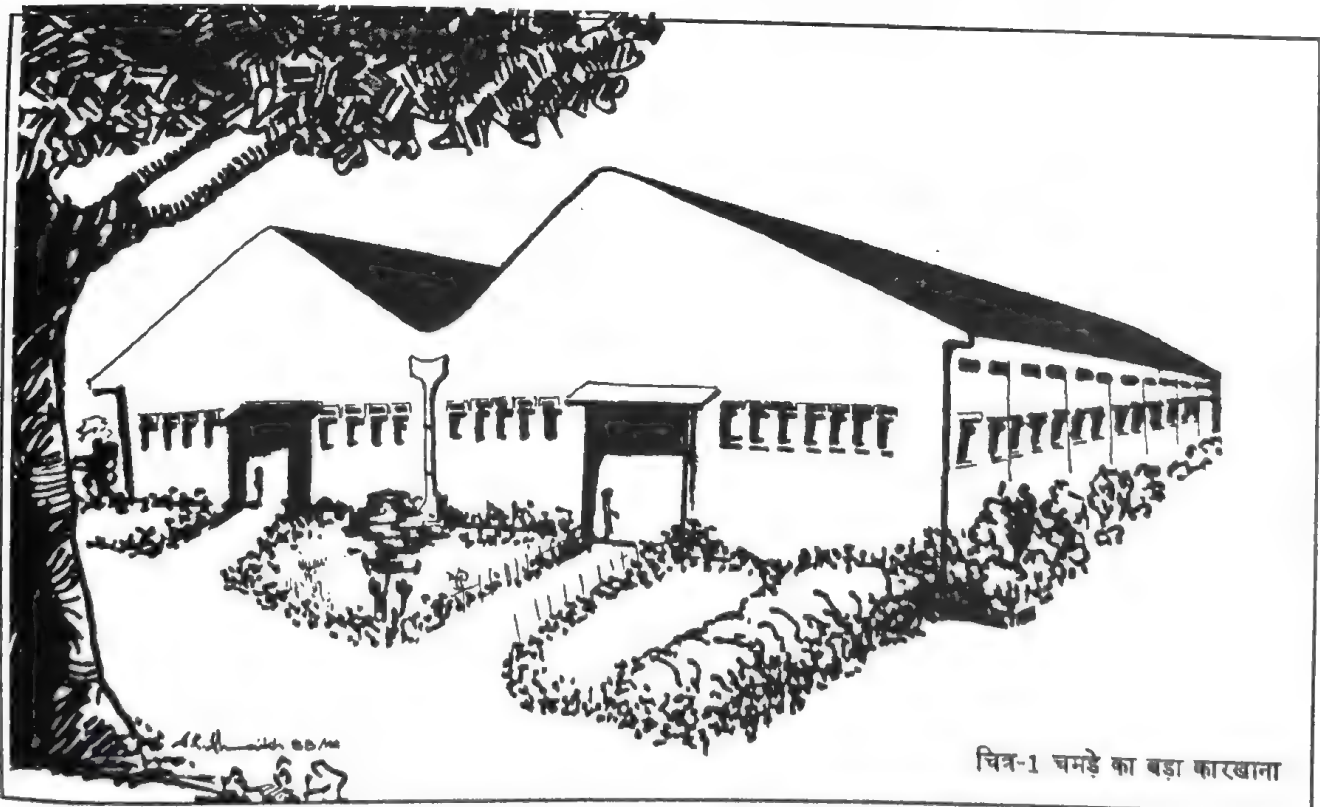
चित्र-1 चमड़े का बड़ा कारखाना

चित्र-2 कारखाने के अंदर का नज़ारा

से उतर कर कारखाने की तरफ गए तो दो शेड सामने दिखाई दिए।

सामने एक बड़ा सा फाटक था और फाटक के पास ही एक कमरा था। वहां पर चौकीदार ने हम से गेट पास के लिए फारम भरवाए। पास देते हुए उसने कहा "गेट पास संभाल कर रखिए। जिन से मिलने जा रहे हैं, उन से साईन करा कर वापसी में यहीं लौटा दीजिएगा।"

कारखाने में पास बनवाने की क्या आवश्यकता होती है?

इस कारखाने में चमड़ा कमाया जाता है। गाय, भैंस, बकरी, भेड़ की खालों से चमड़ा तैयार करने के तरीके को 'कमाना' कहते हैं। खालें सड़ जाती हैं जबकि कमाया हुआ चमड़ा खराब नहीं होता। आओ देखें कि कारखाने में चमड़े को कमाने के लिए क्या-क्या किया जाता है।

जैसा कि तुम चित्र में देख सकते हो शेड के आगे दो छोटे-छोटे बगीचे थे। शेड की छत काफी ऊंची थी, और टीन की चादर की बनी थी। शेड के अन्दर कारखाना बहुत बड़ा लगा। एक तरफ कई ड्रम दिखाई दिए। एक मज़दूर तीन पहिए वाले हाथ-ठेले में कुछ ले जा रहा था।

शेड के अन्दर दोनों तरफ चमड़ों के ढेर दिख रहे थे। एक तरफ कुछ मज़दूर कमाने के लिए खालें तैयार कर रहे थे। वे खालों पर नमक लगा रहे थे। साथ ही साथ दूसरे मज़दूर इन खालों को नाप के हिसाब से अलग-अलग ढेरियों में जमा रहे थे। नाप के हिसाब से बनाई गई ढेरी 'बैच' या 'खेप' कहलाती है। दूसरी तरफ कुछ मज़दूर कमाए हुए तैयार चमड़े का हिसाब कर रहे थे।

पृष्ठ 191 पर बने चित्र और इस चित्र की तुलना करके बताओ कि दोनों में क्या-क्या अंतर हैं?

चमड़ा कमाने की प्रक्रिया

चमड़ा कमाने के लिए उसे पांच प्रक्रियाओं से गुज़ारना पड़ता है। अब हम इनके बारे में पढ़ेंगे।

1. सफाई: एक हौद में साबुन के पानी में खालों को धोया जाता है। हौद में मथनी जैसा लकड़ी का यंत्र है। इसे 'पैडल' कहते हैं। (चित्र 3) 'पैडल' के द्वारा खालों को आसानी से पलट दिया जाता है। हमने हौद के पास जाकर देखा तो हमें अन्दर खालें नज़र आईं। खालें अपने आप उलट-पलट हो रही थीं, तभी किसी ने बटन दबा कर मशीन बन्द कर दी। एक घंटे में बस 5-10 मिनट तक मशीन चलाते हैं।

2. बाल निकालना: चूने और सोडियम सल्फाईड (एक रसायन) का लेप खालों के नीचे की तरफ लगा दिया जाता है। इस से बालों की जड़े ढीली पड़ जाती हैं और वे मशीन से आसानी से उखड़ आते हैं।

हमने देखा (चित्र-4) कि एक व्यक्ति बाल निकालने की मशीन पर दो रोलर के बीच खाल को रखता जा रहा है। मशीन चालू करने पर दोनों रोलर मिलते हैं और गियर की तरफ घूमते हैं। रोलर पर तेज़ धार होती है जिससे बाल कट कर दूसरी तरफ गिर जाते हैं। जिस मशीन पर बाल निकाले जाते हैं, उसे बहुत ध्यान से चलाना पड़ता है। रोलर के बीच हाथ आ गया तो उसका पता ही नहीं चलेगा। मशीन पर दो व्यक्ति काम कर रहे थे। एक मशीन चलाने वाला आपरेटर और दूसरा उसे मदद करने वाला, यानी हेल्पर। इस मशीन पर बाल निकालने के बाद भी कभी-कभी थोड़े बहुत बाल चमड़े से लगे रह जाते हैं। बचे-कुचे बाल और मांस निकालने के लिए खालों को चूने के पानी के हौद में 15 घंटे भिगो कर रखा जाता है।

क्या तुम्हें कसेरे के काम और बीड़ी बनाने के काम में मशीन का उपयोग नज़र आया? मशीन के उपयोग से क्या फर्क पड़ता है समझाओ।
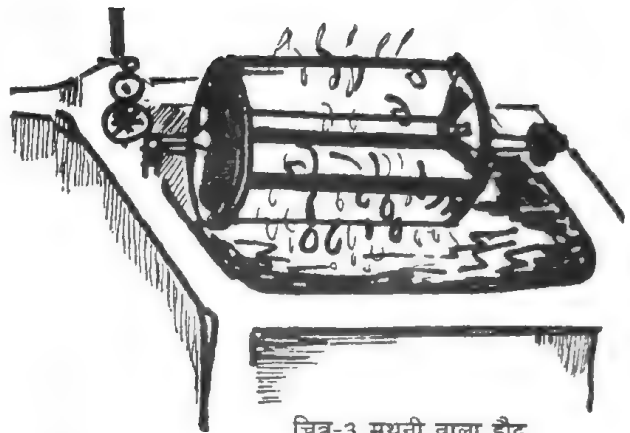
चित्र-3 मथनी वाला हौद

3. चूना काटना: चूने का असर कम करने के लिए अम्ल के घोल में खालों को धोया जाता है। यह काम भी मथनी वाले हौदों में होता है।

4. कमाना: अब हम ड्रमों के सामने पहुंचे। ड्रमों के अंदर खालें डाल दी गई थीं। ड्रम धीरे-धीरे घूमते थे। ड्रम में कई रसायन थे जिन्हें खालें सोख लेती थीं। वहां एक सुपरवाईज़र ने समझाया, "चमड़ा कमाने के दो तरीके हैं । वनस्पति द्वारा कमाना एक तरीका है। उसमें बबूल की छाल, हरड़ा के बीज आदि वनस्पतियों का उपयोग होता है। दूसरा है क्रोम टैनिंग जहां रासायनिक क्रियाओं का

चित्र-4 बाल निकालने की मशीन

उपयोग होता है। इस कारखाने में हम क्रोम से ही चमड़ा कमाते हैं। यहां कमाने की प्रक्रिया को दो हिस्सों में करते हैं। पहले खालों को अम्ल के घोल में डाला जाता है। फिर उन्हें 'क्रोमियम सल्फेट' और अन्य रसायनों के घोल में कमाया जाता है। इसी रसायन के नाम से यह प्रक्रिया जानी जाती है– 'क्रोम टैनिंग' या "क्रोम से कमाना"।

हम एक ड्रम की तरफ गए जिसकी खिड़की खुली हुई थी और वह धीरे-धीरे घूम रहा था। जब खिड़की नीचे आती तब चमड़ा बाहर फिका जाता था। दो मज़दूर इन्हें जमा कर के तख्तियों पर रख रहे थे।

5. मुलायम और लचीला बनाना: इन्हीं धीरे-धीरे घूमने वाले ड्रमों में, कई तरह के तेल पिलाकर, चमड़े को मुलायम और लचीला बनाया जाता है।

कारखाने में बहुत लोग काम करते हैं। क्या हरेक व्यक्ति एक-एक खाल से चमड़ा कमाने का काम खुद पूरा करता है? यदि नहीं तो यह पूरी प्रक्रिया कैसे होती है? समझाओ।

बीड़ी बनाने की प्रक्रिया और चमड़ा कमाने की प्रक्रिया में क्या अंतर है?

'बैच' या खेप में काम

ड्रमों को देखते-देखते हम शेड के दूसरे कोने तक पहुंच गए हैं। तभी एक ट्रक आया। "बैच नंबर 5125, 5126 और 5127 को लोड करना है," सुपरवाईज़र ने मज़दूरों से कहा। तख्तियों पर रखे कमाए हुए चमड़े को उठा-उठा कर मज़दूर ट्रक में भरने लगे।

"बैच नंबर क्या होता है?" हमने पूछा, "बैच नंबर का अर्थ है खेप नंबर। तुमने देखा था कि खालों की धुलाई से पहले ही, उन्हें नाप के हिसाब से ढेरियों में रखा जा रहा था। इनकी एक ढेरी सभी प्रक्रियाओं से गुज़रती है। इस ढेरी या खेप को ही बैच कहते हैं और हर बैच को नंबर दिए जाते हैं। एक खेप या बैच में 200-300 खालें होती हैं।"

ये खेप या बैच बनाने से क्या फायदा है? एक तो काम बांटने में आसानी होती है। किसी खेप की खालों की सफाई हो रही है तो उसी समय दूसरे खेप की खालों के बाल निकाले जा रहे हैं। किसी और खेप की खालों को कमाया जा रहा है।

इस कारखाने में 16 हौद हैं। अगर सभी हौदों में खाल साफ करने का काम हो तो बाल निकालने का काम रुक जाएगा। इसलिए कुछ हौदों में बाल निकालते हैं, कुछ में सफाई करते हैं और कुछ हौदों में चूना काटने का काम होता है। उदाहरण के लिए जैसे ही सफाई वाले हौद में एक खेप का काम खत्म होता है, तो दूसरा खेप हौद में उसकी जगह ले लेता है। इस तरह सभी यंत्रों का उपयोग लगातार होता रहता है और काम भी क्रम से लगातार चलता रहता है।

यह सोचकर बताओ कि दो या पांच खालों की खेप क्यों नहीं बनाई जाती?

यदि कोई एक मशीन दिनभर के लिए खराब हो जाती है तो दूसरी मशीनों पर चलने वाले काम पर क्या असर पड़ेगा?

तीन पाली लगातार काम

कारखाने को 24 घंटे चालू रखने के लिए एक दिन में 8-8 घंटों की तीन पालियां काम करती हैं। पहली पाली के मज़दूर सुबह साढ़े सात (7.30) बजे से शाम 4 बजे तक काम करते हैं। बीच में 12 बजे उनकी खाने की छुट्टी होती है। शाम 4 बजे पहली पाली के मज़दूर घर जाते हैं और दूसरी पाली के मज़दूर रात के 12 बजे तक काम करते हैं। शाम को 7.30 बजे उनके खाने की छुट्टी होती है। रात 12 बजे फिर पाली बदलती है और तीसरी पाली के मज़दूर काम पर आते हैं। तीसरी पाली रात की पाली या 'नाईट शिफ्ट' कहलाती है।

जब भी पाली बदलती है या खाने की छुट्टी होती है तब भोंपू बजता है। एक मज़दूर हमेशा एक ही पाली पर काम नहीं करता। किसी हफ्ते उसे सुबह की पाली में जाना

पड़ता है, तो किसी हफ्ते शाम की या रात की पाली में। पहली पाली 'मेन शिफ्ट' कहलाती है और कारखाने के अधिकारी लोग इसी पाली में काम करते हैं। कोई भी बड़ा कारखाना, जहां दिन भर और रात भर काम होता है, उसमें मज़दूर पालियों में ही काम करते हैं।

> *चौबीस घंटे कारखाने चलाने की क्या आवश्यकता है?*
>
> *बीड़ी बनाने वालों और कसेरों के काम का समय, कारखाने के मजदूरों की तरह आठ घंटे के लिए तय क्यों नहीं है?*
>
> *एक ही मजदूर की 15-15 दिनों बाद पाली बदलती है। इससे उसके स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव पड़ता होगा? चर्चा करो।*

कारखाने में कच्चा माल कहां से आता है और तैयार माल कहां जाता है?

कारखाने मे चमड़ा कमाने की पूरी प्रक्रिया तुमने समझी है। नीचे दिए गए रेखाचित्र को देखकर समझ सकते हो कि कच्चा माल कहां से आता है और कहां जाता है।

भारत में चमड़े के व्यापार के प्रमुख स्थान हैं- कानपुर, कलकत्ता, मद्रास और बंबई। इन जगहों पर कई व्यापारी हर किस्म का चमड़ा और चमड़े से बनी चीज़ें खरीदने और बेचने का धंधा करते हैं। वे ये चीज़ें बाहर के देशों में भी भेजते हैं।

कारखाने में काम करने वालों का वेतन

"आप को कितना वेतन मिलता है?" हम ने हिचकिचाते हुए पूछा। सुपरवाईज़र ने मुस्कुराते हुए कहा "3000 रु. प्रति महीने। मुझे इस कारखाने में काम करते हुए 10 साल हो गये हैं।" वे समझ गए थे कि हम कारखाने में काम करने वाले सभी लोगों के वेतन के बारे में जानना चाहते हैं। वे अपने आप ही बताने लगे, "टेम्पोररी मज़दूर को 39 रु. दिन के हिसाब से मज़दूरी मिलती है। जब काम नहीं होता तो उन्हें मना कर देते हैं। इसलिए उन्हें दिन के हिसाब से मज़दूरी मिलती है, महीने के हिसाब से नहीं। सभी हेल्पर, झाडू लगाने वाले, खालों को यहां से वहां ले जाने वाले, टम्पोररी मज़दूर हैं।"

"परमानेन्ट मज़दूर को हर माह 1800 रु. से 2000 रु. के बीच मिल जाता है। मशीन पर काम करने वाले सभी आपरेटर परमानेन्ट हैं। फिर मेरे जैसे सुपरवाईज़र हैं जिनको 3000 रु. महीना तक मिलता है। जिनका अनुभव कम हैं, उन्हें कम पैसे मिलते हैं। परमानेन्ट मज़दूर और सुपरवाईज़र को प्राविडेन्ट फण्ड (भविष्य निधि), बोनस, छुट्टियां आदि सुविधाएं भी मिलती हैं।

"फिर मैंनेजर या अधिकारी लोग हैं। हमारे कारखाने के प्रमुख अधिकारी को 35000 रु. प्रति माह वेतन मिलता है। वेतन के अलावा फ्री घर, गाड़ी, छुट्टी में घर जाने का भत्ता आदि सुविधाएं भी मिलती हैं।"

रेखाचित्र
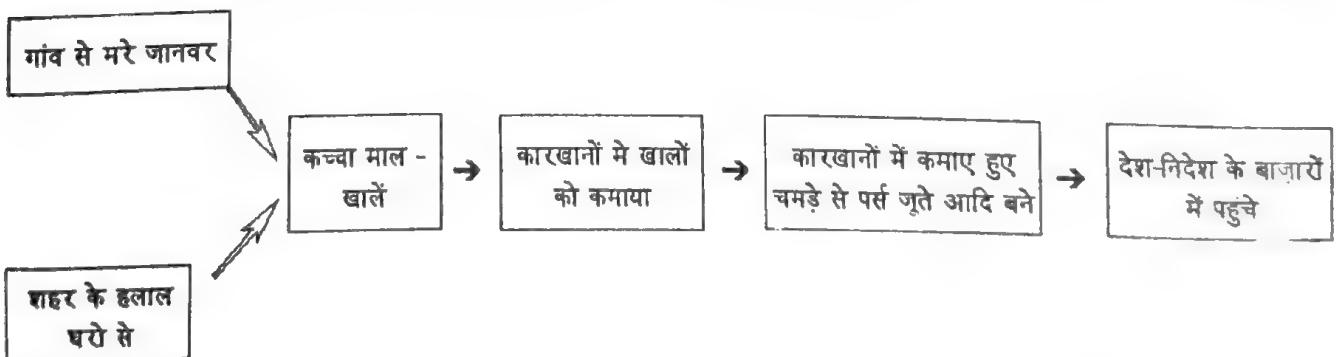
कारखाने के मालिक

हमने पूछा "मालिक को कितना मिलता है?" "इस कारखाने का कोई एक मालिक नहीं है। कुछ लोगों ने मिल कर एक कंपनी बनाई है और यह कारखाना चलाते हैं। ये लोग मैनेजर, इंजीनीयर जैसे अधिकारियों को नियुक्त करते हैं जो कि कारखाने के काम का संचालन करते हैं और उसकी देख-रेख करते हैं। अधिकारियों और मज़दूरों को वेतन मिलता है। पर मालिकों को वेतन नहीं मिलता। वेतन और सभी दूसरे खर्च निकालने के बाद जो मुनाफा बचता है मालिक लोग उसे आपस मे बांट लेते हैं। मुनाफा अधिक हुआ तो मालिकों को अधिक मिलता है, कम हुआ तो कम मिलता है। मुनाफे में से कुछ पैसे बचा कर, वे कारखाने को बढ़ाने के खर्चों में भी लगा देते हैं।"

कारखाने के एक टेंपोरेरी मज़दूर और एक पर्मनेंट मज़दूर में क्या अंतर है?

कारखाने के मज़दूरों एवं बीड़ी मज़दूरों के बीच, मज़दूरी के पैसों के भुगतान करने के तरीके में क्या अंतर है?

रसायनिक प्रदूषण (गंदगी)

कारखाने का गंदा पानी और उसकी सफाई

जब हम कारखाने के पीछे गए तो तेज़ बदबू आने लगी। वहां एक हौद में गंदा काले रंग का पानी दिखा। उसे मथनी द्वारा घुमाया जा रहा था। पता चला कि इस प्रक्रिया को एरिएशन कहते हैं। यह पानी कारखाने में चमड़ा धोने, चूने का घोल बनाने, अम्ल का घोल बनाने, कमाने आदि के लिए उपयोग में लिया जा चुका था। इस पानी में तरह-तरह के रसायन थे– चूना, गंधक का अम्ल, सोडियम सल्फाइड, क्रोमियम सल्फेट आदि। इस कारखाने में एक दिन में लगभग एक लाख गैलन (यानी लगभग 22 लाख लीटर) पानी खर्च किया जाता है। एक बार उपयोग में आने के बाद यह पानी बहुत गंदा हो जाता है और उपयोग के लायक नहीं रहता।

कई कारखाने इस गंदे पानी को किसी नाले में बहा देते हैं। कानपुर और आगरा के चमड़े के कारखाने तो इस पानी को सीधे गंगा या यमुना में छोड़ देते हैं। इस गंदे पानी को बाहर नदी नालों में छोड़ने से इन नदी-नालों का पानी भी 'प्रदूषित' (गंदा) हो जाता है। इस पानी से नहाने या इसे पीने से लोगों को कई तरह की बीमारियां हो जाती हैं। नदी नालों की मछलियां भी मर जाती हैं। इसीलिए सरकार ने अब यह कानून बना दिया है कि ये कारखाने पानी बाहर छोड़ने से पहले, उसे साफ करने का प्रबन्ध करें।

बाहर का मथनी वाला हौद इस गंदे पानी को साफ करने के लिए ही है। इस कारखाने में एक और तालाब भी है जिसमें फिटकरी जैसे रसायन डाल कर नीचे से हवा डाली जाती है। इससे कुछ गंदगी उठकर ऊपर आ जाती है और उसे अलग किया जाता है। फिर यह पानी मथनी वाली हौद में डाला जाता है। पानी में हवा पम्प की जाती है। इन दोनों यंत्रों से कुछ हद तक पानी साफ होता है, पर पूरी तरह नहीं।

अब हम पूरा कारखाना देख चुके थे। हमने सुपरवाईज़र से गेट पास पर साईन कराया। फिर हम लोग चौकीदार को पास लौटा कर कारखाने से बाहर आ गए। अब भी कारखाने की बातें हमारे दिमाग में घूम रही थी।

बड़े कारखाने मे उत्पादन की प्रक्रिया

कारखाने की उत्पादन करने की क्षमता बहुत अधिक होती है। इस चमड़े के कारखाने में प्रतिदिन बकरी या भेड़ के 7,000 चमड़े कमाए जाते हैं। इससे भी बड़े कारखाने होते हैं। यहां उत्पादन में मशीन एवं रासायनिक क्रियाओं का उपयोग किया गया है। आगे के पाठ में इस कारखाने की तुलना एक छोटे कारखाने से करोगे, जहां यही काम बिना मशीनों व रासायनिक क्रिया से किया जाता है। इस कारण उसकी उत्पादन क्षमता भी कम है।

बड़े कारखानों में उत्पादन को बनाए रखने के लिए

एक खास प्रकार की व्यवस्था की ज़रूरत होती है। तुमने पढ़ा कि यह कारखाना 24 घण्टे चलता है ताकि उत्पादन करने की क्षमता का पूरा उपयोग हो। इस कारण मज़दूर तीन पाली में काम करते हैं। काम को इस हिसाब से बांटा गया है कि कभी भी कोई मशीन या मज़दूर खाली नहीं बैठे। एक का काम होने पर दूसरे को देता है, दूसरा तीसरे को और यह क्रम बिना टूटे चलता रहता है। कारखाने चलाने के लिए मैनेजर, इंजीनियर जैसे अधिकारियों की नियुक्ति की जाती है। ये लोग कारखाने की व्यवस्था देखते हैं। ऐसे कारखाने लगाने मे बहुत पैसों की ज़रूरत होती है। जिस कारखाने में हम गए उसकी कीमत 10 करोड़ रुपए (हज़ार लाख) है।

यदि बीड़ी बनाने का सारा काम एक बड़े कारखाने के हिसाब से किया जाए तो उसमें क्या-क्या बदलाव आ सकते हैं? समझाओ।

अभ्यास के प्रश्न

1. केवल गलत वाक्यों को सुधार कर लिखो-
   क. सभी कारखानों के मज़दूर 4-5 घंटे से अधिक काम नहीं करते
   ख. चमड़ा कमाने के बाद चूना काटा जाता है
   ग. इस कारखाने का कच्चा माल दूसरे कारखानों से आता है
   घ. पानी के उपयोग के कारण इस कारखाने में प्रदूषण की समस्या हुई है।
2. टेम्पोररी, मशीन, ऑपरेटर, रसायनिक, पानी, बैच, हेल्पर, परमानेन्ट, उत्पादन, सुपरवाईज़र, प्रदूषण, प्रक्रिया- तुमने गुरुजी के साथ इन शब्दों पर चर्चा की है। अब इन शब्दों से वाक्य बनाओ। हर शब्द के लिए अलग वाक्य बनाना है और यह वाक्य पाठ का नहीं होना चाहिए।
3. चमड़ा कमाने की प्रक्रिया को अपने शब्दों मे समझाओ।
4. खालों की खेप बनाने से क्या लाभ होता है?
5. घर पर उत्पादन करना और कारखाने में उत्पादन करने में क्या-क्या अंतर हैं?
6. कारखाने मे काम को बांटकर क्रम से किया जाता है। क्या तुमने चमड़े के इस कारखाने में यह बात देखी? समझाओ।
7. मानो किसी कारखाने में बाल निकालने का काम हाथ से किया जाता है यानी मशीन नहीं है पर चमड़े का उत्पादन कम नहीं हुआ है। यह कैसे सम्भव है, समझाओ।
8. कारखाने में पाली के हिसाब से काम करने की क्या आवश्यकता है?
9. मानो कुछ लोग मिल कर शक्कर का बड़ा कारखाना डालना चाहते हैं। उसके लिए क्या-क्या करना होगा समझाओ।
10. मानो तुम्हारे गांव के पास एक रसायनिक कारखाना खुलता है। उसका गंदा पानी एक नाले में बहाया जाने लगा है जो आगे जाकर नदी में मिलता है। इस कारखाने में तेजाब का बहुत इस्तेमाल होता है जिसकी वजह से बहुत नुकसान होता है। अपने ज़िला मुख्यालय के प्रदूषण बोर्ड के आधिकारी को एक पत्र लिखो जिसमें कारखाने द्वारा किए जा रहे प्रदूषण और उससे होने वाले नुकसान की जानकारी हो।

5. चमड़ा कमाने का छोटा कारखाना

छोटे और बड़े कारखानों में क्या अंतर हो सकते हैं, चर्चा करो।

तुमने चमड़ा कमाने का बड़ा कारखाना देखा। हमने पता किया कि कई जगहों पर चमड़ा कमाने के छोटे कारखाने भी हैं। हमारे मित्र बक्कू मोची ने हमे काका से मिलवाया। काका बहुत सालों से चमड़े के एक छोटे कारखाने में काम कर रहे हैं। वे हमें अपने कारखाने ले गये। एक मोहल्ले की गली के अन्दर, कारखाना इस प्रकार बना था कि बाहर से पता ही नहीं चलता था। कारखाने का नाम सुनकर हमने सोचा था कि बड़ा सा गेट होगा और बिल्डिंग होगी। पर यह तो मोहल्ले के एक बड़े घर जैसा ही था। पहले तो ऐसा लगा कि यह कोई अस्पताल या कांजी हाऊस है। एक तरफ हौद, पुराने खालों के ढेर और सामने एक-दो कमरे का कच्चा पक्का मकान।

पिछले पाठ के आधार पर क्या तुम कच्ची खाल से चमड़ा कमाए जाने की 5 प्रक्रियाएं बता सकते हो?

छोटे कारखाने में कच्ची खाल से चमड़ा निकालने की प्रक्रिया इस प्रकार होती है-

1. सफाई

यह काम हौद में होता है। कच्ची खाल पर मिट्टी, खून आदि लगा रहता है। एक खेप की खालों को साबुन के पानी में भिगो दिया जाता है। फिर हाथ से उनको पलटी करते हैं।

2. बाल निकालना

इस कारखाने में चार हौद हैं। खालों को साफ करने के बाद, दूसरे हौद में डाल दिया जाता है। इस हौद में चूने का पानी रहता है। खाल चूना सोखकर कुछ फूल जाती है और बालों की जड़ें भी ढीली हो जाती हैं। भिगोने के 3-4 दिन बाद छिलाई की जाती है। एक छोटे से फावड़े से बाल निकाले जाते हैं। यह सब करते-करते 6 दिन गुज़र जाते हैं।

3. चूना काटना

खालों के कमाने के लिए यह ज़रूरी है कि उसमें चूना न रहे। चूने का असर निकालने के लिये खालों को अम्ल से धोया जाता है। यह काम भी हौद में होता है। अम्ल का घोल बना लिया जाता है। फिर खालों को इसमें डाल देते हैं। बीच-बीच में उन्हें पलटते हैं। अम्ल का घोल सोख लेने पर चूने का असर खत्म हो जाता है।

4. कमाना

यह सब से महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। कमाने से खाल लचीली, मज़बूत और टिकाऊ बनती है। तब यह चमड़ा कहलाता है। कमाने के लिये बबूल की छाल या घटबोर, ऐसे कुछ वनस्पति को पीस लिया जाता है। फिर इनका घोल बनाते हैं। घोल बनाकर खालों की खेप को हौद में भिगो देते हैं। हर तीन दिन बाद इनको पलटते हैं।

हमारे सामने, काका हौद में उतर कर, नीचे की खालों को ऊपर रखते जा रहे थे। खालों को पलटना बहुत ज़रूरी है नहीं तो इसका रस पूरी तरह और बराबर नहीं फैलेगा। 15 दिन तक खालों को इस घोल में रखा जाता है। बीच में एक बार पूरे घोल को बदल देते हैं।

इस कारखाने में कमाने के लिए वनस्पति का उपयोग होता है। इसलिये इस प्रक्रिया को "वनस्पति द्वारा कमाना" कहते हैं।

5. मुलायम और लचीला बनाना

जब खालों में कड़ापन आ जाये तो समझो कमाना पूरा हुआ। अब उनको धोकर सुखाया जाता है। मुलायम और लचीला बनाने के लिए तेल, पानी और गुड़ पिलाया जाता है। कंजी या अरन्डी का तेल उपयोग करते हैं।

इस सारी प्रक्रिया में कुल मिलाकर 30 दिन लगते हैं। यानी खालों की एक खेप को सभी प्रक्रियाओं से गुज़रने में 30 दिन लगते हैं। काका ने कहा "रोज़ का हिसाब लगाएं तो 20-25 खालों का चमड़ा तैयार हो जाता है। सभी काम मज़दूर हाथ से करते हैं। यदि हमारे पास काम बहुत हो तो 50 खाल दिन भर में कमा सकते हैं। आजकल काम अधिक नहीं मिलता। जब मांग कम होती है तो खाली भी बैठना पड़ता है। उस समय मज़दूरों को छोड़ देते हैं।"

छोटे कारखाने के दो ऐसे उदाहरण दो जहां बड़े कारखाने की तुलना में मशीन से काम न होकर हाथ से काम होता है।

दोनों कारखानों में बाल निकालने की प्रक्रिया एक बार फिर से पढ़ो, इन दोनों में क्या फर्क है?

सोडियम सल्फाइड रसायन का उपयोग करने से क्या लाभ होता है?

छोटे-बड़े कारखाने में चमड़ा कमाने की प्रक्रिया मे अंतर

बड़े कारखाने में अधिक उत्पादन होता है। हमने जो कारखाना देखा, उसमें प्रतिदिन 7,000 बकरियों भेड़ों का चमड़ा कमाया जाता है। काका के छोटे कारखाने में बहुत कम चमड़ा तैयार होता है। महीने भर मे 40-60 गाय व भैंस की खालों का चमड़ा कमाया जाता है।

बड़े कारखाने में हौद, मथनी वाली मशीन, बाल काटने की मशीन और कई ड्रम होते हैं। छोटे कारखाने में केवल छोटे हौद होते हैं। बड़े कारखाने में मशीन और रासायनिक क्रियाओं का उपयोग होता है जबकि छोटे कारखाने मे वनस्पतियों का उपयोग होता है।

काका खालों को पलटते हुए

चमड़ा कमाते समय जो रसायन डाला जाता है, उसके कारण भी समय कम लगता है। साथ में यह भी है कि खालों को ड्रम में डालकर घुमाते हैं, जिससे खालें ठीक से रसायन सोख लेती हैं।

बबूल की छाल का उपयोग करें तो खालों को बहुत दिन हौद में रखना पड़ता है, बीच-बीच में उनको पलटना पड़ता है और एक बार घोल भी बदलना पड़ता है। हाथ से ये सब काम करने से समय भी अधिक खर्च होता है।

इसलिए यदि हम पूरी प्रक्रिया की तुलना करें तो एक बैच या खेप को छोटे कारखाने मे 25-30 दिन लग जाते हैं और बड़े कारखाने में 4-6 दिन ही लगते हैं।

कारखाने का सामान कहां जाता है

सामने दो व्यक्ति खालों को एक के ऊपर एक रखते जा रहे थे। खाल को सुरक्षित रखने के लिये खालों पर नमक छिड़कते और परतों में फैला देते। काका ने बताया, "यह सब माल कलकत्ता जाएगा। अच्छा माल है। मशीनों द्वारा कुछ विशेष रासायनिक क्रियाओं से तैयार किया जायेगा। इस कारखाने में तो हम थोड़ी खराब खाल का ही चमड़ा कमाते हैं। हमारे यहां मोची और कुछ छोटे

एक-एक परत पर नमक छिड़कते हुए मज़दूर

दुकानदार ही चमड़ा खरीदने आते हैं। उनके लिये ऐसे कमाया चमड़ा ठीक है।"

हमने काका से अपने बारे में और कारखाने में काम कर रहे अन्य मज़दूरों के बारे में भी बताने को कहा। काका शुरू हो गये, "हम कारखाने में सुबह 8.30 बजे आ जाते हैं और शाम को 5 बजे तक रहते हैं। हम दो मज़दूर हैं जो यहां रोज़ आते हैं। हमारा काम बंधा हुआ है। जैसे-जैसे चमड़ा कमाने का काम आता है दूसरे मज़दूर रखे जाते हैं। इन्हें दिन के हिसाब से मज़दूरी मिलती है। कुछ खास-खास काम हम दो ही करते हैं। हमें दूसरे मज़दूरों का काम देखना भी पड़ता है। ज़रूरत पड़े तो हम ही सभी काम कर लेते हैं।"

चमड़े के काम में काफी गंदगी में रहना पड़ता है। दिन भर गंदे पानी में खड़े रहना पड़ता है और साथ में बदबू भी सहनी पड़ती है। "इस परेशानी से बचने के लिए आप मालिक से हाथ में पहनने वाले दस्ताने और प्लास्टिक के जूते आदि की मांग क्यों नहीं करते?" हमने पूछा। हमारी बात को समझते हुए काका बोले "मालिक हमारी सुविधा का इतना ध्यान कहां रखते हैं? और हम मांग करें तो नौकरी से हाथ धोना पड़ेगा। हमें 30 रुपए रोज़ मिल जाते हैं, यही बहुत है।"

छोटे और बड़े कारखानों के मज़दूरों में क्या अंतर है?

कारखाने में गंदगी

कारखाने में बहुत बदबू आ रही थी। जब कारखाने में उपयोग किया पानी बाहर निकाल देते हैं तो पूरे मोहल्ले भर में बदबू फैल जाती है। इस बात पर मालिक का नगर निगम के साथ केस चल रहा था।

नगर निगम का कहना था कि कारखाने को शहर के बाहर ले जाना चाहिए। इसे घनी बस्ती में नहीं होना चाहिए। मालिक का कहना था कि बाहर ले जाने के लिए उसे सुविधाएं मिलनी चाहिए। 30 साल पहले कोई बस्ती नहीं थी। अब आस-पास बस्ती फैल गई है, तो उसका दोष नहीं है।

इस कारखाने का मालिक 30 साल पहले कानपुर से आया था। उसने अपने पिता के साथ यह काम शुरू किया था। उस समय इस शहर में एक-दो ही चमड़ा कमाने के कारखाने थे। धीरे-धीरे इस कारखाने के आस-पास बस्ती बन गई। कई सालों तक चमड़े की मांग बहुत थी। अब बड़े कारखानों में कमाया हुआ चमड़ा बाज़ार में छाया हुआ है और इस कारखाने पर मुश्किलें आ गयी हैं।

काका ने मुंह बनाते हुए कहा, "इस धंधे में कोई दम नहीं है।" और यह कहते कहते वे गुनगुनाने लगे-

"एक था चमड़ा
दो थे मोची
काटते-मारते
मोड़ते-जोड़ते
बनाते जाते
मजबूत जूते
ढोते-छीलते
ध्यान से कमाते
सारा काम
वे ही करते
आया प्लास्टिक,
कहता 'चल हट'

क्यों करता है तू
बेकार की खट-पट
छोड़ दे पकाना-कमाना
अब तो रबर-प्लास्टिक
रेगज़ीन का है ज़माना।"

काका ने कहा, "जब से चमड़े की चीज़ें बनाने वालों ने बड़े कारखानों में कमाया हुआ चमड़ा खरीदना शुरू किया है, तब से छोटे कारखानों में कमाए गए चमड़े की मांग कम हो गई है। प्लास्टिक के आने से मोची भी कम चमड़ा खरीदते हैं। छोटे कारखानों को पर्याप्त काम नहीं मिल पाता।"

छोटा कारखाना बड़े से बहुत अलग है। इन छोटे कारखानों को लगातार काम नहीं मिलता। काका के छोटे कारखाने में महीने भर में कभी 40 खालें कमाते हैं तो कभी 60 खालें।

बड़े कारखानों के पास बहुत काम है। जूते बनाने वाले कारखाने, दुकानदार, विदेशी व्यापारी, ये सभी बड़े कारखानों से चमड़े खरीदते हैं। इसलिए ये कारखाने लगातार नियमित रूप से चल पाते हैं।

काका

अभ्यास के प्रश्न

1. चमड़े के इस छोटे कारखाने में, बड़े की तुलना में, कम उत्पादन क्यों होता है? कारण सहित समझाओ।
2. छोटे कारखाने में कितने प्रकार के मज़दूर हैं? वे क्या काम करते हैं?
3. चमड़े का काम करने वाले मज़दूरों को क्या परेशानियां होती हैं?
4. पृष्ठ 209 पर बने चित्र-3 एवं पृष्ठ 215 में क्या दिखाया गया है? क्या इन दोनों में एक ही प्रकार का काम हो रहा है? इन में क्या अन्तर है?
5. पृष्ठ 208 पर बने चित्र में कई ड्रम दिखाई देते हैं। क्या ये यंत्र छोटे कारखाने में हैं? इससे उत्पादन कैसे बढ़ाया जा सकता है?
7. मोहल्ले वालों की परेशानी का क्या कारण है? तुम्हारी राय में इस समस्या का क्या हल होना चाहिए समझाओ।
8. कई छोटे कारखाने धीरे-धीरे बंद हो रहे है। क्या यह बात सही है? कारण सहित समझाओ।

6. भारत में कपड़ा उद्योग का इतिहास
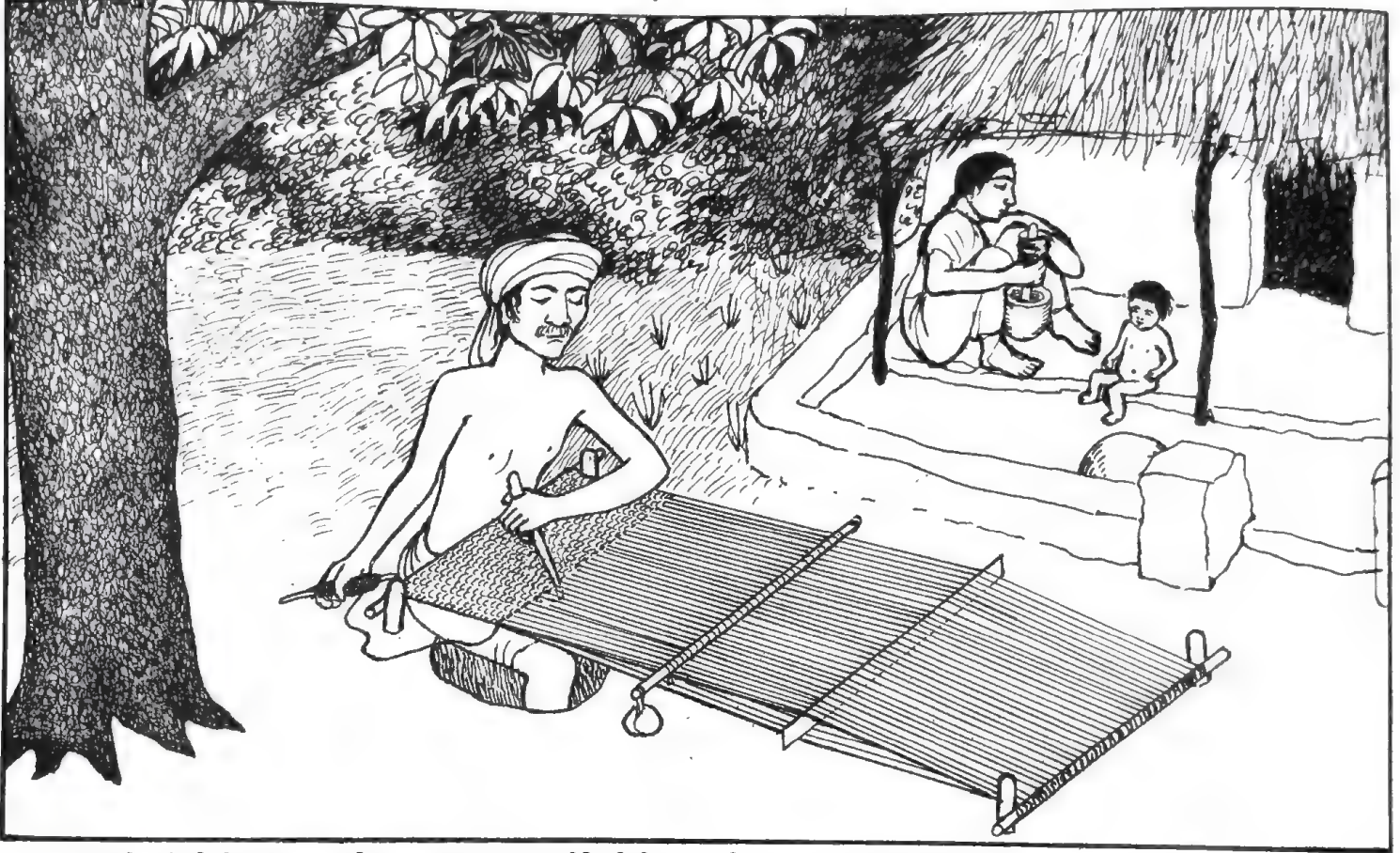
तुमने चीज़ों के उत्पादन के अलग-अलग तरीके देखे - कहीं कारीगर अपने घर पर अपने औज़ारों से चीज़ें बनाता है और उन्हें खुद बेचता है, कहीं वह दलालों के लिए काम करता है, तो कहीं और कारखानों में मज़दूरी द्वारा उत्पादन किया जाता है। इस पाठ में हम कपड़े उद्योग के उदाहरण से समझेंगे कि उत्पादन करने के तरीकों में बदलाव भी आते हैं और कुछ पुराने तरीके भी बने रहते हैं।

भारत में बहुत पुराने समय से बुनकर कपड़ा बुनते आए हैं। कपड़ा बनाने का सारा काम बुनकर के घर पर उसके परिवार के लोग मिल कर करते थे। वे रूई धुनकते, पोनी बनाते और अपनी तकली या चरखे पर सूत कातते थे। रूई तो बुनकर किसानों से खरीद लेता था। बुनकर अपने करघे पर सूत से कपड़ा बुन लेता था। बुने हुए कपड़े को रंग में डाल कर रंगा जाता था। यह काम भी बुनकर के घर पर ही होता था।

बुनकर और उसके परिवार के लोग अपनी सुविधा के अनुसार काम करने का समय तय करते। जब गर्मी तेज़ हो जाती तो सूखी गर्मी में धागा टूटने लगता और काम रोकना पड़ता था। कोई और काम पड़ने पर, जैसे जब बाज़ार जाना पड़े, वे बुनने का काम रोक सकते थे। कपड़ा तैयार हो जाने पर बुनकर उसे शहर के बाज़ार या गांव में लगने वाले हाटों में बेच आता था। जहां भी उसे अच्छी कीमत मिले वहां वह अपना माल बेच कर अपना व परिवार का खर्च चलाता था।

बुनकर के घर पर क्या-क्या काम होता था?

उसे कपास/रुई कैसे मिलती थी?

चरखा, करघा आदि औज़ार किसके थे?

वह अपने द्वारा बनाए गए कपड़े का क्या करता था?

कपड़े की मांग बढ़ी - उत्पादन कैसे बढ़ाएं?

कई बुनकर साधारण लोगों के लिए रोज़ के उपयोग का मोटा कपड़ा बनाते थे। कुछ बुनकर बहुत अच्छे किस्म का कपड़ा बनाने में कुशल हो गए थे। अमीर लोग तरह-तरह के सुन्दर डिज़ाईनों में अच्छे किस्म का कपड़ा चाहने लगे थे। अमीरों को रंगीन, हल्के ज़री वाले कपड़े पसन्द आते थे। भारत के बुनकर इन मांगों को पूरा करते-करते इतने कुशल हो गए कि उनका यश देश-विदेश में फैलने लगा था। चीन, ईरान, अरब, अफ्रीका के अमीर लोग भारतीय कपड़ा खूब पसन्द करते थे। कई व्यापारी यहां का कपड़ा इन दूर देशों में बेच आते थे और खूब मुनाफा कमाते थे।

जब कपड़ों के लिए देश-विदेश में मांग बढ़ी तो बुनकरों के सामने कई समस्याएं आयीं। अब भी कपड़ा बनाने का सब काम बुनकरों के घर पर ही होता था। जब कपड़ा तैयार हो जाए तो उसे बेचने के लिए बाज़ार भी ले जाना पड़ता था। ऐसी स्थिति में पूरी मेहनत करने पर भी वे कपड़े का उत्पादन अधिक नहीं कर पा रहे थे।

अब वे क्या कर सकते थे? क्या तुम कुछ उपाय सुझा सकते हो?

चलो देखते हैं उस समय के बुनकरों ने इस मुश्किल को दूर करने के लिए क्या-क्या किया।

बुनकरों की बस्तियां और गांव

सन् 1200 के बाद कुछ खास गांव या शहरों में खूब सारे बुनकर आकर इकट्ठे रहने लगे। अब तक तो शहरों में थोड़े बहुत बुनकर ही रहते थे। अब सैकड़ों हज़ारों बुनकरों की बस्तियां कुछ शहरों में बनने लगीं। ऐसे कुछ शहर थेः कांचीपुरम (तमिलनाडु), खम्बात (गुजरात), देवगिरी (महाराष्ट्र), बनारस (उत्तर प्रदेश)।

ऐसे बस्तियों में रहकर बुनकरों को क्या फ़ायदा हुआ होगा?

इन जगहों पर बड़े बाज़ार होते थे जहां चीज़ें बेचने खरीदने में काफी सहूलियत होती थी। अब इन बुनकरों को दूर के बाज़ार व हाट में नहीं जाना पड़ता। अपने ही शहर में आसानी से कपड़ा बेच सकते थे। इस तरह कई शहरों व गांवों में बुनकरों के मोहल्ले बनने लगे।

इससे कपड़े के व्यापारियों को क्या लाभ हुआ होगा ?

कपड़ा बनाने का काम कई भागों में बंटा

दूसरा बदलाव यह हुआ कि अब बुनकरों के घरों में सूत बनना बंद होने लगा। कपड़े की मांग बहुत थी, इस

बुनकरों की बस्ती

लिए बुनकरों के पास बहुत काम था। इस कारण बुनकरों का पूरा परिवार अब बुनने के काम में ही मदद करता।

अब उन्हें सूत कहां से मिलता था? क्या सूत लाने उन्हें गांव-गांव भटकना पड़ता था? नहीं। सूत की इस बढ़ती हुई मांग को देखकर, गांव व शहरों के कई लोगों ने सोचा, क्यों न हम और काम छोड़कर केवल सूत ही कातें? ऐसे लोग खेती-बाड़ी या दूसरे उद्योग धंधे छोड़-छाड़ कर केवल सूत कातने का काम करने लगे। ये लोग भी बुनकर मोहल्लों के आस-पास आकर बस गए थे। ये लोग बाज़ार से रुई खरीदते थे और अपने चरखे पर कात कर बुनकरों को बेचते थे।

शुरू में सूत कातने वाले खुद रुई की सफाई, धुनाई करते थे। मगर धीरे-धीरे इन कामों को करने वाले भी अलग हो गए। कोई अपने यंत्र से रुई साफ करता तो कोई धुनकी या तांत से उसे धुनकता। ये लोग पिंजारे और धुनकर कहलाते हैं।

धीरे-धीरे कपड़े बनाने का काम अलग-अलग परिवारों में होने लगा। कपास की सफाई, धुनकना, रंगना, छापना, धुलाई, कलफ लगाना ये सारे काम पहले बुनकर खुद करते थे। अब हर काम के लिए अलग दस्तकार हो गए। इस तरह बुनकरों के शहरों में बसने से कई बदलाव आए।

जब बुनकरों की बस्तियां बन गईं तब :—

बुनकर के घर पर क्या-क्या काम होने लगा?

सूत उसे कहां से मिलता था?

तुमने पिछले पाठों में दस्तकार के काम के बारे में पढ़ा। बुनकर को दस्तकार क्यों कहा जाता है?

बुनकर के परिवार के अलावा कपड़ा बनाने के काम में कौन-कौन लोग लगे थे?

बस्तियों के बसने से बुनकर के काम में क्या मुख्य बदलाव आया?

दादन प्रथा

सन् 1500 के बाद यूरोप के कई देशों से व्यापारी भारत के कपड़े खरीदने आने लगे। यूरोप के अलावा अफ्रीका, अरब, ईरान, चीन, इन्डोनेशिया आदि देशों में भी इन कपड़ों की खूब मांग थी। इस तरह कपड़ों की मांग खूब बढ़ी।

दलाल बुनकर से कपड़ा लेते हुए

दलाल व्यापारी को कपड़ा देते हुए
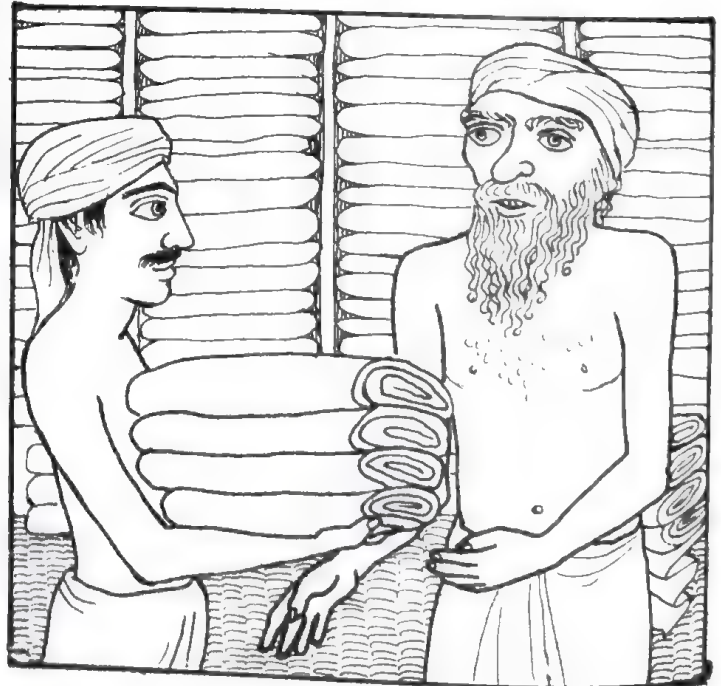
दूर के शहरों में कपड़ा पहुंचाता था व्यापारी। इसलिए व्यापारी को ही पता रहता कि कौन से कपड़े की मांग कहां पर कितनी है। बुनकर को यह सब नहीं पता रहता था। इससे बुनकर के सामने एक समस्या खड़ी हो जाती। मान लो एक बुनकर ने एक खास तरह का कपड़ा काफी मात्रा में बुन लिया और वह बिका नहीं तो वह तो भूखा मर जायेगा। बुनकर को भला कैसे मालूम पड़ता कि कहां किस चीज़ की मांग है।

व्यापारी कई गांवों और शहरों के बुनकरों से कपड़ा खरीदते और बंदरगाहों में जहाज़ पर लदवाकर दूसरे शहरों में भेज देते। पर एक व्यापारी इतने शहरों में स्वयं जाकर तो कपड़ा इकट्ठा नहीं कर सकता था। इस समस्या का हल कुछ हद तक दादन प्रथा के ज़रिए निकाला।

बुनकरों से कपड़ा खरीदने के लिए व्यापारी कई दलाल रखने लगे थे। व्यापारी दलाल को पैसे देते थे। दलाल इन पैसों से अलग-अलग बुनकरों द्वारा बनाया गया कपड़ा खरीदते थे। यह कपड़ा खरीदकर वे व्यापारी को देते थे। इस काम के लिए व्यापारी दलाल को अलग से हिस्सा देता था। दलाल जितना अधिक माल व्यापारी के लिए खरीदता, व्यापारी उसे उतने ही अधिक पैसे देता था।

तुमने पिछले पाठों में क्या इस प्रकार की व्यवस्था के बारे में पढ़ा? किस पाठ में और किस के बारे में?

व्यापारियों के सामने भी समस्या थी। देश विदेश के व्यापारियों के बीच कपड़ा खरीदने की होड़ लगी रहती थी। हर एक व्यापारी चाहता था कि उसे अधिक से अधिक कपड़ा खरीदने व बेचने को मिले। हरेक चाहता था कि किसी प्रकार बुनकर को बांध दे ताकि वह अपना माल दूसरे व्यापारियों को न बेचे, उसे ही बेचे।

व्यापारी का दलाल बुनकरों के पास जाता और कहता, "भाई मुझे इस डिज़ाइन के कपड़े इतने सारे चाहिए। तुम हमसे इतने रुपये एडवांस ले लो। जब कपड़ा बुन जाये तो हमें ही वह कपड़ा देना किसी दूसरे को नहीं। तब हम तुम्हें बकाया पैसा देंगे।"

इसी प्रथा को दादन प्रथा कहते हैं। दादन प्रथा में बुनकर को कपड़ा बुनने के लिए सूत आदि कच्चे माल के पैसे दलाल से पहले ही मिल जाते थे।

व्यापारियों ने अलग-अलग गांवों और शहरों में बसे कारीगरों से कपड़ा खरीदने का क्या प्रबन्ध किया था?

एक तरफ बुनकरों को इससे फायदा भी था। उन्हें अब कपड़ा बुनने से पहले ही उसकी कीमत का कुछ हिस्सा मिल जाता था। इससे वे सूत और अन्य ज़रूरी चीज़ें खरीद सकते थे। साथ ही कपड़ा बेचने के सिरदर्द से भी वे बच सकते थे। उन्हें पहले से पता भी रहता था कि उन्हें किस तरह का कपड़ा बुनना है और कितना बुनना है।

पर दूसरी तरफ अब वे खुद निर्णय नहीं ले सकते थे कि वे क्या बनाएंगे और कितना। अब कपड़ों का डिज़ाईन और उनकी मात्रा व्यापारी ही तय करने लगा। कपड़े की कीमत तय करने में भी व्यापारी का हाथ बढ़ने लगा। चूँकि दलाल और व्यापारी चाहते थे कि उनका मुनाफा कम न हो, वे कोशिश करते कि बुनकर को कम से कम पैसे मिलें।

व्यापारी जहाज़ पर कपड़ा लदवा रहा है
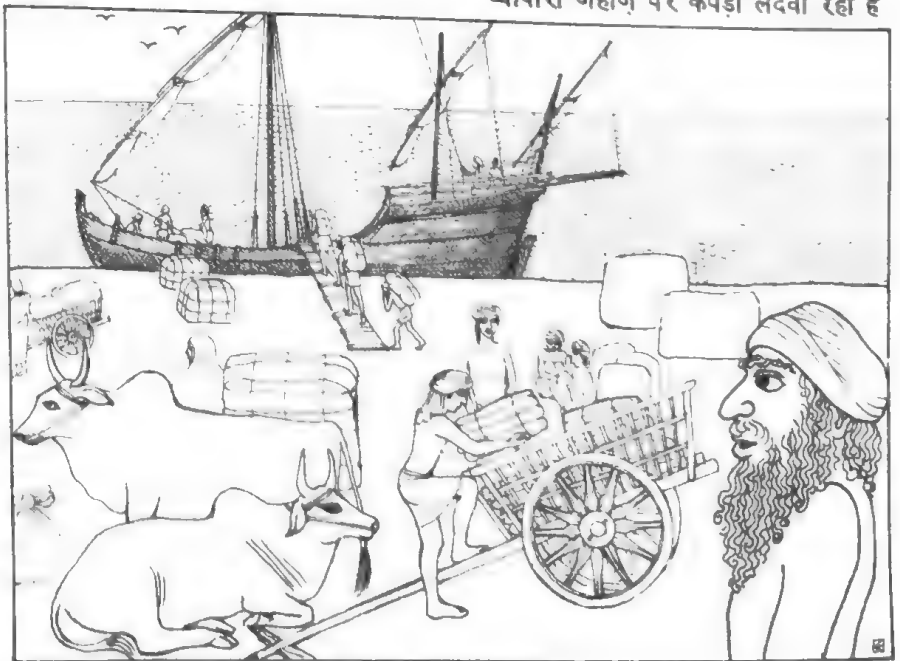
कई जगह, खासकर बंगाल में, उस समय की सरकार की मदद से व्यापारी बुनकरों के साथ ज़ोर ज़बरदस्ती करने लगे। अगर बुनकर अपना बना हुआ कपड़ा किसी दूसरे व्यापारी को बेच देता या निर्धारित समय तक बनाकर नहीं देता तो उसे दंड भी दिया जाता था। इस तरह दादन प्रथा से बुनकरों की आमदनी कम होने लगी थी। सन् 1700 तक आते-आते हम देखते हैं कि बुनकरों की काफी बुरी दशा हो गई थी। उन्हें अपने रोज़ाना के भोजन पानी के लिए भी उधार लेना पड़ रहा था।

दादन प्रथा किस प्रकार शुरू हुई, समझाओ?

बुनकरों के काम के तरीके पर दादन प्रथा के कारण क्या बदलाव आया।?

सही विकल्प चुनकर खाली स्थान भरो :

दादन प्रथा में :-

1. कपड़ा बुनने से पहले व्यापारी बुनकर को ——— (एडवांस नहीं देता था/देता था)।

2. बुने हुए कपड़े को बुनकर बाज़ार में ——— (किसी को भी बेच सकता था/ केवल एडवांस देने वाले को बेच सकता था)।

3. सूत और अन्य कच्चा माल ——— (व्यापारी देता था/बुनकर खुद खरीदता था)।

4. करघा और अन्य औज़ार ——— (बुनकर के अपने होते थे/व्यापारी के होते थे)।

5. कितना और कैसा कपड़ा बनाना है यह ——— (व्यापारी / बुनकर खुद)तय करता था।

भारत में कपड़ा मिलों की शुरुआत

1725 के लगभग 300 लाख गज़ कपड़ा भारत से बनकर यूरोप जाता था पर आश्चर्य की बात है कि 100 साल बाद सन् 1850 तक आते-आते यह व्यापार नहीं रहा। ऐसा क्यों हुआ?

सन् 1700 और 1800 के बीच जब भारत में दादन प्रथा चल रही थी, यूरोप में कपड़े की बड़ी-बड़ी मिलें लगना शुरू हो गई थीं। अंग्रेज़ भारत से रूई खरीदकर अपने देश के मिलों में कपड़ा बुनकर दुनिया भर मे बेचते थे। उन्हीं दिनों भारत पर भी अंग्रेज़ो का शासन हो गया था। मिलों में बने कपड़े बहुत सस्ते होते थे, इसलिए भारत में भी बहुत लोग उसी को खरीदने लगे। बुनकरों के कपड़े खरीदने वाले बहुत कम हो गए। इसलिए बुनकरों का धंधा बंद होने लगा।

इतने में भारत के कई सेठों ने सोचा- क्यों न हम भी अंग्रेज़ों की तरह अपने देश में कारखाने लगायें?

कारखाने लगाने के लिए उन्हें क्या-क्या ज़रूरी था?

1. ज़मीन

2.

3.

4.

इन सब के लिए धन की ज़रूरत थी। कोई भी साधारण बुनकर या कारीगर कहां से इतना पैसा जुटा सकता था! इतने पैसे तो बड़े व्यापारियों और साहूकारों के पास ही थे।

बम्बई की सबसे पहली कपड़ा मिल 1854 में सी. एन. डावर ने लगाई थी। सेठ रणछोड़लाल छोटालाल ने सन् 1861 में अहमदाबाद में पहली सूत कातने की मिल लगवाई। मशीनें उसे इंग्लैंड से मंगवानी पड़ीं। मिल लगवाने के लिए उसने कई और सेठों से पैसे उधार मांगकर जुटाये। 1867 में उसी मिल में नई मशीनों से बुनने का काम भी शुरू हुआ।

इसके बाद धीरे-धीरे बम्बई (महाराष्ट्र), अहमदाबाद (गुजरात), मद्रास (तमिलनाडु), इन्दौर (मध्यप्रदेश) जैसी जगहों पर कपड़ा मिलें लगने लगीं। इन मिलों में करघों पर काम नहीं होता था। इन में सूत कातने और कपड़ा बुनने की कई मशीनें लगाई गईं। ये मशीनें भाप और बाद में बिजली के इंजन से चलाई जातीं, जिस तरह से यूरोप की मिलों में मशीनें चलती थीं।

दिन में 8 घंटों से अधिक काम नहीं कराया जा सकता है। मिलों में बना कपड़ा मिल-मालिकों द्वारा बेचा जाता है। कपड़ों का दाम वे ही तय करते हैं और जो मुनाफा होता है उसे वे ही रखते हैं।

खाली स्थान भरो :-

1. पहले जब कपड़ा करघे पर बनाया जाता था तो करघा कपड़ा बनाने वालों का अपना था। मगर जब मिलों में कपड़ा बनने लगा तो मशीनें ————— (मालिक/मज़दूर) की होने लगीं।

2. पहले रूई जैसा कच्चा माल बुनकर खरीदता था जबकि मिलों में कच्चा माल ————— खरीदता है।

3. पहले ————— कपड़ा बेचता था जबकि अब ————— कपड़ा बेचता है।

4. पहले कारीगर का खर्चा कपड़ा बेचने से निकलता था जबकि मिल मज़दूरों का खर्चा ————— से निकलता है।

उत्पादन करने के अलग-अलग तरीके

तुम ने कपड़ा उद्योग के इतिहास से समझा कि एक ही चीज़ (कपड़े) बनाने के तरीके किस प्रकार बदले। पहले बुनकर घर पर काम करके स्वयं कपड़ा बेचता था। फिर बुनकरों की बस्तियां और शहर बने। फिर दादन प्रथा का चलन हुआ। और फिर कपड़े की मिलें शुरू हुईं।

आज भी अलग-अलग उद्योग अलग-अलग तरह से काम करते हैं। तुम ने इन के कुछ उदाहरण पढ़े। कसेरा- एक स्वतंत्र दस्तकार है। बीड़ी में दादन की सी प्रथा चलती है। चमड़े के छोटे व बड़े कारखानों में तुम ने मज़दूर काम करते हुए देखे। यही नहीं एक ही वस्तु कई तरह से बनाई जाती है। कपड़े की मिलों के बनने के बाद भी, कई जगहों पर बुनकर घर पर भी काम करते हैं। व्यापारी उन से दादन पर कपड़ा बनवाते हैं। या फिर कई बुनकर ही मिल कर अपना माल बेचने का प्रबंध करते हैं। इसी तरह लोहे की चीज़ें लोहार घर पर भी बना रहा है और लोहे की चीज़ें बनाने के कारखाने भी हैं।

अपने आस-पास बन रही चीज़ों के बारे में पता करो। वे कारखाने में बनती हैं या दादन से या स्वतंत्र दस्तकार द्वारा?

इन वस्तुओं के बारे में भी पता करो- मटके, कपड़े, कागज़, किताबें, अखबार, तेल, ईंट, हल-बक्खर, कुर्सी, टेबिल, बीड़ी, माचिस।

अभ्यास के प्रश्न

1. शुरू में बुनकर अपने बनाए कपड़े का क्या करता था?
2. उत्पादन बढ़ाने के लिए बुनकरों ने क्या किया ?
3. कपड़ा बनाने के काम में क्या-क्या काम होते हैं? इन्हें अलग-अलग लोग क्यों करने लगे?
4. दादन प्रथा किसे कहा जाता था?
5. दादन प्रथा में व्यापारी क्या करता था? दलाल क्या करता था?
6. दादन प्रथा में और स्वतंत्र बुनकर में क्या-क्या अंतर है?
7. सन् 1750 और सन् 1850 के बीच बुनकरों की हालत क्यों बिगड़ गई थी?
8. भारत में कपड़े के कारखाने कब शुरु हुए?
9. इन कारखानों में धन किसने लगाया था?
10. इन कारखानों में मज़दूर कौन थे?
11. कारखानों में काम करने और दादन प्रथा से काम करने में क्या अन्तर हैं?

7. कोर्ट-कचहरी और न्याय

तुमने अपने आसपास कई कोर्ट-कचरी के मामलों के बारे मे सुना होगा। ऐसे एकाध किस्से तुम कक्षा में सुनाओ। कचहरियों में कौन-कौन होते हैं और वे क्या-क्या करते हैं, चर्चा करो। इस पाठ के सारे उप शीर्षक एक बार पढ़ो। क्या तुमने इन शब्दों को पहले कभी सुना है - क्या तुम इनके बारे में कुछ जानते हो?

कल्लूराम और परसूराम का झगड़ा

कल्लूराम और परसूराम के खेत एक दूसरे से लगे हुए थे और दोनों खेतों के बीच मेढ़ थी। एक दिन परसूराम अपनी मेढ़ बना रहा था। उसने छुपके से मेढ़ को कल्लू के खेत में खिसका दिया। यह तीसरा साल था जब परसू ने इस तरह मेढ़ खिसकाई थी। कल्लू को पता भी नहीं चला था और मेढ़ एक हाथ खिसक चुकी थी।

जब कल्लू आपने खेत बखरने लगा तो उसे कुछ गड़बड़ लगा। उसे याद था कि उसका बक्खर बिजली के खम्भे के आगे तक चलता था। लेकिन यह क्या? अब तो एक हाथ पहले ही रुक जाता है। उसे यकीन हो गया कि परसू ने मेढ़ खिसकाई है। उसी रात वह अपने भाई काछी और उसके बेटे रेवा के साथ खेत पर गया और सबने मिलकर रातों-रात मेढ़ खोदकर वापस खिसका दी।

सुबह जब परसू को बात पता चली तो वह लाठी लेकर कल्लू के यहां आ धमका। उसने कल्लू की काफी पिटाई की। उसका एक हाथ भी तोड़ दिया। इतने में कोटवार भी वहां पर आ गया। लोगों ने बीच-बचाव किया और बात आगे बढ़ने से रोकी। बाद में काछी और रेवा कल्लू को पास के शहर हरदा ले गये। कोटवार भी साथ गया। उन्होंने अस्पताल में कल्लू की जांच करवाई और पलस्तर चढ़वाया। फिर सब रपट लिखवाने पुलिस थाने गए।

कल्लू की पिटाई

थाने में रपट

कल्लू थाने मे रपट लिखवा रहा है

थाने में रेवा ने परसू के विरुद्ध रपट लिखवाई। दारोगा ने कोरे कागज़ पर रपट लिखी। यह 'मौके की पहली रपट' (एफ. आई. आर. या फर्स्ट इन्फर्मेशन रिपोर्ट) थी। रेवा ने उस पर हस्ताक्षर करके दारोगा से कहा- "आप रजिस्टर में रिपोर्ट दर्ज़ कीजिए, और एक प्रति हमें भी दीजिएगा।" दारोगा ने कहा- "जब थानेदार साहब आयेंगे तभी रजिस्टर में लिख सकते हैं।" तो रेवा, काछी, कल्लू और कोटवार थाने में रुके रहे। थोड़ी देर बाद थानेदार आया। उससे रेवा ने रजिस्टर में रपट दर्ज़ करवाई। कल्लू जाने को तैयार हुआ, पर रेवा ने उसे रोक कर थानेदार से रपट की एक प्रति मांगी। रेवा को पता था कि रपट की प्रति रपट लिखवाने वाले को मिलती है। उसने रपट की एक प्रति ली और फिर सब अपने गांव के लिए निकले।

जुर्म की छानबीन

एफ. आई. आर. के आधार पर थानेदार ने दारोगा से छान-बीन करने को कहा। उसी दिन दोपहर को दारोगा कल्लू के गांव पहुंचा। पहले तो उसने कल्लू की चोटें देखीं। डॉक्टर की पर्ची से पता चला कि चोटें काफी गंभीर हैं। उसने कल्लू के पड़ोसियों से पूछताछ की। पड़ोसियों ने सुबह की मारपीट का विवरण दिया। दारोगा को यकीन हो गया कि कल्लू को मारपीट से ही इतनी चोट लगी थी।

वह परसू के पास गया और उसको बताया कि वह उसे "गंभीर चोट पहुंचाने" के जुर्म में गिरफ्तार कर रहा है। दारोगा उसे अपने साथ हरदा थाने ले गया। वहां उससे पूछताछ की। वह इस बात से मना कर रहा था कि उसने कल्लू की पिटाई की है। थानेदार ने बहुत कहा कि जुर्म कबूल कर लो पर उसने साफ इन्कार कर दिया।

एफ. आई. आर.

थाने में एफ. आई. आर. कोई भी दर्ज़ करा सकता है। यदि पढ़ा-लिखा हो तो स्वयं लिखकर और हस्ताक्षर कर के एफ. आई. आर. दिया जा सकता है। मौखिक बताने पर थानेदार लिख लेता है और पढ़कर सुनाता है और जानकारी देने वाले से हस्ताक्षर करवाता है। एफ. आई. आर. में अपराध का ब्यौरा, अपराधी का नाम, जगह का नाम व अपराध का समय होना ज़रूरी है। गवाहों के नाम भी एफ. आई. आर. में होने चाहिए। इसी के आधार पर जुर्म का ब्यौरा आदि एक खास रजिस्टर, स्टेशन हाऊस रजिस्टर में दर्ज़ होना चाहिए। जानकारी देने वाले को एफ. आई. आर. की एक प्रति निशुल्क मिलनी चाहिए। यदि कोई थानेदार एफ. आई. आर. नहीं दर्ज़ करता तो रपट देने वाला ही सीधे पुलिस अधीक्षक या मजिस्ट्रेट के पास रपट दर्ज़ करा सकता है- डाक से भी रपट भेजी जा सकती है।

गिरफ्तारी

किसी भी व्यक्ति को गिरफ्तार करते समय, उसे यह बताना ज़रूरी है कि उसे किस जुर्म के लिए गिरफ्तार किया जा रहा है। यदि यह उसे नहीं बताया जाता तो उसको यह अधिकार है कि वह यह पूछे और जुर्म बताये जाने पर ही जाने को तैयार हो। बिना जुर्म बताये किसी को गिरफ्तार करना गलत है।

पुलिस किसी व्यक्ति को इसलिए गिरफ्तार करती है ताकि उससे पूछताछ कर सके, ताकि वह अपने खिलाफ सबूतों को नष्ट न कर सके और वह दूसरा कोई आपराध न कर सके। यानी गिरफ्तारी सज़ा नही है।

पुलिस थाने में किसी पर भी अपना जुर्म कबूल करने की ज़बरदस्ती नहीं की जा सकती है। यदि थाने में कोई अपना जुर्म कबूल कर भी ले तो इसके आधार पर उसे सज़ा नहीं हो सकती। जुर्म कबूल करना तभी माना जायेगा जब उसे कचहरी में या मजिस्ट्रेट के सामने कबूल किया जाये। पुलिस का काम तो सिर्फ मामले की छानबीन करके कचहरी में सबूत पेश करना है। पुलिस किसी को कोई सज़ा नहीं दे सकती। कचहरी में सारे मामले की सुनवाई होने के बाद मजिस्ट्रेट ही सज़ा सुना सकता है।

थाने में रपट किस बात की लिखवाई गई?

यदि तुम रपट लिखवाते तो किस तरह लिखवाते? एक रपट लिख कर बताओ।

एफ. आई. आर. दर्ज़ करने वाले को उसकी एक प्रति क्यो लेनी चाहिए - कक्षा मे चर्चा करो।

जुर्म की छानबीन किसने की और किस प्रकार की?

किस को गिरफ्तार किया गया और किस जुर्म के आरोप में?

ज़मानत

थानेदार ने परसू को हवालात में बंद कर दिया। उसने थानेदार से बहुत कहा कि उसे छोड़ दिया जाये। थानेदार ने परसू को बताया, "तुम्हे किसी की ज़मानत पर ही छोड़ा जा सकता है। कोई व्यक्ति जिसके पास ज़मीन-जायदाद है, तुम्हारी ज़िम्मेदारी ले सकता है। यदि वह तुम्हारी ज़मानत ले तो तुम्हें घर जाने दिया जा सकता है। यदि तुम्हारे पास ही कुछ ज़मीन जायदाद है तो तुम ही बॉण्ड भर सकते हो। तुम्हें जब भी थाने या कचहरी बुलाया जाये तुम आओगे, नहीं तो यह जायदाद ज़ब्त कर ली जायेगी"

परसू ने बताया कि उसके पास 8 एकड़ ज़मीन है। उसने अपने लिए बॉण्ड भर दिया। थानेदार ने उसे यह भी बताया कि "कल तुम्हें पेशी के लिए कचहरी आना पड़ेगा। तुम चाहो तो अपने बचाव के लिए वकील रख सकते हो।"

पहली पेशी

दूसरे दिन पहली श्रेणी के जुड़िशियल मजिस्ट्रेट की कचहरी में पेशी होने वाली थी। यह कचहरी हरदा में थी। कचहरी के आसपास काफी लोग थे। काले कोट पहने हुए वकील, कई अभियुक्त, (यानी वे लोग जिनके खिलाफ किसी जुर्म की शिकायत दर्ज़ थी), और दूसरे मामलों की पेशी के लिए आए कई लोग। परसू, कल्लू, काछी, परसू का बेटा रामू, थानेदार और दारोगा भी वहां थे। परसू ने अपना वकील कर लिया था। पुलिस की ओर से सरकारी वकील मुकदमा लड़ रहे थे।

ग़ैर ज़मानती जुर्म

परसू तो ज़मानत पर छूट गया पर सभी जुर्म ज़मानती नहीं होते। चोरी, डकैती, कत्ल, रिश्वत आदि जुर्मों में गिरफ्तार लोगों को ज़मानत पर छूटने का अधिकार नहीं है। ऐसे ग़ैर ज़मानती जुर्मों में भी मजिस्ट्रेट को ज़मानत की अर्ज़ी दी जा सकती है। यह फिर मजिस्ट्रेट के ऊपर है कि वह ज़मानत मंजूर करे या इन्कार कर दे।

इस कहानी में परसू का जुर्म ज़मानती था या ग़ैर ज़मानती?

काफी देर के बाद परसू की पेशी की पुकार हुई। जुडिशियल मजिस्ट्रेट के सामने यह इस मुकदमे की पहली पेशी थी। थानेदार ने परसू के वकील को एफ. आई. आर. और पुलिस रिपोर्ट की एक प्रति दे दी ताकि उसे यह पता रहे कि परसू पर क्या इल्ज़ाम लगाए जा रहे हैं। यह भी पता हो कि उसके विरुद्ध क्या जानकारी इकट्ठी की गई है। इन सब बातों को जानकर ही परसू का वकील उसका बचाव कर सकता था।

जुडिशियल मजिस्ट्रेट ने परसू पर कल्लू को 'गंभीर चोट पहुंचाने' का इल्ज़ाम लगाया। इस जुर्म में सात साल तक की जेल हो सकती है। परसू ने इल्ज़ाम कबूल नहीं किया। मजिस्ट्रेट ने 15 दिन बाद अगली पेशी की तारीख दी।

गवाह और पेशी

परसू ने अपने पक्ष मे कुछ दोस्तों के नाम गवाहों में दिए थे। कल्लू ने जो रपट थाने में लिखवाई थी, उसमें भी कुछ लोगों के नाम गवाहों में लिखवाए थे। दारोगा ने छानबीन के समय कल्लू के दो पड़ोसियों के नाम लिख लिए थे। इन सब को मजिस्ट्रेट से आदेश मिले कि उन्हें मजिस्ट्रेट की कचहरी में गवाही देने के लिए उपस्थित होना है।

15 दिन बाद जब दूसरी पेशी की तारीख आई तब सब हरदा की कचहरी पहुंचे। पहले सरकार की तरफ की एक गवाह को बुलाया गया। उसने उस दिन की सारी बात बताई। फिर दोनों तरफ के वकीलों ने उससे और पूछताछ की। एसे दो ही गवाहों की गवाही के बाद मजिस्ट्रेट ने अगली पेशी की तारीख दे दी।

इस तरह हर पेशी में एक दो गवाहों के बयान और पूछताछ होती और फिर अगली पेशी की तारीख मिल जाती। इस तरह पेशियां चलती रहीं। परसू को अपने वकील को फीस देनी पड़ती। साथ में हरदा आने-जाने का खर्चा भी था। जिस दिन पेशी होती, उस दिन खेती का नुकसान भी होता। करीब एक साल तक ये पेशियां चलती रहीं। फिर मजिस्ट्रेट ने अपना फैसला सुनाया कि परसू को चार साल की कैद होगी।

परसू के मामले का मुकदमा किस कचहरी में चला?

पहली पेशी में क्या हुआ?

पुलिस की ओर से वकील क्या कहलाता है?

कचहरी
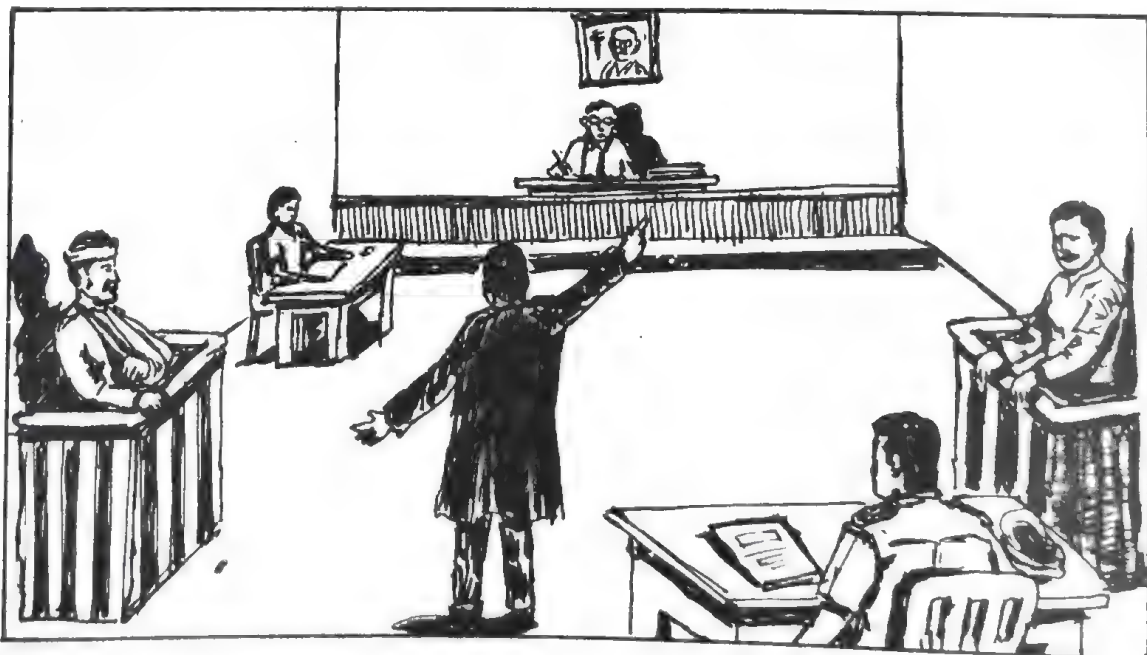
किसी भी केस में गवाहों की बात को सुनना क्यों ज़रूरी है - कक्षा में चर्चा करो।

पिछले पृष्ठ पर दिए गए चित्र में वकील, मजिस्ट्रेट, गवाह और लिपिक को पहचानो।

सेशन्स कोर्ट में अपील

परसू फैसले से खुश नहीं था। वकील ने बताया, "सेशन्स कोर्ट में अपील की जा सकती है। सेशन्स जज, हरदा के मजिस्ट्रेट से ऊपर होते हैं और मजिस्ट्रेट का फैसला बदल सकते हैं। हो सकता है सेशन्स जज तुम्हें दोषी न ठहराएं या सज़ा कम कर दें।" परसू ने पूछा "सेशन्स कोर्ट कहां है? मुझे अपील करने के लिए क्या करना होगा?" वकील ने कहा- "सेशन्स कोर्ट होशंगाबाद में है। और अपील वगैरह मुझ पर छोड़ दो। बस मेरी फीस देते रहना।" परसू घबरा गया। "होशंगाबाद तो इतनी दूर है। वहां पेशियों में ऐसे जाना पड़े तो हर बार 50 रु. खर्च हो जाएंगे।" वकील ने उसे बताया कि होशंगाबाद में मुकदमा चले तो एकाध बार ही परसू को जाना पड़ेगा। बाकी तो मुकदमे की फाईल से काम चल जाएगा।

तो परसू की ओर से उसके वकील ने होशंगाबाद ज़िले के सेशन्स कोर्ट में अपील कर दी। इसके कारण सेशंस जज ने परसू की सज़ा स्थगित कर दी। उसे तुरन्त जेल नहीं जाना पड़ा।

फिर सेशन्स कोर्ट में मुकदमा चलता रहा। परसू और उसके गवाहों को एक बार बुलाया गया और एक बार कल्लू और उसके गवाहों को, बाकी पेशी तो वकील ने सम्भाली। दो साल बाद सेशन्स जज ने फैसला दिया। उसने परसू की सज़ा कुछ कम कर दी।

जुडिशियल मजिस्ट्रेट का फैसला —————— जज बदल सकता है।

उच्च न्यायालय

परसू फैसला सुनकर हताश हो गया। उसने अपने वकील से पूछा "क्या ये फैसला भी कहीं बदला जा सकता है?" वकील ने बताया, "हर प्रदेश में एक उच्च न्यायालय होता है। वह प्रदेश की सबसे बड़ी कचहरी है। किसी भी मुकदमें के फैसले जो कि प्रदेश की किसी भी छोटी कचहरी और सेशन्स कोर्ट में दिए गए हों, वहां पर बदले जा सकते हैं। उच्च न्यायालय में अभियुक्त या गवाह नहीं बुलाये जाते। वहां पर तो केवल जानकारी की फाईल के आधार पर फैसला होता है। चाहो तो उच्च न्यायालय में भी अपील करें। हो सकता है सज़ा और कम हो जाए।"

परसू ने वकील को और फीस देकर उच्च न्यायालय में अपील की। उच्च न्यायालय ने अपील दर्ज़ कर ली और कुछ समय बाद फैसला दिया। लेकिन परसू उच्च न्यायालय में मुकदमा हार गया। उसे वही सज़ा काटनी पड़ी जो सेशन्स जज ने दी थी। आखिर परसू को जेल जाना ही पड़ा।

दीवानी और फौजदारी मामले

परसू बहुत दुखी था। उसने अपने वकील से कहा "इतने साल मैं जेल में रहूंगा तो मेरी खेती का क्या होगा? क्या ऐसा नहीं हो सकता कि मैं कल्लू को कुछ पैसे दे दूं और बात निपट जाए?" वकील ने बताया "ऐसा नहीं हो सकता है। तुमने कल्लू के साथ मारपीट की थी। इसलिए यह एक फौजदारी मामला है, यानी ऐसा अपराध जिसमें दंड दिया जा सकता है। मारपीट, चोरी, डकैती, मिलावट करना, रिश्वत लेना, खतरनाक दवाएं बनाना- ये सब फौजदारी मामले हैं। इनमे जुर्म साबित होने पर सज़ा अवश्य मिलेगी। सिर्फ ज़मीन जायदाद के मामलों में सज़ा नहीं होती। ये दीवानी मामले होते हैं।"

"दीवानी मामले क्या होते हैं?" परसू ने पूछा।

वकील ने कहा, "जब भी कोई ज़मीन जायदाद के झगड़े होते हैं, या मज़दूर-मालिक के बीच मज़दूरी को लेकर, या किसी के बीच पैसे के लेन-देन या व्यापार के झगड़े होते हैं तो दीवानी मामले दर्ज़ कराए जाते हैं। जैसे तुम्हारी मेढ़ का झगड़ा था, उसपर दीवानी मुकदमा चलाया जा सकता था। इन में सज़ा तो नहीं होती पर जिस भी पक्ष

को नुकसान सहना पड़ा है या जिसकी सम्पत्ति पर नाजायज़ कब्ज़ा किया गया है, उसे उस नुकसान का मुआवज़ा दिया जा सकता है या सम्पत्ति लौटाई जा सकती है। पर तुमने तो मारपीट भी की थी। इसलिए यह फौजदारी मुकदमा बन गया। इसमें तो कल्लू को पैसे देने से छुटकारा नहीं मिलेगा।"

परसू ने जब कल्लू की मेढ़ खिसकाई थी तो मामला दीवानी था या फौजदारी?

परसू ने जब कल्लू को पीटा तो मामला दीवानी था या फौजदारी?

इतने सारे न्यायालय, और इतना समय लगता है इस पूरी प्रक्रिया में। परसू को हाईकोर्ट का फैसला मिलते-मिलते इतने साल लग गए। दीवानी मामलों में तो कभी 10-15 साल भी लग जाते हैं। कई बार नुकसान का भुक्त भोगी बिना मुआवज़ा पाए ही मर जाता है। ऐसे जानें कितने मुकदमें होते हैं।

* * * * * * *

अपने गुरुजी के साथ इस पाठ के आधार पर मुकदमे का एक नाटक करो। कल्लू, परसू, गवाह, मजिस्ट्रेट और कौन-कौन पात्र होंगे? कहानी को एक बार ध्यान से पढ़ कर सब पात्र चुन लो। वकील और सरकारी वकील को सवाल जवाब ठीक से करने पड़ेंगे। नाटक में मजिस्ट्रेट को अपना फैसला भी सुनाना होगा।

*

सर्वोच्च न्यायालय

परसू की कहानी तो उच्च न्यायालय में ही खत्म हुई। पर पूरे भारत में एक सबसे ऊंची कचहरी भी है। उसे सर्वोच्च न्यायालय या सुप्रीम कोर्ट कहते हैं। इस न्यायालय में खास तरह के मामले ही जाते हैं। तो न्यायालयों या कचहरियों का ढांचा इस प्रकार है :–
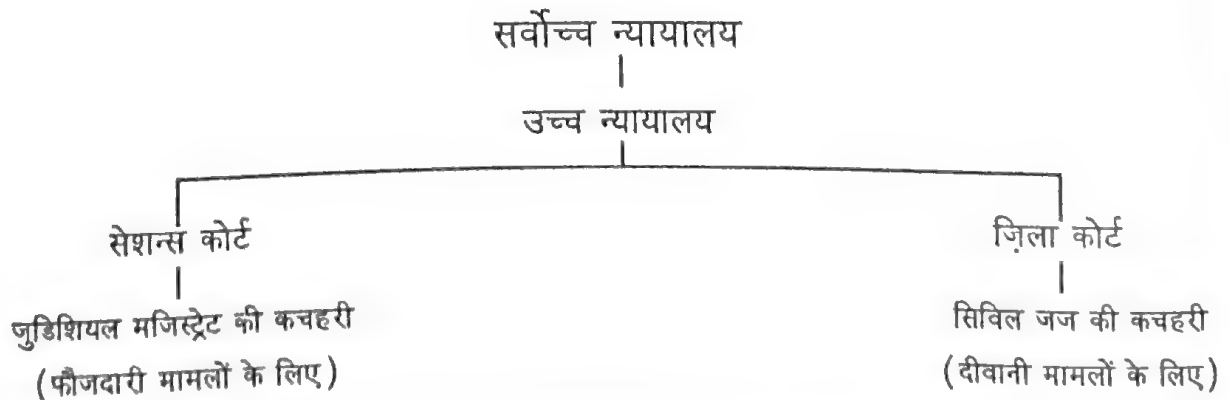
अभ्यास के प्रश्न

1. एफ. आई आर. कहां और कब दर्ज़ किया जाता है?
2. गिरफतारी और सज़ा में क्या अंतर है?
3. ज़मानत मिलने से क्या होता है?
4. ज़मानत किस प्रकार दी जाती है?
5. इस मुकदमे में पहली पेशी से लेकर उच्च न्यायालय के फैसले तक क्या हुआ? दस वाक्यों में लिखो।
6. न्यायालय में बहुत लंबे समय तक केस चलने से लोगों पर क्या प्रभाव पड़ता है? अपने विचार लिखो।
7. यदि किसी व्यक्ति के मरने के बाद उसकी सम्पत्ति के बंटवारे पर झगड़ा हो कि किसका कितना हिस्सा है तो इस मामले को सुलझाने के लिए क्या करना पड़ेगा?
8. फौजदारी और दीवानी मामलों में क्या अन्तर है?
9. क्या उच्च न्यायालय का दिया गया फैसला ज़िला अदालत या सेशन्स अदालत बदल सकती हैं?
10. सेशन्स अदालत के फैसले से यदि कोई संतुष्ट नहीं है तो वह क्या कर सकता है?
11. खाली स्थान भरो–

    इस तरह कचहरियां 4 स्तर की होती हैं। फौजदारी मामलों के लिए पहले स्तर की कचहरी है जुडिशियल मजिस्ट्रेट की। इस का फैसला ———— में बदला जा सकता है। इस कचहरी का फैसला ———— में, जिसका फैसला ———— में ही बदला जा सकता है।

8. पैसा एवं बिन पैसों का लेन देन

लेन देन का सिलसिला चला आ रहा है। इसके कई तरीके और रीति रिवाज़ हैं। तुम कोई एक उदाहरण दो जहां लेन-देन बिना पैसों के होता है?

ज्वार के बदले आम

बिन पैसों के लेन देन, अपने समाज से कुछ उदाहरण

तुम्हारे यहां ज़्यादातर चीज़ों का लेन देन पैसे से ही होता होगा। पर कुछ ऐसी वस्तुएं भी होंगी जिन का लेन-देन पैसों के बिना होता है। जैसे कि इस चित्र मे देख सकते हो, मोहन कुछ ज्वार लेकर धीरज काका के पास आम खरीदने पहुंचा। काका ने ज्वार की दो बराबर ढेरियां बनाईं। एक ढेरी को तराज़ू पर रखा और उतने ही आम तौल दिए। आम लेकर मोहन घर आ गया और काका ने दोनो ज्वार की ढेरियां रख लीं। इस प्रकार अनाज के माध्यम से लेन देन हुआ। यहां हिसाब था - 'अनाज से आधा'। और भी कई तरह के हिसाब चलते हैं - जैसे "अनाज बराबर," या "लाभ काट बराबर"।

गांव के लोहार से बक्खर का फाल जुड़वा कर और पहिए पर लोहे की चादर चढ़वा कर लोग ले जाते हैं। तब लोहार को पैसे नहीं चुकाते। हर फसल पर बंधा बंधाया अनाज लोहार को देते हैं। कितना देना है- इसका रिवाज़ तय है। इस रिवाज़ के सहारे सालों से लेन-देन चला आ रहा है।
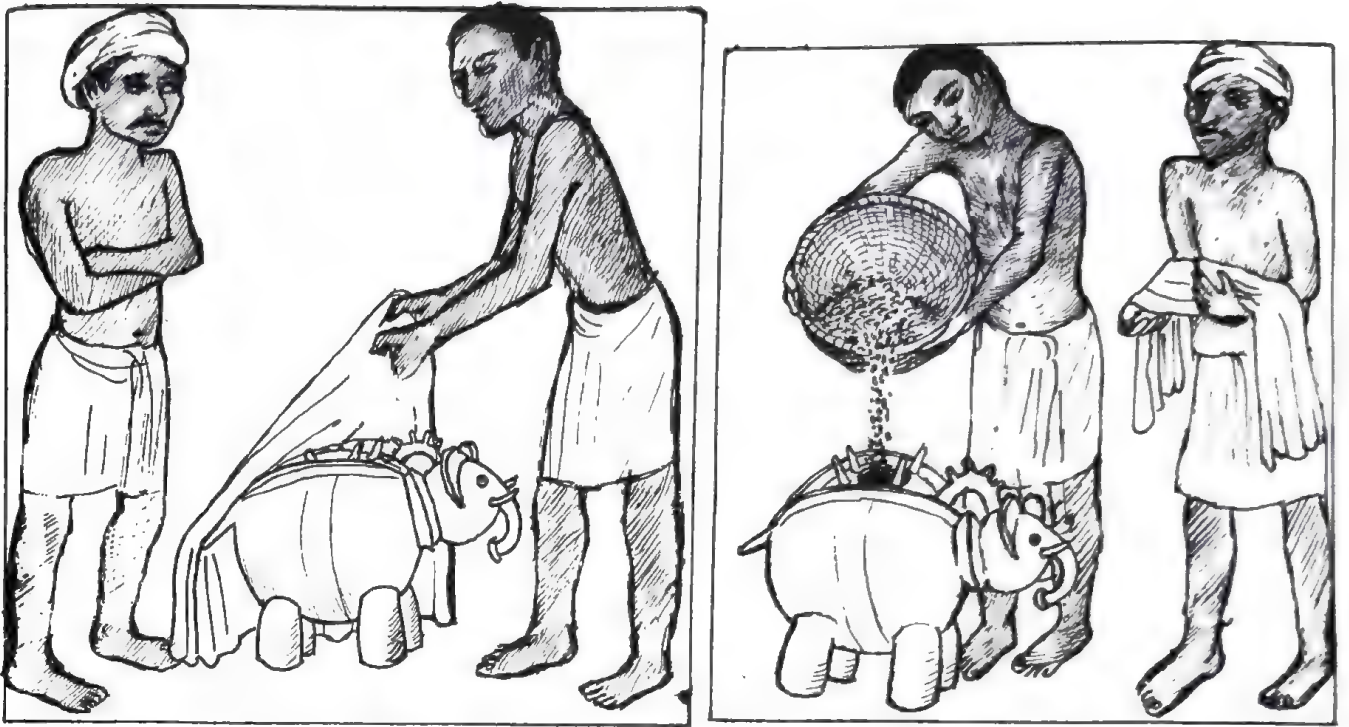
कुम्हार को हाथी के लिए कपड़ा और अनाज दिया जा रहा है

किसके बदले कितना दिया जाएगा, इस बात के रिवाज़ का एक और उदाहरण पढ़ो। बिलासपुर के आदिवासियों के यहां शादी में हाथी पूजा होती है। पूजा के लिए यह हाथी मटकों और सकारों (बड़े दियों) से बनाया जाता है। चित्र में देखो यह प्यारा सा हाथी कैसे बना है।

कुम्हार पूजा का हाथी बना कर तैयार कर चुका है। उसे बदले में क्या मिलेगा? अनाज और कपड़ा। पर कितना मिलेगा?

हाथी की पीठ में छेद होता है। शादी वाले घर के लोग हाथी की पीठ वाले घड़े में जितना धान आए उतना भर देते हैं। और हाथी को पूरी तरह एक नए कपड़े से ढंक देते हैं। यह धान और कपड़ा कुम्हार की मेहनत का भुगतान है। जितना लंबा चौड़ा हाथी उतना लंबा चौड़ा कपड़ा। भुगतान इतना होगा- यह एक रिवाज़ से तय हुआ है।

क्या तुमने लेन देन के ऐसे नियम सुने हैं? क्या कभी इस तरह अनाज के बदले कोई चीज़ खरीदी है? या मेहनत के बदले अनाज लिया है? चर्चा करो।

किस हिसाब से ऐसा लेन देन किया? उन उदाहरणों की सूची बनाओ।

बिन पैसों का लेन-देन, दूसरे समाज के उदाहरण

बिना पैसों का लेन देन सिर्फ हमारे समाज में नहीं होता। इसके उदाहरण सभी समाजों में पाये जाते हैं। रूस के उत्तरी-पूर्वी प्रदेश साईबेरिया के कुछ कबीलों और अलास्का के लोगों के बीच में एक अनोखे तरीके से व्यापार होता है। (नीचे दिए गए चित्रों को देखो)

आमतौर से इन लोगों के बीच दुश्मनी रहती है। इसलिए उन्हें डर रहता है कि कहीं मुलाकात हो गई तो झड़प न हो जाए। पर दोनों को एक दूसरे से आवश्यक सामग्री मिल जाती है।

बर्फीली पगडंडी पर एक महिला मटका लेकर आ रही है। मटके में कई चीज़ें भरी हैं।
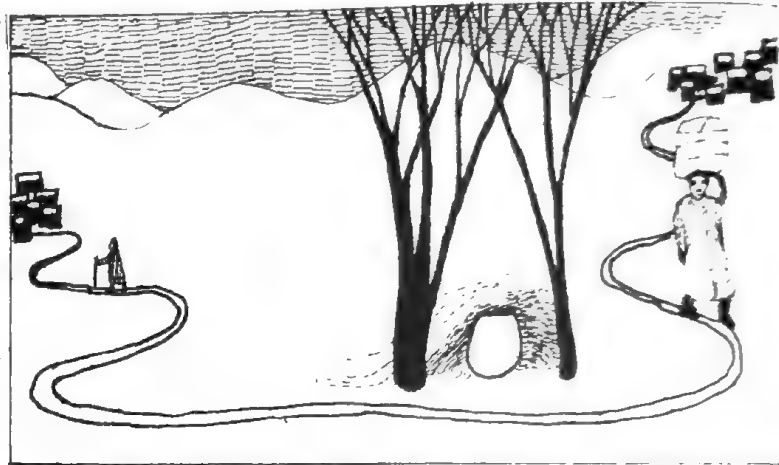
वह निश्चित जगह पर मटका रखकर लौट जाती है - दूसरे गांव से एक आदमी पोटली लेकर आ रहा है।

वह अपनी पोटली रख देता है और मटका लेकर गांव लौट जाता है।

दूसरे दिन पहले गांव की महिला पोटली ले जाती है।

इस तरह इन दोनों गांवों के बीच लेन-देन हो जाता है। हमारा दूसरा उदाहरण है अफ्रीका के गांवों का। पहले उदाहरण में लेन देन दो गाँवों के बीच था। अब हम ऐसे तरीके की बात करेंगे जहां लेन देन कई गांवों के बीच होता है।

एक गांव बसा है नदी के एक तरफ, पहाड़ों की तलहटी में। इन लोगों को शिकार मिल जाता है। वे मांस को धुंआ लगा कर रख लेते हैं। ऐसा मांस यदि बच जाए तो वे नदी के तट पर स्थित एक गांव से मांस के बदले में कुछ शकरकन्द ले आते हैं। यह शकरकन्द ये दूसरे गांव के लोगों ने स्वयं नहीं उगाए। नदी के दूसरे तट पर एक गांव है जहां से इन लोगों ने शकरकन्द लिये। इन गांव वालों को शकरकन्द के बदले में उन्होंने दूसरी चीज़ें दीं जैसे तरबूज़, केला, पपीता आदि। इस तरीके से कई गांवों के बीच लेन देन हो जाता है। जो कुछ भी एक गांव के पास ज़्यादा होता है, वह दूसरे गांव से बदली कर लेते। इस तरह एक से दूसरे, दूसरे से तीसरे, तीसरे से चौथे .... कई गांवों के बीच वस्तुओं का लेन-देन हो जाता है।
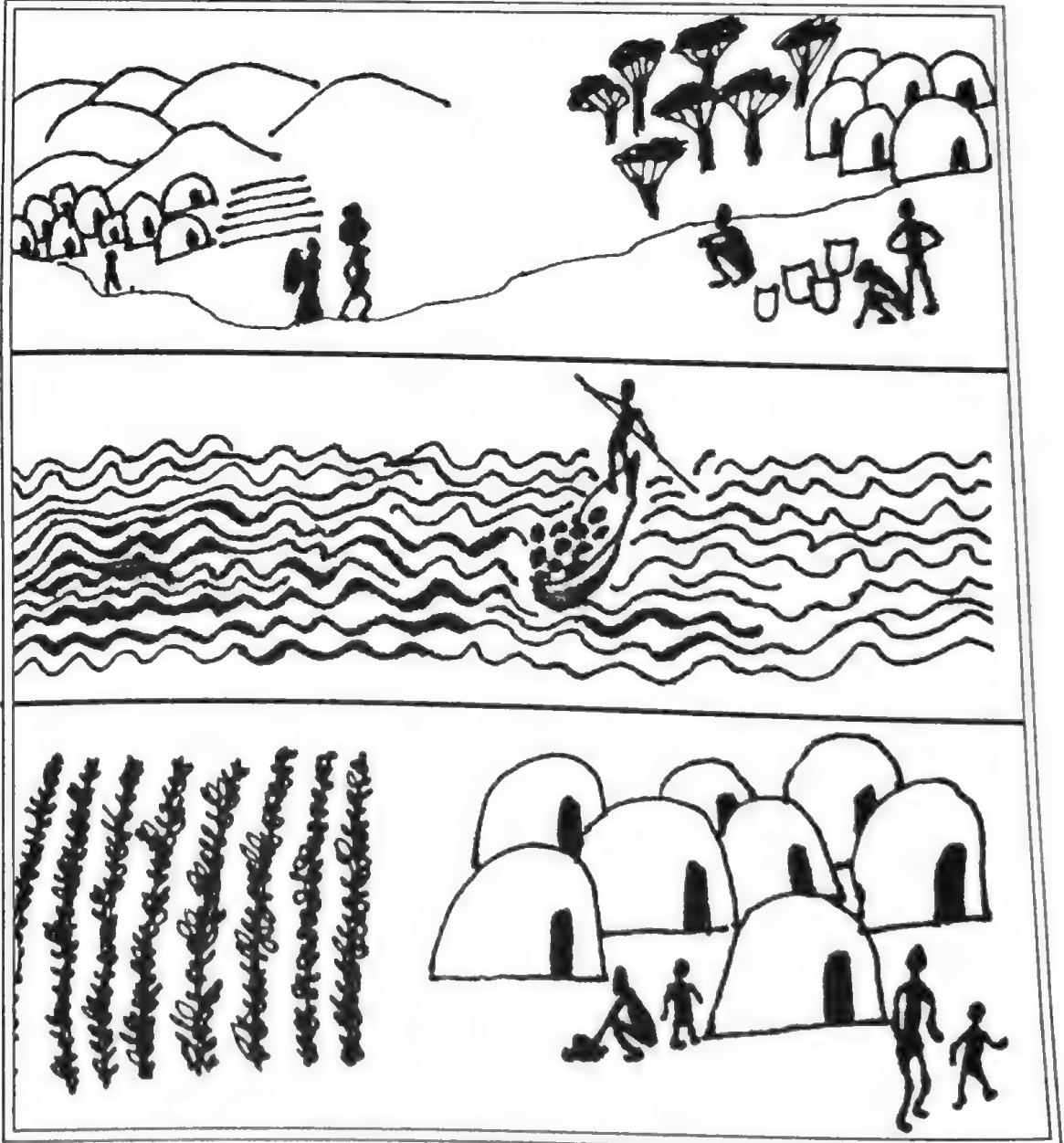
लेन देन की समस्याएं

कितने मांस के बदले में कितना शकरकन्द मिलेगा, कितने शकरकन्द के बदले में कितने केले मिलेंगे- ये बातें तीनों गावों के लोगों ने किसी तरह तय करके लेन देन का एक रिवाज़ बना लिया है। पर, लेन देन का रिवाज़ तय होने से पहले, चीज़ों के मोल को लेकर खींचा तानी हो सकती है। जैसे यहां देखो- एक मटका बेचने वाले और एक कपड़ा बेचने वाले के बीच बहस हो रही है!

बर्तन और कपड़ा बेचने वाले के बीच क्या सौदा तय हुआ होगा? चित्र को पूरा करते हुए उत्तर दो।

पैसे के माध्यम से लेन-देन

कुछ समस्याओं को सुलझाना मुश्किल हो जाता है। नीचे दिए चित्र मे देख सकते हो कि टोकरी भर अनाज और एक गाय को लेकर कैसे लोग उलझ रहे हैं। गाय तो आधे में काटी नहीं जा सकती। कैसे सुलझेगी यह समस्या? .... चलो एक नाटक पढ़कर देखें।

चार व्यक्ति नाटक करते हैं। नाटक के पात्र हैं - रवीन्द्र, गजराज, दिनेश और 'पैसे का दूत'।

नाटक - ''पैसे का दूत आया''

रवीन्द्र एक बकरी खींचता हुआ (झूठमूठ की) दरवाज़े से अन्दर आता है और ज़ोर से कहता है - "गुड़ है? गुड़ है? बकरी के बदले गुड़?" कहकर बैठ जाता है।

तभी गजराज आता है। दरवाज़े से ही कहता है - "अरे दादा! यह बकरी तो मुझे बेच दो।" रवीन्द्र उसके पास जाकर कहता है - "गुड़ है? मुझे बकरी के बदले में गुड़ चाहिए।"

गज़राज - "तुम तो यह बटलोई ले लो। शादी-ब्याह में काम आएगी।"

रवीन्द्र - "नहीं दादा। मोड़ा-मोड़ी की शादी तो हो गई। मैं तो गुड़ ही लूंगा।"

तभी दिनेश आता है और दरवाजे से ही कहता है - "बटलोई है? गुड़ ले जाओ।"

रवीन्द्र उसके पास जाता है। कहता है - "मुझे गुड़ बेच दो और बदले में बकरी ले लो।"

दिनेश ने कहा - "मुझे बकरी नहीं चाहिए, बटलोई चाहिए।"

दिनेश अब गजराज के पास जाता है और कहता है, "मुझे बटलोई बेच दो और गुड़ ले लो।"
गजराज कहता है- "मुझे तो बकरी चाहिए गुड़ नहीं। मैं बकरी के बदले में बटलोई दूंगा।"

	रवीन्द्र	गजराज	दिनेश
खरीदना चाहता है	गुड़	बकरी	बटलोई
बेचना चाहता है	बकरी	बटलोई	गुड़

इस प्रकार हम देखते हैं कि रवीन्द्र, गजराज और दिनेश आपस में सौदा नहीं कर पा रहे हैं, वहां बहुत शोर होता है। कुछ समझ में नहीं आता।

ऊपर दी गई तालिका को देखकर समझाओ कि कोई भी दो व्यक्तियों के बीच सौदा क्यों नहीं हो पा रहा है?

तभी एक व्यक्ति आता है और कहता है - "रुको। सब शांति से बैठ जाओ।" सब उसके

सामने बैठ जाते हैं। वह व्यक्ति कहता है - "मैं हूं पैसे का दूत। मेरे साथ कोई भी सौदा कर सकता है। ये हैं मेरे सिक्के।"

तीनों बोलते हैं, - "हम सिक्कों का क्या करेंगे? हमें तो अपनी ज़रूरत का सामान चाहिए। पैसे का दूत - "आप शांति रखिए, आपको सामान भी मिलेगा।"

अब रवीन्द्र उसके पास गया। उसने बकरी बेच दी और सिक्के लेकर बैठ गया। फिर गजराज गया, उसने बटलोई दे दी और सिक्के ले लिए। इसके बाद दिनेश गया और उसने गुड़ बेचकर सिक्के प्राप्त कर लिए। अब पैसे के दूत ने रवीन्द्र को बुलाया और उससे सिक्के लेकर उसे गुड़ दे दिया। इसी प्रकार गजराज को बकरी देकर उससे सिक्के ले लिए और दिनेश को सिक्कों के बदले बटलोई दे दी। इस प्रकार सभी को उनकी ज़रूरत का सामान प्राप्त हो गया। सिक्के घूमफिर कर पैसे के दूत के पास आ गए।

इस तरह हम देखते हैं कि पहले जो सौदा नहीं हो पा रहा था, वह सिक्कों के माध्यम से आसान हो गया। जब लेन-देन करने वालों ने यह मान लिया कि वे लेन-देन किसी माध्यम से करेगे तो बड़ी आसानी हो गई। यही कारण है कि लेन-देन के लिए **माध्यम** की ज़रूरत होती है। आज कल पैसा वह माध्यम है। लेकिन बहुत पुराने समय में कौड़ियों के माध्यम से या अनाज या सोने आदि के माध्यम से भी लेन-देन हुआ करता था।

बिन पैसे का लेन-देन आज भी होता है, पर पहले कि तुलना में कम हो गया है। पैसे का उपयोग सभी जगह है। इस पैसे के कई रूप हैं - नोट, सिक्के, बैंक का खाता। लेन-देन को सहज और आसान करने के लिए पैसे के नए-नए रूप बनाए जाते हैं। अलगे वर्ष तुम बैंक के काम-काज के बारे में पढ़ोगे कि बैंक के माध्यम से लेन-देन में क्या सहूलियत होती है।

अभ्यास के प्रश्न

1. बिन पैसों के लेन-देन में 'भाव' कैसे तय होता है?
2. पृष्ठ 233 पर बने चित्रों और पृष्ठ 234 पर बने चित्रों की तुलना करते हुए बताओ कि इनमें क्या अंतर है?
3. पैसे के माध्यम से, किस प्रकार लेन-देन में सहूलियत होती है? समझाओ।
4. मान लो कहीं पर लेन-देन का कोई माध्यम नहीं है और लोग किसी चीज़ को लेन-देन का माध्यम बनाना चाहते हैं। किसी ने सुझाव दिया इमली के बीज और दूसरे ने कहा चाँदी के सिक्के। क्या चुना जाना चाहिए? कारण सहित समझाओ।
5. एक मज़दूर परिवार ने कहा- "हम चाहते हैं कि हमें काम के बदले में पैसे की जगह अनाज ही मिले। इससे हमें नुक्सान नहीं होगा।" तुम सोचकर बताओ कि वे बिन पैसे के लेन-देन में सुरक्षित क्यों महसूस कर रहे हैं?

9. पढ़ो और समझो

1. पढ़कर सुनाओ

नीचे दिए गए गद्यांश को पढ़ कर सुनाना है। पहले सभी चुपचाप अपने मन में गद्यांश को पढ़ लो। जो शब्द समझ न आए, उनके नीचे लाईन खीं च लो। इन शब्दों का अर्थ गुरुजी से पूछो। फिर कोई एक छात्र गद्यांश को पढ़े और सब ध्यान से सुनें। पढ़ते समय इन बातों पर ध्यान दे: धीरे पढ़े, ज़ोर से और साफ पढ़े। जहां (,) का चिन्ह और (।) का चिन्ह है वहां रुके। जहां उचित हो आवाज़ भी बदले। मानो मोहन ने गुस्से से कहा "भाग जाओ यहां से।" यह पढ़ते समय आवाज़ में गुस्सा दिखना चाहिए।

गद्यांश पढ़ और सुन लेने के बाद सब अपने मन से उसका शीर्षक अपनी कापी में लिख लें। फिर पुस्तक बंद कर के अपने शब्दों में इस गद्यांश का सार भी लिखें।

भोपाल के बड़े तालाब के पास आज भीड़-भाड़ है। रास्तों पर कुछ बैनर लगे हैं। उन पर कुछ बातें भी लिखी हुई हैं। जैसे, "जब हम दुनिया को ज़िन्दा रखने के लिए रात दिन जुटे रहते हैं, फिर भी लोग हमें क्यों मारना चाहते हैं?"

"हमने तुम्हें खाने को फल, सब्ज़ी, अनाज, मछली जैसी कई चीज़ें दी हैं तो तुम हमें ज़हरीला कचरा और गंदगी क्यों दे रहे हो?"

इन बातों को पढ़ते-पढ़ते हो हल्ला बढ़ गया। पूछताछ करने पर पता चला, आज यहां पानी पंचायत हो रही है। इसमें कई नदियां, तालाब, बांध तथा कुएं भाग ले रहे हैं। इतने में ही प्रमुख अतिथि गंगा नदी वहां पहुंच गईं। हम भी अपना समय गंवाए बिना पंचायत में एक ओर बैठ गए।

पंचायत में तालाब के आसपास के पशु-पक्षी भी मौजूद थे। गंगा ने कुर्सी पर विराजते ही रहीम का दोहा, "रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून, पानी गए न उबरै, मोती मानस चून" पढ़ा और पंचायत की कार्यवाही शुरू की।

भोपाल तालाब ने सबका स्वागत करते हुए पानी पंचायत बुलाने के कारण बताए। तालाब ने कहा कि, "वर्षों पहले मुझे दो-ढाई लाख लोगों की प्यास बुझाने की जिम्मेदारी देकर भोपाल में बसाया गया था। पर पिछले कुछ वर्षों से मेरे ऊपर अत्याचार बढ़ रहे हैं। अब मुझे 8-10 लाख लोगों को पानी देने के लिए कहा जा रहा है। क्या यह मेरे लिए संभव है? कहां 2 लाख की आबादी और अब कहां आठ लाख से भी ज्यादा। उस पर भी मेरे अंदर आस-पास की मिट्टी,

कचरा, गंदा पानी, खरपतवार आदि इकट्ठी हो रही है। भला इन सबके रहते मैं कैसे साफ पानी लोगों को दे सकता हूं? पिछले वर्षों में बरसात भी पर्याप्त रूप से नहीं हुई है, इससे हमारी परेशानी और बढ़ गई है। लोग हमारे पानी की बुराई कर रहे हैं। उससे बीमारियां फैल रही हैं। मैंने अपनी पीड़ा आपको इसलिए बताई है कि ताकि आप भी अपनी आपबीती पंचायत के सामने रखें। जिससे हम मिलजुल कर समस्या को समझें और निदान ढूंढें।"

सभी ने ताली बजाकर तालाब की बातों का समर्थन किया। और जोर से नारा लगाया, "दुनिया को जीवन देने वाले पानी को खराब .... किसने किया, किसने किया?"

2. खिचड़ी को सुलझाओ

यहां दो पाठों की बातें मिल गई हैं। दोनों को अलग करके अपनी कापी में लिख लो। ये अंश किन पाठों से लिए गए हैं?

भारत में भहुत पुराने समय से बुनकर कपड़ा बुनते आए हैं। दिन भर बैठे एकटक काम करने से बहुत से बीड़ी बनाने वालों को तरह-तरह की बीमारियां होती हैं। तम्बाकू के साथ काम करने से सिर भारी होने लगता है। कपड़ा बनाने का सारा काम बुनकर के घर पर उसके परिवार के लोग मिल कर करते थे। आखें दुखने लगती हैं। वे रूई धुनकते, पोनी बनाते और अपनी तकली या चरखे पर सूत कातते थे। सांस लेने में तकलीफ भी होती है। रूई तो बुनकर किसानों से खरीद लेता था। फेफड़ों की बीमारियां और फेफड़ों का कैंसर भी अधिक होता है। बुने हुए कपड़े को रंग में डाल कर रंगा जाता था।

3. शब्द बनाओ

शब्द बनाने हैं। नीचे दिये गये अक्षरों से कम से कम 15 शब्द बनाने हैं — **स ख ल च न ट म र य ड क श ड़ ।** *किसी भी मात्रा का उपयोग कर सकते हैं, जैसे, ृ ु ि ी ा ो ै ^ । एक ही शब्द में अक्षरों का बार-बार उपयोग कर सकते हैं जैसे टमाटर, मामा। शब्द बनाते जाओ और अपनी कापी में लिख लो। चमड़े के कारखानों से संबंधित कम से कम पांच शब्द होने चाहिए। इन पांचों शब्दों के साथ-साथ एक-एक वाक्य बनाओ। उदाहरण:* **खाल** *- मेरे मामा ने चमड़े के कारखाने में खाल पहुंचाने का ठेका लिया है।*

4. सुलझाओ पहेली

तुम्हें पहेलियों को हल करना है। सारे शब्द कानून से संबंधित हैं। ज़रूरत हो तो "कोर्ट कचहरी और न्याय" पाठ फिर से पढ़ना।

1. पुलिया का या बह गया

थाने पर ज़रूर मिलेंगे।

2 कील के आगे टांगो

काले-कोट धारी बन जाये।

3. गवार का र गायब

इस व्यक्ति ने दिए सबूत।

4. विद्यालय में विद्या नहीं

यहां फैसला होता है।

5. दीवार के र पर झगड़ा हुआ

पर मामला थाने में नहीं गया।

6. चमत्कार से तुक सोचो

तुम भी अपने हक समझो।

7. फरशी फर हो गयी

जब कोर्ट की तारीक आई।

8. बया के घोंसले में न जाओ

कचहरी में बात कहनी पड़ेगी

पहली पंक्ति बताती है कि हमें पहले शब्द का क्या करना चाहिए। उदाहरण के लिये, पुलिया का 'या' बह गया तो रह गया 'पुलि'। दूसरी पंक्ति बताती है कि हमें ऐसा शब्द बनाना है, जिसका अर्थ उसी पंक्ति में है। 'पुलि' के साथ ऐसा शब्द बनाओ जिसका अर्थ 'थाने पर जरूर मिलेंगे' हो। तुरंत दिमाग में आता है 'पुलिस'।

5. इस रपट को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दो-

"नाले में मिले विषाक्त पानी से 55 पशु मरे"। (गुना के सोहनलाल जैन द्वारा नई दुनिया 8 मई, 1988 में छपी रपट के आधार पर)

गुना 7 मई। चौपेट नाले का विषाक्त पानी पीने से 55 पशुओं के मरने की बात ज़िला प्रशासन ने स्वीकार की है। मृत पशुओं के पालकों को मुआवज़ा भी दिया जा रहा है। विजयपुर उर्वरक संयंत्र एक बड़ा कारखाना है, जहां रसायनिक खाद तैयार होती है। यह विषाक्त पानी इस कारखाने से आया। इस कारखाने की जांच की जाएगी।

उल्लेखनीय है कि विजयपुर संयंत्र से निकलने वाला शोधित जल इस नाले में बहाया जाता है। जिन गांवों से होकर यह नाला बहता है उन गांवों की पंचायतों के सरपंचों ने डोंडी पिटवा कर ग्रामीणों से कहा है कि वे चौपेट नाले के पानी का उपयोग न करें। सरपंचों की राय में विजयपुर कारखाने का ज़हरीला पानी ही नाले में छोड़ा जा रहा है। दूसरी ओर म.प्र. प्रदूषण निवारण मंडल ने भी कारखाने के प्रबंधकों के साथ जांच पड़ताल शुरू कर दी है।

1. चौपेट नाले के विषाक्त पानी से कैसी दुर्घटना हुई?
2. इस दुर्घटना के शिकार लोगों को क्या राहत मिली?
3. कौन सी सरकारी संस्था ने जांच का भार लिया?
4. क्या इस कारखाने से फैला प्रदूषण, चमड़े के कारखाने के प्रदूषण के समान है? समझाओ।

10. देश और प्रान्त

तुम यह तो जानते ही हो कि हम मध्यप्रदेश में रहते हैं और मध्यप्रदेश भारत का एक प्रान्त है। नक्शे में तुम्हें यह साफ दिख रहा होगा। एक ही जगह पर रहते हुए हम लोग प्रान्त में भी रहते हैं और भारत में भी। यह इसलिए कि मध्यप्रदेश भारत का एक भाग है। इसका मतलब यह है कि हर जगह जो मध्यप्रदेश में है वो भारत में भी होगी। लेकिन भारत तो मध्यप्रदेश से बहुत बड़ा है और उसके बहुत सारे हिस्से मध्यप्रदेश के बाहर हैं। जिस तरह से मध्यप्रदेश एक प्रान्त है भारत के बाकी हिस्से भी प्रान्तों में बंटे हुए हैं।

अगले पृष्ठ के नक्शे में इन प्रान्तों को पहचानकर उलके नाम लिख दो। गुरुजी से कहो भारत का नक्शा कक्षा में टांग दें तो तुम्हें प्रान्त पहचानने में आसनी होगी।

इन प्रान्तों के गांवों और शहरों में बहुत सारे लोग रहते हैं। कितने लोग रहते होंगे क्या तुम अनुमान लगा सकते हो! इसके बारे में गुरुजी से चर्चा करो।

नक्शे में भारत से लगे हुए दो देश, पाकिस्तान और नेपाल भी दिखाये गये हैं।

इनमें से कौन-सी जगहें भारत में हैं, कौन सी मध्यप्रदेश में और कौन सी दूसरे प्रान्त या दूसरे देश में हैं- तालिका में भरो–

क्र. जगह का नाम	मध्यप्रदेश में	दूसरे प्रान्त में	भारत में	दूसरे देश में
1. काठमाण्डू				
2. उदयपुर				
3. कराची				
4. भोपाल				
5. जबलपुर				
6. विजयवाड़ा				
7. इस्लामाबाद				
8. इटारसी				
9. दिल्ली				
10. भुसावल				
11. लाहौर				
12. कपिलवस्तु				
13. कलकत्ता				
14. डिब्रूगढ़				
15. कानपुर				

भारत और उसके प्रान्त
इस्लामाबाद
पाकिस्तान
लाहौर
दिल्ली
कपिलवस्तु
काठमाण्डू
नेपाल
डिब्रूगढ़
कानपुर
उदयपुर
भारत
बंगलादेश
भोपाल
जबलपुर
इटारसी
कलकत्ता
भुसावल
विजयवाड़ा
श्रीलंका
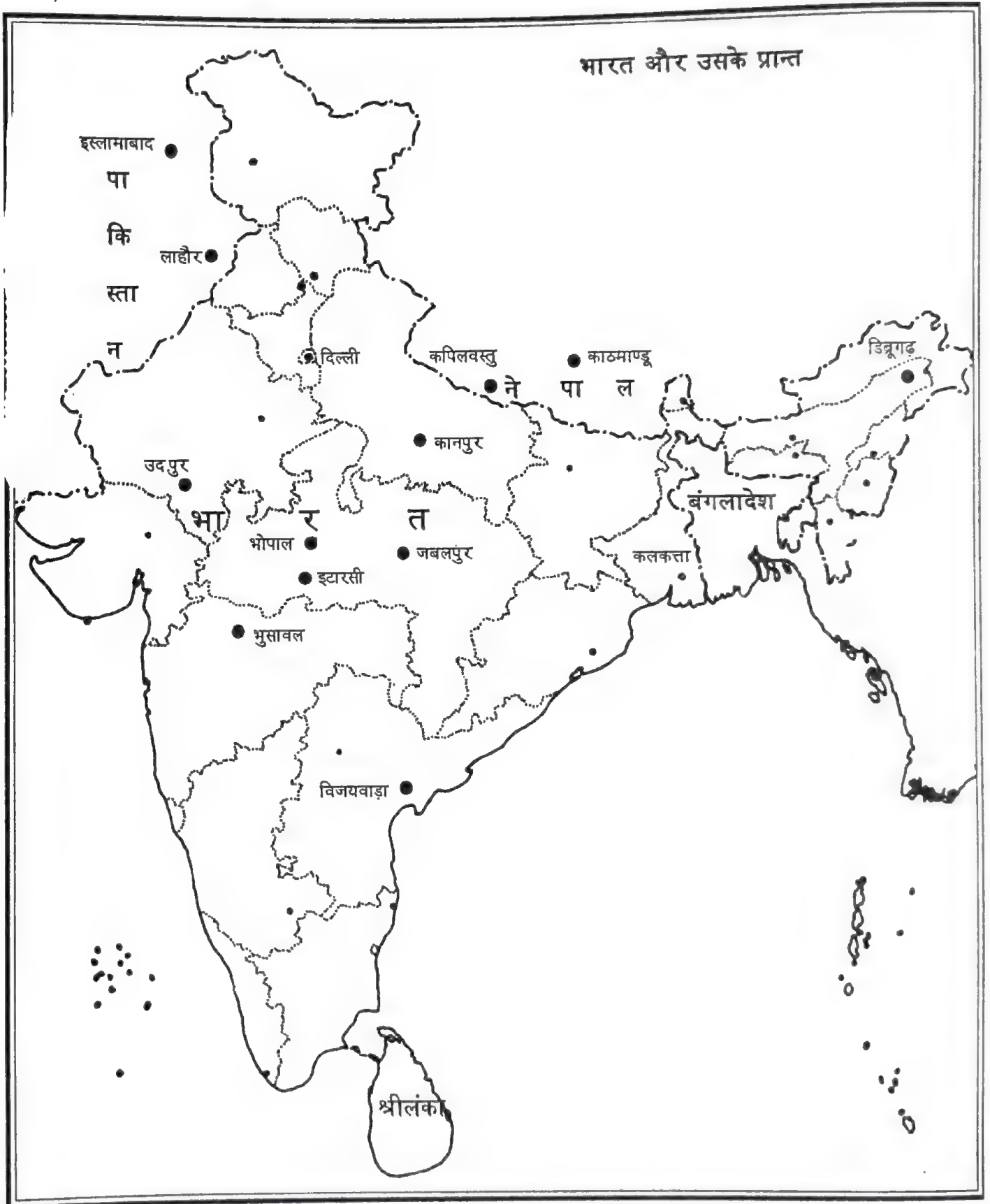
भारत की कौन सी जगहें मध्यप्रदेश में नहीं हैं ?

तालिका देख कर बताओ कौन सी जगहें दूसरे देश में है ?

एक नये दोस्त से मिलो

राकेश एक लड़का है जिसके पिताजी रेलवे में काम करते हैं और उनकी बदली होती रहती है। वे कुछ साल एक जगह पर रहते हैं और फिर उनकी बदली हो जाती है और वे दूसरी जगह चले जाते हैं। इस तरह राकेश उनके साथ कई जगहों पर रह चुका है। सन् 1974 में वह इटारसी में था, सन् 1981 में वह विजयवाड़ा गया और सन् 1984 में भुसावल पहुंच गया।

राकेश कितने साल मध्यप्रदेश में रहा और वे कौन-कौन से साल थे?

अब देखें तुम अपने नये दोस्त के बारे में क्या-क्या जान गये हो।

बताओ नीचे लिखे कथन सही हैं या गलत-

सन 1981 में राकेश भारत में रहता था।

सन 1982 में राकेश मध्यप्रदेश में रहता था।

सन 1974 से 1984 के बीच राकेश कई प्रान्तों में घूमा।

सन 1984 में राकेश महाराष्ट्र गया।

क्या तुम पीछे दिये गये नक्शे में राकेश की यात्रा का पथ लकीर से खींच कर बता सकते हो?

11. राज्य की सरकार

अपने देश में सभी लोगों के लिए कई तरह के नियम कानून बनाए गए हैं। जैसे एक नियम या कानून है कि बिना इजाज़त अपने पास बन्दूक रखना मना है। या 18 साल से कम उम्र की लड़कियों और 21 साल से कम उम्र के लड़कों की शादी नहीं हो सकती है। ये नियम कायदे ऐसे ही किसी की मर्ज़ी से नहीं बन गए। लोगों ने अपनी एक सरकार को चुना जिसने ये नियम कायदे बनाए। इस तरह के बहुत सारे नियम कायदे अपने देश की सरकार द्वारा बनाए जाते हैं। सरकार द्वारा बनाए गए नियम कायदों को कानून भी कहा जाता है।

कानून बनाना सरकार का एक मुख्य काम है। इसके अलावा सरकार कानून को लागू भी करती है। यदि कोई व्यक्ति कानून तोड़ता है या नहीं मानता है तो उसके बारे में फैसला करना व उसे सज़ा देना भी सरकार का काम है। यानी सरकार निम्न तीन काम करती है- कानून बनाना, कानून लागू करना और न्याय करना।

हमारे देश भारत में दो प्रकार की सरकारें हैं - केन्द्र सरकार और राज्य सरकार। केन्द्र सरकार के अलावा हर राज्य की अलग सरकार भी हैं। उदाहरण के लिए मध्य प्रदेश राज्य की सरकार भी कानून बनाती है और लागू करती है। यदि कोई कानून तोड़ता है तो निर्णय लेकर उसे दण्ड भी देती है। इसका मतलब यह हुआ कि मध्य प्रदेश में रहने वाले लोगों के ऊपर मध्य प्रदेश राज्य की सरकार व भारत की केन्द्र सरकार दोनों के कानून लागू होते हैं। इसी तरह सभी राज्यों में रहने वाले लोगों के ऊपर उनके राज्य की सरकार और भारत सरकार दोनों के कानून लागू होते हैं। हम इस पाठ में राज्य सरकार के बारे में पढ़ेंगे और अगली कक्षा में भारत की केन्द्र सरकार के बारे में पढ़ेंगे।

राजस्थान राज्य में रहने वाले लोगों को किन सरकारों के कानून मानने होते हैं?

क्या मध्य प्रदेश सरकार द्वारा बना कानून हिमाचल प्रदेश में लागू होता है?

क्या भारत सरकार द्वारा बनाया गया कानून हिमाचल प्रदेश में लागू होता होगा?

क्या तमिलनाडु सरकार पंजाब के लिए कानून बना सकती है?

क्या भारत सरकार का कानून भोपाल में लागू होगा?

नीचे दिए गए नक्शे में केन्द्र सरकार का कानून कहां लागू होगा - पीले रंग से भरो। मध्य प्रदेश सरकार का कानून कहां लागू होगा वहां नीले रंग की बिंदियां भरो।

राज्य की विधान सभा कैसे बनती है?

राज्य सरकार में जो लोग कानून बनाते हैं, उन्हें विधायक या विधानसभा सदस्य कहते हैं। कानून या नियम के लिए एक और शब्द है–"विधि" या "विधान"। इसी से विधायक, विधानसभा और विधेयक शब्द बनते हैं।

विधायक अलग-अलग क्षेत्रों के लोगों द्वारा चुने जाते हैं। तुम तो जानते हो कि पंचायत के सदस्य भी लोगों द्वारा चुने जाते हैं। इस चुनाव के लिए पंचायत क्षेत्रों को वार्डों में बांटा जाता है। विधायक या विधानसभा सदस्य के चुनाव के लिए पूरे राज्य को अलग-अलग क्षेत्रों में बांटा जाता है। इन क्षेत्रों को विधानसभा चुनाव क्षेत्र कहा जाता है।

पंचायत के एक वार्ड में तो केवल 100-200 लोग रहते हैं। एक विधानसभा चुनाव क्षेत्र में लगभग एक लाख लोग रहते हैं। एक लाख लोग बहुत होते हैं। वे कई गांवों और कस्बों में रहते हैं। हां, बड़े-बड़े शहर कई मीलों में फैले होते हैं और उन में कई लाख लोग रहते हैं। इसलिए एक शहर में (जैसे भोपाल, इन्दौर आदि) एक से अधिक विधानसभा चुनाव क्षेत्र होते हैं। हर विधानसभा चुनाव क्षेत्र से एक विधायक चुना जाता है।

विधानसभा के चुनाव अलग-अलग पार्टियां लड़ती हैं। ये पार्टियां हर चुनाव क्षेत्र से अपना 'उम्मीदवार' खड़ा करती हैं। उम्मीदवार या चुनाव प्रत्याशी उस व्यक्ति को कहते हैं जो चुनाव में खड़ा होता है और जिसे 'वोट' दिए जाते हैं। एक व्यक्ति एक से अधिक चुनाव क्षेत्रों से भी चुनाव लड़ सकता है। पार्टियों के उम्मीदवारों के अलावा, स्वतंत्र रूप से भी कोई व्यक्ति चुनाव में खड़ा हो सकता है।

तुम जितनी पार्टियों के नाम जानते हो, उन्हें लिखो।

विधानसभा के चुनाव में खड़े होने के लिए उम्मीदवार को कम से कम 25 वर्ष का होना ज़रूरी है। यदि किसी व्यक्ति पर कोई जुर्म साबित किया गया हो या वह दिमागी रूप से स्वस्थ नहीं हो तो वह चुनाव नहीं लड़ सकता। हर चुनाव क्षेत्र से जिस उम्मीदवार को सब से अधिक वोट मिलें, वह उस क्षेत्र का विधायक माना जाता है।

पर वोट कौन डाल सकता है? वे लोग जिनकी उम्र 18 वर्ष से अधिक हो, विधानसभा चुनाव में वोट डाल सकते हैं, चाहे वे पुरुष हों या महिला। हां, वोट डालने से पहले, उन्हें अपना नाम मतदाता सूची (वोट डालने वालों की एक सूची) में दर्ज कराना पड़ता है।

तुम्हारे क्षेत्र का विधायक कौन है? वह किस पार्टी का है?

गुरुजी से पूछो कि यह चुनाव किस तरह से होता है?

यदि तुम्हें पिछले विधानसभा के चुनाव के बारे में कुछ याद हो तो लिखो।

राज्य का मंत्रिमण्डल

जिस पार्टी के सदस्य आधे से अधिक चुनाव क्षेत्रों से विधायक चुने जाते हैं, उस पार्टी का नेता या मुखिया राज्य का मुख्यमंत्री बनता है। यानी यदि किसी राज्य को 200 विधानसभा क्षेत्रों में बांटा गया है तो जिस भी पार्टी के 100 से अधिक विधायक बनें, उस पार्टी के नेता को राज्यपाल सरकार बनाने को कहता है। यह नेता मुख्यमंत्री बनता है और विधानसभा के अन्य सदस्यों में से (अक्सर अपनी पार्टी में से ही) अन्य मंत्री चुनता है। मुख्यमंत्री और उसका मंत्रिमण्डल मिलकर राज्य की सरकार कहलाते हैं, इसलिए जिस पार्टी का मंत्रिमण्डल बनता है, उस पार्टी की सरकार बनी कहलाती है।

तुम्हारे राज्य (मध्य प्रदेश) की सरकार किस पार्टी की है?

इन राज्यों की सरकारें किस पार्टी की हैं? गुजरात, महाराष्ट्र, बंगाल, तमिलनाडु, केरला, बिहार, आंध्रप्रदेश।

सरकार का काम

जब विधानसभा के चुनाव हो जाते हैं और विधायक बन जाते हैं तो उन्हें विधान सभा की बैठकों में भाग लेना पड़ता है। ये बैठकें साल में 2 या 3 बार होती हैं।

विधानसभा में तरह-तरह के विषयों पर चर्चा होती है– कृषि पर, शिक्षा पर, पंचायतों पर, राज्य के विभिन्न क्षेत्रों की समस्याओं पर। कुछ विधायक सवाल पूछते हैं तो संबंधित मंत्री जवाब देते हैं। कुछ विषयों पर कानून बनाये जाते हैं। कानून बनने से पहले उस विषय पर एक 'बिल' या 'विधेयक' (यानी कानून का प्रस्ताव) विधानसभा में पेश किया जाता है। उस पर खूब बहस व चर्चा होती है। ज़रूरी हो तो कुछ मुद्दों पर विधेयक बदला जाता है। विधानसभा में उपस्थित विधायकों में से आधे से अधिक विधायक जब किसी विधेयक के पक्ष में हों तभी वह विधेयक कानून बन सकता है। विधानसभा में पारित होकर विधेयक राज्यपाल के पास जाता है। राज्यपाल राज्य में केन्द्र सरकार का प्रतिनिधि होता है। राज्यपाल की मंज़ूरी के बाद ही विधेयक कानून बनता है और लागू होता है।

इन कानूनों को लागू करना राज्य के मंत्रिमंडल का काम है। बोलचाल की भाषा में मंत्रिमंडल को ही सरकार कहा जाता है। मध्य प्रदेश की विधान सभा भोपाल में स्थित है। मध्य प्रदेश के राज्यपाल और मंत्री भी भोपाल में ही काम करते हैं। जिस जगह राज्य की विधान सभा होती है और मंत्रिमंडल काम करता है, उस जगह को राज्य की राजधानी कहा जाता है।

भोपाल को मध्य प्रदेश की राजधानी क्यों कहा जाता है? भारत का नक्शा देखो और बताओ कि हर राज्य की विधानसभा व मंत्रिमंडल कहां काम करते हैं?

उम्मीदवार, विधायक मुख्यमंत्री, मंत्री, राज्यपाल–क्या तुम्हें ये सारी बातें समझ में आ गईं? अगर कठिनाई हो रही हो तो गुरुजी से कहो कक्षा में बच्चों के बीच चुनाव का नाटक बना कर कराएं व समझाएं कि सरकार कैसे बनती है।

राज्य में विधानसभा में बने कानून व नीतियों को लागू करने के लिए राज्य सरकार कई लाख सरकारी कर्मचारी नियुक्त करती है–डॉक्टर, तहसीलदार, विकास खण्ड अधिकारी, पुलिस, पटवारी आदि। इन सबको राज्य सरकार तनख्वाह देती है। उन्हें राज्य मंत्रिमंडल के आदेशों का पालन करना होता है।

तुमने देखा कि सरकार क्या है, कानून कैसे बनता है, और मंत्रिमंडल कैसे बनता है। चलो इन बातों को और अच्छी तरह समझने के लिए एक विधायक की कहानी पढ़ें।

एक विधायक की कहानी

कौशलपुर एक काल्पनिक जगह है। इस कहानी में पार्टी और लोग भी काल्पनिक हैं। लेकिन विधायक चुनने का तरीका, नियम तय करने के तरीके, जो इस कहानी में बताए गए हैं, वे सब सही हैं।

कौशलपुर क्षेत्र में विधानसभा चुनाव होने वाले हैं। पांच पार्टियां चुनाव लड़ रही हैं। उन्होंने अपने चुनाव प्रत्याशी या उम्मीदवार तय कर लिये हैं। सब से ताकतवर पार्टियां हैं मध्य भारत दल और महाकौशल संघ। मध्य भारत दल से चुनाव लड़ रहे हैं, विलास भाई और महाकौशल संघ से रामप्रसादजी। कुछ निर्दलीय उम्मीदवार भी हैं, जो किसी पार्टी के सदस्य नहीं हैं। कौशलपुर क्षेत्र से चुनाव के लिए कुल 8 उम्मीदवार या प्रत्याशी हैं–5 पार्टियों के और तीन निर्दलीय।

प्रचार

चुनाव 25 सितम्बर को होने वाले हैं। 15-20 दिन पहले ही चुनाव प्रचार शुरू हो गया– लाउड-स्पीकर, जीप, तांगे, आमसभाएं। हर पार्टी के सदस्य आश्वासन देते हैं। कोई कहता है, "हम महंगाई कम करेंगे" तो कोई कहता है "हम ज़मीन दिलवाएंगे" और तीसरा कहता है, "हम मज़दूरी बढ़वाएंगे।" उम्मीदवार दूसरी पार्टी के सदस्यों की आलोचना भी करते हैं। 24 तारीख तक यह शोरगुल रहा और फिर सब शान्त हो गया।

सोचो कि यह नियम क्यों है कि चुनाव से एक दिन पहले प्रचार प्रसार बंद होना चाहिए।

कौशलपुर में वोट डले

25 तारीख को सुबह वोट डलना शुरू हुए और शाम तक डलते रहे। चुनाव केन्द्रों के सामने लोगों की लम्बी कतारें थीं। बड़े-बूढ़े, औरतें, आदमी सभी वहां थे। एक व्यक्ति दरवाज़े पर बैठा था। उसके पास लम्बी सूचियां थीं। वोट देने वाले उसके पास पहले जाते। जिस का नाम उस सूची में न होता उसे वह लौटा देता। सूची मे जिसका नाम होता उसके नाखून पर एक खास स्याही से निशान लगाया जाता। वह हस्ताक्षर करके मतपत्र लेता और फिर परदे के पीछे जाता। मतपत्र पर अपनी पसंद के अनुसार उम्मीदवार के चिन्ह के सामने मुहर लगाता। फिर मतपत्र को मोड़कर मतपेटी में डाल देता।

बीच में एक व्यक्ति से उस अधिकारी की खूब लड़ाई हुई। अधिकारी कह रहा था, "तुम तो अपना वोट डाल चुके हो, फिर से क्यों आए हो?" वोट डालने वाला बार-बार अपने नाखून दिखाता "जब मेरे नाखून पर निशान ही नहीं तो आप मुझे रोक कैसे सकते हैं? आपने मेरे नाम को सूची में गलती से काटा होगा या कोई फर्जी वोट डाल गया होगा।" अंत में अधिकारी ने उस से वोट एक लिफाफे में रखकर सील बन्द करके देने को कहा। वोट का लिफाफा अधिकारी ने अपने ही पास रख लिया।

सीलबन्द लिफाफे वाले वोटों का क्या होता है— गुरुजी से चर्चा करो।

कौशलपुर में वोट डल ही रहे थे कि पास के रामपुर विधानसभा क्षेत्र से खबर आई कि कई सारे लोगों ने लाठी लेकर 2 केन्द्रों पर धावा बोला। अधिकारियों को पीटा गया और मतपेटी के ताले खुलवाकर उसमें फर्जी वोट डाले गए। अधिकारियों से फिर ज़बरदस्ती वोट पेटियां सील करवाईं गईं। जो पुलिस वहां थी उसे भी पीट दिया गया।

इस घटना की जांच की गई। इन दो केन्द्रों पर कड़ी सुरक्षा में फिर से चुनाव कराने के आदेश दिए गए।

अगले दिन कौशलपुर क्षेत्र के वोटों की गिनती शुरू हुई। शाम तक चुनाव के परिणाम आने लगे। कौशलपुर की सभी वोट पेटियों की जब गिनती खत्म हुई तो पता चला कि रामप्रसाद जी को 42,803 वोट मिले और विलास भाई को 28,156। बाकी 6 प्रत्याशियों को 5 हज़ार से भी कम वोट मिले।

बताओ कौशलपुर का विधायक कौन बना? वह किस पार्टी का था?

मंत्रिमंडल किसका बना

जब हर विधानसभा क्षेत्र के चुनाव परिणाम घोषित हो गए तो पता चला कि कुल 320 विधानसभा क्षेत्रों में से 192 क्षेत्रों में विलास भाई की पार्टी यानी मध्य भारत दल के प्रत्याशी जीते हैं, 92 महाकौशल संघ के और बाकी 35 विधायक अन्य पार्टी के हैं, या निर्दलीय हैं। कुल 319 सदस्य विधानसभा में पहुंचे क्योंकि एक क्षेत्र में चुनाव तो रद्द हो गये थे।

बताओ मंत्रिमंडल और मुख्यमंत्री किस पार्टी के बने?

हालांकि रामप्रसाद जी कौशलपुर क्षेत्र से विजयी हुए, उनकी पार्टी का मंत्रिमंडल नहीं बना। वे विपक्षी दल के हो गए। एक विधानसभा क्षेत्र से चुनाव रद्द कराया गया था, वह 3 महीने बाद फिर से हुआ।

5 सालों में विधानसभा की कई बैठकें हुईं। इन बैठकों में राज्य से संबंधित कई बातों पर चर्चा और बहस होती और कई मसले तय किए जाते। जैसे-किसी चीज़ पर कितना बिक्री कर लगेगा? माचिस पर अधिक या तेल पर? खेती की ज़मीन पर भी कर लगेगा या नहीं? पंचायतें किस प्रकार से बनाई जाएंगी? और ऐसे ही कई मसले।

इन बैठकों में कई विधायक सरकार से प्रश्न पूछते और संबंधित मंत्री जवाब देते। कोई पूछता "महंगाई बहुत बढ़ रही है, उसे रोकने के लिए आप क्या कर रहे हैं?" तो वित्त मंत्री को जवाब देना पड़ता। यदि पूछा जाता "प्रदेश में कितनी प्राथमिक शालाओं की छतें नहीं हैं? आप इसके बारे में क्या कर रहे हैं?" तो शिक्षामंत्री उत्तर देते। कुछ विधायक जवाबों से संतुष्ट हो जाते हैं और कुछ संतुष्ट नहीं होते।

सोचो, मंत्री विधायकों से ऐसे सवाल क्यों नहीं पूछ रहे हैं?

न्यूनतम मज़दूरी का कानून बना

एक दिन श्रम मंत्री ने विधानसभा में न्यूनतम मज़दूरी का बिल पेश किया। पहले सब विधायकों को बिल की प्रतियां बांटी गईं। श्रम मंत्री ने बिल को संक्षेप में समझाते हुए कहा, "पिछले कुछ सालों में उत्पादन काफी बढ़ा है। महंगाई भी बढ़ी है। लेकिन मज़दूरों की मज़दूरी इतनी नहीं बढ़ पाई है जितना कि और लोगों की आमदनी बढ़ी है। कई मज़दूर संगठनों ने अपने मालिकों के साथ ये मसले भी उठाए हैं। हड़तालें भी हुई हैं। हड़तालों से उत्पादन पर बुरा असर पड़ा है। पर मज़दूरों की मांगें भी कुछ हद तक जायज़ हैं। सरकार को जनहित में सोचना है। इन सब चीज़ों को ध्यान में रखते हुए हम यह बिल पेश कर रहे हैं जिसमें उद्योगों में काम करने वाले मज़दूरों की न्यूनतम मज़दूरी 37 रुपए से बढ़ाकर 45 रुपए प्रतिदिन की जा रही है और खेतीहर मज़दूरों की 28 रुपए से 35 रुपए। आप सब को बिल की एक-एक प्रति दी गई है। अब लोग उसे ध्यान से पढ़ लें। इसके बाद हर बिन्दु पर चर्चा होगी।"

इस चित्र में श्रम मंत्री को पहचानो।

सब लोगों के सामने मेज़ पर रखे हुए कागज़ क्या हैं? मेज़ पर रखे कागज़ों के अलावा और क्या-क्या रखा है? इनकी क्यों ज़रूरत पड़ती होगी?

सब विधायकों ने बिल पढ़ा। फिर बहस शुरू हुई। कोई बिल के पक्ष में बोलता तो कोई उसके विरुद्ध। महाकौशल संघ के रामप्रसादजी अधिकांश मामलों में कुछ न बोलते थे। पर आज वे खड़े हो गए। बोले:

कई विधायक रामप्रसाद जी की बातों से प्रभावित हुए। दूसरों ने कहा:

एक और विधायक श्री आकाशमल जी ने कहा:

चर्चा और बहस खूब हुई। जब मत पूछे गए कि क्या इस बिल को पास कर देना चाहिए तो उपस्थित 273 लोगों में से 200 के हाथ उठ गए। बिल को राज्यपाल के हस्ताक्षर के लिए पेश किया गया। राज्यपाल ने हस्ताक्षर कर दिए। इस तरह से विधान सभा में न्यूनतम मज़दूरी का कानून बना।

क्या तुम्हें लगता है कि यह कानून मज़दूरों और मालिकों की राय के अनुसार बना है? विधान सभा की चर्चा में उनकी राय कैसे पहुंची?

कानून कैसे लागू होगा

गज़ेट नाम की किताब में छपकर यह कानून जिलाधीश जैसे सरकारी कर्मचारियों के पास पहुंचा। अब यह देखना उनकी ज़िम्मेदारी हो गई कि हर मज़दूर को उतनी मज़दूरी मिलती है जितनी विधानसभा में तय की गई है। यदि किसी जगह कम मज़दूरी मिलती तो वहां के मज़दूर उस क्षेत्र के विधायक से बात करते। उस जिले के जिलाधीश को भी ज्ञापन देते। विधायक विधान सभा में सवाल पूछते। जिलाधीश अपनी तरफ से जांच करवाता। इस तरह न्यूनतम मज़दूरी का कानून लागू करने का दबाव बनता।

अभ्यास के प्रश्न

1. तुम्हारे ऊपर किनके बने नियम व कानून लागू होते हैं?
   मध्य प्रदेश राज्य सरकार, उत्तर प्रदेश राज्य सरकार, होशंगाबाद नगरपालिका, भारत की केन्द्र सरकार।
2. इन लोगों के बारे में दो-दो वाक्य लिखो–
   क) मतदाता
   ख) उम्मीदवार
   ग) पार्टी सदस्य
   घ) विधायक
3. क्या सभी लोग जो पंचायत के चुनाव में वोट डाल सकते हैं, विधायक के चुनाव में भी वोट डाल सकते हैं?
4. पंच और विधायक के चुनाव में क्या अन्तर है?
5. वोट डालने से किसे रोका जा सकता है?
6. विधायकों का काम क्या है?
7. मुख्यमंत्री कैसे बनता है?
8. मंत्रिमंडल कैसे बनता है?
9. मंत्रिमंडल का क्या काम है? मंत्री और विधायक में क्या अन्तर होता है?
10. विधानसभा में आज खेती की भूमि पर कर समाप्त करने का विधेयक पेश किया गया। 272 विधायक उपस्थित थे। जब विधायकों से पूछा गया कि कितने विधायक इसे कानून बनाने के पक्ष में हैं तो उन में से 106 विधायकों के हाथ उठे। क्या यह विधेयक कानून बना? कारण सहित उत्तर दो।
11. यदि तुम्हारे क्षेत्र में सूखा पड़ा है, तो तुम्हारे यहां के विधायक को इस समस्या को हल करने के लिए क्या करना होगा?
12. सरकारी कर्मचारी और मंत्री में क्या अन्तर होता है?
13. विधायक की कहानी में न्यूनतम मज़दूरी का कानून किस प्रकार से बना? इस बारे में जो बहस हुई, उसकी मुख्य बातें बताओ।
14. राज्य सरकार कोई ऐसा कानून नहीं बना दे जो केन्द्र सरकार को बिल्कुल गलत लगता हो इसके लिए कौन-सी व्यवस्था की गई है?